छन्द राउ जइतसी रउ

(वीठू सूजइ रउ कहियउ)

सम्पादक

मूलचन्द 'प्राणेश'

प्रस्तावना लेखक

डॉ शक्तिदान कविया

भारतीय विद्या-मन्दिर शोध-प्रतिष्ठान
रतन बिहारी पार्क, बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशक भारतीय विद्या-मन्दिर शोध प्रतिष्ठान
रतन बिहारी पार्क बीकानेर (राज)

सम्पादक श्री मूलचन्द प्राणेश

प्रस्तावना लेखक डॉ शक्तिदान कविया

आवरण अमित भारती

प्रथम संस्करण 1991 प्रतियां 1000

मूल्य साठ रुपये मात्र
पेपर बैक पच्चीस रुपये मात्र

मुद्रक सांखला प्रिन्टर्स
चन्दन सागर बीकानेर 334 001

प्रकाशकीय

भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान के प्रकाशन क्रम में 'छन्द राउ जइतसी रउ, विठू सूजइ रउ कहियउ' को प्रकाशित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता होरही है। इसके पूर्व नागन्मण, रणमल्ल छंद आदि प्राचीन राजस्थानी काव्यों का प्रकाशन किया जा चुका है। जो विद्वानों के द्वारा प्रशंसित हुए हैं और हमारे लिए उत्साहवर्द्धक।

प्रस्तुत काव्य ग्रंथ राजस्थान के लिए ही नहीं सम्पूर्ण भारत के लिए गौरव का विषय है जिसमे साम्राज्यवादी मुगल वाहिनी को राजस्थान के एक राजा ने पराजित करके भगा दिया और अपनी स्वतंत्र सत्ता को बनाए रखा।

इसी क्रम से संस्था द्वारा कवि वर माधोदास दधवाड़िया कृत राम रासो को प्रकाशित करने की योजना है। जिस के लिए सम्पादन का प्रारम्भिक कार्य चालू हो चुका है। यह काव्य कृति भी जन साधारण की सेवा में यथा समय शीघ्र ही प्रस्तुत की जा सकेगी।

छन्द राउ जइतसी रउ के प्रस्तुत प्रकाशन के सम्बन्ध में जो विद्वान अपनी सम्मति भेजने की कृपा करेंगे, हम उनका हार्दिक स्वागत करेंगे।

इतने सुन्दर व उत्तम सम्पादन के लिए सम्पादक श्री मूलचन्द प्राणेश' व सुन्दर मुद्रण के लिए सांखला प्रिंटर्स हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

विजय दिवस मार्गशीर्ष कृष्णा 4
सं 2048 बीकानेर

मूलचन्द पारीक
मंत्री
भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर

सम्पादकीय

'छन्द राउ जइतसी रउ' राजस्थानी भाषा म सजित एव ऐतिहासिक काव्य कृति है। इसम बीठू सूजा ने अपने आश्रयदाता बीकानेर के राव जतसी द्वारा कामरा के विरुद्ध लड गये युद्ध का प्रामाणिक वणन किया है। इसी प्रकार की एक और रचना उपलब्ध है, जिसका उल्लेख डा एल पी टसीटोरी ने एक अज्ञात कवि की कृति बताते हुए सम्भावना व्यक्त की है कि हो सकता है यह कृति प्रख्यात छन्दों के सजक बीठू मेहू की हो। बीठू सूजा एव बीठू मेहू राव जतसी के दरबारी कवि थे और उनम परस्पर चाचा भतीजे का रिश्ता भी था।

डा एल पी टसीटोरी ने सव प्रथम इस काव्यकृति के मम को पहचाना तथा उपलब्ध सभी प्रतियों के आधार पर पाठ सम्पादित करके विद्वज्जनो के सम्मुख रखा। परन्तु इस काव्य कृति की जटिल भाषा एव क्लिष्ट शली के परिणाम स्वरूप जन साधारण की तो बात ही क्या, बडे बडे विद्वान भी इसके आशय को स्पष्ट नहीं कर सके।

स्व श्री नरोत्तमदास जी स्वामी ने भी अपने मित्रो के साथ उक्त छद के सपादन का काय हाथ म लिया था परन्तु किन्ही कारणों स वे इसे पूरा नही कर सके। 'रणमल्ल छद' का सम्पादन करके मैं जब स्वामी जी को दिखलाने गया तो लौटते समय छन्द राउ जइतसी रउ के सपादन का काय मुझ सौंपते हुए इस शीघ्रातिशीघ्र पूरा करने की ताकीद भी की। स्वामीजी ने उक्त छन्द के सम्पादन का जितना काय किया था वह सामग्री भी मुझ सौंप दी।

मैंने नये सिरे से काय प्रारम्भ किया। छन्द के मूल पाठ का आधार डॉ एल पी टैसीटोरी द्वारा प्रकाशित पाठ को बनाया। विस्तार भय से पाठातरों को सम्मिलित नहीं किया गया। वतमान कालिक शब्द कोशो म छद मे प्रयुक्त शब्द ही नही मिले, तब अथ की तो बात क्या!

मैंने छद म प्रयुक्त सभी शब्दो के निकटतम हिन्दी पर्याय देने का प्रयत्न किया है परन्तु कितने ही शब्दो क हिन्दी म पर्यायवाची हैं ही नही, ऐसे शब्दो की व्याख्या प्रस्तुत की गई है। इस कृति का ऐतिहासिक महत्त्व तो है ही, पर साथ ही भाषा गत महत्त्व भी कम नही है। प्रस्तुत कृति का ऐतिहासिक, साहित्यिक एव भाषा वज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करना नितात आवश्यक था, पर तु मेरे इष्ट मित्रो एव

विद्वज्जनो का आग्रह इस कृति को हि दी भावार्थ के साथ यथाशीघ्र प्रबुद्ध-पाठकों एव जिज्ञासु विद्यार्थियो के सम्मुख प्रस्तुत किया जाने का रहा। प्रस्तुत का य कृति ने सम्पादित होकर पुस्तक का स्वरूप ग्रहण कर लिया, पर इस देखने के लिए श्री स्वामी जी नही रहे ! नमन् !!

डा शक्तिदान कविया ने प्रस्तुत काव्य कृति की विस्तृत, सटीक एव विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना लिखी है, जिसके द्वारा काव्य मे वर्णित सभी पक्षो का उद्घाटन हुआ है। प अक्षयचन्द्र जी शर्मा ने पुरोवाक लिखकर इस का य कृति को आशीर्वाद प्रदान किया है एतदर्थ आभारी हूँ।

प्रस्तुत कृति को वर्तमान स्वरूप म प्रस्तुत करने का श्रेय श्री सत्यनारायणजी पारीक डा मनोहरजी शर्मा एव श्री रामनिवासजी शर्मा को है। भा वि म शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर के अधिकारीगण विशेष धन्यवाद के पात्र हैं, क्योकि इनके सद्प्रयास के बिना प्रस्तुत कृति पुस्तक का स्वरूप ही ग्रहण नही कर पाती।

देवोत्थान एकादशी
स 2048 वि
(18 नवम्बर, 1991 ई)

मूलचन्द 'प्राणेश'
झझू (बीकानेर)

सम्पादकीय

छन्द राउ जइतसी रउ राजस्थानी भाषा मे सजित एक ऐतिहासिक काव्य कृति है। इसमे वीठू सूजा ने अपने आश्रयदाता बीकानेर के राव जतसी द्वारा कामरा से विरुद्ध लडे गये युद्ध का प्रामाणिक वर्णन किया है। इसी प्रकार की एक और रचना उपलब्ध है, जिसका उल्लेख डा एल पी टसीटोरी ने एक अज्ञात कवि की कृति बताते हुए सम्भावना व्यक्त की है कि हो सकता है यह कृति प्रख्यात छन्द के सर्जक वीठू मेहू की हो। वीठू सूजा एव वीठू मेहू राव जतसी के दरबारी कवि थे और उनमे परस्पर चाचा भतीजे का रिश्ता भी था।

डा एल पी टसीटोरी ने सब प्रथम इस काव्य कृति के मर्म को पहचाना तथा उपलब्ध सभी प्रतियो के आधार पर पाठ सम्पादित करके विद्वज्जनो के सम्मुख रखा। परन्तु इस काव्य कृति की जटिल भाषा एव क्लिष्ट शैली के परिणाम स्वरूप जन साधारण की तो बात ही क्या, बडे बडे विद्वान भी इसके आशय को स्पष्ट नही कर सके।

स्व श्री नरोत्तमदास जी स्वामी ने भी अपने मित्रो के साथ उक्त छद के सपादन का काय हाथ म लिया था, परन्तु कि ही कारणो स वे इसे पूरा नही कर सके। रणमहल छन्द का सम्पादन करके मैं जब स्वामी जी को दिखलाने गया तो लौटते समय छन्द राउ जइतसी रउ' के सपादन का काय मुझ सौंपते हुए इसे शीघ्रातिशीघ्र पूरा करने की ताकीद भी की। स्वामीजी ने उक्त छ द के सम्पादन का जितना काय किया था वह सामग्री भी मुझ सौंप दी।

मैंने नये सिर स काय प्रारम्भ किया। छ द के मूल पाठ का आधार डा एल पी टैसीटोरी द्वारा प्रकाशित पाठ को बनाया। विस्तार भय से पाठांतरो को सम्मिलित नहा किया गया। वतमान कालिक श द कोशो म छन्द म प्रयुक्त शब्द ही नहीं मिले, तब अथ की तो बात क्या!

मैंने छद मे प्रयुक्त सभी शब्दो के निकटतम हिन्दी पर्याय देने का प्रयत्न किया है परन्तु कितने ही शब्दो क हि दी म पर्यायवाची है ही नही ऐसे शब्दो की व्याख्या प्रस्तुत की गई है। इस कृति का ऐतिहासिक महत्व तो है ही पर साथ ही भाषा गत महत्त्व भी कम नहीं है। प्रस्तुत कृति का ऐतिहासिक साहित्यिक एव भाषा वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करना नितात आवश्यक था, परन्तु मेरे इष्ट मित्रों एव

विद्वज्जनो का आग्रह इस कृति को हिंदी भावार्थ के साथ यथाशीघ्र प्रबुद्ध-पाठकों एव जिज्ञासु विद्यार्थियो के सम्मुख प्रस्तुत किया जाने का रहा। प्रस्तुत काव्य कृति ने सम्पादित होकर पुस्तक का स्वरूप ग्रहण कर लिया, पर इसे देखने के लिए श्री स्वामी जी नही रहे ! नमन् !!

डा शक्तिदान कविया ने प्रस्तुत काव्य कृति की विस्तृत, सटीक एव विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना लिखी है, जिसके द्वारा काव्य म वर्णित सभी पक्षो का उद्घाटन हुआ है। प अक्षयचन्द्र जी शर्मा ने पुरोवाक् लिखकर इस काव्य कृति को आशीर्वाद प्रदान किया है एतदर्थ आभारी हूँ।

प्रस्तुत-कृति को वतमान स्वरूप म प्रस्तुत करने का श्रेय श्री सत्यनारायणजी पारीक, डा मनोहरजी शर्मा एव श्री रामनिवासजी शर्मा को है। भा वि म शोध प्रतिष्ठान बीकानेर के अधिकारीगण विशेष धन्यवाद के पात्र हैं, क्योकि इनके सद्प्रयास के बिना प्रस्तुत कृति पुस्तक का स्वरूप ही ग्रहण नही कर पाती।

देवोत्थान एकादशी
स 2048 वि
(18 नवम्बर, 1991 ई)

मूलचन्द 'प्राणेश'
भडू (बीकानेर)

पुरा वाक्

चारुणा तोरणेन

[दूराल्लक्ष्य सुरपतिधनुश्चारुणा तोरणेन]
—मेघदूत

विजय दिवस

बीकानेर के ही नहीं, राजस्थान के गौरवमय शौर्यपूर्ण इतिहास मे वि सवत 1591 मार्गशीर्ष कृष्णा 4 (ई स 1534 ता 26 अक्टूबर) का दिन एक विजय दिवस के रूप मे स्वर्णाक्षरो स अकित है उस दिन बीकानेर नरेश राव जतसी ने बाबर के महत्वाकांक्षी पुत्र कामरा को अपनी दूरदर्शी रण चातुरी स परास्त कर, लाहौर की ओर भागने को विवश किया था। साधारणत राजस्थान का शौर्य आत्मोत्सग से ज्वलित तो है, विजय प्रकाश स विभूषित कम। युद्ध हैं परस्पर वमनस्य एव द्वष की आग है, स्वाभिमान के साथ दूसरे के स्वाभिमान का तिरस्कार है, सहयोग का अभाव है। इससे हमारे शौर्यौदार्य की गाथाए इतनी उज्ज्वल नहीं जितनी धूमिल और मोघ मात्र हैं।

ऐसी स्थिति मे राव जतसी ने राजनीतिक दूरदर्शिता, अटूट धय, अनुशासनबद्धता और निश्चित योजना के बल पर कामरा की विशाल विजयो मत्त वाहिनी को अपनी छोटी सी सधी हुई सेना के द्वारा हरा कर—राजस्थान के सामरिक इतिहास म अपनी अलग पहचान कायम की है। काश, राजस्थान इसके महत्त्व को हृदयगम कर पाता !

प्रामाणिक साक्ष्य

हमारा सौभाग्य है—इस घटना के प्रत्यक्ष दर्शी हैं—कविवर बीठू सूजा—जिनकी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कृति छन्द राउ जइतसी रउ' इतिहास और काव्य दोनों दृष्टियो स समृद्ध है। बीठू सूजा इतिहासकार हैं कवि हैं, वीर रस क कवि—सारी कृति आद्यन्त उत्साह स ह्रहृत हैं। इतिहास की अपनी मर्यादा है, इत्थ निश्चयेन बभूव—ऐसा निश्चित रूप से हुआ था—इस टेक को निभाते हुए सचाई का, तथ्यो का सम्मान करते हुए—इतिहास की शुष्कता इतिवृत्तात्मक नीरसता को बचाते हुए—कवि अपना काय करता है। इतिहास के प्रति ऐसी प्रतिबद्धता स काव्यत्व में किंचित् क्षरण तो होता है, पर कृति कवि की स्वर कल्पना गलदश्रु भावुकता और अत्युक्तियो की घनघटाओं से मुक्त रहती है। नि स देह यह कृति इतिहास क धरातल को न छोड़ती हुई कविता की रसात्मकता से अपने को आर्द्र रखती रही है। लगता है—जस मरुधरा की बालुकामयी धरित्री सावन भादो मे झीना हरिताचल पहने हो।

प्रथम प्रयास

इतालवी विद्वान् डा तैस्सितोरी के द्वारा सम्पादित इस ग्रन्थ का प्रकाशन इनके स्वर्गवास के एक वर्ष पश्चात् सन् 1920 में हुआ था। इसकी भूमिका सम्पादक द्वारा 15 अक्टूबर 1918 को लिखी गई थी।

इस ग्रंथ का सम्पादन अत्यन्त सतर्कता, प्रामाणिकता एवं श्रम पूर्वक किया गया है। पाठान्तर भी दिये गये हैं। प्रस्तावना में इस कृति की विशेषताओं को रेखांकित करते हुए सार संक्षेप दिया गया है और आधारभूत छन्दों का निर्देश भी। विशेष बिन्दु निम्नोक्त हैं—

(क) यह कृति कामरां के पराजित होने और राव जतसी के विजयोत्सव मनाने की घटना को उजागर करती है। मुस्लिम इतिहासकार कामरां के इस दुर्भाग्य पर मौन साधे हैं। यह कृति बीच के अन्तराल को भरती है।

(ख) राठौड़ वंश की पूर्व विभूतियों का क्रमानुसार वर्णन त्वरा के साथ किया गया है। वर्णन सजीव है, कहीं एकस्वरता नहीं।

(ग) कवि ने जतसी के पिता राव लूणकरण के शासन को निकट से अनुभूत किया है अतः वर्णन में विस्तार है। राव लूणकरण के शौर्य के साथ प्रजा की सुख सम्पन्नता के भी चित्र हैं। प्रजा वत्सलता उभारी गई है।

(घ) कामरां के प्रस्ताव का जतसी ने जो उत्तर दिया है, वह क्षात्र दर्प से युक्त तेजस्विता और ओजस्विता से आलोकित है।

(ङ) कामरां के प्रचण्ड आक्रमण को देख कर जतसी न डरा, न भागा—थोड़ी देर के लिए रण निपुणता के रूप आसन और यान के सुअवसर के साधु क्षणों के लिये प्रतीक्षा में धैर्यवान् रहा।

(च) कवि ने जतसी के सम्बन्धियों परिजनों, सामन्तों और उत्साही वीर सैनिकों का जिस उत्साह उमंग रंग के साथ वर्णन किया है—वह लम्बा है, 109 वीरों के नामों से भरा और साथ ही भिन्न भिन्न प्रकार के स्वभाव, गुण, चपलता, त्वरा, गति आदि की व्यंजना करते हुए अश्वों को सामूहिक जाति से पृथक कर गुण, नाम और व्यक्तित्व प्रदान करते हुए नाम, रूप और गति आदि के साथ चित्रित करता है—यह अपने में अनुपमेय है। कवि अकुण्ठित भाव से, अत्यन्त धैर्य के साथ, नितनूतन उत्साह के साथ—कहीं भी एकस्वरता न लाते हुए नयी-नयी उपमाओं, रूप को, शब्द ध्वनियों और चाक्षुण ध्वनि बिम्बों के साथ अवतारणा कर अश्वों की आरती उतारता चलता है—सारे छन्दों में पुलक है एक नव स्पन्दन है शौर्य का उद्दीप्त ओज है, प्रवाह है—ऐसा लगता है—प्रशान्त महासागर उत्ताल तरंगों से किल्लोल कर रहा है।

कवि ने एक-एक वीर का स्तवन किया है—

वीरों का सुयश गान है अभिमान कलम का।

क्षात्र तप से युक्त वीर

राजस्थान का इतिहास जब पढ़ते हैं तो एक चित्र मानस पटल पर उभरता है जस खुले आसमान के नीचे एक सुगठित वीर अश्वारूढ है और विद्युत् प्रभा विनिन्दक असि चमक रहा है।

राव जतसी अपनी शक्ति के साथ रकाब पर पर रख कर अश्व पर चढा। चक्रवर्ती राव चूंडा का वंशज इस अश्व पर चढ़ा हुआ ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो भगवान् विष्णु गरुड पर चढ हों।

चारण कवि के भीतर छिप हुए सजग इतिहासकार ने तथ्य का सम्मान करते हुए विजय का श्रय किसी अलौकिक शक्ति को नही दिया–श्रय के अधिकारी वीरो को शौर्य, साहस और राष्ट्र प्रेम क कारण यह विजय प्राप्त हुई है।

यह कृति इतिहास की दृष्टि से बीकानेर के गौरव का एक महत्वपूर्ण प्रामाणिक दस्तावेज है।

इतिहास और काव्य के निकष पर यह कृति खरी है, इसका भाषा के गठन की दृष्टि स भी असाधारण महत्व है। डिंगल भाषा पर कवि का असीम अधिकार है। भाषा मे कसावट है।

भाव, कथा एव चरित्र की छटा अक्षुण्ण रखते हुए कवि ने वैण सगाई का अखण्ड निर्वाह किया है—जिससे स्पष्ट है कि कवि का डिंगल पर असाधारण अधिकार है। भाषा जस कवि के वशवर्तिनी है।

इतिहासकारों एव साहित्य समीक्षकों की दृष्टि में

महा महोपाध्याय डॉ गौरीशकर हीराचद ओझा ने बीकानेर राज्य का इतिहास लिखते समय इस कृति को अत्यन्त प्रामाणिक रूप मे स्वीकार किया है और कामरां के युद्ध का विवरण बीठू सूजा के आधार पर लिखा है—

'कामरा की फौज बीकानेर की ओर अग्रसर हुई, जिसकी सूचना दूतों ने जाकर राव जतसी को दी। वहां पहुच कर भी मुगलो ने अधीनता स्वीकार करने का पैगाम जतसी के पास भेजा, परन्तु उसने बीकानेर के वशज के अनुरूप ही उत्तर दिया, 'जाओ कामरा से कह देना कि जिस प्रकार मेरे वश के मल्लीनाथ, सत सल्ल (सांवल), रणमल, जोधा, बीका दूदा, लूणकण, गगा आदि ने मुसलमानों का मद–भजन किया था, उसी प्रकार मैं भी तरा मान करूंगा।

"जतसी ने इस अवसर पर इतनी बडी सेना का सामना करना उचित न समझा और अपनी भयभीत प्रजा को आगे कर वह वहा से दूर हट गया। केवल भोजराज रूपावत कुछ भाटियो के साथ बीकानेर के गढ (पुराना) की रक्षा के लिय रह गया, जिसे मारकर मुगलों ने वहां पर अधिकार कर लिया, परन्तु जतसी भी चुप न बठा रहा। रात्रि के समय मुगलों की सेना पर आक्रमण किया। राठोडों के इस प्रबल हमले का सामना मुगल

सेना न कर सकी और मैदान छोड कर लाहौर की ओर भाग खड़ी हुई। जतसी की मुसलमानों पर यह विजय राठोडो के इतिहास मे चिरकाल तक अमर रहेगी।

'जतसी वीर और योग्य शासक होने के साथ युद्धनीति का भी अच्छा ज्ञाता था, सदव युद्ध के हर एक पहलू पर गंभीरता पूर्वक विचार कर लेने के अनन्तर ही अपनी नीति निर्धारित करता था। प्रसिद्ध मुगल शासक बाबर की मृत्यु के बाद उसके पुत्र लाहौर का स्वामी कामरां की बीकानेर पर चढाई होने पर जतसी ने अद्भुत युद्ध चातुर्य का परिचय दिया था। कामरां की विशाल वाहिनी का केवल वीरता से परास्त नहीं किया जा सकता था। जतसी भी यह भली भांति समझता था। इस अवसर पर उसने बडे धैर्य और चातुर्य से काम किया। गढ खाली छोड कर उसने यवन सेना को भीतर बढ आने का लालच दिया, जिसमें वह फस गई। फिर तो उसने उसे बुरी तरह हराकर भगा दिया और इस प्रकार अपने पूर्वजों की उपार्जित कीर्ति को और भी उज्ज्वल बनाया।'

'कर्मचन्द्रवंशोत्कीर्तनक काव्यम्' के यशस्वी कवि जयसोम ने जतसी की प्रजावत्सलता के लिए लिखा है कि जतसी ने दुर्भिक्ष के समय अन्न सत्र खोल कर पीड़ित प्रजाजनों को हर प्रकार से सुविधाए पहुचाई थी।

दीनानाथ जनानामुपकार परायणक विचक्षणात्।
तेने च सत्रशालां दुष्काले कालभावन ।।188।।

भारतीय इतिहास के यशस्वी विद्वान् डा दशरथ शर्मा ने दयालदास री ख्यात (भाग 2) की प्रस्तावना मे 'बीठू सूजा को महान् इतिहासकार बताया है और इनकी कृति के महत्व का इतिहास, काव्य एव गीत की दृष्टि से मूल्यांकन करते हुए लिखा है—इस कृति मे जहाँ जतसी की विजय का सजीव वर्णन है वहाँ जतसी के पूर्वजों का भी लेखा जोखा है।

'आक्रमणकारियों ने जनमी द्वारा खाली किये गए किले को अपने अधिकार मे किया—पर, कुछ घण्टों के लिये ही। रात के समय उनके ठिकाना पर जतसी टूट पड़ा और सुबह होते होते बचे खुचे लाहौर की ओर भाग खड़े हुए। जतसी ने पीड़ित नारियों को मुक्त कराया। गायें पुन मारवाड की धरती पर सुरक्षित हो गईं।

डा मोतीलाल मेनारिया—'कामरान काबुल और पंजाब का हाकिम था और इस युद्ध मे परास्त हुआ था। सूजाजी ने इसका सविस्तार वर्णन किया है। इसलिये पुस्तक का ऐतिहासिक महत्व यथेष्ट है। वर्णन शैली सजीव और ओजस्विनी है।

'चूरू मण्डल का शोध पूर्ण इतिहास के लेखक, समर्पित गवेषक श्री गोविन्द अग्रवाल ने इस कृति के सम्बन्ध मे अपना मत देते हुए लिखा है—सूजा की कृति 'छंद राउ जइतसी रउ' न केवल साहित्य की बल्कि इतिहास की भी अमूल्य निधि है। इतिहास के अनेक लुप्त प्रसंगों पर इस कृति के द्वारा महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। मध्य युगीन राजस्थान के श्रेष्ठ ऐतिहासिक काव्यों में इसकी गणना निःसंकोच की जा सकती है।

इस कृति में मारवाड़ के राव चूडा राठोड से लगाकर मुगल बादशाह बाबर के पुत्र कामरां द्वारा बीकानेर के चतुथ राव जतसी पर चढाई करने और जतसी की कामरा पर शानदार विजय प्राप्त करने का ओजस्वी वणन है।

प्रस्तुत सम्पादन

डा तस्सितोरी द्वारा सम्पादित यह कृति सन् 1920 मे प्रकाशित हुई है—यह आज अप्राप्य है। भारतीय विद्या मदिर शोध प्रतिष्ठान ने इस काय को हाथ मे लिया। श्री मूलच द प्राणेश उस समय शोध प्रतिष्ठान म शोध काय म लगे थे—उनको यह काय सौंपा गया। शोध प्रतिष्ठान मे काय का प्रारभ हुआ, काय आगे बढा, फिर रुक गया। अब उ ही के द्वारा सम्पादित छ द राउ जइतसी रउ' बीठू सूजइ रउ कहियउ नाम म मूल पाठ हि दी भावाथ एव विशेष शब्द चर्चा के रूप म प्रकाशित हो रहा है। श्री मूलच द प्राणश डिंगल के गभीर विद्वान् हैं एव छ द सम्पन्नशास्त्र के पुजारी हैं। यह काय इ होने चि तन और वदुष्य के साथ सम्प न किया है। इस प्राचीन ऐतिहासिक वीर खण्डकाव्य की प्रस्तावना लिखी है—डिंगल एव प्राचीन राजस्थानी साहित्य के अधिकारी विद्वान् डा शक्तिदान कविया ने—जिसस ग्रन्थ की महिमा मे श्रीवद्धि हुई है। यह उचित ही है—पुण्य तोया गगा की पूजा गगा जल के द्वारा ही की जा सकती है।

राव बीका की टेकरी के वातायन से

गोधूलि वेला है आज मागशीष महीने की कृष्णा 4 है—यही विजय दिवस है। हम लोग राव बीका की टेकरी पर खड हैं। टेकरी उपेक्षित है जीण है प्राचीन गौरव की एक धूमिल रेखा—अभी भी पुरानी सुघड बनावट लिए मजबूत दीवारें इधर उधर झाँक रही हैं। यही पर राव बीका राव लूणकरण ओर राव जतसी के स्मारक लख—उनकी छतरियों पर उत्कीण हैं।

बीकाजी की टेकडी का स्मारक लेख

I श्री गणश कुलदेव्या प्रसादात् ।। अभिप्सिताथ सिद्धयँ पूजितोय सुरा सुर

II सव विघ्न छिदे तस्म गणाधिपतये नम ।। अथास्मिन शुभ सवत्सरे श्री म नपति

III विक्रमादित्य राज्यात सवत् 1598 वर्षे शाके 1463 प्रवतमाने मासोत्तम मासे

IV फाल्गुन मासे शुभ शुक्ले पक्ष तिथौ एकादश्या भागव वासरे घट्रा 48 पलानि 22

V अश्लेषा नक्षत्र घट्रा 41 पलानि 20 शुक्ल नाम योगे घट्रा 25 पलानि 41 विणज

VI कर्ण एव पचाग शुद्धौ रावजी श्री लूणकरण जी तत्पुत्र रावजा श्री जैतसी जी वमी

VII तिस्टमिधमपत्नीभिश्चतसृभि भोग पत्नीभि सहित श्री नारायण परम भक्ति

VIII ससक्त चित्त परमधाम मुक्तिपद प्राप्त ।। तस्येय सप्रतिमा देहली छत्रिका शास्त्रोक्त

IX विधिना प्रतिष्ठापिता ।। सा चिरतर तिष्ठतु ।। श्री रस्तु ।।

।। शुभ भूपात् ।।

X श्री जतसिहोद्विजराज कीर्ति प्रजेश आसीत्पुर विक्रमेश ।। धर्मेण भूमौ परि

XI पाल्य राज्य पत्नी समेत परमापधाम ।। ।। श्री कल्याणमस्तु ।।

राव जतसी का स्वगवास स 1598 वि में हुआ—इसी स्थान के आसपास—सम्भवत वतमान स्थित श्री लक्ष्मीनारायण जी मदिर के पास ऊँचाई पर जो श्री गणेश जी का मदिर है—उसी के पास एक खुले मैदान मे सुन्दर धनुपाकार गुमटी अवस्थित है कहते हैं यहीं से श्री बीकाजी सूय को अघ्य देते थे। नि सन्देह यह स्थान दुग के अन्तर्भुक्त रहा है। अभी भी इस ऊँचाई पर जब हम खडे होकर देखते हैं तो तीन ओर दूर-दूर तक फला हुआ क्षितिज दिखाई देता है और ऊपर ऊँचा बहुत ऊँचा छतरी की तरह छाया नीला आसमान—यहीं कहीं किला रहा है। जिसकी स्थिति आज भी सुरक्षित सी दिखाई देती है। यहीं से अभी भी शताब्दियो पुराने भौगोलिक स्वरूप को अक्षुण्ण देखा जा सकता है। क्षितिज के और इस ऊचाई के मध्य में लम्बी गहरी खाइया घाटियां, टेकरियां—धाराओं के रूप म स्थित है—लगता है—इसी जूने रास्ते स कामरा आया होगा और खाली किले को देख कर विजय से पागल हो गया होगा। सेना भी मदिरो को तोडने, गायों को मारने और नारी उत्पीडन मे लग गई होगी। मदिरा में डूब गई होगी।

कामरां की इस विनाश लीला का साक्षी आज भी श्री चितामणि का एक शिला लेख—जिसमे कामरां का नाम स्पष्ट रूप से उत्कीण है, उसकी विनाशकारी करतूत के साथ।

स्मारक लेख

I ।। सवत 1592 वर्षे श्री बीकानेयरे महादुर्गे। पूव स 1380 वर्षे श्री जिनकुशल सूरिभि प्रतिष्ठितम्

II श्री मडोवर मूल नायकस्य श्री आदिनाथादि चतुर्विंशति पट्टस्य। स 1591 वर्षे मुग्दलाधिप कम्मरा पातसाहि समा

III गमे विनाशित परिकरस्य उद्ग[द्ध]रित श्री आदिनाथ मूलनायकस्य बोहिपहरा गोत्र म, बच्छा पुत्र म वरसिंह भार्या

IV श्री ठोऊल (वीझल ?) दे पुत्र म मेघा भार्या मठिगलदे पुत्र म वयरसिंह । म पद्ममोहा (साहा ?) भ्या पुत्र म श्रीचंद म महणगादि ॥

V सपरिवाराभ्या खरतरगच्छे श्री जिनहस सूरीश्वराणा पट्टालकार

VI श्री जिन माणिक्य सूरिभि
श्री जयत सोह विजयराज्ये ॥श्री॥

स्मरण रहे– बाबर की मृत्यु को अभी 5 वर्ष ही हुए हैं। हुमायूं अभी जम नहीं पाया है और कामरां ने अपने को लाहौर म जमा लिया है। उसने अपने को स्वतन्त्र घोषित कर दिया है। हुमायूं ने जब अपने इस भाई को प्रेम की सीख दी तो उसके उत्तर मे एक फारसी का प्रसिद्ध शेर लिखकर भेजा—

अरूसे मुल्क कसेदर कनार गीरद चुस्त,
कि बोसा कर लबे शमशीरे आबदार दिहद।

—राज्य की नव वधू का वही दृढतापूर्वक आलिंगन करता है, जो चमकती हुई तलवार के अधरो का चुम्बन करता है।

[मुगलकालीन भारत–हुमायूं (भाग 1)–पृष्ठ 239]

यह उत्तर उस महत्त्वाकांक्षी के भीतर छिपी विजिगीषा का फुत्कार है। ऐसे गर्वोन्मत्त को राव जैतसी ने पराजित करके अपने हिमालय से अडिग व्यक्तित्व का परिचय दिया है। हमारा उद्देश्य हो–विजय–केवल विजय! आज भी हम भारत के प्रहरी बन खड़े हैं। यह विजय दिवस भारत का शाश्वत विजय दिवस हो।

सादुल कालोनी बीकानेर —अक्षयचन्द्र शर्मा
विजय दिवस मार्गशीर्ष कृष्णा 4 स 2048 वि

प्रस्तावना

डिंगल राजस्थान की वह परिनिष्ठित प्रांजल एवं प्रशस्त भाषा है जिसका अपना विशाल शब्दकोश तथा व्याकरण है। निजी रीतिशास्त्र के आधार पर रचा गया विविध विषयक विपुल साहित्य इस समृद्ध भाषा की अपनी निधि है जिसकी समता अन्यत्र दुर्लभ है। ऐतिहासिक वीरकाव्य तो मानो डिंगल की बपौती ही है। डिंगल का शाब्दिक अर्थ ही ठोस, भारी अथवा वजनदार होता है। वीरभूमि राजस्थान में ऐतिहासिक वीरकाव्य का प्रभूत प्रणयन तो स्वाभाविक बात है। राजस्थान की धरती अपने ऊपर गर्जन करने वालों का रक्त भी जाती है, संभवतः इसीलिए बादल भी यहाँ गाज कर बरसने में भय खाते हैं। स्वाधीनता संग्राम के अग्रणी जनकवि शंकरदान सामौर कृत यह दोहा पठनीय है—

पाणी री काई पिये रगत पियोड़ी रज्ज ।
सक मन में आ समझ घण नह बरसे गज्ज ।।

वस्तुतः उत्तरकालीन अपभ्रंश के बाद डिंगल साहित्य विकसित होने लगा और उसका प्रबन्ध-काल था विक्रम की पन्द्रहवीं शताब्दी। इसी काल में विशुद्ध ऐतिहासिक काव्यों का विपुल मात्रा में निर्माण प्रारंभ हुआ। वीरभोग्या वसुन्धरा सूत्र के अनुसार वीरत्व का वन्दन अभिनन्दन करने की यहाँ प्राचीन काल से परम्परा रही है। वीर पुरुष की श्रेष्ठता सिद्ध करने वाला प्राकृत पैंगलम् (14 वीं शताब्दी) ग्रंथ का एक दोहा उल्लेखनीय है—

सुरतरु सुरही परसमणि णहि वीरेस समाण ।
ओ वक्कल अरु कठिण तणु ओ पसु ओ पासाण ।।

अर्थात् कल्पवृक्ष सुरभि और पारसमणि ये तीनों ही वीर पुरुष की तुलना में नहीं ठहरते क्योंकि एक वल्कल युक्त कठोर तन वाला दूसरा पशु और तीसरा पाषाण है। ऐतिहासिक वीरकाव्य वस्तुतः डिंगल साहित्य का हृदय है। डिंगल के ऐतिहासिक प्रबन्धकाव्यों की विशेषताओं के संदर्भ में राजस्थान के इतिहासकार पं. रामकरण जी आसोपा के ये शब्द द्रष्टव्य हैं—

'राजपूताना का इतिहास जैसा डिंगल भाषा में वर्णित है वैसा अन्य किसी भाषा में उपलब्ध नहीं है। कारण यह कि डिंगल भाषा राजस्थानी भाषा है और यह सर्वसम्मत तथा युक्तियुक्त है कि जैसा वर्णन प्रचलित देशभाषा में होता है वैसा अन्य भाषा में नहीं हो सकता।' (राजरूपक भूमिका, पृ.)

राजस्थान की शौय प्रधान सस्कृति के निर्माण और सुरक्षा म यहां के साहित्यकारों का बडा भारी योगदान रहा है। धर्मानुकूल युद्धवीर को ही डिंगल काव्यो मे चरितनायक माना गया है। ऐतिहासिक काव्य रचना का मुख्य उद्देश्य महान् व्यक्तियो के यश को स्थायी रूप देना रहा है, क्योकि कीर्ति ही अमर धन होता है। कहा भी है— 'कीर्तियस्य स जीवति।' लोकहित ही जिनके जीवन का लक्ष्य हो, ऐसे त्यागी और बलिदानी वीरों के चरित्र को प्रख्यात एव प्रकाशित करने से सामाजिक जीवन सस्कारित होता है। यही कारण है कि राजस्थान मे शायद ही कोई ऐसा वीर हो, जिसकी स्मृति मे किसी-न किसी कवि द्वारा काव्यांजलि अर्पित न की गई हो।

डिंगल साहित्य में आकार की दृष्टि स महाकाव्य समझे जाने वाले अधिकाश ऐतिहासिक प्रबन्धकाव्य वस्तुत चरितकाव्य ही हैं। ये प्राय रासो, रूपक, विलास, प्रकास वेलि छन्द इत्यादि नामों से मिलते हैं। झूलणा, झमाळ, नीसाणी दूहा आदि छ द विशेष मे प्रणीत ऐतिहासिक चरितकाव्य भी प्रभूत मात्रा मे उपलब्ध हैं। डिंगल के अधिकांश ऐतिहासिक चरितकाव्य खण्डकाव्य से साम्य रखने वाले हैं। छन्द सज्ञक डिंगल-काव्यो मे प्रारभिक मगलाचरण और अन्त म 'कळस छप्पय को छोडकर शेष पूरी रचना प्राय किसी एक ही छन्द म मिलती है। इस श्रेणी की प्रमुख रचनाओ म 'पाबूजी रो छन्द (मेहा बीठू कृत), देवलजी रो छन्द (सूजा देथा कृत), राउ जइतसी रउ पाधडी छन्द' (रचयिता अज्ञात), 'छन्द राउ जइतसी रउ (सूजा बीठू कृत) इत्यादि विशेष उल्लेखनीय हैं।

छोटे आकार की छ द-सज्ञक रचनाएं अपेक्षाकृत अधिक मिलती हैं, जो विषय की दृष्टि से स्तोत्र अथवा प्रशस्ति आदि काव्यो की कोटि मे आती हैं। यथा— 'चाळकनेची रो छन्द (दुरसा आढा कृत), 'रामदेव जी रो छन्द' (जाला कृत), 'भवानी रो छन्द (कवि नेत कृत), 'रवेची रो छन्द (हमीर रतनू कृत), नाहरखांन राजसिंघोत रो छन्द (माधोदास गाडण कृत) आदि आदि। परवर्ती काल मे ऐसी कृतियाँ प्रभूत मात्रा मे रची गइ किन्तु उनके शीर्षक छन्द के बहुवचन म मिलते हैं। उत्तर मध्यकाल से लेकर वतमान काल तक छ द-सज्ञक डिंगल रचनाओ की धारा सतत रूपण प्रवहमान रही है। परिमाण के साथ वर्ण्य विषयो म भी निरन्तर अभिवृद्धि होती रही। स्तुति प्रशस्ति प्रकृति एव वर्णक काव्य के रूप म डिंगल म छन्द शीर्षक से इतनी रचनाएँ मिलती हैं कि उन पर कई शोध ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। उदाहरणार्थ— आवड जी रा छ द (न द जी खिडिया) सूरज जी रा छन्द (कानो जी मोतीसर), विछमी पीर रा छ द (चिमन जी कविया) यभूगर जी रा छन्द (मोड जी आसिया), बभूत सिद्ध रा छन्द (धूड जी मोतीसर), सोलां सती रा छन्द (अनोप जी बीठू), गगा माई रा छन्द (ब्रजलाल कविया) महाराणा भरसी रा छन्द (पाहडखान आढा), महाराजा मानसिंघ जी रा छ द (जगमाल मोतीसर), सोढ दौलतसिंघ रा छन्द (भगवानदान झीबा) परतापसिंघ ऊदावत रा छ द (आईदान आढा) नाथूसिंघ रा छ द (अलसीदान रतनू), आबू रा छ द (नवल जी लाळस), राव अमरसिंघ री कटारी

रा छन्द (माधौदास गाडण), बीसा छन्द (जुझारदान देथा), खेजड़ी रा छन्द (खीमदान बारठ), बरसाळ रा छन्द (शक्तिदान कविया) आदि उल्लेखनीय हैं।

'रणमल्ल छन्द' (श्रीधर व्यास कृत) जैसी अपवाद स्वरूप कृतियाँ भी मिलती हैं, जिनमें अनेक प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया गया है। छन्द नामक ऐतिहासिक खण्डकाव्यों में सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रंथ छन्द राउ जइतसी रउ (बीठू सूजा नगराजोत कृत) है। इसमें बीकानेर के राव जैतसी द्वारा बादशाह बाबर के पुत्र कामरां के साथ स. 1591 वि., मार्गशीर्ष कृष्णा 4 शनिवार के दिन हुए युद्ध में राठौड़ सेना की विजय का प्रामाणिक और विस्तृत वर्णन है।

'छन्द राउ जइतसी रउ' का रचयिता सूजा बीठू गाँव मूजासर (बीकानेर) का निवासी चारण कवि था। चारणों की एक शाखा का नाम बीठू है, जो उसके पूर्वपुरुष बीठू के नाम से प्रचलित हुई। सूजा बीठू के पिता का नाम नगराज था। नगराज का जन्म तो गाँव मूजासर (बीकानेर) में हुआ था किन्तु उन्हें गाँव ऊनासर (तहसील सरदारशहर, जिला चूरू) जागीर में मिला, जहाँ पर वे रहने लगे और वहीं सूजा बीठू का जन्म हुआ। सूजा बीठू को बीकानेर के राव जैतसी ने 12 गाँवों की ताजीम के साथ लाखपसाव दिया था। उन गाँवों में पाबूसर और खिलेरिया प्रमुख हैं। इस संबंध में यह दोहा प्रचलित है—

जैतराव जाण जगत बस वधारण वान।
सूजन दी सौ सहस थिर पाबूसर थान॥

उक्त पाबूसर गाँव में आज भी मूजावत बीठू चारण रहते हैं और खिलेरिया में भी वे निवास करते हैं। ये दोनों गाँव जिला चूरू में हैं।

सर्वप्रथम इस ऐतिहासिक खण्डकाव्य को प्रकाश में लाने का श्रेय राजस्थानी के अनन्य प्रेमी इटली निवासी सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. एल. पी. टैसीटोरी (सन् 1887-1919 ई.) को है जिसने संवत् 1629 की प्राचीन हस्तलिखित प्रति के आधार पर इसे सम्पादित किया था। डा. टैसीटोरी ने तो दिनांक 15 अक्टूबर 1918 को छन्द राउ जइतसी रउ की भूमिका, परिशिष्ट आदि लिख कर इसे तैयार कर दिया था किन्तु प्रकाशन उनकी मृत्यु के एक वर्ष बाद सन् 1920 ई. में हुआ। इस ग्रंथ का अंग्रेजी भाषा में भावार्थ युक्त संस्करण बीकानेर से ही कुछ समय पहले प्रकाशित हुआ है। राजस्थानी भाषा और साहित्य के मूर्द्धन्य विद्वान् श्री मूलचन्द प्राणेश ने अथक पूर्ण मनोयोग से इस ग्रंथ का सम्पादन कर पूर्ववर्ती संस्करणों से भिन्न इसके मूल वैशिष्ट्य को उजागर किया है। इस ग्रंथ की विशेषताओं का संक्षिप्त परिचय आगे प्रस्तुत किया जा रहा है।

कथावस्तु सर्वप्रथम एक गाहा छन्द में मंगलाचरण के रूप में अनश्वर अक्षर ओंकार विद्या की अधिष्ठात्री देवी शारदा एवं बुद्धि प्रदायक गणपति की वंदना करते हुए कवि ने कुल भूषण राठौड़ों की कीर्ति उजागर करने का मंतव्य प्रकट किया है। इसके पश्चात् छन्द पाधड़ी (पद्धटिका) में मारवाड़ के प्रसिद्ध शासक राव चूंडाजी (स. 1451 1480 वि.) के शौर्यपूर्ण ऐतिहासिक प्रसंगों का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। गाँव सालवड़ी (वर्तमान सालोड़ी—जिला जोधपुर) के थानाधिकारी के रूप में अपने व्यक्तित्व

को विकसित करते हुए राव सलखा के पौत्र एवं वीरमदेव के पुत्र चूडा ने यवनों को परास्त कर मंडोर पर अपना अधिकार जमा लिया था। इसके पश्चात् चूडा द्वारा नागौर विजय, डीडवाना में शासन परिवर्तन, भाटी राणगदेव (पूगल) को मारना तथा जांगलू तक धाक जमाते हुए माहिलों, भाटियों एवं जोहियों को नियन्त्रित रखने जैसी सफलताओं का वर्णन है। खिजर खाँ का कुपित होकर चढाई करना और नागौर के निकट राव चूडा के वीरगति प्राप्त करने तक का उल्लेख है।

राव चूडा के पश्चात् उसके पुत्र राव रणमल्ल (सं 1485 1495 वि) के शासन काल की प्रमुख घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन है। उसने अपने शौर्य से सोजत को सोनगिरों से मुक्त कराया, महमूद को मारकर राणा मोकल (मेवाड) की सहायता की, चाचा और मेरा को मारकर आहाड प्रदेश में धाक जमाई तथा राणा कुम्भा को सिंहासनारूढ़ किया। राणा कुम्भा ने राव रणमल्ल को धोखे से मरवा दिया, मानो साक्षात् धर्म की हत्या कर दी हो— मारियउ रइण सारयात ध्रम्म।

राव रणमल्ल की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र राव जोधा (सं 1510 1545 वि) मारवाड का शासक बना। वह बल में भीम और बुद्धि में सहस्रेश के समान था। उसने आका और हाजा को हुणा दुर्ग के निकट परास्त किया और मेवाड को रौंद कर पुनः अपने मंडोर प्रदेश में लौटा। प्रयाग और गया तीर्थ पर जाकर उसने पितृ-पोषण हेतु तर्पण एवं पिंडदान किया। पूर्व दिशा से हाथियों को लेकर तथा फतहपुरी में रणखेत में सारंग खान पठान को मारकर विजय पताका फहराते हुए राव जोधा अपने राज्य में लौटा था।

राव जोधा के दिवंगत होने पर उसके पुत्र बीका और सातल शक्तिशाली वृषभ की तरह गर्जन करने वाले एक दूसरे से बढकर पराक्रमी हुए। राव बीका तो जांगलू प्रदेश में अन्न एवं धन का जनहितार्थ पुष्कल प्रयोग करता था। उसकी विजय दुंदुभि बजती थी। उसने नरसिंह को मारा, देरावर और देवानगर पर आक्रमण किया, नागौर को दो बार अधिगृहीत किया, पूगल के राव शेखा को बन्दीगृह से मुक्त कराया और संवत् 1542 वि में अकाल में अपनी प्रजा का भरण पोषण किया। राव बीका ने दुर्ग का निर्माण करवाया जिसकी शोभा सातों द्वीपों तक सुविदित है।

राव बीका के स्वर्गगामी होने पर उसका पुत्र राव लूणकरण राज्यारूढ हुआ जिसने मंडोर से लेकर मुलतान तक अपनी आन (दुहाई) फिरवाई। राव लूणकरण के समय देवालयों में नगाडे झालर एवं शंख की ध्वनि गुंजायमान होती थी और धर्म की ध्वजा फहराती थी। सं 1554 वि में अकाल के समय देवालयों में पूजन हेतु प्रसाद तैयार करवा कर प्रजा का भरण पोषण किया। संवत् 1570 वि में राव लूणकरण ने मुहम्मदखान का पराजय स्वीकार करवाई और चारण कवियों को दान स्वरूप हाथी भेंट किए। उसने जसलमेर एवं नागौर पर चढाई की, नारनौल को अधिकृत किया और फीरोजखाँ उसके पैरों आ लगा। यवन सेना से लडता हुआ राव लूणकरण अपने दो पुत्रों — प्रतापसिंह और बरसी सहित वीरगति को प्राप्त हुआ।

राव लूणकरण के पश्चात् उसका पुत्र राव जतसी अग्नि शिखा की भाँति सहसा उठ खडा हुआ। उसने डिगते हुए संसार रूपी आकाश के नीचे मानो थंभा दे दिया हो।

महादेव की भाँति मेधावी राव जतसी ने शक्ति की उपासना कर आत्म शक्ति प्राप्त की—
'सत जइतसीह आपा सकत्ति पइ सेव ममाविय देसपत्ति।' राव लूणकरण उस जागलू प्रदेश का स्वामी है, जहाँ की स्त्रियाँ रूपवती-गुणवती तथा पुरुष पराक्रमी होते हैं। यवन रूपी तक्षक पर राव जतसी रूपी गरुड झपट्टा मारता है। बादशाह कामराँ हाथी के समान है तो जैतसी सिंह रूपी है। कामराँ समुद्र है तो जैतसी अगस्त्य। शत्रु-सेना के रण-वाद्य बजते ही राव जतसी के सैनिक युद्धार्थ कटिबद्ध होने लगे। संवत् 1591, मार्गशीर्ष कृष्णा 4, शनिवार के दिन कामराँ और राव जतसी की सेनाएँ युद्ध स्थल में भिड़ पड़ीं। राव जतसी राम की भाँति थे, अत उनके सैनिकों ने राम का जय घोष किया। प्रतिपक्ष में कामराँ के सिपाही भी मुहम्मद का नाम लेने लगे। राव जतसी अपने चुने हुए 108 विशिष्ट वीरों की माला के सुमेरु स्वरूप थे। रणभूमि में ऐसी खलबली मची, मानो हाथियों के झुण्ड पर शेर टूट पड़े हों। राव जैतसी की ओर से शत्रु दल पर असि धाराएँ ऐसे गिर रही थी, मानो मूसलाधार बरसात हो रही हो। जिस प्रकार राम ने लंकाधिपति रावण पर विजय प्राप्त की थी, उसी प्रकार राव जतसी ने भी कामराँ पर विजय प्राप्त की। कामराँ पराजित हो लाहौर की ओर भाग छूटा। राव जतसी की उस महान् विजय के उपलक्ष्य में मरुधरा में उत्सव आयोजित हुए और यावच्चन्द्र दिवाकर कीर्ति अंकित हुई। इसी के साथ 'छन्द राउ जइतसी रउ' की कथावस्तु समाप्त होती है।

इतिहास की दृष्टि से 'छन्द राउ जतसी रउ' एक विशेष महत्त्वपूर्ण काव्य-कृति है। इसमें मंडोर (मारवाड) के राव चूडाजी से लेकर उसके पुत्र राव रणमल्ल और पौत्र राव जोधा (जोधपुर के संस्थापक) तक के ऐतिहासिक विवरण के पश्चात् राव जोधा के पुत्र और बीकानेर राज्य के संस्थापक राव बीका, उनके पुत्र लूणकरण और पौत्र जतसी तक का संक्षिप्त एवं प्रामाणिक वर्णन अंकित है। कुल 6 पीढ़ियों के वर्णन में प्रथम तीन पीढ़ी तो जोधपुर की हैं। राव चूडाजी से लेकर राव जोधाजी तक की घटनाएँ मारवाड के इतिहास और विभिन्न स्थानों से पुष्ट एवं प्रमाणित होती हैं। बड़ी घटनाएँ इतिहास-सम्मत हैं और छोटी घटनाएँ नवीन शोध के रूप में महत्त्वपूर्ण हैं।

जहाँ तक बीकाजी से लेकर उनके पौत्र राव जैतसी तक के इतिवृत्त का प्रश्न है, ऐतिहासिक दृष्टि से काव्य रचना करने वाले समकालीन कवि सूजा बीठू की लेखनी में सन्देह की गुंजाइश कम ही दिखाई देती है। पूरे ग्रन्थ में कहीं पर भी कपोल-कल्पित, अतिरंजित अथवा अलौकिक तत्वों का उल्लेख न मिलना, इस कृति की ऐतिहासिक महत्ता का पुष्ट प्रमाण है। 'छन्द राउ जइतसी रउ' में उल्लिखित अधिकांश घटनाएँ तो *इतिहास ग्रन्थों से परिपुष्ट हैं किन्तु कुछ प्रसंग ऐसे हैं जिन पर अभी शोध-कार्य होना* बाकी है। सब से महत्त्वपूर्ण तो वे ऐतिहासिक तिथियाँ हैं, जो अज्ञात अथवा अल्पज्ञात रहने के कारण आज भी इतिहास जगत् में अनुसंधान का विषय बनी हुई हैं। 'राउ जइतसी रउ छन्द' के निम्नांकित चार उदाहरण विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं।

(1) संवत् 1542 वि. के अकाल में राव बीका ने अपनी शरणागत प्रजा का दुर्ग निर्माण के निश्चय के साथ भरण-पोषण किया था। यथा—

को विकसित करते हुए राव सलखा के पौत्र एवं वीरमदेव के पुत्र चूंडा ने यवनों को परास्त कर मंडोर पर अपना अधिकार जमा लिया था। इसके पश्चात् चूंडा द्वारा नागौर विजय डीडवाना में शासन-परिवर्तन, भाटी राणगदेव (पूगल) को मारना तथा जांगलू तक धाक जमाते हुए मोहिलों, भाटियों एवं जोहियों को नियंत्रित रखने जैसी सफलताओं का वर्णन है। खिजर खाँ का कुपित होकर चढ़ाई करना और नागौर के निकट राव चूंडा के वीरगति प्राप्त करने तक का उल्लेख है।

राव चूंडा के पश्चात् उसके पुत्र राव रणमल्ल (सं 1485 1495 वि) के शासन काल की प्रमुख घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन है। उसने अपने शौर्य से सोजत को सोनगिरों से मुक्त कराया महमद को मारकर राणा मोकल (मेवाड़) की सहायता की, चाचा और मेरा को मारकर आहाड़ प्रदेश में धाक जमाई तथा राणा कुंभा को सिंहासनारूढ़ किया। राणा कुंभा ने राव रणमल्ल को धोखे से मरवा दिया मानो साक्षात् धर्म की हत्या कर दी हो—'मारियउ रहण साख्यात ध्रम्म।

राव रणमल्ल की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र राव जोधा (सं 1510 1545 वि) मारवाड़ का शासक बना। वह बल में भीम और बुद्धि में सहदेव के समान था। उसने आका और हाजा का हुमा दुर्ग के निकट परास्त किया और मेवाड़ को रौंद कर पुन अपने मंडोर प्रदेश में लौटा। प्रयाग और गया तीर्थ पर जाकर उसने पितृ-पोषण हेतु तर्पण एवं पिंडदान किया। पूर्व दिशा से हाथियों को लेकर तथा फतहपुरी के रणक्षेत्र में सारंग खान पठान को मारकर विजय पताका फहराते हुए राव जोधा अपने राज्य में लौटा था।

राव जोधा के दिवंगत होने पर उसके पुत्र बीका और सातल शक्तिशाली वृषभ की तरह गर्जन करने वाले एक दूसरे से बढ़कर पराक्रमी हुए। राव बीका तो जांगलू प्रदेश में अन्न एवं घृत का जनहितार्थ पुष्कल प्रयोग करता था। उसकी विजय-दुंदुभि बजती थी। उसने नरसिंह को मारा देरावर और देपालपुर पर आक्रमण किया नागौर को दो बार अधिगृहीत किया पूगल के राव शेखा को बन्दीगृह से मुक्त कराया और संवत् 1542 वि के अकाल में अपनी प्रजा का भरण पोषण किया। राव बीका ने दुर्ग का निर्माण करवाया जिसकी शोभा सातों द्वीपों तक सुविदित है।

राव बीका के स्वर्गवासी होने पर उसका पुत्र राव लूणकरण राज्यारूढ़ हुआ, जिसने मंडोर से लेकर मुलतान तक अपनी आन (दुहाई) फिरवाई। राव लूणकरण के समय देवालयों में नगाड़े झालर एवं शंख की ध्वनि गुंजायमान होती थी और धर्म की ध्वजा फहराती थी। सं 1554 वि में अकाल के समय देवालयों में पूजन हेतु प्रसाद तैयार करवा कर प्रजा का भरण पोषण किया। संवत 1570 वि में राव लूणकरण ने मुहम्मदखान को पराजय स्वीकार करवाई और चारण कवियों को दान-स्वरूप हाथी भेंट किये। उसने जसलमेर एवं नागौर पर चढ़ाई की नारनौल को अधिकृत किया और फीरोजखाँ उसके पैरों आ लगा। यवन सेना से लड़ता हुआ राव लूणकरण अपने दो पुत्रों – प्रतापसिंह और बरसी सहित वीरगति को प्राप्त हुआ।

राव लूणकरण के पश्चात् उसका पुत्र राव जैतसी अग्नि शिखा की भाँति सहसा उठ खड़ा हुआ। उसने डिगते हुए संसार रूपी आकाश के नीचे मानो थंभा दे दिया हो।

महेन्द्र की भाँति मेधावी राव जतसी ने शक्ति की उपासना कर आत्म शक्ति प्राप्त की— 'सत जइतसीह आपा सकत्ति पइ सेव मनाविय देमपत्ति।' राव लूणकरण उस जागलू प्रदेश का स्वामी है, जहाँ की स्त्रियाँ रूपवती गुणवती तथा पुरुष पराक्रमी होते हैं। यवन रूपी सर्प पर राव जतसी रूपी गरुड झपट्टा मारता है। बादशाह कामराँ हाथी के समान है तो जतसी सिंह रूपी है। कामराँ समुद्र है तो जैतसी अगस्त्य। शत्रु सेना के रण वाद्य बजते ही राव जैतसी के सैनिक युद्धार्थ कटिबद्ध होने लगे। संवत् 1591, मार्गशीर्ष कृष्णा 4, शनिवार के दिन कामरा और राव जैतसी की सेनाएँ युद्ध स्थल मे भिड पडी। राव जतसी राम की भाँति थे, अत उनके सैनिको ने राम का जय घोष किया। प्रतिपक्ष मे कामराँ के सिपाही भी मुहम्मद का नाम लेने लगे। राव जतसी अपने चुने हुए 108 विशिष्ट वीरों की माला के सुमेरु स्वरूप थे। रणभूमि म ऐसी हाहाकार मची, मानो हाथियों के झुण्ड पर शेर टूट पडे हो। राव जतसी की ओर से शत्रु-दल पर असि धाराएँ ऐसे गिर रही थीं, मानो मूसलाधार बरसात हो रही हो। जिस प्रकार राम ने लकाधिपति रावण पर विजय प्राप्त की थी, उसी प्रकार राव जैतसी ने भी कामराँ पर विजय प्राप्त की। कामराँ पराजित हो लाहौर की ओर भाग छूटा। राव जतसी की उस महान् विजय के उपलक्ष्य में मधघरा म उत्सव आयोजित हुए और यावच्चन्द्र दिवाकर कीर्ति अकित हुई। इसी के साथ 'छ द राउ जइतसी रउ' की कथावस्तु समाप्त होती है।

इतिहास की दृष्टि स 'छन्द राउ जतसी रउ' एक विशेष महत्वपूर्ण काव्य-कृति है। इसमें मडोर (मारवाड) के राव चूडाजी स लेकर उसके पुत्र राव रणमल्ल और पौत्र राव जोधा (जोधपुर के संस्थापक) तक के ऐतिहासिक विवरण के पश्चात् राव जोधा के पुत्र और बीकानेर राज्य के संस्थापक राव बीका, उनके पुत्र लूणकरण और पौत्र जतसी तक का संक्षिप्त एव प्रामाणिक वणन अकित है। कुल 6 पीढियों के वणन मे प्रथम तीन पीढी तो जोधपुर की हैं। राव चूडाजी से लेकर राव जोधाजी तक की घटनाएँ मारवाड के इतिहास और विभिन्न ख्यातों से पुष्ट एव प्रमाणित होती हैं। बडी घटनाएँ इतिहास-सम्मत हैं और छोटी घटनाएँ नवीन ज्ञातव्य के रूप म महत्वपूर्ण हैं।

जहाँ तक बीकाजी से लेकर उनके पौत्र राव जैतसी तक के इतिवृत्त का प्रश्न है, ऐतिहासिक दृष्टि से काव्य रचना करने वाले समकालीन कवि सूजा बीठू की लेखनी मे सन्देह की गुजाइश कम ही दिखाई दती है। पूरे ग्रन्थ मे कहीं पर भी कपोल-कल्पित, अतिरजित अथवा अलौकिक तत्वों का उल्लेख न मिलना, इस कृति की ऐतिहासिक महत्ता का पुष्ट प्रमाण है। 'छन्द राउ जइतसी रउ' म उल्लिखित अधिकाश घटनाएँ तो इतिहास ग्रन्थों से परिपुष्ट हैं, किन्तु कुछ प्रसग ऐसे हैं, जिन पर अभी शोध-काय होना बाकी है। सब से महत्वपूर्ण तो वे ऐतिहासिक तिथियाँ हैं जो अज्ञात अथवा अल्पज्ञात रहने के कारण आज भी इतिहास जगत् मे अनुसधान का विषय बनी हुई हैं। 'राउ जइतसी रउ छन्द के निम्नांकित चार उदाहरण विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं।

(1) संवत् 1542 वि के अकाल म राव बीका ने अपनी शरणागत प्रजा का दुग निर्माण के निश्चय के साथ भरण-पोषण किया था। यथा—

को विकसित करते हुए राव सलखा के पौत्र एवं वीरमदेव के पुत्र चूडा ने यवनों को परास्त कर मंडोर पर अपना अधिकार जमा लिया था। इसके पश्चात् चूडा द्वारा नागौर विजय डोडवाना में शासन-परिवर्तन, भाटी राणगदेव (पूगल) को मारना तथा जांगलू तक धाक जमाते हुए मोहिलों भाटियों एवं जोहियों को नियन्त्रित रखने जैसी सफलताओं का वर्णन है। खिजर खाँ का कुपित होकर चढ़ाई करना और नागौर के निकट राव चूडा के वीरगति प्राप्त करने तक का उल्लेख है।

राव चूडा के पश्चात् उसके पुत्र राव रणमल्ल (स 1485 1495 वि) के शासन काल की प्रमुख घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन है। उसने अपने शौर्य से सोजत को सोनगिरों से मुक्त कराया महमद को मारकर राणा मोकल (मेवाड) की सहायता की चाचा और मेरा को मारकर आहाड प्रदेश में धाक जमाई तथा राणा कुंभा को सिंहासनारूढ़ किया। राणा कुंभा ने राव रणमल्ल को धोखे से मरवा दिया मानो साक्षात् धर्म की हत्या कर दी हो— मारियउ रइण सारयात ध्रम्म।

राव रणमल्ल की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र राव जोधा (स 1510 1545वि) मारवाड का शासक बना। वह बल में भीम और बुद्धि में सहदेव के समान था। उसने आका और हाजा का हुमा दुर्ग के निकट परास्त किया और मेवाड को रौंद कर पुन अपने मंडोर प्रदेश में लौटा। प्रयाग और गया तीर्थ पर जाकर उसने पितृ-पोषण हेतु तर्पण एवं पिण्डदान किया। पूर्व दिशा से हाथियों को लेकर तथा फतहपुरी के रणक्षेत्र में सारंग खान पठान को मारकर विजय-पताका फहराते हुए राव जोधा अपने राज्य में लौटा था।

राव जोधा के दिवंगत होने पर उसके पुत्र बीका और सातल शक्तिशाली वृषभ की तरह गर्जन करने वाले एक दूसरे से बढ़कर पराक्रमी हुए। राव बीका तो जांगलू प्रदेश में अन्न एवं घृत का अनहिनाथ पुष्कल प्रयोग करता था। उसकी विजय दुंदुभि बजती थी। उसने नरसिंह को मारा देरावर और देवानपुर पर आक्रमण किया नागौर को दो बार अधिगृहीत किया पूगल के राव शेखा को बन्दीगृह से मुक्त कराया और संवत् 1542 वि में अकाल में अपनी प्रजा का भरण पोषण किया। राव बीका ने दुर्ग का निर्माण करवाया जिसकी शोभा सातों द्वीपों तक सुविदित है।

राव बीका के स्वर्गवासी होने पर उसका पुत्र राव लूणकरण राज्यारूढ हुआ जिसने मंडोर से लेकर मुलतान तक अपनी आन (दुहाई) फिरवाई। राव लूणकरण के समय देवालयों में नगाड झालर एवं शंख की ध्वनि गुंजायमान होती थी और धर्म की ध्वजा फहराती थी। स 1554 वि में अकाल के समय देवालयों में पूजन हेतु प्रसाद तैयार करवा कर प्रजा का भरण पोषण किया। संवत 1570 वि में राव लूणकरण ने मुहम्मदखान को पराजय स्वीकार करवाई और चारण कवियों को दान स्वरूप हाथी भेंट किये। उसने जैसलमेर एवं नागौर पर चढ़ाई की नारनौल को अधिकृत किया और फीरोजखाँ उसके पैरों आ लगा। यवन सेना से लडता हुआ राव लूणकरण अपने दो पुत्रों – प्रतापसिंह और वरसी सहित वीरगति को प्राप्त हुआ।

राव लूणकरण के पश्चात् उसका पुत्र राव जैतसी अग्नि शिखा की भाँति सहसा उठ खड़ा हुआ। उसने डिगते हुए संसार रूपी आकाश के नीचे मानो थंभा दे दिया हो!

सहदेव की भांति मेधावी राव जतसी ने शक्ति की उपासना कर आत्म शक्ति प्राप्त की—'सत जइतसीह आपा सकत्ति पइ सेव मनाविय देसपत्ति। राव लूणकरण उस जागलू प्रदेश का स्वामी है जहाँ की स्त्रियाँ रूपवती-गुणवती तथा पुरुष पराक्रमी होते हैं। यवन रूपी सर्प पर राव जतसी रूपी गरुड झपट्टा मारता है। बादशाह कामराँ हाथी के समान है तो जतसी सिंह रूपी है। कामराँ समुद्र है, तो जैतसी अगस्त्य। शत्रु-सेना के रण-वाद्य बजते ही राव जतसी के सैनिक युद्धार्थ कटिबद्ध होने लगे। संवत् 1591, मार्गशीर्ष कृष्णा 4, शनिवार के दिन कामराँ और राव जतसी की सेनाएँ युद्ध स्थल में भिड पड़ी। राव जतसी राम की भाँति थे, अत उनके सैनिको ने राम का जय घोष किया। प्रतिपक्ष में कामरा के सिपाही भी मुहम्मद का नाम लेने लगे। राव जतसी अपने चुने हुए 108 विशिष्ट वीरो की माला के सुमेरु-स्वरूप थे। रणभूमि में ऐसी मारकाट मची, मानो हाथियों के झुण्ड पर शेर टूट पड़े हों। राव जतसी की ओर से शत्रु दल पर असि धाराएँ ऐसे गिर रही थी, मानो मूसलाधार बरसात हो रही हो। जिस प्रकार राम ने लंकाधिपति रावण पर विजय प्राप्त की थी, उसी प्रकार राव जतसी ने भी कामरा पर विजय प्राप्त की। कामराँ पराजित हो लाहौर की ओर भाग छूटा। राव जतसी की उस महान् विजय के उपलक्ष्य में मरुधरा में उत्सव आयोजित हुए और यावच्चन्द्र दिवाकर कीर्ति अंकित हुई। इसी के साथ 'छन्द राउ जइतसी रउ' की कथावस्तु समाप्त होती है।

इतिहास की दृष्टि से 'छन्द राउ जतसी रउ' एक विशेष महत्त्वपूर्ण काव्य-कृति है। इसमें मडोर (मारवाड) के राव चूडाजी से लेकर उसके पुत्र राव रणमल्ल और पौत्र राव जोधा (जोधपुर के संस्थापक) तक के ऐतिहासिक विवरण के पश्चात् राव जोधा के पुत्र और बीकानेर राज्य के सस्थापक राव बीका, उनके पुत्र लूणकरण और पौत्र जतसी तक का संक्षिप्त एव प्रामाणिक वर्णन अंकित है। कुल 6 पीढ़ियो के वर्णन में प्रथम तीन पीढ़ी तो जोधपुर की हैं। राव चूडाजी से लेकर राव जोधाजी तक की घटनाएँ मारवाड के इतिहास और विभिन्न ख्यातो से पुष्ट एव प्रमाणित होती हैं। बड़ी घटनाएँ इतिहास-सम्मत हैं और छोटी घटनाएँ नवीन तथ्य के रूप में महत्त्वपूर्ण हैं।

जहाँ तक बीकाजी से लेकर उनके पौत्र राव जैतसी तक के इतिवृत्त का प्रश्न है, ऐतिहासिक दृष्टि से काव्य रचना करने वाले समकालीन कवि सूजा बीठू की लेखनी में सन्देह की गुंजाइश कम ही दिखाई देती है। पूरे ग्रन्थ में कहीं पर भी कपोल-कल्पित, अतिरंजित, अथवा अलौकिक तत्त्वों का उल्लेख न मिलना, इस कृति की ऐतिहासिक महत्ता का पुष्ट प्रमाण है। 'छन्द राउ जइतसी रउ' में उल्लिखित अधिकाश घटनाएँ तो इतिहास-ग्रन्थों से परिपुष्ट हैं किन्तु कुछ प्रसग ऐसे हैं, जिन पर अभी शोध-कार्य होना बाकी है। सब से महत्त्वपूर्ण तो वे ऐतिहासिक तिथियाँ हैं जो अज्ञात अथवा अल्पज्ञात रहने के कारण आज भी इतिहास जगत् में अनुसंधान का विषय बनी हुई हैं। 'राउ जइतसी रउ छन्द' के निम्नांकित चार उदाहरण विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं।

(1) संवत् 1542 वि के अकाल में राव बीका ने अपनी शरणागत प्रजा का दुर्ग निर्माण के निश्चय के साथ भरण-पोषण किया था। यथा—

छत्रपति उबारिय छत्र छांह। बइसाळइ आठो दीध बांह।
बीरइ दुरग करि कीध वत्त। सोभाग दीप जाणइ सवत्त॥(49)

इतिहास ग्रंथो और राजस्थानी ख्यातो से यह तो सुस्पष्ट है कि राव बीकाजी ने सर्वप्रथम स 1542 म दुर्ग का निर्माण राती घाटी पर करवाया था और बाद मे (स 1545, वशाख सुदी 2 शनिवार के दिन) बीकानेर शहर बसाया था। रही अकाल की बात सो अधिकांशत कोट किलो के निर्माण ऐसे ही समय म होते थे। कहावत है—'रत न मिळना रोट राजा र बणता कोट'। इस दृष्टि से उपर्युक्त वर्ष स 1542 म जागलू प्रदेश अकाल की चपट मे था, यह नवीन तथ्य इस ग्रंथ म ज्ञात होता है।

(2) सवत् 1554 वि म अकाल की विभीषिका मे बीकानेर के राव लूणकरण ने देव-पूजार्थ अन्न के कडाह कर देवालयो म लोगो का भोजन प्रदान किया और उनकी रक्षा की। यथा—

'कउपनउ समीसर करनि चालि। देवरउ दुनी राखी दुकालि।(54)
करन राउ करइ कुसमइ कडाहि। मेदनी उबारी महल माहि॥(55)

उपर्युक्त वर्ष के परिप्रेक्ष्य म अधिकांश इतिहासकारों द्वारा मान्य बीकानेर के सस्थापक राव बीकाजी की निर्वाण तिथि की प्रामाणिकता मे सन्देह उत्पन्न होता है। आज तक अधिकाश इतिहासकार एक दूसरे की देखा देखी यही लिखते आ रहे हैं कि राव बीकाजी का स्वर्गवास सवत् 1561 वि आश्विन शुक्ला 3 के दिन हुआ था और उसके पश्चात् राव लूणकरण राजगद्दी पर बठा। इस मत को मानने वाल कविराज श्यामलदास (वीरविनोद, पृ 480) मुन्नर क हैयाजूदेव (बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ 42) ठा किशोरसिंह बाहस्पत्य (करनी चरित्र, पृ 165) विश्वेश्वरनाथ रेउ (मारवाड का इतिहास द्वितीय भाग, पृ 682) गौरीशकर हीराचद ओझा (बीकानेर राज्य का इतिहास भाग 1, पृ 112) इत्यादि हैं।

दूसरी ओर मुहता नणसी री ख्यात (भाग 3 पृ 181) के अनुसार सवत 1554 म रावजी लूणकरणजी टीक बठा। 'तवारीख जसलमर (लेखक लखमीचद, स 1948 वि पृ 313) के अनुसार सवत् 1551 म राव बीकाजी का 56 वर्ष की अवस्था म स्वर्गवास हुआ और राव लूणकरण सवत् स 1551 म पाट विराजे।'

उपर्युक्त मतभेदो के रहते हुए यह कहना कठिन है कि अमुक मत ही पूर्णत सही है। फिर भी इतना अवश्य है कि उपर्युक्त लम्बी सूची वाले व्यक्तियो ने एक दूसरे की देखा देखी स ही सवत् 1561 लिखा है अत उसम सन्देह की गुजाइश है। दूसरी तरफ कवि सूजा बीठू खुद राव जतसी के समय जीवित था और उसी शताब्दी की घटनाओं के सम्बन्ध मे उसक लिखित प्रमाण को काटने का कोई औचित्य या ठोस आधार उपलब्ध नही है। यह विशेष ध्यान देने योग्य बात है कि छद राउ जइतसी रउ के 49 वें छद म राव बीकाजी की मृत्यु और उनके पुत्र राव लूणकरण के सिंहासनारूढ़ होने का

स्पष्ट उल्लेख हुआ है। कवि के अनुसार बलवान वृषभ के समान राव बीका तो मृत्यु को प्राप्त हुआ और कुल में सूर्य की भाँति राव लूणकरण सहसा उदित हुआ। यथा—

'वेगडउ साह बीकउ विगत। कुळ भाण तेथि उदियउ करन।(50)

इस स्पष्ट कथन के तुरंत बाद छन्द संख्या 54 में ही यह उल्लेख किया गया है कि संवत 1554 के अकाल के समय राव लूणकरण ने देवालयों में पूजार्थ अन्न चढ़ा कर गरीब जनता को उदर पूर्ति का साधन उपलब्ध कराया। समकालीन व्यक्ति के इस कथन को न मानने का कोई युक्तिसंगत कारण दृष्टिगत नहीं होता। मेरा अनुमान है कि जिन इतिहासकारों ने राव बीकाजी की मृत्यु तिथि का उल्लेख शिलालेख अथवा हस्त लिखित प्रति में जहाँ कहीं भी पढ़ा होगा, वहाँ उन्होंने राजस्थानी की मुडिया लिपि पर ध्यान नहीं दिया। इस लिपि में 5 और 6 अंकों की आकृति में बहुत ही कम अंतर होता है। संभवत संवत् 1551 को ही 1561 वि समझने की भूल हुई है। प्रसिद्ध कवि दुरसा आढा की मृत्यु का वर्ष अभी तक अधिकांश विद्वान् संवत् 1708 अथवा 1712 मानते रहे परंतु इन पंक्तियों के लेखक ने दुरसा आढा के गाँव पांचेटिया में जाकर उनकी छतरी के शिलालेख को शुद्ध रूप में पढ़ा, तब ज्ञात हुआ कि दुरसा आढा की वास्तविक निर्वाण-तिथि है संवत् 1699 वि (शक सं 1565), वैशाख शुक्ला सप्तमी, शनिवार (वरदा भाग 34, अंक 2 3)। यही स्थिति राव बीकाजी के स्वर्गवास और राव लूणकरण के राज्यतिलक-सम्बन्धी वर्ष के विषय में प्रतीत होती है।

वास्तविकता की अधिक संभावना तो बीठू सूजा कृत छन्द में उल्लिखित सं 1554 वि ही प्रतीत होती है, क्योंकि ओझाजी ने बीकाजी के स्वर्गवास का वर्ष संवत् 1561 मानते हुए भी तिथि आश्विन शुक्ला तृतीया के स्थान पर आषाढ शुक्ला पंचमी माना है (बीकानेर राज्य का इतिहास भाग 1 पृ 109)। राव बीकाजी की जन्म तिथि के विषय में भी इतिहासकारों में मतभेद है। कुछ लोग उनका जन्म सं 1495 में मानते हैं और कुछ संवत् 1497 में। हस्तलिखित ख्यातों में भी एकरूपता नहीं है। ऐसी स्थिति में इस ओर नये सिरे से अनुसंधान की महती आवश्यकता है।

(3) संवत् 1570 वि में राव लूणकरण ने हाथियों के गले में बन्धन डाल कर चारण कवियों को रीझ में भेंट किये थे। यथा—

सतरहउ समीसर राइ समत्थि। हाथि वरीसि गळहत्थि हत्थि।
इळ राइ करन वारउ कि इद। गुणियणां ग्रहे बाधा गइंद।।(61)

इस तथ्य की कतिपय इतिहास ग्रंथों में पुष्टि होती है। बीकानेर राज्य का इतिहास (कुंवर कन्हैयाजू देव कृत, पृ 44) के अनुसार संवत् 1570 में बीकानेर के राव लूणकरण ने मेवाड़ के राणा रायमल की बेटी (सांगा की बहिन) से विवाह किया था, उस समय बीस हाथी और सौ घोड़े चारणों को दान में दिये थे। कविराज श्यामलदास कृत 'वीरविनोद' (पृ 481) में भी सं 1570 फाल्गुन कृष्णा 3 के दिन राव लूणकरण द्वारा चित्तौड़ में विवाहोपरान्त इनाम इकराम में बहुत धन लुटाने का उल्लेख हुआ है। अतः उपर्युक्त संवत्सर की घटना इतिहास-सम्मत प्रमाणित होती है।

(4) सवत् 1591, मागशीर्ष कृष्णा 4, शनिवार के दिन कामरां और जतसी की सेनाओ के बीच युद्ध हुआ, जिसम राव जतसी की विजय हुई थी। कवि सूजा बीठू ने एक गाहा छन्द म इस तिथि का स्पष्ट उल्लेख किया है—

पनर समत थेकाणव पवररि। पुणि मागसिरि प्रथम पखि पूवरि।
हठमल हृदयह सउँ हथियारे। विढियउ जइत चउथ सिनिवारे॥ (371)

इस ऐतिहासिक घटना का पूव आधुनिक राजस्थान (डॉ रघुबीर सिंह) जसे इतिहास ग्रथ में तो उल्लेख भी नही हुआ है। कुछ इतिहासकारो ने घटना का उल्लेख तो किया, परन्तु सवत् आदि का पता ही नही है जस बीकानेर राज्य का इतिहास' (कुवर कन्हैयाजू देव कृत)। कुछ इतिहासकारो ने इस घटना को सवत् 1595 में होना लिखा है परन्तु मास, पक्ष वार आदि का उल्लेख नहीं किया है जसे श्यामलदास ('वीर विनोद पृ 483), डॉ करणीसिंह(बीकानेर राज्य का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध पृ 40 41) आदि। ठा किशोरसिंह बार्हस्पत्य ने इस युद्ध को सवत् 1595 के आषाढ़ मास म होना लिखा है (करणी चरित्र पृ 205) परन्तु इस तिथि का कोई ठोस प्रमाण प्रस्तुत नही किया है। इस प्रकार अधिकांश इतिहासकारों को इस युद्ध की सही तिथि का पता ही नहीं था।

'छन्द राउ जइतसी रउ के प्रकाशित होने पर कुछ लोगो ने इस प्रामाणिक तिथि का उल्लेख अवश्य किया है। जसे 'राजस्थान का इतिहास (तिथिक्रम से पृ 19) मे श्री सुखवीरसिंह गहलोत ने ईस्वी सन् म उक्त तिथि को स्वीकार किया है—'सन1534 (अक्टूबर 26) कामरान से बीकानेर के राव जतसिंह का युद्ध हुआ। कामरान मैदान छोड कर लाहौर की ओर भाग गया।'

राजस्थान के प्रसिद्ध चारण कवि स्व हिंगलाजदान जी कविया (सेवापुरा जयपुर) ने अपने स्तुति-काव्य महाई महिमा (रचनाकाल स 1988 वि) म महाशक्ति करणीजी की कृपा से राव जतसी की कामरां पर विजय 'अकानां वामतो गति ' के अनुसार सवत् 1591 मागशीर्ष कृष्णा 4 शनिवार को ही माना है। यथा—

(छन्द मोतीदाम)
1 9 15
पृथी ग्रह पन्द्रह साल पँवार।
वदी सह चोथ सनीसर वार।
घडी नव चक्ख चढ्या धटियाळ।
प्रणामत पाव लख्यो भुवपाळ॥

उपयुक्त छन्द मे सह' का अथ मागशीष और पँवार का अथ विक्रम (सवत्) है। राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर की एक हस्तलिखित ख्यात मे भी राव लूणकरण की कामरां पर हुई विजय का वष सवत् 1591 लिखा हुआ है। इस प्रकार इस एतिहासिक घटना का प्रामाणिक वष, महीना, पक्ष तिथि और वार सवप्रथम छन्द राउ जइतसी रउ के द्वारा ही प्रकाश म आया है जो बहुत महत्त्वपूर्ण है।

यह उल्लेखनीय है कि सूजा बीठू ने 'छन्द राव जइतसी रउ' की रचना विशुद्ध ऐतिहासिक उद्देश्य से ही की है। यही कारण है कि उसने कहीं पर भी चारणी देवी करणी जी के दर्शन, आशीर्वाद अथवा अदृश्य तीर चलने जैसी बातों का उल्लेख नहीं किया है, जबकि करणी जी की स्तुति में रचे गये डिंगल-काव्यों के बीसियों उदाहरण मेरे निजी संग्रह में उपलब्ध हैं, जिनके अनुसार राव जतसी की कामरां पर विजय केवल करणी जी के दिव्य चमत्कार के कारण ही हुई थी। यह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है कि करणी जी का विवाह देपाजी बीठू (गाँव साठीका) के साथ हुआ था और कवि सूजा नगराजोत भी बीठू शाखा का ही चारण था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि चारणी महाशक्ति करणीजी के प्रति राव बीका, लूणकरण और जतसी तीनों ही पीढ़ियों के मन में अपार श्रद्धा थी। राव जतसी के युद्ध में जिन 108 योद्धाओं का घोड़ों के नाम सहित उल्लेख हुआ है, उनमें पाबूपसाव, करणीपसाइ दवीपसाइ सुरिजपसाव पाउइपसाव, करणीकुमेर आदि घोड़ों के नाम हैं, जो देवी देवताओं के प्रसाद रूप में मान कर ही रखे गये होंगे। फिर भी युद्ध में विजय का श्रेय देवी-देवता को न देकर शूरवीर सैनिकों को देना, निश्चय ही कवि के ऐतिहासिक दृष्टिकोण को प्रमाणित करता है

डॉ एल पी टसीटोरी ने सूजा बीठू के इस ऐतिहासिक दृष्टिकोण की विशेष रूप से सराहना की थी। प्रस्तुत संस्करण में विद्वान् सम्पादक श्री मूलचंद प्राणेश ने कुछ छन्दों का भावार्थ लिखते समय 'करनि' शब्द का अर्थ करणी जी माना है जो सही प्रतीत नहीं होता। अपभ्रंश की शैली में लिखे गये इस ग्रंथ में राव लूणकरण के लिए ही करन या करनि शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे—

(i) धुयाहर चाहिम करनि धज्ज। पाळ के सुती वासइ परज्ज ॥ (52)
(ii) जेसाणइ ऊपरि करनि जाइ। बाजिन्न लेय नीसाण घाइ ॥ (65)

वस्तुतः राव लूणकरण ने बीकानेर में देवालय पर ध्वजा चढ़ाई थी और जैसलमेर पर चढ़ाई की थी। करणी जी तो स्वयं उस समय विद्यमान थी और वे आवडदेवी की पूजा करती थीं अतः करणी के देहरे पर जीवन-काल में ध्वजा चढ़ाने की बात न तो परम्परानुकूल है और न ही प्रामाणिक। राजस्थान के ऐतिहासिक काव्य प्रणेताओं में इतिहास की दृष्टि कितनी प्रखर थी, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि 'राव जतसी री पायड़ी छन्द' (रचयिता अज्ञात) सूजा बीठू कृत 'छन्द राउ जइतसी रउ' से बड़ी (कुल 485 छंद) रचना है और 'राव जतसी री रासौ' (राजस्थान भारती भाग 2, अंक 2, मार्च, 1948) ग्रंथ भी कामरां पर जतसी की विजय से सम्बन्धित ग्रंथ है, किन्तु किसी में भी अलौकिक शक्ति या करणी जी के चमत्कारों का उल्लेख नहीं मिलता। ये तीनों ग्रंथ राव जतसी के समकालीन चारण कवियों की रचनाएं प्रतीत होती हैं किन्तु ऐतिहासिकता की रक्षा के लिए ही ऐसा विशुद्ध रूप उन्होंने अपनी लेखनी से अंकित किया।

करणी जी की दिव्य लीलाओं के क्रम में राव जतसी की कामरां पर विजय का श्रेय निस्सदेह भगवती की अदृश्य शक्ति को ही दिया गया है। इस विषय में स्तुति-काव्यों

के कतिपय उद्धरण द्रष्टव्य हैं—

(1) बाई रा बाण वहै बिरदत । जोवै जुध कोतक ऊभो जत ।। (मेहा वीठू)

(2) वीको घर वीकांण, धणी कीधो धणियाणी ।
कमरा रो कथ भाग, कियो ऊपर किनियाणी ।। (गिरधर)

(3) कमरा दळ ऊपर कोप कियो । देवी राव नैं जत सुजस्स दियो ।। (गंगादान)

(4) जीतायो राव जत मेछ कमरा दळ मार । (कवि हिम्मता)

(5) पतायत जत र करण मन पूरणा, दरस अनपूरणा प्रतख दीधो ।।
(बखराजी खिड़िया)

(6) कर जोड़ जतमी अरज कीन । ओ देस धरा गढ तो अधीन ।।
तद सुणत करनला मात तत्त । सदेह दरस दीनो सगत्त ।। (रामदान लाळस)

(7) तहैं दीठो कमर चला ताप । ऐ सब वीसहथ लड़ आप ।
इउँ जाण असुर भागो अछेह । लूटाय र डेरा कुजस लेह ।। (पाबूदान आशिया)

(8) कमर कोप कियो जुध करवा लेवा माल खजांना लोड ।
जत पुकार सुणे जद जगदम, मेहा सधू दियो दळ मोड ।। (मोहणदास कविया)

(9) जत पुकारे ओगणी कल्ली ऊपर कर ।
सगत राव साथे हुवा, कर झाल खिरम्मर ।
भागो कमरो पातसाह उडिया रिण आसुर ।। (ठा जूंझारसिंह मताणा)

(10) जत भूप जत री, हार कमरा री होसी ।
मृड पोसी मुडमाळ, जगतपत कौतुक जोसी ।। (हिंगलाजदान कविया)

(11) जतमाल जीताडण दईता ताडण भांनियो पाडण सींह कळा । (जूंझारदान देथा)

उपर्युक्त उदाहरणों म वर्णित अलौकिक तत्त्व देवी-स्तुति, भक्ति भावना अथवा काव्य-कला की दृष्टि से उल्लेखनीय होते हुए भी इतिहास की दृष्टि से प्रामाणिक नहीं कहे जा सकते । मेहा वीठू को छोड़कर उद्धृत स्तोत्र काव्य के शेष रचयिता कवि विक्रम की 18वीं शताब्दी स लेकर 20वी शताब्दी के मध्य हुए हैं । इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन क आधार पर छन्द राउ जइतसी रउ (सूजा वीठू कृत) का ऐतिहासिक महत्त्व तो स्वत सिद्ध है ।

साहित्यिक मूल्यांकन

छन्द राउ जइतसी रउ' डिंगल क एतिहासिक प्रबन्धकाव्यों की प्रमुख विशेषताओं से अभिमण्डित एक महत्त्वपूर्ण काव्य-कृति है । इसमें इतिहास और काव्य का मणि-कांचन सयोग है । कुल 401 छन्दों मे सम्पूर्ण होने वाला यह एक उत्कृष्ट कोटि का वीर काव्य है । इसमे 11 गाहा, 4 दूहा 385 पाधड़ी छन्द और अन्त में एक छप्पय (कळस) है । डिंगल के प्रबन्धकाव्यों म श्रीगणेश के रूप म गाहा और अन्त मे 'कळस (पूर्णाहुति) के रूप में छप्पय छन्द की परम्परा रही है । 'छन्द राउ जइतसी रउ' का

रम्भिक मगलाचरण एक गाहा से हुआ है और बाद मे अधिकाश 'पाघडी' छन्दों का रोग हुआ है। कवि के छन्द प्रयोग का परिचय आगे प्रस्तुत है।

(1) पाघडी वस्तुत 'पाघडी' शब्द सस्कृत के पद्धटिका का ही तद्भव रूप है। त्तादाम त्रोटक, पद्धटिका एव भुजगप्रयात जस सस्कृत के लोकप्रिय छन्द डिंगल मे तीदाम, त्रोटक, पद्धरी और भुजगी छन्दा के नाम से खूब प्रयुक्त हुए हैं। पाघडी पद्धरी) छन्द का प्रयोग राजस्थानी कवियो ने वीरता, भक्ति और शृगार तीनो रसों समान रूप स किया है। 'राव जैतसी री पाघडी छन्द (रचयिता अज्ञात) के अतिरिक्त ारणी महाशक्ति देवलबाई (जिनका प्रमुख स्थान गाँव सारोडा उमरकोट है) की हिमा में रचित देवलजी रो छन्द (सूजा देपा कृत) म प्रारभिक चार गाथा और ातिम छप्पय (कळस) का छोड कर शेष 84 छन्द पद्धरी हैं। यथा—

आसत्त छत्त विह्रुव अखूट। बळिहार नाम देवल्ल बूट।
सुजियो कहै आधा सगत्त। गुणवन्त सहै कुण तून गत्त॥ (82)

कविराजा करणीदानजी कविया ने सवत् 1787 म जोधपुर के महाराजा अभयसिहजी द्वारा अहमदाबाद विजय के उपलक्ष्य मे प्रणीत महान् ग्रथ सूरज प्रकास का साराश 'विरद सिणगार' पद्धरी छन्दो मे ही रचा था। स्वय कवि के शब्दो मे—

महराज निवाजस अथ मन। कवराज रीझ कहियो करन।
जप आसिस 'पद्धरि छद' जोड। कायम्म राज नृप जुग करोड॥ (135)

मान जस मुक्तावली और 'भीम प्रकास' के रचयिता डिंगल कवि रामदान लाळस कृत ग्रथ 'करनीजी री रूपग म भी प्रारम्भिक दो गाथा, दो दोहे और अतिम छप्पय (कळस) के अतिरिक्त शेष 176 छद पद्धरी हैं। ग्रथ-कर्ता के नामोल्लेख सहित निम्न उद्धरण द्रष्टव्य है—

दास कर जोडे रामदान। दिन रात तूझ सरण निदान।
आकार तुहिज तू निराकार। पाव कुण नामा तूझ पार॥ (176)

पश्चिमी राजस्थान में हरसूरजी बारठ (गाँव भीमाड) कृत रमण-काव्य 'हरसूरजी री गादी' बहुत प्रसिद्ध शृगारिक कृति है। उसमें भी प्रारम्भिक चार दोहों के पश्चात् स्त्री का शिख नख वर्णन पद्धरी छदों म ही अकित किया है। स्वय कवि के शब्द प्रमाण-स्वरूप प्रस्तुत है—

(दोहा)

ले सोभा कामण लछण, त्रिया रूप गुण तास।
विध सू घणा वखाणिया, 'पधरी छद' प्रकास॥

पद्धरी छद में रूप-वर्णन की बानगी—

सीस रा बाळ ऐसा सुचग। भळकियो पीठ बधो भुयग।
लेवत सोभ ऐसी लिलाट। निकसियो चन्द पूनम निराट॥

राजस्थानी कवियों का प्रिय छद पद्धरी वस्तुत एक मात्रिक छद है। इसके एक छद मे चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण म 16 मात्राएँ तथा अन्त मे जगण (।ऽ।)

स तुकान्त होता है। सूजा बीठू ने 'छद राउ जइतसी रउ' मे इसी छद 'पाधड़ी' (पद्धरी) का प्रयोग किया है, जो वीरत्व की विभा और 'वणसगाई' अलकार के कारण चित्ताकर्षक बन गया है। यथा—

राठउडि रोळि रेवन्त रग। विच्छूट जाणि सक्ळो वग।
पतिसाह सेन हुअतइ पगेहि। मायइ असि पाडिय मारअहि॥ (375)

(ii) गाहा डिंगल छद शास्त्र मे गाहा के अनेक भेद मिलते हैं। अधिकाश प्रबन्धकाव्यो मे गाहा का वही रूप मिलता है, जिसका प्रयोग सूजा बीठू ने इस ग्रथ में किया है। यह चार चरणो का एक छन्द होता है जिसके प्रत्येक चरण मे 16 मात्राए और अन्त म तुकान्त होता है। यथा—

डूगरसीह देद कुळ दीपक। रावण देस वस छळ रूपक।
पडि ऊपडियइ पहिलउ पहिला। गइ गजण ऊठिय रिणगहिला॥(231)

(iii) दूहा यह मात्रिक छन्द है, जिसके राजस्थानी रीतिशास्त्र म कई भेद हैं। इसके प्रथम और तृतीय (विषम) चरण मे 13 तथा द्वितीय और चतुर्थ (सम) चरण म 11 मात्राएँ तथा अन्त में गुरु लघु (ऽ।) से तुकान्त होता है। यथा—

(दूहउ)

कोठळिअे कीते करन, महिपति अमलीमाण।
सामहिया सळसाहरइ, साम्हा दळ सुरिताण॥ (75)

अथवा—

किय दूकळ चवळ कळळ गइ त्रांबक्र गडक्क।
दरिसयउ सरि सुरिताण दळ चळचळ च्यारे चक्क॥ (185)

(iv) छप्पय इसे षटपदी भी कहते हैं क्योंकि इसके छह चरण होते हैं। डिंगल के छद शास्त्र म तो छप्पय के भी कई भेद होते हैं किन्तु ग्रथ के अत म 'कळस' के रूप मे प्राय शुद्ध छप्पय का ही प्रयोग मिलता है। छप्पय के प्रथम चार चरण रोला (24 मात्राए तथा 11 13 पर यति) और अतिम दो चरण उल्लाला (28 मात्राए और 15, 13 पर यति) के होते हैं। चरणान्त मे तुकान्त जरूरी होता है। छद राउ जइतसी रउ के अत मे सूजा बीठू ने कळस के रूप मे छप्पय कवित्त का ही प्रयोग किया है। यथा—

(कळस)

पातिसाह परभविय, अम्ब उत्तारि अभगां।
कह गिडावि गोमट्ट ताडि ओठ्ए तुरगां।
कहूँ समीर मइमत्त भोमि लोटइ घाइ भरिया।
कह हडहडइ सुरग अग असमरि ऊनरिया।
काबिलो थट्ट दहवट्ट किय बीकाहर राइ वयरू।
जइतसी प्रवाहउ किय जमा जाम सूर ससिहर जरू। (401)

छप्पय, मनहर, घनाक्षरी आदि कवित्त के ही भेद माने गये हैं, किन्तु डिंगल में छप्पय को ही कवित्त कहते हैं। शेष दो भेद तो पिंगल (ब्रजभाषा) के माने गये हैं। यही कारण है कि कवित्त शीर्षक से उपलब्ध डिंगल-काव्य में केवल छप्पय ही मिलते हैं। राव जतसी (बीकानेर) की कामरॉं पर हुई विजय का वर्णन एक अन्य समकालीन कवि गोरा ने छप्पयों के माध्यम से किया है, जो 'राव जतसी रा कवित्त' नाम से मिलते हैं। सूजा बीठू कृत 'कळश' के छप्पय के लक्षणों से पूर्णत साम्य रखने वाले कवि गोरा कृत उन कवित्तों में से एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है—

अहि मिसि फनु फुकरइ, पवन मिसि सनु सघारइ।
सीह जेम उट्ठव हाकि हनुमत जिम मारइ।
वयरी सर्जे वळ ग्रहइ, गहवि गढ कोट उपाडइ।
जे अन्याय अगव, तिनहि सपत्त ग्रहि ताडइ।
कमधराइ लूणग्रन तन, महि मडळि जसु सभळयौ।
जइतसी राउ गोरउ भणइ, मुगल तणउ दळ निदळयौ॥1॥

छन्द राउ जइतसी रउ एक वीररस प्रधान ऐतिहासिक प्रबन्धकाव्य है। इसमें बीकानेर के राव जतसी के कुल गौरव, धरती प्रेम, स्वातन्त्र्य भावना, प्रजा वत्सलता, वीरोचित दर्प धर्म रक्षा एवं मर्यादा पालन का सम्यक चित्रांकन हुआ है। वीरभूमि राजस्थान के राठौड़ो की रणबाँकुरी छवि को उजागर करने के प्रमुख उद्देश्य से इस ऐतिहासिक काव्य का प्रणयन हुआ है। अत इसमें वीररस का सांगोपांग चित्रण तो सहज और स्वाभाविक ही है। एक चारण कवि की ऐतिहासिक डिंगल रचना होने के कारण इसमें राजस्थान की शौर्य प्रधान संस्कृति के अनेक प्रेरक प्रसंग अंकित हैं।

बीकानेर के संस्थापक राव बीका के पुत्र राव लूणकरण के राज्य में देव मन्दिरों और राजमन्दिरों में पवित्रता एवं प्रतिष्ठा का सुखद वातावरण था। इसीलिए कवि ने देव-पूजन, प्रजा-पोषण शौर्य एवं औदार्य के चित्र प्रस्तुत किये हैं। ध्रुव की तरह अटल, गंगा की तरह पवित्र और सूर्य की तरह तेजस्वी राजा के उस राज्य में मन्दिरों में आनन्द पूर्वक पूजा-उपासना होती थी, देवालयों पर धर्म की ध्वजा फहराती थी, गरीबों के लिए सदावत चलता था और सभी वर्गों के लोग यशोगान करते थे। स्वयं कवि के शब्दों में—

(छन्द पाघड़ी)

घूघाहर चाडिय करन धज्ज। पाळ वे सुखी वासइ परज्ज।
गडियहइ जेम सायर गहद। फरहरइ ढाल माथे फणीद॥ (52)
दवळे पडइ वाजइ दुवारि। झालरी सख सुसबद झणारि।
आदीत जिसा निरमळा अग। गहवत राउ ध्रू जेम गग॥ (53)
नवसहसराइ नीसाण नाद। पूजियइ देव आगो प्रसाद।
चउपनउ समीसर करनि चाळि। देवरउ दुनी राखी दुकाळि। (54)

करन राउ वरइ कुसमइ कडाहि। मेदिनी उबारी मइल माहि।
कुजर दुवारि दीपइ करन । वाचइ सुजस्स अड्ढार व न ।। (55)

जागलू प्रदेश की महिमा यक्त करता हुआ कवि कहता है कि जहाँ सुदर, मधुरभाषिणी एव लाजवती स्त्रियाँ होती हैं तथा रणबांकुरे पुरुष होते हैं उस मरु मेदिनी पर राव जतसी राम की भाँति राज्य करता था। अयाय और अधम के प्रतीक रावण, तथा याय और नीति के प्रतीक राम की उपमाएँ देते हुए कवि ने आक्रमणकारी कामरां और प्रजा पालक राव जतसी का रोचक वणन किया है। ऊजळा चवर वस्तुत उज्ज्वल कीर्ति का प्रतीक है और शक्ति उपासना कुलक्रमागत मर्यादा का लक्षण है। आध्यात्मिक, प्राकृतिक और सांस्कृतिक सौ दय का समवित स्वरूप निम्नलिखित पंक्तियों में द्रष्ट य है—

ऊजळा चवर ढळकइ अबीह। सिरि छत्र अविच्चळ जइत सीह।
सत जइतसीह आपा सक्ति। पइ सेव मनाविय दसपत्ति।।
तारुणी स ऊज्ज्ळ सेत द त। वाणी सुवाणि नइ लाजवत।
सोहिली भोमि बांका सुभट्ट। झूझार दियइ वरिमाळ झट्ट।।
नेहली नीर भरिया नयट्ट। बाकउ दुरग पाखो विहट्ट।
सारील जइत सुरिताण साज। रामावतार राठउड राज।।

कवि सूजा बीठू ने अपने ग्रथ म 'राम' नाम का उल्लेख मर्यादा पुरुषोत्तम, ईश्वर और आर्यावत्त के उपास्य देव के रूप मे अत्यत श्रद्धापूवक किया है। जिस समय तुलसी ने रामचरितमानस की रचना की उससे पहले राजस्थान म मेहा रामायण और रामरासो (माधोदास दधवाड़िया) जसे राम भक्ति के ग्रथ रचे जा चुके थे, अत राम नाम के प्रति कवि की अनय आस्था उसी पुनीत परम्परा का प्रतिफल थी। राजस्थान की लोक सस्कृति म राम का नाम एक महामत्र महौषधि एव चिन्ता की चितामणि के रूप मे माय है। यही कारण है कि कवि सूजा बीठू ने राव जतसी और कामरां क मध्य हुए युद्ध म योद्धाओं क मुख स हर हर महादेव के स्थान पर राम नाम का उच्चारण करवाया है। कवि की दृष्टि मे राम न केवल मर्यादारक्षक बल्कि विजय के प्रतीक भी हैं। ये उदाहरण कितने सुदर हैं—

1 माथी करन साऊ सनाम। रउद्र दळ पइठे कहि राम राम। (84)
2 रामण मुगल्ल राउ जइत राम। समरइ दइत हुइसी सग्राम।(361)
3 आरभ राम जइतसो अत्ति। आवियउ मीर सिरि आधरत्ति। (372)
4 जइ राम जपिय हिंदू जणहि। घातिया ताम योद्धा घणेहि। (374)
5 श्री राम जइत सारे निमक। लोहडे लसकर लियइ लक। (396)

इस वीरकाव्य में युद्ध का सजीव चित्रण तो देखते ही बनता है। युद्ध वणन के साथ सय प्रयाण अश्व एव अश्वारोहियों के नाम, रण वाद्य तथा युद्ध की झाकझीक मे

उपमा उत्प्रेक्षा, रूपक आदि के माध्यम से हृदयहारी चित्र अंकित किये हैं। राव जैतसी के चुने हुए योद्धाओं के लिये जो उत्तम नस्ल के घोड़े थे, उनके नाम इस प्रकार हैं—

गंगाजळ सिंगार घाट, पाबूपसाउ रवतपसाउ पचकल्याण, मोर करनीपसाउ, नवलखा, भँवर, गुणसागर, जयणसुख, मेघनाद, देवीपसाउ, करणीकुमर विसनपसाउ, सूरिजपसाउ, कोडीधज, हंस ढलियो फूलमाळ चाउडपसाउ गुरडियो काळापहाड, माणिक, कबूतर, कवलियो, मिंधली झूठियो, मुगटचाळ वताळ, समेचो आदि आदि।

इन घोड़ों पर आरूढ योद्धाओं के नाम इस प्रकार हैं—तेजसी रतनसी रामड़ो, नेतसी, साकरसी, सोढा वीरमदेव, जगधीर नतलो रतनमी सीमनो अमरा मुहता सद्धारण, धनराज, राम पडिहार ऊगो मेघराज, खडेचा नगराज रायमल, किसन, मांडण, वरजाग, भीवडा रणवीर, माडण पडिहार, डूंगर, नरसिंह इगा मागा केल्हण, वणवीर आदि आदि।

रण क्षेत्र म प्रविष्ट होते समय मरण को वरण करने का निश्चय करने वाले योद्धा स्नान ध्यान कर गले म तुलसी की पवित्र माला धारण कर राम नाम का उच्चारण करते थे। डिंगल के वीरकाव्यो की इस परम्परा की झलक यत्र तत्र छन्द राउ जइतसी रउ' मे भी दिखाई देती है। यथा—

(1) सनान करे साऊ सकार। होडोळिय तुल्सी कठि हार। (171)

(2) साधो करन साऊ सनाम। रउद्र दळ पइठ कहि राम राम। (84)

यह विशेषता दोना ही पक्षो मे नजर आती है। युद्ध के ताडव नत्य की विभीषिका प्रकट होते समय मुसलमान मुहम्मद को याद करत और हिंदू राम को। कवि ने ऐसे कई चित्र अंकित किये हैं। एक उदाहरण देखिए—

मुहम्मद नाम जपिय मुहाह। खग गहि ऊठिया मीर साह। (373)

पइ राम अपिम हिन्दू जणहि। पातिया ताम घोडा घणेहि। (374)

ऐसे पराक्रमी योद्धा जब रणभूमि म रक्त रंजित हो जाते तो ऐसे दिखाई देते मानो मायों ने अपने शरीर पर गेरुए वस्त्र धारण किए हो। यथा—

विढिवा नर हुआ अउर वनि। कथा किरि पहिरी मुद्राकन्नि। (367)

कवि की दृष्टि मे राव जतसी का व्यक्तित्व इसलिए वन्दनीय एव वरेण्य है कि उसने क्षात्र धर्म का पालन करते हुए रणांगण म प्रवेश किया था। राव जतमी युद्धार्थ कटिबद्ध हो ज्यों ही अश्वारूढ हुआ तो कवि ने उसे गरुडारूढ हुए विष्णु से उपमित किया। कामरां उदधि (समुद्र) है, तो जतसी अगस्त, कामरां तक्षक है तो जतमी गरुड, कामरां रावण है तो जतमी राम। इस प्रकार की श्रेष्ठ उपमाएँ देते समय कवि के शब्दो मे उसका हृदय बोलता है। जैसे—

घउडाहर चढियउ चक्रवत्ति। परमेसर जाणे परपत्ति। (356)

सुदर्श तसिक्य सिरि पाण तप्प। पहु पइन गरुड दसी सदप्प। (360)

रामण मुगुल्ल राउ जइत राम । सघरइ दइत हुइसी संग्राम ।
असपत्ति उअहू जइतउ अगत्यि । सोलसी सत्र करिमाळ सत्यि । (*361*)

राव जतसी को ज्योही कामरों की ओर से धमकी भरी चुनौती मिली तो राठौड वीरो के हृदय मे क्रोधाग्नि की लपटें ऐसे उठने लगी, मानो अग्नि मे घृत सिंचित किया हो। वे शूरवीर इस प्रकार चल पड़े मानो शृंखला से छूटे हुए शेर हो। हाथियों के झुण्ड पर जिस प्रकार शार्दूल झपटता है उसी प्रकार राव जतसी कामरों की सेना पर टूट पड़े। ऐसे ओजस्वी एव रोमाचक चित्र प्रस्तुत करते हुए कवि सूजा बीठू ने अपने कल्पना कौशल को *प्रमाणित किया है। निम्नलिखित उद्धरण अवलोकनीय हैं—*

बीकाहर राजा अे बखाण । जाळोवळि सीतउ चित्त जाण । (189)
झाफरा जइत वाहइ खडग्ग । वासदे जाण व ने विलग्ग ।
कतरा सेनि जन्तउ अबीह । सींधरे पईठउ जाणि सीह । (*381*)

युद्ध वणन में वर्षा का रूपक कवि की प्रतिभा का पुष्ट प्रमाण है। युद्ध के ढोल मेघ गजन है तलवारो की चमक बिजलियाँ हैं असिधारा रूपी जलधारा बरस रही है *जिसे यवन दल सह नही सके। स्वय कवि के शब्दो में—*

घडहडइ ढोल धूजइ धरत्ति । पडियाळगि वरसइ खेडपत्ति ।
बीकाहर राजा इद धग्गि । झाफरा सिरे खिविया खडग्गि । (389)
पतिसाह फउज फूटति पाळि । ब्रहमड जइत गाजइ विचाळि ।
अम्बहर जइत वरसइ अपार । घुडकिया मीर मुहि खग्ग धार । (390)
सार जळ मेछ नह सहइ सक्कि । करिमाळ काहू पडियउ कटक्कि ।
घूघहर *बरसता घन्न धन्न । सुरिजा निहाइ बाजइ गियन्न ।* (391)

कला पक्ष

भाव पक्ष के साथ कला पक्ष का सुन्दर समन्वय इस ग्रथ की प्रमुख विशेषता है। *विविध अलकारों का यथास्थान प्रयोग करते हुए कवि ने राजस्थानी के लोकप्रिय एव* मौलिक शब्दालकार वणसगाई का आद्योपान्त सफल निर्वाह किया है। वणसगाई के प्रयोग से नाद सौन्दय की वृद्धि के साथ ही काव्य दोषों का स्वत निवारण हो जाता है, इसीलिए इसके निर्वाह बिना कवि कम अधूरा ही समझा जाता है। वणसगाई के प्रयोग से निश्चय ही काव्य मे रस पोषण होता है किन्तु वीर रस की अग्नि मे दोष स्वत मिट जाते हैं। अत वहाँ इसकी अनिवायता नही रहती। महाकवि सूयमल्ल के शब्दो मे—

वणसगाई वाळिया पेखीज रस पोस।
वीर हुतासण बोळ में, दीस हेक न दोस ॥

कविवर सूजा बीठू की यह विशेषता है कि उसने 'छन्द राउ जइतसी रउ जसे वीरकाव्य म भी आद्योपान्त वणसगाई का निर्वाह किया है। वणसगाई के प्राय सभी भेद इस काव्य मे मिल जाते हैं। निम्नांकित उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

(1) आदिमेळ छन्द मे प्रत्येक चरण के आद्य और अन्त्य शब्दों के प्रथमाक्षर समान होने से आदिमेळ वणसगाई कहलाती है। इसे उत्तम वैणसगाई भी कहते हैं। काव्य म अधिकांशत इसका यही रूप मिलता है।

उदाहरण — देवळे षडइ वाजइ दुवारि। झालरी सख सुसबद झणारि।
आदीत जिसा निरमळा अग। गहवन्त राउ घू जेम गग। (53)
नवसहस राइ नीमाण नाद। पूजियइ देव आगी प्रसाद।
चउपनउ समीसर करनि चाळ। देवरउ दुनी राखी दुकाळ। (54)

(2) मध्यमेळ जब प्रथम शब्द के आदि अक्षर की आवृत्ति चरण के अतिम शब्द के मध्य में हो तो मध्य मेळ वणसगाई कहलाती है। जस—
(i) नदि मनउ उडीसइ जगन्नाथ। (129) (ii) चाउँहवधाउ ताजी तचेड। (299)
(iii) विढियउ जइत चउथि सिनिवारे (37) (iv) सारे मुगुल हुअइ वि बिमुद्ध (386)

(3) अन्तमेळ जब प्रथम शब्द के आदि अक्षर की आवृत्ति चरणान्त शब्द के अन्त म हो तो अन्तमेळ वणसगाई कहलाती है। यथा—
(i) मारियउ रहण साख्यात ध्रम्म। (24) (ii) तारुणी स ऊजळ सेत दत। (100)
(iii) पहु जइत गडड देसी झडप्प। (360)
(iv) रउद्र गति झडैहि भरहरी भेरि। (363)

(4) अरधमेळ जहाँ आधे चरण मे ही वणसगाई कर दी जाती है, अर्थात् चरण को दो भागो में विभक्त कर प्रत्येक भाग मे वणसगाई की जाए, वहाँ अरधमेळ वणसगाई होती है। इसे 'अखरोट' भी कहा जाता है। जसे—
(i) जीपिया जग आरुहि अभग। (369) (ii) दन्तोळि दलल मारिय मुगलल।
रळनळइ रत्त सोलइ सपत्त। समळई सत्त विसयरइ वत्त। (393)
रहचडइ दड साढे विसड। तांजियां तुड पडिया प्रचड। (395)

वैणसगाई के अतिरिक्त वृत्यनुप्रास यमक पुनरुक्ति प्रकाश आदि शब्दालकारों का प्रयोग इस ग्रथ में प्रचुर मात्रा म दिखाई देता है। वस्तुत अलकारों के प्रयोग से कवि की उक्ति मे वह शक्ति आ जाती है, जिसस पाठक या श्रोता सहज ही उस ओर आकृष्ट हो जाता है। इसीलिए काव्य को भूषित करने वाले उपकरणों को ही अलकार कहा जाता है। हिन्दी साहित्य म रीतिकाल के प्रादुर्भाव स कई शताब्दियों पूर्व रचे गये प्राचीन राजस्थानी के ऐतिहासिक वीरकाव्यों में अलकरण प्रवृत्ति के पुष्ट प्रमाण मिलते हैं। 'रणमल्ल छन्द' (श्रीधर व्यास कृत) की तरह छन्द राउ जइतसी रउ (सूजा वीठू कृत) में भी वृत्यनुप्रास के पुष्कल एव प्रशस्त प्रयोग हैं। कतिपय उदाहरण अवलोकनीय हैं—

वृत्यनुप्रास—एक ही वर्ण की अनेक बार आवृत्ति होने पर वृत्यनुप्रास होता है।
यथा— 1 आसउ आरुहियउ अधिक आहि (272)
2 कुरखेत कीध कळहण करेय (86)

3 सन्नवइइ योणि सईगां सरेह (154) 4 गडदनी गोळ गाजा गिरिट्ट (146)
5 चळवळिय चक्रइ च्यारि चन्न (160) 6 माक्न्दइ मुक्ल मुद्दा मुगल्ल (148)
7 राठउडि रोळि रेन त रम्ब (375) 8 वेढता विलम्बइ वात वार (392)
9 सग्रही मारि माभरि मवेय (139) 10 समसेर साहि सुरिताण साण (5)

यमक जहाँ एक शब्द एक से अधिक बार प्रयुक्त हो और अर्थ प्रत्येक बार भिन्न हो वहाँ यमक अलंकार होता है। यथा—

1 हम मइ हग मइ जिमउ हस (327) 2 भारत्य करेवा भीम भीम (251)
3 सीहज चईनऊ रतन सीह (236)

पुनरुक्ति प्रकाश जहाँ काव्य की सौन्दर्य वृद्धि के लिए एक ही शब्द एक ही अर्थ मे पुनरुक्त किया जाय वहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार होता है यथा—

1 धूपइर वरसता धन्न धन्न (391) 2 रउद्र दळ पइठ कहि राम राम (84)

इसी प्रकार अर्थालंकारो म उपमा उत्प्रेक्षा रूपक आदि का प्रयोग 'छन्द राउ जइतसी रउ' म अनेक स्थानो पर हुआ है किंतु वे कही भी भार स्वरूप प्रतीत नही होते। वस्तुत ये अलंकार रस के साधक हैं न कि बाधक। उदाहरणार्थ—

उपमा जहाँ एक पदार्थ को दूसरे पदार्थ के समान कहा जाए, वहाँ उपमा अलंकार होता है। यथा—

1 डगरसीह देव कुळ दीपक (231) 2 दळि दाणवि जइत सरूप दीठ (379)
3 दोपमा असि आपमा देस (324)

उत्प्रेक्षा जब एक पदार्थ को दूसरा पदार्थ मान लिया जाए, तब उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। एक वस्तु म दूसरी वस्तु की कल्पना अथवा संभावना के लिए 'मानो', जानो, जसे ज्यो आदि वाचक शब्दो का प्रयोग होता है यथा—

1 चउगाहर चडियउ चक्रवत्ति परमेसर जाण पखपत्ति (356)
2 वाकाहर राजा अ उमाण जाळोवळि मीनउ घृत्त जाण (189)
3 उनग मन जन्तउ अवीह सीधर पइठउ जाणि सीह (381)
4 राठउडि राळि रव त राघ विच्छूअ जाणि सक्ळो वग्घ (375)

रूपक—रूपक का मतलब ही रूप ग्रहण करना है अत इस अलंकार म 'प्रस्तुत' (उपमेय) अप्रस्तुत (उपमान) का रूप ग्रहण कर लेता है। उदाहरण—

(1) अम्बहर ज त वरसइ अवार धुडरिया मोर मुँहि खगधार (390)
(2) तुरंगा तम्बिनक गिरि पाण तव्व पहू जइत गरुड देसी झडप्प (360)

उपर्युक्त सभी अलंकारो के उदाहरणा मे वर्णसगाई का पूर्ण निर्वाह सोने म सुगंध जसा प्रतीत होता है। वस्तुत भाव काव्य की आत्मा भाषा शरीर अलंकार वस्त्राभूषण और ■ दावि उसके निर्माण का ढाँचा होते हैं।

छ द राउ जइतसी रउ एक वीररस प्रधान ऐतिहासिक काव्य है, जिसम मुख्य रस वीर है और सहयोगी रसो के रूप म रौद्र, भयानक, वीभत्स, अद्भुत आदि की यथा

स्थान सम्यक् अभिव्यंजना हुई है। वीरत्व की विभा तो आद्योपान्त आलोकित होती है, जिसके उदाहरण पीछे विवेचन में दिये जा चुके हैं। यहाँ रसों के उदाहरण की बानगी मात्र प्रस्तुत है—

(1) वीररस—डिंगल साहित्य में 'उत्तम प्रकृतिर्वीर' के अनुसार वीर रस को सर्वश्रेष्ठ रस माना गया है। इसका स्थायी भाव उत्साह होता है। इसमें आलम्बन शत्रु, उद्दीपन शत्रु का पराक्रम या रणवाद्य अनुभाव दपयुक्त वाणी या शस्त्र संचालन और संचारी भाव हर्ष गर्व उग्रता धृति आदि होते हैं। यथा—

(1) सुरिताण आउ सामहइ सलि (165)

(2) कायल्लहरउ कळहण करेय, ययरियां घडा आयउ वहेय (172)

(2) रौद्र रस—रौद्र रस का स्थायी भाव क्रोध होता है। इसके अनुभाव आँखें लाल होना शत्रु को ललकारना आदि होते हैं। उदाहरण—

(1) वीरहर राउ सांभळि वचन रीसाइ किया राता रतन (188)

(2) मूझार झडीलउ सीस झाडि, वोनियउ बाल फाडी बराडि (165)

भयानक रस—इसका स्थायी भाव भय है, जो किसी भयङ्कर वस्तु बलवान शत्रु आदि को देखकर हो जाता है। यथा—

(1) दळ सुरिताण आण डूगरि दव कम्पी धरा हुई प्रज सवक्रव (186)

(2) हलहलिय देस हृदवद हुवासि तड वाग पडिया लोक त्रासि (182)

(3) फडफडइ नाग फाट फुणाळ (201)

बीभत्स रस—इसका स्थायी भाव जुगुप्सा (घृणा) है जो घृणा की वस्तु रक्त, मांस हड्डी आदि के दृश्य से उत्पन्न होता है। उदाहरण—

(1) रळतळइ रत्त सोलह सयत्त (393)

(2) रडवडइ रुह खाडे विखण्ड ताजिया तुट पडिया प्रचण्ड (395)

भाषा शैली की दृष्टि से छंद राउ जइतसी रउ' सोलहवीं शताब्दी की डिंगल भाषा का उत्कृष्ट काव्य ग्रन्थ है। इसमें 'स, ळ आदि अक्षरों का विशेष प्रयोग हुआ है। अपभ्रंश की शैली द्वित्वाक्षर स्वर व्यंजन विकार ध्वन्यात्मक शब्द आदि के साथ ही प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी भाषा की प्रमुख व्याकरणिक विशेषताएँ मिलती हैं। कहीं कहीं कहावतों—मुहावरों का प्रयोग भी हुआ है। जैसे पिडतइ ससारि दे आभ थभ (94) इत्यादि। कवि की बहुज्ञता के प्रमाण स्वरूप इस ग्रन्थ में प्रयुक्त तत्सम, तद्भव देशज और विदेशी शब्दों के निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

तत्सम—धरा खग नर असुर, देव, संग्राम, गुण जग नाथ पिण्ड, [illegible] द, प्रचण्ड तुरग, समीर कुंजर, नाद।

तद्भव—मेछ अखि जेठि रामण, लूणउ माण हत्थ सामि, अत्थ जेम फणीद सबद्द ओपमा, पामाळ भोमि खिति मेड, खट चक्रवइ नागउर परिग्गह, जोध, आदीत, सायर, खेत, देवरउ, सेत, साख्यात।

देशज—रड़वड़इ, रळतळइ, हुइहुडइ, ढढोळ, गडक्क, धळहळ, हुविय।

अरबी फारसी—बाबरी, मीर, ईब्राहिम, मुहमद, खान, असमान बहलोल, खाफरां, पतिसाह मुगल्ल बगतरा।

समग्र रूप मे यही उल्लेख करना समीचीन होगा कि 'छन्द राउ जइतसी रउ (वीठू सूजइ रउ कहियउ) चारण शैली मे रचित एक वीरकाव्य है जिसमे डिंगल के ऐतिहासिक प्रबन्ध काव्यों की प्रमुख विशेषताएँ विद्यमान हैं। चरितनायक का वश वर्णन योद्धाओ का वर्णन अश्व वर्णन, युद्ध-वर्णन, अलकारो का सहज प्रयोग, आद्योपान्त वणसगाई का निर्वाह पध्धडी (पद्धटिका) [redacted] द की प्रधानता, मरुभाषा की व्याकरणिक विशेषताएँ, सरस भावाभिव्यजना, क्षात्रवट की गौरवमयी झलक एव इतिहास और काव्य मे समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण इस ग्र थ म दिखाई देता है।

ऐतिहासिक महत्त्व के कतिपय नवीन तथ्यो का उल्लेख इस ग्रन्थ म मिलता है, जिन पर अनुसन्धान की महती आवश्यकता है। काव्य सौष्ठव ऐतिहासिक महत्त्व एव सास्कृतिक वभव के अनेक पक्ष इस वीरका य में उजागर हुए हैं जो मरुभाषा महार्णव से निस्सरित अनमोल रत्नों की भाँति साहित्य-जगत् म अपनी आभा को आलोकित करते रहेंगे।

राजस्थानी साहित्य के मूर्द्धन्य विद्वान् श्री मूलचन्द प्राणेश द्वारा सम्पादित 'छन्द राउ जइतसी रउ (वीठू सूजइ रउ कहियउ) के प्रकाशन का निर्णय लेकर भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर ने बहुत ही शुभ काय किया है। इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का सम्यक सम्पादन करने के लिए विद्वान् सम्पादक बधाई के पात्र हैं। प्राचीन काव्य ग्रन्थों की युक्तियुक्त एव प्रामाणिक टीका करने वाले विद्वान् अब विरले ही मिलते हैं। इस ग्रन्थ क श ब्दाथ भावाथ के सम्बन्ध म कहीं-कहीं विद्वानो मे मतभेद हो सकता है और वह स्वाभाविक एव शुभकर होता है।

अन्त मे शोध प्रतिष्ठान के कमन मन्त्री तथा निदेशक व उपनिदेशक श्री मूलचद पारीक श्री सत्यनारायण पारीक एव श्री रामनिवास शर्मा के प्रति मैं अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ जिन्होने इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की प्रस्तावना लिखने का मुझे सुअवसर प्रदान किया। राजस्थानी के मनीषी डॉ मनोहर शर्मा के प्रति भी मैं अपना प्रणति भाव व्यक्त करता हू जिनकी प्रेरणा प्राचीन साहित्य के अनुशीलन म मुझ निरन्तर अग्रसर करती रही है।

आशा है राजस्थानी साहित्य के अध्येताओं और शोधार्थियो के लिए यह ग्रन्थ उपयोगी सिद्ध होगा।

'कविया निवास
पोलो–2 जोधपुर (राज)
श्री करणी माता जयती स 2048 वि
दि 15 अक्टूबर, 1991

डा शक्तिदान कविया
सह आचाय
राजस्थानी विभाग,
जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर

छन्द राउ जइतसी रउ

वीठू सूजइ रउ कहियउ

मूल पाठ

हिन्दी-भावार्थ एव

विशेष-शब्द चर्चा

अथ छन्द राउ जइतसी रउ वीठू सूजइ रउ कहियउ

•

॥ गाहा ॥

अउङ्कार अनाहत अक्खर, सिद्धि बुद्धि दें सारद गुणेसर ।
मँडळीका मोटा कुळि मउडाँ, रसणि सुवाणि क्रीति राठउडाँ ॥1॥

ओंकार कभी नहीं नष्ट होने वाला अक्षर है। हे मा शारदा! तू मुझे सद्बुद्धि और हे भगवान गणेश! तू सिद्धि प्रदान कर ताकि बहुत बड़े मंडलीक तथा वंश शिरोमणि राठौड़ों की कीर्ति अपनी जिह्वा से अच्छी तरह वर्णन कर सकूं ॥1॥

॥ छंद पाधड़ी ॥

राठउड उदियउ चउँड राउ वेगडह साड वीरम वियाउ ।
साळवडी थाणउ दे सधीर, हठमल्ल राउ थाणे हमीर ॥2॥

राठौड़ों में राव चूड़ा प्रकट हुआ। वह वरुणाभी वृषभ के समान अतुल बल वाला था, मानो वह द्वितीय वीरम ही हो। उसने सालवड़ी में अपना थाना स्थापित किया तथा वह स्वयं थाने में अमीरों की तरह रहने लगा ॥2॥

चउँड राउ दिय ऊपूळ चाउ, राउत आपहे आप राउ ।
सोहिया प्रवाडा सिद्ध सीस, जम्बुअह दीप जगी जगीस ॥3॥

राव चूड़ा अत्यंत उदार हृदय वाला था। वह स्वयं ही रावत और स्वयं ही राव था। उसने जो सिंह की शिकार का सुयश अर्जित किया, उसमें समग्र जंबूद्वीप में उसको जानने की इच्छा जागृत हुई ॥3॥

सळखहर राउ सिरि वधी सेस, दळपत्ति हुअउ सिरि दसाँ देस ।
मँडोवर लियउ मल्लेछ मारि, विहारि सत्र सिरियाँ वहारि ॥4॥

राव सलखा के वंशज राव चूड़ा की कीर्ति में अभिवृद्धि हुई। वह दसों देशों का दलपति बन गया। उसने यवनों को पराजित करके मंडोवर को हस्तगत कर लिया तथा अपने यवन शत्रुओं को मार-मार कर भयभीत कर दिया ॥4॥

माळिअे वईठउ बाँधमल्ल, मळखहर राउ सुरिताण सल्ल ।
आपणो राद फेराइ आण, समसेर साहि सुरिताण साण ॥5॥

राव मलखा का वंशज राव चूड़ा बादशाहों के लिए शल्य-स्वरूप एवं अतुल बलशाली था। वह अपने महलों में बैठा। उसने अपने हाथों में तलवार धारण कर, बादशाहों के समान अपनी इज्जत बढ़ा कर प्रदेश में स्वयं की शासनाज्ञा (आण) प्रसारित की ॥5॥

हिंदुराइ जीपिय कोट हेळ, वाधियउ जेम सामंद्र वळ ।
साथा ग्रहास अति अस्सहास, आसथाम हरि पूगी सुआस ।।6।।

हिंदूराव चूडा ने आनन फानन में दुर्ग जीत लिये । वह समुद्र की उत्ताल तरंगों के समान बढा । उसकी सेना में अतिचपल अश्व थे । आनान्वित राव की भगवान ने आशा परिपूर्ण की । (यदि पाठ 'आसथान हरि' है तो अर्थ होगा 'राव आस्थान के वंशज राव चूडा की आशा फलीभूत हुई) ।।6।।

चउँड रा'उ सेन चतुरङ्ग चाल, मारग्ग महाजन लिया माल ।
घर लई मडोवर घणी धाइ, राजवी जेम चाउँड राइ ।।7।।

राव चूडा की चतुरंगिणी सेना चलती थी । उसने मार्ग पर चलते हुए महाजनों से माल असबाब प्राप्त किया । राजवियों की तरह मडोवर के अधिपति राव चूडा ने आक्रमण करके आस पास की भूमि पर कब्जा कर लिया ।।7।।

पहू भलइ लियउ नागउर प्राणि, नवसहस घणी रुडतइ निसाणि ।
डिडवाणउ पालटि घाइ दाइ, रइवास लीध कासिलइ राइ ।।8।।

राठौडों के स्वामी राव चूडा एक अच्छे शासक थे । उन्होंने नगाडों पर डंका देकर नागौर को जीत लिया तथा अपने प्रहारों से डीडवाणे का शासन बदल दिया । राव चूडा ने उनके घरों को भी अपने काबू में ले लिया ।।8।।

छापरउ कियउ छागों छयाँह, वळिनण्डि राइ फरि फेरि वाँह ।
चउँड रा'उ चडिय मोहिल्ल चोति, राहाचरक्क देसाळि रीति ।।9।।

शक्तिशाली राव चूडा ने अपने हाथों से शस्त्र चलाकर छापर के शासक की सेना को तितर बितर कर दिया । उसके चित्त में मोहिल चढ गये । उन्हें युद्ध की रीति सिखाई ।।9।।

धामालिय जोइया घाइ घाइ राणिगदे मारिय चउँड राइ ।
चउँड राइ चक्र फरियइ वङ्कि, दारणी देस लीधइ दुरङ्कि ।।10।।

राव चूडा ने राणिगदे का मार गिराया तथा जोहियों को शस्त्र प्रहारों से काट डाला । उसने अपना शासन चक्र इस प्रकार चलाया जिससे अनेक दुर्जय प्रदेशों के किलों को हस्तगत कर लिया ।।10।।

चउड राइ उग्राहइ च्यारि चक्क, कोपिया साह मेल्हइ कटक्क ।
खीजियउ खिदिरिखा हत्थ खाइ, राहाळइ उपरि चउँड राइ ।।12।।

राव चूडा चारों ओर से द्रव्य उगाहने लगा । इससे यवन शासक सेना इकट्ठी करने लगे । यवन शासक खीदिरखा क्रोधित होकर राव चूडा से शत्रुता रखने लगा तथा उसने राव चूडा पर आक्रमण भी कर दिया ।।11।।

मुलिताण तणइ दीवाण माहि, परठवियउ बीडउ पातिसाहि ।
साखुले अनइ भाटी सनाहि, विहुँ बीडउ झालिय ऊभि बाहि ॥12॥

मुल्तान में बादशाह ने अपने दीवान में बीडा रखा। इस बीड़े को साखला एवं भाटी सरदारों ने सुसज्जित होकर तयारी के साथ ग्रहण किया ॥12॥

माड रइ राइ मुहि मूछ मोडि, वेल्हणि कटक्क ताणिया कोडि ।
काळइ कलूळि जागलू काजि, रउद्रा दळ ताणिय देवराजि ॥13॥

जसलमेर राव वेल्हण ने अपनी मूछों का ताव देते हुए असंख्य सेना के साथ प्रयाण किया। देवराज ने अपने प्रबल शत्रु से जागलू हस्तगत करने के लिए यवन सेना को भी साथ ले लिया ॥13॥

पतिसाह पञ्चनइ लङ्घि पाइ, ऊतरियउ कोटि मराटि आइ ।
सुरिताण चाचि कीयउ सहाउ, तेवाडि कूप भरिया तळाउ ॥14॥

बादशाह पचनद (पंजाब) को पार करके कोट मरोठ में आ उतरा। चाचि ने सुल्तान की सहायता की। उसने अपने कुए जुतवाकर पानी से तालाब भरवा दिये ॥14॥

सह कळहि कल्ह स नेह सारि, मागिसी वइर चउँड रा मारि ।
ताणिया सेन जागळू तक्क, केसवाळइ पाया कटक्क ॥15॥

राव चूडा को मार कर प्रतिशोध लेने हेतु वे सभी कवच धारण करके तथा तलवारों से सुसज्जित होकर युद्ध के लिए तत्पर हुए। उन्होंने जागलू को लक्ष्य बनाकर अपनी सेना को चलाया तथा जागलू के केशालाव तालाब पर अपनी सेना को पानी पिलाया ॥15॥

गोरिया राउ थळ माळ गाहि, सत्तेरणि आयउ पातिसाहि ।
ब्रहमण्डि लागि बेऊ वरीव, नागउरि सेन ढूका निझोप ॥16॥

यवन पति ने अपने अश्वों द्वारा रत के टीलों को रौंद डाला। वह सत्तेरणि नामक गाव में पहुचा। वे दोनों महत्त्वाकांक्षी उत्साहित होकर ब्रह्माण्ड तक जा लगे तथा चलते हुए नागौर के समीप पहुचे ॥16॥

माजणउ करिय करि कण्ठि माळ, करिमाळ झालि केवी कुदाळ ।
ऊठियउ जमहरे देय अग्गि, घूघहर राउ लागउ धियग्गि ॥17॥

शत्रुओं के लिए कुठार स्वरूप राव घूघा के वंशज राव चूडा ने स्नान करके कंठ पर माला धारण की। उसने अपने हाथों में तलवार पकडी। तत्पश्चात् उसने जौहर की चिता में अग्नि प्रज्वलित की और अत्यधिक उत्साहित होकर आकाश तक जा लगा अथवा क्रोधाभिभूत हो गया ॥17॥

साँधणइ सत्ति सत्तूछ सतिय, हायउ दुरंग्ग्नि दे आप हत्थि ।
वीरम्म तणउ देसीह-वग्ग, ऊघाडि ताव नाँखिय अलग्ग ।।18।।

जौहर की अग्नि म थाड स समूह मे सतिया न प्रवेश किया । राव वीरम के पुत्र चूडा ने अपने हाथा से अग्नि दी तथा सिंह क समान चलते हुए दुग के किवाडा को खोल कर अलग अलग कर दिया ।।18।।

पाखरिअे पइठउ प्रइज पाळि, वीरम्म तणउ थाटाँ विचाळि ।
वाजिया ढोल दळ हाक वज्जि, गाजिया गोण गइणाग गज्जि ।।19।।

राव वीरम का पुत्र प्रजापालक राव चूडा कवचित होकर दोना सेनाआ के मध्य प्रविष्ट हुआ । ढाल बजने लग । वीरो की हाक होने लगी । धनुष की प्रत्यचाए गूजने लगी जिसमे आकाश ध्वनित हो उठा ।।19।।

दस राउत पडिया प्राळि द्वारि, नोजळी माह सउँ आठ नारि ।
सम्प्रतउ राउ चउँडउ सरग्गि, ऊठियउ रइण आवास अग्गि ।।20।।

दस योद्धा प्रतोली क द्वार पर काम आय । अपने स्वामियो के साथ आठ स्त्रियो ने अग्नि प्रवश किया । राव चूडा स्वग पहुचा । इसी समय राव रणमल्ल आकाश मे अग्नि क समान प्रकट हुआ ।।20।।

रिणमल्ल धरा छळ रखपाळ, गडवियउ साँड गोत्त गोवाळ ।
चउँड रा वइर ले चतुरग, देवरा मारि ढाहिय दुरग ।।21।।

रणमल्ल पृथ्वी के लिए रक्षक बना तथा अपने कुटुम्बियो की रक्षा के निमित्त बलशाली वृषभ की तरह गजन करने लगा । राव रणमल्ल ने राव चूडा का प्रतिशोध लने के लिए चतुरगिणी (सेना) लेकर देवराज को मार डाला और उसके कोट को ढहा दिया ।।21।।

सोझत्ति कन्हा सोनिगराह, छुडावि खग्गि लायउ छराह ।
रिणमल्ल प्रवाडा अे सँसारि, माकळ उवारि महमन्द मारि ।।22।।

राव रणमल्ल ने अपने हाथ म तलवार धारण करके सोनगिरा स सोझत को मुक्त करवा लिया । उसके युद्ध चरित् ससार भर म प्रसिद्ध हुए । राव रणमल्ल ने महमन्द को मार कर महाराणा माकल को बचाया ।।22।।

आहाड देस सगळउ उथल्लि, मेरा नइ चाचा मारि मल्ल ।
वईरिया तणइ सिरि मिरी वाटि, पह भलइ कूभ बइसारि पाटि ।।23।।

राव रणमल्ल ने समग्र मेवाड प्रदेश का अस्थिर कर दिया । उसन मेरा और चाचा को मार कर मदन किया । यवना ने अपने शत्रुआ पर जो माग बनाया, भले राव रणमल्ल ने उस रोकते हुए राणा कूभा को सिंहासनारूढ किया ।।23।।

रिणमल्ल राउ कूभेणि राणि, वेसास चूक वूहउ विनाणि।
कूभेणि कूड कियउ कदम्म, मारियउ रइण साख्यात ध्रम्म ॥24॥

राव रणमल्ल को महाराणा कुंभा ने विश्वास में लेकर उसके साथ धोखे का मार्ग अपनाया। महाराणा कुंभा ने असत्य का मार्ग अपना कर पृथ्वी पर साक्षात् धर्म-स्वरूप राव रणमल्ल को मार डाला ॥24॥

प्रतपियउ जोध रिणमल्ल पाटि, नवसहस तिलक सोहइ निलाटि।
जणियार जोध जाणइ जगत्त, हिंदुवइ राइ जीतउ हलत्त ॥25॥

राव रणमल्ल के बाद राव जोधा सिंहासनारूढ़ हुआ। राठौड़ राव जोधा के ललाट पर राज्य तिलक सुशोभित हुआ। जगतप्रसिद्ध राव जोधा को सभी जानने लगे। हिंदूपति राव जोधा ने हलत्त को विजय किया ॥25॥

जोध राउ अघायउ सदा जुद्धि, बळि भीम जेम सहदेव बुद्धि।
जोध राउ कोपइ दिसउ जाह, तरवारि दळइ सिरि मिरी ताह ॥26॥

राव जोधा हमेशा युद्ध से अतृप्त रहता था। वह बल में भीम एवं बुद्धि में सहदेव के समान था। राव जोधा जिस पर कोप करता, उसी ओर शत्रुओं को तलवार के घाट उतार देता ॥26॥

आपणी जोध फराइ आण, लागुआ मुहे दीन्हा लगाण।
मँडळीक जोधि मेवाट मोडि, कूसाणइ भागा कटक कोडि ॥27॥

राव जोधा ने प्रदेश में अपनी आण (दुहाई) फिराई। उसने अपने शत्रुओं के मुँह पर लगाम जड़ दी। मंडलेश्वर जोधा ने मेवाड़ की सेना को पराजित करके लौटा दिया तथा कूसाण की बहुसंख्यक सेना को भी पराजित कर दिया ॥27॥

घण अस्सि दुरिज्जण घडिय घाइ, रइणाइर आघउ जोधि राइ।
जोधि मेवाड मारिय जडाँह, भँगवट दीध मोटा भडाह ॥28॥

राव जोधा ने तलवार रूपी घन के प्रहार से अपने शत्रुओं को नष्ट किया, मानो उसने समुद्र को नाप लिया हो। राव जोधा ने मेवाड़ की जड़ें खोद डाली तथा बड़े-बड़े सुभटों को पराजित किया ॥28॥

आका नइ हाजा तणा अङ्ग, पाडिया जेम दीवड पतङ्ग।
वळिमूळ जोधि दोन्य कँधार, हँसा दुरङ्ग मनाविं हार ॥29॥

युद्धवीर राव जोधा ने अपनी सेना को हंसा दुर्ग के निकट पहुँचाया और उसके शासक को पराजय स्वीकार कराई। आका और हाजा का शरीर इस प्रकार नष्ट कर लिया जिस प्रकार दीपक पतंगा को नष्ट कर देता है ॥29॥

मेवाडाँ जोधइ मळिय माण, रेहळिय खेत्र कूभेण राण।
सळवहर वळिय सुरिताणमल्ल, मेवाड गाहि रूपाहि मल्ल ॥30॥

राव जोधा ने मवाडियो का गव खडित कर दिया तथा महाराणा कुभा का युद्ध क्षेत्र म गिरा दिया। राव सलखा का वशज एव बादशाहो के लिए शल्य स्वरूप राव जोधा मेवाड को तहस-नहस करता हुआ, उगाही करता हुआ, वापस लौटा ॥30॥

मेवाड जोध धाअे मनाइ, ऊधरिय मँडोवर देस आइ ॥30॥(2)

राव जोधा ने अपन प्रहारो स मवाड पर धाक जमाई तथा अपने प्रदेश म पहुचकर मडोवर का उद्धार किया अथवा मडोवर को धारण किया ॥30॥(2)

॥ दूहउ ॥

पुत्र जाअे पउँण गुण, वाजइ सूर अनन्त ।
मात गया तट पिंडउ, दियइ भुवन्त भुवन्त ॥31॥

पुत्र क ज म लेन पर और अनेक प्रकार के वाद्य बजाने पर क्या लाभ ! वह (पुत्र) घूमत फिरत कभी न कभी मातस्वरूपा गया क तट पर अवश्य ही पिंडदान करेगा ॥31॥

॥ छन्द पाधडी ॥

जाधरा जोध जस राति जागि, पुन करण गया पुहतउ प्रियागि ।
सनान करिय करि पिण्ड सारि, तरपणइ पितर सन्तोस तारि ॥32॥

राव जोधा के योद्धाओ ने यशस्वरूपी रात्रि जागरण किया और पुण्य करने हेतु गया एव प्रयाग पहुचे। तत्पश्चात् राव जोधा सहित उ होने स्नान किया और तपण द्वारा अपन पितरो का सतुष्ट करके तार दिया ॥32॥

वाळियउ जोधि सुधरम नविक, आँजुळि पितर पासिय उदविक ।
आवियउ जोध पूजिय अनन्त, हाथिया लेय पूरब हुन्त ॥33॥

राव जोधा न अपन कत्त य द्वारा धम को लौटाया। उसने अपनी अजुलि स उदक दान करके पितरो का पोषण किया। वह भगवान अन त की पूजा-अर्चा करके तथा पूव की ओर स हाथियो को लकर लौटा ॥33॥

पट्टाणि परिगह कीध पाण, चापरि नइ काढिय चाहुआण ।
जोध राइ सेन अज्जाणजक्क, कमराळ सीसि कीया कटक्क ॥34॥

राव जोधा ने अचानक यवना पर चढाई की। उसने अपनी शक्ति स पठानों को रयत बना लिया तथा शीघ्रता के साथ चौहानों को अपने प्रदेश स निकाल बाहर किया ॥34॥

भाडिजी गेहिराउ निरा भेड, खिति वाहर आयउ धणी खेड ।
मारङ्गथान जोधह सगत, सांकडइ पदसि साहिय सुसत्र ॥35॥

शुद्ध क शासक राव जोधा ने अनेक अश्वा को एकत्र किया तथा पृथ्वी की रक्षा क निमित्त तत्पर हुआ। उसने शक्तिशाली सारंगखान के निकट पहुचकर शस्त्र धारण किय ॥35॥

सारङ्गखान वहिया सहिति, मटदूण खान मोखावि खिति ।
पट्ठाण फतेपुरी खेति पाडि, चक्रवइ जोधि जस चीधं चाडि ॥36॥

चक्रवर्ती राव जाधा न बारह खानो सहित सारंगखान पठान को फतहपुर के युद्धक्षेत्र म मारकर पृथ्वी को मुक्त करवाया तथा अपनी कीर्ति पताका फहराई ॥36॥

पट्ठाण प्राण भञ्जियउ पूर, साखियउ जोधि किय सोम सूर ।
पट्ठाण जोधि पाधरि पचारि, मन्नावि मेछ रिणखेति मारि ॥37॥

राव जाधा ने सूय और चद्र को साक्षी बनाकर पठाना की स म शक्ति को अपने पराक्रम स नष्ट कर दिया। उसने पठाना को सीधा रणक्षेत्र म ललकार कर उन्ह मार भगाया तथा अपनी आन (दुहाई) स्वीकार करवाई ॥37॥

घण थाटि लियइ आयउ घरेहि, छागिया मेछ घर घाति छेहि ।
जणियार जाध विवनउ जियार, ताडिया वच्छ वयाणि तियार ॥38॥

राव जोधा अपनी अपार सेना लेकर घर आया। उसने यवना को काट काटकर अपनी भूमि स हटा दिया। राव जोधा जिस समय मृत्यु को प्राप्त हुआ, उसी समय उसके पुत्र अपने-अपने स्थान पर गजन करने लगे ॥38॥

वीकउ नइ सातल अेक वकि, गढपत्ति साड उठिया गडकि ।
सातल अनइ वीकउ ससारि, असमानि खग्ग उठिया उभारि ॥39॥

वीका और सातल एक ही कहे जाते हैं अथवा एक दूसरे से बढकर हैं। वे दोनो गढपति शक्तिशाली वृषभ की तरह गजन कर उठे। राव वीका और सातल जगत् के समक्ष अपनी-अपनी तलवारें आकाश की ओर तान कर उठ खडे हुए ॥39॥

जांगळू वीक जाणइ जगत्त, छातपति हुअउ ताणावि छत्त ।
ऊपूळ अन्न भळहळइ वित्त, चउंड रा जेम राउ वीक चित्त ॥40॥

जांगलू म राव वीका को समस्त ससार जानता है। वह अपने सिर पर छत्र तनवाकर राजा बना। उसका हृदय राव चूडा के समान उदार था। राव वीका के यहा पुष्कल अन्न और धन का उपयोग होता था ॥40॥

सेवा वळि ओडइ अञ्चलाम, भूजाइ जीमइ भाख भाख ।
वीकम्म साँड ऊससइ वग्गि, खाळुआं खटक्कइ हियइ खग्गि ॥41॥

राव वीका न अपनी शक्ति स प्राप्त भूमि का धारण कर रखा है। उसके आश्रय म लोग विभिन्न प्रकार के भोजन कह-कहकर प्राप्त करते थे। राव वीका

अपने वग (राठौड़ समूह) म वृषभ की तरह उमगित हो रहा था। शत्रुओं के हृदय म राव वीका की तलवार हर समय खटकती थी ॥41॥

नरसिंघ मारि उपाडि नेस, दीवाण थाण थरहरिय देस ।
भाडङ्ग तणौ खाई भुरज्ज, राठउडि रोळि किय रज्ज रज्ज ॥42॥

राव वीका ने नरसिंह को मारकर उसके घरो का नष्ट कर दिया। परिणाम स्वरूप प्रदेश के अनेक राज्य और थाने कम्पायमान हो गये। राठौड़ राव वीका ने भाडङ्ग के बुरज (कोट) एव परिखा को तहस-नहस करके धूल म मिला दिया ॥42॥

वीकइ दियराउरि दीह वाह, लाखीन लोक लीडिय लँगाह ।
मूमणह वाहण वीकि मारि, असमाण थाट आगी उतारि ॥43॥

राव वीका ने देरावर पर आक्रमण किया। वहां के अनेक प्रतिष्ठित लगा (यवनो) को अपने वश म कर लिया। उसने मूमण वाहण को परास्त कर दिया तथा अपने सनिक-समूह को मूमण-वाहण के आगे उतारा ॥43॥

देपाळपुरइ पुरि पसार देय खरसउ सँघारि सारे सभेय ।
वीठउँडउ नइ भटनेर ग्रहि, रावइ राइ साधिय ढोल सहि ॥44॥

राव वीका ने देपालपुर नगर पर सनिक आक्रमण किया। उसने अपनी तलवार के बल पर खरसो का सहार किया। वीठउड और भटनेर पर युद्ध म ढोल बजा कर विजय प्राप्त की ॥44॥

वीकउ हिंसारि पाधरो वग्ग, आणियउ असिम खडिय उमग्ग ।
नागह उपाडी नरहडी नरा, दिल्लाउर काढिय मह्रा दस ॥45॥

राव वीका ने उत्साहित होकर अपना अश्व हिसार की ओर चलाया तथा सीधा वही पहुचा। उस अद्वितीय वीर ने नरहड के घरो को तहस-नहस कर दिया तथा उस प्रदेश मे से दिलावर को निकाल बाहर किया ॥45॥

बहलालसाहि सउँ बोलि बाल, ढीली ढँढोळि वावाडि ढाल ।
पुरफत्ते लाइ झोंभणू पाइ, राखिया बाँह दे रोपि राइ ॥46॥

राव वीका ने बहलोलशाह म वचनबद्ध होकर ढीली एव ढाल नामक युद्ध वाद्य बजाते हुए फतहपुर एव झुझणु को अपन अधिकार म ले लिया तथा वहा के शासको की रक्षा का वचन (बाह) देकर स्थापित किया ॥46॥

नागउर कोट वीरइ नडय बळिवण्डि राइ बिहुँ वार वेय ।
वरसिङ्घ बन्दि हूँता छडावि, अजमेरि कोटि नीसाण वावि ॥47॥

शक्तिशाली वीर राव वीका ने नागौर का दुग दो बार हस्तगत कर लिया।

उसने नगाड पर डंके की चोट देकर अजमेर के किले से वरसिंह को वहा की कैद से मुक्त करवाया ॥47॥

सेसउ राउ ग्रहियउ सोहराइ, ताइयाँ कन्हा मोखावि ताइ ।
राठउड वीक कुण करइ रीस, छेहडा छत्र मांडइ छत्रीस ॥48॥

सोहराव के पुत्रन से राव नेमा को बंदी बना लिया था । राव बीका ने उक्त शत्रु से राव नेमा को मुक्त करवा लिया । राठौड राव बीका पर कौन क्रोध कर सकता है क्योंकि सभी जातियों के लोगों ने एकत्र होकर राव बीका के सिर पर छत्र धारण करवाया (तनवाया) है ॥48॥

छत्रपति उवारिय छत्र छाह, बइत्ताळइ आडी वीध वाह ।
वीकड दुरङ्ग कजि वीध वत्त, सोभागदीप जाणइ सपत्त ॥49॥

राव बीका ने पद्रह सौ बयालीस के अकाल के समय अपनी प्रजा को शरणागत बनाकर शासन की ओर से उसका बचाया । राव बीका ने दुर्ग के लिए बातचीत की । दुर्ग बनकर तैयार हुआ, जो सौभाग्यदीप नाम से जगत् प्रसिद्ध है ॥49॥

वेगडउ साट वीकउ विधन, कुळमाण तेथि उदियउ करन्न ।
ऊधरिय छत्र फरावि आण, ताई मॅडोवर मूलताण ॥50॥

अतुल बलशाली वृषभ के समान राव बीका मृत्यु को प्राप्त हुआ । उसी समय वहाँ राव लूणकरण वंश के लिए सूर्य के समान उदित हुआ । उसने अपने सिर पर छत्र धरा तथा मंडोवर से लेकर मुल्तान तक अपनी आन (दुहाई) फिराई ॥50॥

दीसइ दीवाणि माणिक डण्ड, राइँगर वाळि ऊग्रहइ खण्ड ।
राजा करन राउत रणूध, सूरा सँग्रामि वेपखा सूध ॥51॥

शासक लूणकरण ऐसा क्षत्रिय था, जो हर समय युद्ध के लिए तत्पर रहता था । उसके दीवान में माणिक के स्तंभ सुशोभित हो रहे थे । वह दोनों (मातृ एवं पितृ) पक्षों से शुद्ध एवं युद्ध में वीरता प्रदर्शित करने वाला था । उसके अश्व लोहे की कड़ियों में बंधे रहते थे और वह अपने भू खंड की उगाही करता था ॥51॥

घूधाहरि चाडिय करनि धज्ज, पाळ वे सुखी वासइ परज्ज ।
गडियडइ जेम सायर गइँद फरहरइ ढाल माथे फणीद ॥52॥

राव घूधा के वंशज राव लूणकरण ने राठौडों की कुलदेवी माता करनीजी के दहरे पर ध्वजा चढाई । ये दोनों रक्षक (माता करनीजी एवं राव लूणकरण) अपनी प्रजा को सुख सुविधा पूर्वक बसाते हैं । राव लूणकरण के हाथी समुद्र के समान गर्जन करते हैं तथा उसकी ढाल पर वासुकि सुशोभित हो रहा है ॥52॥

देवळे पडइ वाजइ दुवारि, झालरी सङ्ख सुसबद झणारि ।
आदीत जिसा निरमळा अङ्ग, गहवन्त राउ घू जेम गङ्ग ॥53॥

माता श्री करनीजी के देवालय के द्वार पर नगाड़े बज रहे हैं और झालर, घण्ट एवं सुणङ्ग नामक वाद्यों की ध्वनि हो रही है। राव लूणकरण का शरीर ध्रुव के समान निर्मल तथा ध्रुव एवं गंगा के समान गौरवान्वित है ॥53॥

नवसहस राइ नीसाण नाद, पूजिजइ देव आगो प्रसाद ।
चउपनउ समीसर करनि चाळि, देवरऊ दुनी राखी दुकाळि ॥54॥

राठौड़ राव लूणकरण नगाड़ों पर डंका देते हुए राजप्रासाद के आगे देव-पूजा करते हैं। पन्द्रह सौ चौपन के संवत् में अकाल के समय माता करनी के शरणागत बनकर देवालय में प्रजा को सुरक्षित रखा ॥54॥

करन राउ करइ भुसमइ कडाहि, मेदनी ऊबारी मइल माहि ।
कूंजर दुवारि दीपइ करन्न, वाचइ सुजस्स अट्ठार व्रन्न ॥55॥

राव लूणकरण ने अकाल के समय देव-पूजार्थ सिद्धान्न (कड़ाही) करके अपने राज्य में प्रजा का बचाव किया। राव लूणकरण के द्वार पर हाथी सुशोभित हो रहे थे तथा सभी वर्णों के लोग उनके सुयश का बखान करते थे।

तेडिय नट हूंता गूजरात, वीकउत्त उबारण सुजस वात ।
ताजी हसत्ति दीन्हा तियाइ, रण हूंत पिता मारावि राइ ॥56॥

राव बीका के पुत्र राव लूणकरण ने अपने सुयश रूपी वार्ता की रक्षार्थ गुजरात से नटों को आमन्त्रित किया तथा उन्हें हाथी और घोड़े देकर अपने पिता को ऋण मुक्त करवाया। (शायद राव बीका ने अपने जीवन-काल में उक्त नटों को पुरस्कृत करने का वचन दिया होगा) ॥56॥

नागाणइ अनियइ बीकनेर, वांसोघस हूअउ यहइ वर ।
ऊठिया कोपि आमळिय अङ्ग, आकासि अड़ाविय उत्तिमङ्ग ॥57॥

नागौर और बीकानेर राज्यों में परस्पर शत्रुता चल रही थी। पवित्र शरीर धारी राव लूणकरण कुपित हो उठा। उसने अपना सिर आकाश तक जा भड़ाया ॥57॥

सम्मेळि थाट सूरा सताल, धड़हड़िय कोपि वावाडि ढोल ।
महम्मदखान मेल्हाण माड, चाडिय असि आयउ कळह चाड ॥58॥

राव लूणकरण ने अपने शक्तिशाली वीरों को एकत्र करके सेना तैयार की। उसने रोषाविष्ट होकर ढोल बजवाया। महम्मद खान की सेना जसलमेर प्रदेश में थी। वह युद्ध करने की इच्छा से अश्व पर चढ़कर आया ॥58॥

घूघहर धणी साहस्स धीर, टाळियउ अङ्ग ताजो न तीर ।
केकाण हाठ साम्हउ करन्न, मेलियउ धाइ विय मोटमन्न ॥59॥

राव घूघा का उत्तराधिकारी राव लूणकरण धैर्यधारी एवं साहसी था। उसने

युद्ध म चलते हुए तीरो स स्वय को तथा अश्व को नही बचाया। अश्व सेना के सम्मुख उदार हृदय राव लूणकरण ने भिडकर प्रहार किया ।।59।।

राति वाहि विढिया खान राउ, घण घाइ मेछ मन्नावि धाउ ।
अेवडउ मुहम्मद अस्समान, खाखरउ गयउ खेरावि खान ।।60।।

राव लूणकरण और महमदखान रात्रि-कालीन युद्ध मे परस्पर भिडे। राव लूणकरण ने अपने शस्त्र प्रहारो से यवन मुहमदखान को पराजय स्वीकार करवा दी। ऐसा अद्वितीय वीर मुहमदखान अपना गव नष्ट करवा कर गया ।।60।।

महम्दखान घाओ मनाइ, आपणइ मग्र आथाणि आइ ।
सतरहउ समीसर राइ समत्थि, हाथी वरीसि गळहत्थि हत्थि ।।61।।

राव लूणकरण मुहम्मदखान को पराजय स्वीकार करवाकर अपने स्थान पर लौट आया। सतरहवें सवत् में हाथियो का दान करने वाले राव लूणकरण ने अपने हाथ से हाथियो के गले मे फदा डाला ।।61।।

इळ राइ करन वारउ कि इंद, गुणियणा ग्रिहे बाधा गइंद ।
ताकुआ रेसि सोभाग तत्ति, हिंदुवइ राइ दीन्हा हसत्ति ।।62।।

इस पृथ्वी पर राव लूणकरण का समय देवराज इन्द्र के समकक्ष था। उसने कवि और गुणीजनो के घर हाथी बधवा दिय। कवियो का अपने सौभाग्य की कोई चिंता नही रही। हिंदूपति राव लूणकरण ने उन्हें हाथी प्रदान कर दिये ।।62।।

कळि काळि परीक्रम अे करन्न, देखियइ दुवापुर दिख्या दन्न ।
कणइट्ठ कन्हा घर लूणक्रनि, मारुअइ राइ ली मोटमन्नि ।।63।।

वतमान कलियुग के समय राव लूणकरण का पराक्रम ऐसा था कि उसने अपने समय को द्वापर के समान दिखा दिया। उदार हृदय वाले मारू राव लूणकरण ने अपने छोटे भाई (पडसी) से पृथ्वी प्राप्त की ।।63।।

हीसरिल थट मेळिय हसम्म, कादमी लई पाखइ कदम्म ।
कोवण कटक्क कीयइ करन, छेलियउ भनि भातिय छपन ।।64।।

राव लूणकरण ने अश्व सेना एकत्र की। उसने कदीमी राह पकडी। वह बिना राह के नही चलता था। राव लूणकरण ने मेघघटा के समान सेना को सजाया तथा अपने मन मे भाटियों को रखकर चला ।।64।।

ऊरघि चढिय पोकरणि आइ, रहडिया देस वाजा रडाइ ।
जेसाणइ ऊपरि करनि जाइ, वाजिन्न लेय नीसाण वाइ ।।65।।

राव लूणकरण अपनी सेना के साथ चढकर पोकरन पहुँचा। वह युद्ध वाद्यो को बजाकर इस प्रदेश को नष्ट करने लगा। तत्पश्चात् वह अपने घोडो को लेकर नगाडो पर डका देते हुए जसलमर के ऊपर चढ़ चला ।।65।।

करनाजण आयउ जोपिकार, लोलो देवारो लाथि लार ।
धण नेह घाइ मनावि घाउ, अलजेया भाटी करम आउ ।।66।।

राव लूणकरण विजय प्राप्त करके लौटा। लोनी और दवारी की प्रजा उसके पीछे हो ली। राव लूणकरण ने अत्यंत स्नेह के साथ जिल्ज भाटियों को पराजय स्वीकार करवाई ।।66।।

चक्रवइ उपाडण माड चक्क, धमधर्जा राद वीया वटक्क ।
वैकाण वडा मळिया कसि, ऊमछिय व्रम आरुहिय असि ।।67।।

चक्रवर्ती राव लूणकरण ने भाटियों के शासन का उच्छेदन करने हेतु राठौड़ों की सेना बनाकर आक्रमण किया। अश्वों को सुसज्जित करके घेरा बनाया तथा स्वयं उमंगित होता हुआ अपने अश्व पर आरूढ़ हुआ ।।67।।

जैसाणइ मारगि जङ्गमेहि खवळिया माळ मेहां खुरेहि ।
जागळू राइ जोपिवा जङ्गि, दळ मळि लाग ढूकउ दुरङ्गि ।।68।।

जसलमर के भाग को सेना के अश्वों के खुरों की धूलि से धूमिल कर दिया। जांगलू का राव लूणकरण युद्ध जीतने के लिए अपनी अनगिनत सेना एकत्र करके जसलमेर के दुर्ग पर पहुंचा ।।68।।

बारमइ मासि वळि वधि थोल, ढूकउ करम वावाडि ढाल ।
राउळोद न पूगउ दीह राहि, मेळियउ तास समसज्ज माडि ।।69।।

राव लूणकरण अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार बारहवें महीने ढोल बजवाता हुआ जसलमेर पहुँचा। जसलमेर के शासक (रावल) दिन में युद्ध में राव के समक्ष नहीं आ सका। वे ठीक सायकाल के समय युद्ध के लिए एकत्र हुए अथवा भिड़े ।।69।।

मेड नइ माड गैने मरेहि, वाजिया जिनइ दळ वारणहि ।
ऊठियउ पिता आगो अवीह साफळइ करण प्रतापसीह ।।70।।

राव लूणकरण एवं जसलमेर की भाटी सेना के दोनों दळ अपने अपने हाथियों द्वारा भिड़े। युद्ध करने के लिए प्रतापसिंह निर्भय होकर अपने पिता से आगे आया ।।70।।

कुअरा गुरि वूहउ कळि करन छावडइ सेन भागउ छपन ।
राउळोइ रतउ गोरद राउ, गढि पइसि गया खराइ गाउ ।।71।।

कुंवरा में शिरोमणि प्रतापसिंह युद्ध करने के लिए चला अथवा कलियुग में करण के समान चला। भाटी सेना का परित्याग करके भाग (हार) गये। रावळोत रता और गोविंदराव दोनों अपना गव लज्जित करवाकर गढ में प्रविष्ट हो गये ।।71।।

घाअे करनि मनाइ घाउ, राउळ नइ राउत अेक राउ ।
रातिवाहि राउळ भञ्जि राइ, ताडिय वटक्क आयउ तळाइ ।।72।।

राव लूणकरण ने अपने प्रहार से भाटी शासक एवं सरदारों को एक ही मार्ग पर लाकर पराजय स्वीकार करवाई। रात्रिकालीन आक्रमण में राव ने जैसलमेर के रावळ को पराजित किया तथा अपनी सेना को लेकर तालाब पर पहुँचे ॥72॥

मइगळा नीर पायउ मसट्टि, मेंचे चउ आयउ जइत खट्टि।
भ्रेन रा माड खेरू करेय, लालावर आयउ जइत लेय ॥73॥

राव लूणकरण ने विजय अर्जित की। अपने हाथियों को जैसलमेर के तालाब पर ले जाकर मीठा पानी पिलाया। राव लूणकरण भाटी प्रदेश को नष्ट भ्रष्ट करके विजय प्राप्त करता हुआ लालावर पहुँचा ॥73॥

गंगेवि राइ नागउर गड्ड, सोंकडइ घाति भीडिय सनड्ड।
दीवाणि राउ कीधो दुवारि आविय करन ओलइ उवारि ॥74॥(1)

राव गांगा ने नागौर के दुर्ग को अंदर से घेरकर उसे अच्छी तरह से कसा। नागौर के शासक ने राव लूणकरण से कहा, हम आपकी शरण में हैं। हमारा बचाव करो' ॥74॥(1)

उभइ कटक्क अंतरी आइ। मीवाणि मेछ भलउ मनाइ ॥74॥(2)

दोनों सेनाएं परस्पर मिली-भिड़ी। राव लूणकरण ने नागौर के यवन को मुक्त करवाकर प्रसन्नता प्रकट की ॥74॥(2)

॥ दूहउ ॥

काठळिअे जीत करन, महिपति अमळीमाण।
सामहिया सळखाहरइ, साम्हा दळ सुरिताण ॥75॥

सीमावर्ती शासकों को स्वाभिमानी राव लूणकरण ने जीत लिया। अब राव सलखा के वंशज के समक्ष बादशाह (सुल्तान) की सेना थी ॥75॥

॥ छन्द पाधड़ी ॥

काठळिअे जीते राइ करनि, मारूअइ राइ की पूब मनि।
नवसहसउ ऊपरि नारनोळ, छेलियउ भ्रन्न दे वेळ छोळ ॥76॥

सीमावर्ती शासकों को राव लूणकरण ने जीत लिया। मरुधराधीश ने अपने मन में अपूर्व योजना बनाई। राठौड़ राव लूणकरण नारनौल पर जैसे समुद्र तरंगाइत होकर लहराता हो उसी प्रकार बढ़ा ॥76॥

चडिया कटक्क त्रंबक्क चोट, कंपिया सपतइ दीप कोट।
राजधर कुँअर तडियउ राउ, सूरउ सतोन सहवर सिहाइ ॥77॥

राव लूणकरण की सेना नगाड़ा पर डंका देकर चली। उसमें सातों द्वीप के दुर्ग

कम्पायमान हो गये। उसने कुंवर राजधर को आमंत्रित किया क्योंकि वह अत्यन्त बलशाली और सहोदर भ्राता के समान सहायता करने वाला था ।।77।।

परांज विलागउ आइ पाद, राणा उवारि राठउड राइ ।
करनाजण कीअे कट्टुकेहि, टीडवाणि उग्रहआट देहि ।।78।।

फीरोजखां राव लूणकरण के पैरों में आ लगा अर्थात् उसने आधीनता स्वीकार करली। उसने कहा — राठौड़ राव मुझे बचाओ अथवा राणा से बचाओ। राव लूणकरण ने जब अपनी सेना तैयार की तो डीडवाना का शासक कर देने लगा ।।78।।

त्रत्र रा भअे ग्रासिया काढि, मेवाड तणा गा वाग माडि ।
अहिपुर सभापिय तुरी अत्थ, हिंदुवइ राइ दे पूठि हत्थ ।।79।।

राव लूणकरण के भय से मेवाड़ के अनेक ग्रासिया (छुटभैया-जमींदार) अपने अश्वों की लगाम घुमाकर चल गये। हिन्दूपति राव ने नागौर के शासक को सहायता का वचन देकर उसने घोड़े एवं द्रव्य लौटा दिये अथवा नागौर के शासक ने राव लूणकरण को घोड़े एवं धन समर्पित किये तथा निवेदन किया कि आप हमारी पीठ पर हाथ रखें अर्थात् रक्षा का वचन दें ।।79।।

आनियउ थाट मळिय अथाह सळखहर राउ वागड सिराह ।
दउलतिखानि दळ साथि दय, वस्माविक दस विनउ वहय ।।80।।

राव सलखा का वंशज राव लूणकरण अपनी अथाह सेना एकत्र कर वागड प्रदेश पर चढ़कर आया। दौलतखान ने अपनी सेना साथ में दे दी और प्रदेश को आबाद करने के लिए दोनों साथ-साथ चलने लगे ।।80।।

नहवां निजाम झीझणू चम्प कावाळ नरहडी काटि कम्प ।
सीघाणउ पाअे गाहि सेन, मल्हाण पंचेरी दो'ह मेन ।।81।।

नहवां के निजाम से झूंझणू को झपट लिया। कावाल और नरहड का मैल (मनोमालिन्य) निकाल कर दूर किया। सीघाण की सेना के पैरों से रौंदकर रात्रि के समय पचेरी में डेरा (मुकाम) किया ।।81।।

राउ करन जस्स कजि जागि रात, पी वाल चाड ढूकउ प्रभाति ।
देठाळउ दूअउ दुह दळांह खिविया खडग्ग साधी लगांह ।।82।।

राव लूणकरण ने यश प्राप्ति के लिए रात्रि जागरण किया। अपने प्रिय वचनों की रक्षा की इच्छा से वह प्रभात के समय पहुंचा अथवा पीवाल की रक्षा के निमित्त प्रभात के समय पहुंचा। दोनों सेनाएं एक दूसरे के सम्मुख आई और लगो (यवनों) के कंधों पर तलवारें चमकने लगी ।।82।।

विच्छूटि हवाई ढाल वाजि गुण वाण पद्ध गइणाग गाजि ।
वाझाळ गयउ ऊटिय क्रमेह भारत्थ त्रग्ग आयउ भुजह ।।83।।

हवाई यन्त्र छूटने लगे और ढोल बजे। धनुष की प्रत्यञ्चा तथा बाणों के पखो की आवाज स आकाश गूंजने लगा। कायर (साथी) दौडकर उडन छू हो गया तथा युद्ध का भार राव लूणकरण की भुजाओं पर आ पडा ।।83।।

साथी करन्न साऊ सनाम, रउद्र दळि पइठ कहि राम राम ।
पातलइ कुँअरि रूठइ पवङ्ग, जाडे ले ढोयउ देखि जङ्ग ।।84।।

राव लूणकरण के साथी नामी थे। व यवना की सेना म राम राम कहते हुए प्रविष्ट हुए। कुवर प्रतापसिंह अपने अश्व के रुष्ट हाने पर उसे युद्ध की सघनता देखकर उसम ले गया ।।84।।

वइरसी तुरी वीरत्ति वाइ, घण झूझइ भेळिय मुहर घाइ ।
धौंकारव धुण ही वाजि धार, आमाल फिरी पाखी अपार ।।85।।

झुझारू वीर वरसी अपने अश्व को वीरता क साथ चला कर सेना के अग्रभाग मे प्रहार करते हुए भिड गया। धनुष की प्रत्यचाए और तलवारो की धारें बजने लगी। अपने पक्ष की अश्व सेना शत्रुओ के इद गिद फल गई ।।85।।

मुहता प्रधान घाओ मिळेय, कुरखेत कोघ कळहण करेय ।
प्रतापसीह वइरउ पतङ्ग, अणिओ सरग्गि गा चाडि अग ।।86।।

मुहता और प्रधान भिड कर प्रहार करने लग। उ हाने लडते हुए रणक्षेत्र को कुरुक्षेत्र बना दिया। कुवर प्रतापसिंह और वरसी भालो की अणियो पर अपने अगो को चढाकर स्वग पहुच गय ।।86।।

हिन्दुआ देखि हथियारि हार, असपत्ति तणा सूरइ अपार ।
फरि घडिओ कीधउ भड फेर मारअउ राउ डोलइ न मेर ।।87।।

हिदुओ ने शस्त्रा द्वारा अपनी पराजय देखी। बादशाह (सुल्तान) के गुप्तचर इधर उधर घूम रहे थे। वीरा ने पुन चढकर घरा डाला परतु मरुधराधीश राव लूणकरण सुमेरु पवत की तरह अचिग रहे ।।87।।

घमरोळइ थाटा धरिय धूप, राठउड राउ हुउ पञ्चरूप ।
चक्रवइ करन पीथोल चङ्गु, ओइला हुअउ पइलाँ अगङ्गु ।।88।।

सनाओ ने तलवारो को धारण करके धमराळ मचा दी। राठोड राव लूणकरण सिंह के समान बन गया। चक्रवर्ती राव पीथोल की सहायता की इच्छा से पक्ष एव विपक्ष वालों म अचल (स्थिर) बना रहा अथवा अपने प्रिय वचनो की रक्षा के निमित्त युद्ध म स्थिर बना रहा ।।88।।

वाराह अन्न पइठउ विचाळि, नीझरडइ चाडिय मेछ नाळि ।
वीकउत विछूटा रुहिर वाद, पडिनाळ जाणि पासे प्रसाद ।।89।।

राव लूणकरण वराह के समान सेना के मध्य मे प्रविष्ट हो गया। यवन उसे

वहूको के द्वारा घायल कर रहे थे अथवा उसने यवन सेना को प्रहार करके घायल किया। राव बीका के पुत्र के घावों से रुधिर बहने लगा मानो किसी प्रासाद के समीप प्रनाळी चल रही हो ।।89।।

राठउड राउ रूठइ रउद्द, सांकडइ पइठ साईं समुद्द ।
सइ गत्त करन सत्ते सलीह, डम्बरे कि छायउ जाणि दीह ।।90।।

राठौड़ राव यवनों पर रुष्ट हुआ। वह उनके समीप पहुंचा मानो समुद्र से आलिंगन बद्ध हो रहा हो। राव लूणकरण अच्छी तरह से शत्रुओं के लिए शल्य-स्वरूप बन गया। यवन सेना के मध्य वह ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो सूर्य बादलों से आच्छादित हो गया हो ।।90।।

मारुअउ राउ मुणिसत्त मल्लि, माथइ ज्यउँ भरियउ सेल भल्लि ।
पारकाँ हाथ तउ पडिय पील, जे करन जेम भरियउ कँदील ।।91।।

राव लूणकरण यवनों का मर्दन कर रहा था। उसका शरीर तूणीर की तरह भालों रूपी बाणों से भर गया। उसका हाथी शत्रुओं के हाथ पड़ा। फिर भी वह युद्ध की इच्छा से परिपूर्ण था ।।91।।

करनाजण कूते असुर केह, कोठार जेम भरियउ कणेह ।
करनाजण विवनउ करिय करथ, हथियअ मछ तउ पडिय हत्थ ।।92।।

राव लूणकरण ने अपने भाले से अनेक यवनों का संहार किया। वे ऐसे प्रतीत होते थे मानो कोठार अन्न-कणों से भरा हो। राव लूणकरण उल्लेखनीय कार्य करके मृत्यु को प्राप्त हुआ, तब जाकर उसके हाथी यवनों के हाथ लगे ।।92।।

विलँवाँ सँग्रामि विवनउ करन, थरहरिय सवे मरुआडि थान ।
हुइकम्पि देस हूअउ हुलाउ, राठउड विवनउ करन राउ ।।93।।

राव लूणकरण यवनों के साथ युद्ध में काम आया। इसमें मारवाड़ के सभी थाने कम्पायमान हो गये। राठौड़ राव लूणकरण मृत्यु को प्राप्त हो गया यह जानकर पूरे प्रदेश में हड़कम्प मच गया मानो शीतकालीन पवन चल रहा हो।

असमानि जइत उठियउ अगम्भ, थिडतइ गँभारि दे आभि थम्भ ।
थिर प्रजा कही धर धणी थाइ राखियउ राज जइतसी राइ ।।94।।

मरु प्रदेशीय आकाश में राव जैतसी अग्निशिखा के समान प्रकट हुआ। उसने विचलित संसार रूपी आकाश को थामा दे दिया। स्थिर प्रजा ने कहा—राव जैतसी ने राज्य की रक्षा की है अतः स्वामी ऐसा ही होना चाहिए अथवा स्थिर प्रजा ने कहा कि राव जैतसी ने पृथ्वी का स्वामी बन कर राज्य को रखा ।।95।।

मारअउ राउ सहदेव मत्ति, ताणावि छत्र वइठउ तखत्ति ।
ऊजळा चँवर ढळाइ अवीह, सिरि छत्र अविच्चळ जइतसीह ।।95।।

मारु राव जतसी बुद्धि में सहदेव के समान प्रत्युत्पन्नमति था। वह अपने सिर पर छत्र धारण करके राज्य सिंहासन पर बैठा। राव जतसी के ऊपर उज्ज्वल चंवर ढिराये जाते थे। निर्भीक जैतसी के सिर पर अविचल छत्र सुशोभित था।

हइ वालि खम्भि सोहइ हसत्ति, गजपत्ति जइतसी अउवगत्ति।
दस देसपत्ति सेवइ दुवार, ओळगू ग्रन आगी अढार ।।96।।

दुपपति राव जैतसी की चाल-ढाल गजब की है। उसके अश्व लोहे की कड़िया में और हाथी खंभों से बंधे हुए सुशोभित होते थे। अनेक राजा राव जतसी के द्वार पर हाजिरी देते थे तथा सभी जातियों के लोग सेवक थे ।।96।।

थरहरिय मीर थाणा थरक्कि, वसि किया अइति गढ देस वक्कि।
आउघा वेळ ऊर्छळिय अत्ति, गडडियउ जइत सामन्द्र गत्ति ।।97।।

कहते हैं—राव जतसी ने अनेकों गढ एवं बहुत सी भूमि अपने अधिकार में करली जिससे अनेक थानों में हड़कम्प मचा हुआ है। राव जैतसी समुद्र के समान गर्जन करता है तथा उसके शस्त्रास्त्र समुद्र की लहरों के समान परिपूर्ण हैं अथवा अनगिनत हैं ।।97।।

हठमल्लि जइति मनावि हीर, हल्लावि हक्कि हिन्दू हमीर।
सत जइतसीह आपा सक्त्ति, पइ सेव मनाविय देसपत्ति ।।98।।

वीर शिरोमणि राव जतसी ने अपना शौर्य सभी से स्वीकार करवाया। उसकी हांक में हिन्दू एवं यवन दोनों अपनी अपनी राह पर समान रूप से चलते हैं अथवा अपनी हांक से हिन्दू तथा यवनों को चलाता है। राव जतसी को स्वयं माता करणी ने शक्ति प्रदान की और अनेक राजाओं को अपनी पग सेवा स्वीकार करवाई ।।98।।

नवसहस जइत नरवइ नरेस, देसाधिपत्ति जागळ देस।
जिणि भोमि पट्ट पहिरजइ चीर, मुणियइ धर जगळ कासमीर ।।99।।

राठौड़ राव जतसी राजाओं का भी राजा है क्योंकि वह जागळ प्रदेश का स्वामी है। जिस भूमि पर स्त्रियां रेशमी चीर धारण करती हैं, इसके कारण यह जगळ धरा द्वितीय कश्मीर कही जाती है ।।99।।

तारुणी सऊजळ सेतदन्त, वाणी सुहाणि पाड माजवन्त।
साहिनी भोमि वांका सुभट्ट, झूझार दियइ करिमाळ झट्ट ।।100।।

जागल प्रदेश की नवयौवनाओं की दंत-पंक्तियां श्वेत एवं उज्ज्वल होती हैं। उनकी वाणी सुहावनी एवं वे स्वयं लज्जाशील होती हैं। उक्त सुहावनी भूमि में बांके सुभट उत्पन्न होते हैं जो झूझार बन कर तलवार का प्रहार करते हैं।

वाळियां वधइ घरि-घरि ग्रहास, ग्रामिया सपूरित ग्राम वास।
सावन्त घन धजवध माह, राठउड राजि रहवहइ राह ।।101।।

राठौड़ जतसी के राज्य में घर घर लोहे की कड़ियों में अश्व बंधे रहते हैं। ठाट

जागीरदार अपनी जमीन एव निवास से सतुष्ट हैं। स्वण एव अ य मुद्राओं से युक्त धजवद शाह (श्रेष्ठी) हैं। राठौड जतसी के रा य म सभी वण धर्मों के लोग अपने अपने धम पर चलत हैं ॥101॥

लागीय मिळइ माऽही लोक, चउहट्ट हाट माणिक्य चोक ।
अ तरी गउख ऊजळा आप, अम्मळी कोट म्हाई अलोप ॥102॥

यनस्वी लोग बाजार म एकत्र होते हैं। वहा अनेक चौहट्टों तथा माणिक्य चौक में हाटें (दूकानें) लगी हुई हैं। अमदनीय कोट, अलघ्य परिखा एव समीप ही उज्ज्वल काति वाले गवाक्ष हैं ॥102॥

नेहलो नीर भरिया नयड्ड, बौंकउ दुरग पाखो विहड्ड ।
सारीख जइत सुरिताण साज, रामावतार राठउड राज ॥103॥

नेहली तलाई एव नाड जल से परिपूण हैं। अतीव सु दर दुग विस्तत खाई से युक्त है। राव जतसी बाद्शाहो की सी साज-सज्जा वाले हैं। उनका राठौड राज्य रामराज्य की तरह का है ॥103॥

भटनेर भजि सरसउ सँघार, हिसार कोट मनावि हार ।
नरहड मुहिम्म मांडियउ मास, वडसी नइ हासी करइ वास ॥104॥

भटनेर का भजन किया। सरसे का सहार कर दिया। हिसार के कोट पर शासन करने वालो को पराजय स्वीकार करवा दी। अपनी सेना द्वारा नरहड को नष्ट कर दिया तथा वडसी और हासी म अपना मुकाम किया ॥104॥

सीहनदि समाणा लिया सद्धि, ऊग्रहइ असुर आधो अर्याद्ध ।
वसव तुरक्क छूटइ न कोइ, जेजियउ दियइ जालिंधरोइ ॥105॥

यवन बादशाह ने सीहनद और समाणा को अपना वशवर्ती बना लिया। वह वहा की उगाही मे आधा हिस्सा लेने लगा। यवन बाद्शाह से कोई भी कस्बा बच नहीं सका। जालधर के शासक को भी जजिया (कर) देना पडता था ॥105॥

मूसिल्लमाण खुरिसाण मग्गि, लाहउर राउ सुरिताण लग्गि ।
कळळियउ खुरासाणी कधार सज कीजइ रेवँत सिलह सार ॥106॥

यवन सुल्तान खुरासान के माग से लाहौर के शासक तक जा पहुचा। बाद्शाही सेना में कोलाहल होने लगा तथा अश्वो को कवचित करके तयार किया जाने लगा ॥106॥

॥ गाहा ॥

सर सिलह कीजइ ससमारो, असपति राउ हुइसइ असवारो ।
भडा भडिज विलहीजइ भारो, वाविल कळळइ सेन कँधारो ॥107॥

अश्वो पर कवच कसे जा रहे हैं क्योकि बादशाह की चढाई होगी। सुभट भारी

मात्रा में अश्वो पर आरूढ होने लगे। कधार प्रदेशीय यवन सेना मे कोलाहल होने लगा अथवा काबुल के मार्ग म कधारी सेना का कोलाहल हुआ ॥107॥

॥ छन्द पाघडी ॥

काविली तणा अइयार कोडि, नीसाण रोडि हुइ छाडि छोडि ।
जरवादि जडिय जगमे जीण, दळ मीर चडइ मुखि दीण दीण ॥108॥

काबलियो के अनेक सैनिक नगाडे बजाते हुए 'अश्वों को छोडो—अश्वो को छोडो' कहने लगे। अश्वो पर कवच-पाखर इत्यादि कसकर जीन कसी जाने लगी। यवन सेना चढ रही है। उनके मुह से 'दीन-दीन शब्द' का उच्चारण हो रहा है ॥108॥

सुरिताण तणा सम्मूह सत्य, अवयरइ सेन साम्हा अगत्य ।
सह मीर तणउ दरियाउ सद्धि, मीरजा पईठउ देस मद्धि ॥109॥

सुल्तान का सैन्य-समूह मीर की असरय सेना के सम्मुख प्रकट हुआ। उसने मीर के समुद्र को साध लिया अर्थात् अपने काबू मे कर लिया। तत्पश्चात् मीरजा देश में मध्य प्रविष्ट हुआ ॥109॥

आविया कटक्क थटइ अपार, धर धणी उठी पम्मार धार ।
देवड्ड तणउ पाखर अटोल, ढूकउ मुगुल्ल दळि वाइ ढोल ॥110॥

अपार सैन्य समूह आया देखकर पृथ्वीपति धार का परमार उससे लोहा लेने के लिए उठा। परमार देवडण के अश्व का कवच सुस्थिर था। वह मुगलो की सेना के सम्मुख ढोल बजाता हुआ पहुँचा ॥110॥

कळहियउ रइण सामई काजि, भागली गया दळ भाजि भाजि ।
पहिलउ पछाडि सामई पाणि, सामाहर साथिय सूलिताणि ॥111॥

अपने स्वामी के लिए रतन व्याकुल हो गया अथवा लडा। कायर सैनिक दौड कर चले गये। रतन ने अपने स्वामी की शक्ति से शत्रु को पछाड दिया। सामा के पौत्र ने सुल्तान का सहार किया अथवा मार गिराया ॥111॥

सइलोट कीध सामई साहि, मारियउ सलहदी मीर माहि ।
सूमरइ जिसा आसुर सँघारि, महिपत्ति वडा ग्रासिया मारि ॥112॥

अपने स्वामी की सहायता के लिए रतन ने सलहदी मीर माही को मार कर सीधा कर दिया। सूमरे जस असुर का सहार किया तथा उस पृथ्वीपति ने बडे बडे लुटेरा को मार गिराया ॥112॥

वीडरिय विमुहि गउ तिदइ वच्छ, काविली कूति काछियउ कच्छ ।
भाखर अरोड वे चाडि भल्लि, मल्लियया देस मूगळाँ मल्लि ॥113॥

तिदयी वच्छ भयाक्रान्त होकर भाग गया। काबुलियो ने अपने भालो को कसकर पकडा। भाखर तथा अरोड दोनो को भालों पर चढा दिया अथवा अचलवीर काबुलियो

ने दानों को भाला पर चढ़ा दिया। मुगलों ने देश का मर्दन करते हुए उसे मानो मथ डाला ॥113॥

वसि करिय मीर गढ वास वत्थ, पाधरा किया तरहइ पत्थ।
हइँवरा भड़ां दुहुँ हुइ हुलि, मुलिताण मंनि घातिय मुगुल्लि ॥114॥

मुगलों ने युद्ध द्वारा मीर के गढ, निवास स्थान को अपने काबू में कर लिया तथा उन्हें सीधा करके तितर बितर कर दिया। अश्वों और सुभटों दोनों का हल्ला हुआ। उस मुगल ने मुल्तान को अपने मन में बसाया ॥114॥

कपिलसिङ्घ थाटा किंवाड, मूगले कियउ पद्मास माड।
खड्गरू खडि चल्लावि खेर, मुगले घूणि सातल्लमेर ॥115॥

कपिलसिंह दुर्गों का रक्षक था। फिर भी मुगलों ने थाटा प्रदेश को नष्ट कर दिया। उसने अपने अश्वों के साथ सेना को चलाया तथा सातलमेर को धुनकर रख दिया ॥115॥

गढि काइ न लागी हाथ लग्ग, पाल्टा गा करिय पग्ग।
मूगले ऊच सम्भारि मन्नि, दिवराउर लीयउ अेक दिन्नि ॥116॥

गढ में कोई भी अच्छी वस्तु हाथ नहीं लगी। अतः वे उल्टे पैर वापस चल दिये। मुगल बादशाह ने अपने मन में ऊच का स्मरण किया तथा चलते हुए एक ही दिन में देरावर को अपने कब्जे में ले लिया ॥116॥

मूमणहवाहण नइ मराट, काबिली लिया पहर महि कोट।
ऊपरि ऊच फेराविं आण, म्रद्दिया मिरी सिरि मूलताण ॥117॥

मूमणवाहण और मरोट के दुर्गों को काबुली मुगल सेना ने एक प्रहर में काबू कर लिया। उसने ऊच पर अपनी दुहाई फिराई तथा मुल्तान के यवनों का मर्दन किया ॥117॥

भेहरउ वगउ किय भन्जि भूक, रिणजङ्गि मुगुल्ले दाखि रुक।
भम्भेरि भन्जि मँगलउर मारि, प्राजाळ जमू बेव पहारि ॥118॥

युद्ध क्षेत्र में मुगल बादशाह ने तलवार दिखाकर भेहरउ और बगउ को तोड़कर चूरा बना दिया अथवा कचूमर निकाल दिया। तत्पश्चात् भभेरी को तोड़ा और मंगलउर को पराजित किया तथा जम्मू के दोनों पहाड़ों को जला दिया अथवा जम्मू को दोनों ओर के प्रहारों से प्रज्वलित कर दिया ॥118॥

सिरमउर अनइ लाहउर संघि, बाबरी साहि ल्या गळइ बंधि।
देपाळपुरइ पुरि दे दवट्ट हेनारसि लूटिय कोट हट्ट ॥119॥

सिरमौर और लाहौर की सीमा तक के लोगों को बादशाह बाबर गले में बंधन डालकर ले आया। दिपालपुर पर आक्रमण करके आनन फानन में उसका दुर्ग तथा बाजार स्थित दुकानों को लूट लिया ॥119॥

सत जानू खोखर मल्लणास, घोडे वाहा नीध घास ।
नरिहाउ अनइ जादव विरुद्ध, बाणासि कोटि कीया विसुद्ध ।।120।।

बादशाह बाबर ने अपने शत्रु जानू खोखर और मल्लणास को घोडों को घास डालन का काम सौंपा। वरिहा और जादवों को विरोध करने अथवा विरुद्ध बनकर तलवारों से काटकर सनाहीन कर दिया ।।120।।

पण्डघार पाडि नारु निवाडि, चूरिया तामिनी गिरेंदि चाडि ।
तूअरइ गया पाहाड तक्कि, चहुआण चूरि चाडिया चक्कि ।।121।।

पडिहारों को नष्ट करके नारुओं को पैरों पर नमाया। उन्हें रात्रि में समय पहाड़ो पर चढाकर नष्ट कर दिया। तवर पहाड़ो का लक्ष्य बनाकर चले गये। चहुआणों को नष्ट करके चक्र चढा दिया अर्थात् विचलित कर दिया ।।121।।

असपत्ति उवह दळ आवरत्ति, छलियउ छत्त छत्तीस छत्ति ।
चानावि वाह किय चवा चूर, पतिसाह पडइ पइ लक्ख पूर ।।122।।

बादशाह बाबर समुद्र के समान सेना से घिरा हुआ रहता है। वह पृथ्वी के सभी नायकों को वश में करके परिपूर्ण बना हुआ है। चुनाब पर आक्रमण करके उसे चकना चूर कर दिया। लोग नदी का बहाव लांघ कर बादशाह के पैरो में पड़ते हैं ।।122।।

बजवाडउ कोठी सहर बेव, हालिया हुयइ आगी हरेव ।
नामिया समाणा सीहनहि, रणतूर सद्दि पाखर रवद्दि ।।123।।

बजवाड़ा की कोठी और नगर दोनों (के लोग) सेना के आगे आगे दौड पड़े। युद्ध बाद्यों एवं पाखरों की ध्वनि करते हुए समाणा और सीहनह को झुका लिया अथवा पराजित कर दिया ।।123।।

जळ पंथि आइ सम्मुह जुडेय, भारत्थ इब्राहिम किय भिडेय ।
मूगले वहिय रिण खेत माहि, पतिसाहि प्रवाडइ पातिसाहि ।।124।।

इब्राहिम ने पानी के मार्ग से आकर बादशाह बाबर की सेना के साथ युद्ध किया। उसने अनेक मुगलों का युद्ध क्षेत्र में वध कर दिया। फिर भी बादशाह के युद्ध चरित बादशाहों के ही समान होते हैं ।।124।।

अेक लाख असी अयार, धुणहार पडिय हज्जार धार ।
खाडे खेंखोळि ढोली ढेंढोळि, ईब्राहिम नाँखिय खडखोळि ।।125।।

यवन सैनिक एक लाख अस्सी की संख्या में थे। उनकी हजारों तलवारों से ध्वनि हुई। इब्राहिम ने ढोली नामक वाद्य को बजवाते हुए असंख्य सैनिकों को तलवार की धार से काटकर डाल दिया ।।125।।

आहम्नि मीर आगरइ आइ, रहडिया देस वाजा रुडाइ ।
पहिलउ खडग्गि चाडिय पठाण, आगरइ वयानइं फेरि आण ।।126।।

शीघ्रता के साथ यवन (मुगल) आगरे आये। उन्होंने युद्ध वाद्य बजाते हुए अनेक देशों को विचलित कर दिया। सर्वप्रथम पठाण उसकी तलवार पर चढा। तत्पश्चात् आगरे और बयाने पर अपनी आन (दुहाई) फिराई ॥126॥

पट्ठाण प्राण नाखिय पछाडि, चदेरी ताई चंविक चाडि।
जउँणपुरि अजोध्या खडिय जाइ, रइयत्ति लोक किय मुगुलराइ ॥127॥

मुगल बादशाह ने अपनी शक्ति से पठानों को पछाड दिया। उसने चन्देरी तक के लोगों को अस्थिर बना डाला। वह चलकर जौनपुर व अयोध्या पहुँचा और वहा के लोगों को अपनी प्रजा बना लिया ॥127॥

नहवाणी भागा छाडि नेस, दाणवा धणी साभिया देस।
विढि काढि प्रिसण हूँता विहार, सीवाळ सबइ कीधा समार ॥128॥

नहवाणी अपने घर छोडकर दौड गये। यवनाधिपति ने देश को स्ववश कर लिया। उसने अपने शत्रुओं को लडकर विहार से निकाल दिया तथा सभी सीवालों को मार गिराया ॥128॥

वइरिया मोरि देखाळि वड्ड, गोरिया राइ गाहिया गड्ड।
हिंदुआ तुरुक्कॉ दाखि हाथ, नंडि लगउँ उडीसइ जगनाथ ॥129॥

मुगल बादशाह ने अपने शत्रु यवनों को शस्त्रों की धार दिखाकर उनके गढों को नष्ट कर दिया। वह हिन्दू एव यवन दोनों को अपने हाथ दिखाते हुए उडीसा के जगन्नाथ तक जा पहुचा ॥129॥

विच्ची विहार वम्भणवाह, समसमा देस ग्रहिया सिराह।
ओइला नइर कुण गिणइ अग, पण्डवइ लगउँ फेरिय पवग ॥130॥

मुगल बादशाह ने बीच मे विहार एव बमणवाह जसे अच्छे-अच्छे देशों को आतकित करके ले लिया। अपने पक्ष के नगरों को युद्ध में कौन गिनता है। बादशाह ने पण्डवइ तक अपना घोडा फिरा दिया अर्थात् पण्डवइ तक की भूमि अपने काबू मे करली ॥130॥

पूरब्ब धरा हइ खूदि पाइ, वळियउ मुगुल्ल नीसाण वाई।
भिडि भुइ पहु गोवरधन पहारि, खण्डियउ माण खाडे खँडारि ॥131॥

पूर्वी प्रदेश को मुगल ने अपने अश्वों के पैरों से रौद डाला तथा नगाडे बजाते हुए लौटा। उसने युद्ध भूमि मे गोवर्द्धन पहाड के राजा को अपनी तलवार से मार कर गर्व खडित किया ॥131॥

वइरागर मुगला विढण वाद, मेवाड राण आडउ म्रजाद।
सुरिताण सल्ल सुरिताण सड्ड, आवियउ आगरइ दियण अड्ड ॥132॥

मेवाड का महाराणा मुगल बादशाह से युद्ध में भिडने के लिए वइरागर की

मर्यादा स्वरूप आगे आया। बादशाहों के लिए शल्य स्वरूप एवं बादशाहों की लज्जा रखने वाला महाराणा आगरे के समीप रोक लगाने के लिए आया ॥132॥

चीत्रउड धणी चग्वलि चडेय, खरहण्ड लेय आयउ खडेय।
मेवाड राण परभोमि माहि, सीकरी सेन आयउ सनाहि ॥133॥

चित्तौड़ का शासक मेवाड़ का महाराणा अपने अश्व पर चढ़ कर साथ में अपनी कवचित सेना लेकर पराई भूमि में सीकरी तक आ पहुँचा ॥133॥

बाणासि वेवि वलि बंधि बोल, धुडहडिय दमामा धुविय ढोल।
सग्राम सजिय सूरा सधीर, मेवाड राण मुहि चडइ मीर ॥134॥

मेवाड़ का महाराणा एवं मुगल बादशाह दोनों अपनी-अपनी तलवारें लेकर वचन-बद्ध हुए। ढोल और दमामे जोर से बजने लगे। धैर्यधारी शूरवीर युद्ध के लिए सजे अर्थात् तैयार हुए। मेवाड़ के महाराणा के सम्मुख मुगल बादशाह चढ़ा ॥134॥

वेलक्ख लोह ऊडियउ चूर, सर पारस छाह सूझइ न सूर।
मूगले मळिय मेवाड माण, रेहळिय मेति खुमाण राण ॥135॥

तीरों के फलों से बुरादा उड़ने लगा। उन बाणों के पखों की छाया से सूर्य तक भी नहीं दिखाई देता था। मुगल बादशाह ने मेवाड़ के महाराणा का गर्व खंडित कर दिया। उस खुमाणवंशीय राणा को युद्ध क्षेत्र में धूल में मिला दिया अथवा पराजित कर दिया ॥135॥

सग्राम राण सीकरी सारि, हाथिया गमिय गउ हेळ हारि।
मेवाड राण मुहि चडिय मीर, समसेर भाल सोखिय सरीर ॥136॥

महाराणा सीकरी के समीप तलवारों से युद्ध करते हुए जल्दी ही पराजित हो गया और उसने अपने हाथियों को भी खो दिया। मुगल बादशाह के सम्मुख मेवाड़ का महाराणा चढ़ा परन्तु उस (बादशाह) ने तलवार पकड़ कर उस (महाराणा) का शरीर सोख लिया अर्थात् सुला दिया ॥136॥

अलव्वरि सेन चडिया अथाह, सोवन्न लूटि बंधिया साह।
लागुअे गमिय मेवात लोप, कछवाहा साम्हउ कियउ कोप ॥137॥

अलवर पर अथाह सेना चली। वहाँ पर सोना लूटा गया और श्रेष्ठियों को बन्दी बनाया गया। शत्रुओं ने मेवात के गावों का उल्लंघन करके कछवाहा पर कोप किया ॥137॥

आवेरि धणी आहवि अचल्ल, मूगले मारि पूराणमल्ल।
सेखाउत कहता सारि सण्ड, दळिया खडगि हैकलिया डण्ड ॥138॥

आंबेर का स्वामी पूरणमल्ल युद्ध में अविचल रहने वाला था परन्तु उसे मुगलों

ने मार डाला। नेग्रावत कहा करते थे 'तलवार उठाओ', उन्हें भी बादशाह ने तलवार के बल पर काट डाला और ऊपर से दंड भी लिया ॥138॥

निरवाण गया भाजिय नरीद, पतिसाह भजे सेवइ पुलीद ।
डूगरां धणी गा डण्ड देय, सग्रही सारि सांभरि सवय ॥139॥

बादशाह के भय से निर्वाण नरेश दौड़ गये और निम्नतर जातियों में रहने लगे। पर्वतीय शासक दण्ड देकर गये। केवल सांभर वाला ने तलवार धारण की अथवा सभी सागरी प्रदेश को तलवार के बल पर अपने काबू में कर लिया ॥139॥

विस्सहर पुर पत्त वहइ वाणि, पहू दियइ भेट पूजइ न प्राणि ।
सेसइ खडग्गि नाणउ खराइ, करिमाळ भाल ऊभद न कोइ ॥140॥

विस्सहरपुर एवं फतेहपुर में मुगल बादशाह का वचन चलता है। वहां के शासक शक्ति में उसकी बराबरी नहीं कर सकते, अतः भेंट देते हैं। मुगल बादशाह अपनी तलवार के बल पर लोगों को मार भगाते हैं तथा उनसे खरा द्रव्य प्राप्त करते हैं। उसके सम्मुख तलवार पकड़कर खड़ा होने की किसी में भी हिम्मत नहीं है ॥140॥

राठउडां पासइ अउर राइ, लोक किय मूगुले पाइ लाइ ।
छात पति हेक अम्मळी छत्त, गिरमेर प्रमाणइ तास गत्त ॥141॥ (1)

मुगल बादशाह ने राठौड़ों को छोड़कर अन्य राजाओं को पैरों लगवाकर रयत बना लिया। एकमात्र राव जतसी ही पवित्र छत्र वाला शासक है। उसकी चाल-ढाल हिमालय के समान अचल है ॥141॥ (1)

राठउड राउ जावण रहाडि । मन्नि किय मूगुले मार आडि ॥141॥ (2)

मुगल बादशाह ने राठौड़ राव जतसी की मनोवाञ्छा जानने के लिए अपना मन मारवाड़ आने के लिए बनाया ॥141॥ (2)

॥ गाहा ॥

आई या वीजी धर आणी, पटहोडा पक्खरिय पलाणी ।
पहू केतउ केता निचि पाणी, खेड सिरइ खिडिया खुरसाणी ॥142॥

और अधिक पृथ्वी जीतने की आशा हुई। मुगल बादशाह ने अपने अश्वों को पाखर एवं काठी से सजाकर तैयार किया। राव जतसी कितने अन्तर पर और कितने पानी में है यह जानने हेतु यवन खड (मारवाड) की ओर चल पड़े ॥142॥

॥ छन्द पाधडी ॥

खुरसाणि खाफर खेड खत्ति । पारम्भ कियउ उतराध पत्ति ॥143॥

बादशाह के सैनिकों ने खेड (मारवाड) को मन में बसाया तथा उसे प्राप्त करने के लिए तैयारी की ॥143॥

लाहउरि सेन सम्मिळइ लक्ख, पाखरिजइ तेजी सूध पक्ख ।
सम्मिळइ साहि आलम समान, विहि सतरि बहुत्तरि मिळइ खान ॥144॥

लाहौर में लाखों की संख्या में सैनिक एकत्र हुए अथवा यवनों की लाखों की संख्या में सेना एकत्र हुई। युद्ध पक्ष वाले अश्वों पर पाखर डाले जाने लगे। वे आलमशाह के समान एकत्र हुए तथा सत्तर एवं बहत्तर खान सम्मिलित होकर चले ॥144॥

दीवाण तणा फिरिया दरक्क, कळळिया ठाहि ठाहे कटक्क ।
चमराळा हुई असँस चाळ, छोगाळ छिलइ करिमाळ काळ ॥145॥

शासन की ओर से शुतर-सवार घूमे। स्थान-स्थान पर सेना का कोलाहल सुनाई देने लगा। असंख्य यवन चल पड़े। यम स्वरूप अद्वितीय वीरों के हाथों में तलवारें सुशोभित हो रही थीं ॥145॥

जोडाळ मिळइ जमदूत जोध, काइरा कपोमुक्खी सक्रोध ।
कुवरत्त केवि काळा किरिट्ठ, गडदनी गोळ मोंजा गिरिट्ठ ॥146॥

यवन सैनिक यमदूतों की तरह एकत्र होने लगे। उनमें कई टेढ़ी आंखों वाले, कई बन्दर मुखी, कई क्रोधी, कई विधर्मी, कई काले-कलूटे, कोई गोल मटोल गर्दन वाले, कई गंजे और कई मुटल्ले थे ॥146॥

वेसें विचित्र सिंदूर वन्न, सूंडी कपाळ के छाज कन्न ।
मद्दी करदिम, वाचइ कुराण, मुसलीम मुला के मुसल्माण ॥147॥

उन यवन सैनिकों में कुछ विचित्र वेश भूषा वाले, कई सिंदूर के समान लाल वर्ण वाले, कईयों के कपाल सूंडों के समान अन्दर की ओर धंसे हुए और कईयों के कान सूप जैसे थे। उनमें कई मुल्ला के बन्दे मुल्ला लोग एवं मुसलमान भी थे, जो हाथों में कुरान लेकर उसका पाठ करते थे ॥147॥

थाका विचित्त पाधोर टट्ट, ताणइ कमाण पईतीस टङ्क ।
आयासि पङ्खि पाडइ अभुल्ल, माकडमुखा मुण्डा मुगुल्ल ॥148॥

उन मुगल सैनिकों में कई बांके और कई विचित्र शरीर वाले तथा कई टेढ़े चलने वालों को सीधा करने वाले थे। वे पैंतीस टंक का कमाण (धनुष) खींचते थे। उन कपि मुखी और रुंड मुंड सैनिकों का निशाना इतना अचूक था कि आकाश स्थित पक्षियों को अपने बाण से मार गिराते थे ॥148॥

मुहरली दृठि पाछिली मूठि, साझइ मिरिग्ग गुण वाण सूठि ।
सेनार मीर के सहिथ साह, बाब्बरीवाळ आजानबाह ॥149॥

उन सैनिकों में से कुछेक बाण को धनुष की प्रत्यंचा पर चढ़ा कर अपनी दृष्टि बाण की नोक पर जमा कर तथा बाण के पीछे वाले भाग को मुट्ठी में कसकर दौड़ते हुए मृगों को मार डालते थे। मुगल बादशाह की सेना में अच्छे अश्व, अमीर एवं श्रेष्ठी थे। उनमें से अनेक सैनिक लंबी जटाओं वाले तथा आजानबाहु थे ॥149॥

वइरी व्रधक्क के वेधवंत्ति पङ्खियाँ जु प्रासइ दूरि पंत्ति ।
असपत्ति तणइ दळि अस्सराळ, काबिली केवि धारा कराळ ।।150।।

बादशाह की असख्य सेना मे अनेक युद्धो म शत्रुओ का विनाश करने वाले, लक्ष्य वेधी, कई दूर स ही पक्षियो को फसाने म प्रवीण एव कई भयकर तलवार धारण करने वाले थ ।।150।।

मोटा मुगुल्ल मद्दोनमत्त, अमिळित्त दियइ अरि आवरत्त ।
कम्मरइ कोपि कीया कटक्क, हइमराँ हीस भड हुइ हक्क ।।151।।

बादशाह के कई सनिक मुदल्ले एव मदोन्मत्त थ । वे मिलते ही शत्रु के इद गिद घेरा डाल देते थे । इस प्रकार के सैनिको को साथ लेकर कामरा ने क्रोधित होते हुए अपनी सेना बनाई । अश्वो की हीस और योद्धाओ की हाक (वीरहक्क) होने लगी ।।151।।

काळवा कुही करडा कियाह, हाँसला हरेवी नइ हलाह ।
रोझडा महूडा पीतरङ्ग, तोरकी केवि ताजी तुरङ्ग ।।152।।

उपर्युक्त पद्य मे वर्णित सभी नाम और जातियाँ घोडों की हैं ।।152।।

डूगरी मसक्की वेसि दीय, अइराक ततारी आरबीय ।
खुरसाणी मबुराणी खतङ्ग, पतिसाह तणा छूटइ पवङ्ग ।।153।।

उपर्युक्त पद्य के तीन चरणो मे घोडो के नाम और जातियाँ हैं । चौथे चरण का अर्थ होगा—मुगल बादशाह कामरा के इस प्रकार क अश्व छूटे ।।153।।

जङ्गमाँ जीण पूठी जडेय, लाहउरी काठिय खग्ग लेय ।
ताणावि तग चढिया तुरेह, खडखडइ खोणि खईंगाँ खुरेह ।।154।।

अश्वों की पीठ पर काठियाँ कसी गइ । यवन तलवार लकर उठे । उन्होने अश्वो के तग खीचे और उन पर सवार हो गय । चलते हुए अश्वो के खुरो (सुमो) से पृथ्वी खड खड करती हुई बजने लगी ।।154।।

सुरिताण सेन सुरिताण सीव, हालिया कि हइदळ जाणि हीव ।
दक्खिण देस सिर रडवड दीण, लाहउर हुँता हालिया लीण ।।155।।

सुल्तान की सीमा केवल सुल्तान की ही सना है अर्थात् उसकी बराबरी करने वाला कोई नही है । उस सेना का अश्वदल चलता हुआ ऐसा प्रतीत होता था मानो हिमालय हो । दक्षिण देश पर आक्रमण करने हेतु यवन लाहोर से चल पडे ।।155।।

असतरे खलीता अस्सराळ, कामाळाँ पूठी के कँठाळ ।
ऊभारि तडङ्गी पूरि अम्भ, वाँसइ सहारि वूहा विसम्भ ।।156।।

अनेको खच्चर नदी के समान चलते थे । अश्वों की पीठ पर कई सनिक सिंह के समान दिखाई देते थे । जल से परिपूर्ण बहुत बडी नदी को पीछे छोडकर वे डरावने सनिक चले ।।156।।

हासयार मार साथा हजार, वानगह बहुत कोठा बजार ।
जोगिणीपुरा जे जङ्ग जीत, दिसि वडी तणा वड्डा दईत ॥157॥

होशियार मुगल बादशाह के हजारो साथी हैं। अनेक बनियो की दूकानें, कोठियां और बाजार साथ चलते हैं। दिल्लीपति जो हमेशा युद्ध म विजयी रहते हैं, वे अच्छी दिशा के बडे दत्य हैं ॥157॥

आसमुद्र साधि आप असाध, ऊलटियउ आवइ उत्तराघ ।
डउँडी दमाम नीसाण नद्द, सम्प्रत्त जाणि घण मेघ सद्द ॥158॥

स्वय अविजित रहते हुए मुगल बादशाह ने समुद्र पर्यंत पृथ्वी को स्ववश कर लिया। ऐसा यवनों का दल उमडा हुआ आ रहा है। डउडी, दमामे तथा नगाडो की ध्वनि हो रही है मानो प्रत्यक्ष मे मेघ गजन हो रहा हो ॥158॥

निरवहइ व्रत्ति रोजा निवाज, बम्बलीयाळ के तबलबाज ।
जब्बा पलीत मुगुल्ल जूह, सारक्क जाणि बोलइ समूह ॥159॥

मुगल बादशाह कामरां के कई तबला वादक एव बम्ब वादक रोजे का व्रत एव नमाज का निर्वाह करते थे अर्थात् वे रोजा रखते एव नमाज पढ़ते थे। मुगल समूह की बोली अशुद्ध थी। परस्पर बोलते हुए ऐसे प्रतीत होते थे मानो सारिकाओ का झुड सम्मिलित स्वर से कुचर कुचर कर रहा हो ॥159॥

चळचळिय चक्कवइ च्यारि चन्द, दळ रजी पाइ छायउ दुणिन्द ।
मूगले जिनावर बाणि मारि, आयास हूँत आणइ उतारि ॥160॥

चारो दिशाएं चलायमान हो गइ। मुगल बादशाह कामरा की सना की पदरज से सूय ढक गया। मुगल सनिक पक्षियो को बाण मारकर आकाश स उतार लाते हैं ॥160॥

जाँगळ राउ उपरइ जम्फ, सतलज्ज लङ्घि सुलिताण सम्फ ।
बीठउँडइ अब्भोहर विचाळि, नीसरिय कटक सइजप्प नाळि ॥161॥

मुगल बादशाह कामरा की सेना ने सतलज को पार किया तथा बीठउँड और अब्भोहर नगर के मध्य से निकली। पूरी सेना तोपो स युक्त थी। यह आक्रमण जांगलू के शासक राव जतसी पर हुआ ॥161॥

पतिसाह सेन वहतइ प्रमाणि, जळदुग्गम माथइ रीछ जाणि ।
मूगलां घडा भटनेर माळि, ऊडाइ असणिकि सखीवाळि ॥162॥

बादशाह की सेना चलती हुई ऐसे प्रतीत होती थी मानो जल दुग (समुद्रीय पवत) पर हल्की बदलियाँ छा रही हों। मुगल सेना भटनेर पर आई। उनकी ब दूकें चलती थी माना बिजली चमक रही हो ॥162॥

भुमरिया देय पाखी भमेय, आडाविय तम्बू ऊतरेय।
खेतसी सामहा खान, परठिया साहि आलमि प्रधान ।।163।।

जिस प्रकार पक्षी गोलाई मे घेरा बनाकर उड़ते हैं, वस ही मुगलो की सेना न उतरते हुए एक-दूसरे स सटा कर तम्बू खड़े कर दिये। तत्पश्चात् बादशाह ने अपने प्रधानो को खेतसी के पास भेजा ।।163।।

वातऊरत्त कहियउ विचार, डँड देहि नमिय लइ ध्रम्मद्वार।
अरडक्कमल्ल सम्भ्रम अवीह, साँभळिअे कथिने खेतसीह ।।164।।

उक्त प्रधानो न बातो ही बातो में अपना मन्तव्य प्रकट किया कि खेतसी दंड देकर बादशाह का नमन करे तथा साथ ही मुसलमानी धर्म भी अंगीकार करे। अरड कमल्ल के पुत्र निर्भय खेतसी ने उक्त कथन को सुना ।।164।।

झूझार झँडीलउ सीस झाडि, बोलियउ बाल फाडी वराहि।
ठाहरियउ परधान ठेलि, सुरिताण आउ सामहड़ सेलि ।।165।।

योद्धा खेतसी वृक्ष पर टगी पताका के समान क्रोध स कापता हुआ ऐसा बोला मानो कोई लक्कड़ चीरा जा रहा हो। थोड़ी देर बाद उसने प्रधानो को वापस भेज दिया तथा कहा—बादशाह अपने शस्त्रास्त्र सम्हाल कर आ जाये ।।165।।

दीवाणि दियउ नह नमिय दाउ, घडिया हरि आयउ दिवण घाउ।
ऊससिय खेतसी आप अङ्गि, अइयार सार चाडिय अलङ्गि ।।166।।

शासनाध्यक्ष खेतसी ने कुछ भी नही दिया और झुका भी नही। जिस प्रकार घडियाल पर प्रहार करने के लिए व्यक्ति उठता है उसी तरह खेतसी उठा। वह अपने शरीर स उत्साहित हुआ अथवा खेतसी के अग उत्साह से भर उठे। उसने अपने अनेक शत्रुओं को तलवार की धार पर चढा दिया ।।166।।

सीघलउ माहि खेतसी सेर, भारी दुरङ्ग गढ भट्टनेर।
रउद्रमइ फेरियउ चत्र राह, गाजिया गोण चउहूँ गमाह ।।167।।

सीघलो म खेतसी सिंह क समान है। उसका भटनेर दुर्ग बहुत बड़ा है। यवनो ने अपना चक्र चलाया अर्थात् युद्ध प्रारम्भ कर दिया। चारो ओर धनुष की प्रत्यञ्चाएँ बजने (ध्वनित होने) लगी ।।167।।

सुरिसाण तणे वाहिय खतङ्ग, आखरे कियउ भटनेर अङ्ग।
काविलो तणा नाखिय करेह, सरजाळ कोट कीयउ सरेह ।।168।।

बादशाही सेना ने तीक्ष्ण बाण चलाये। अततोगत्वा भटनेर पर युद्ध शुरू हो गया। यवन सनिकों न अपने हाथो से अग्नि बाण चला कर दुर्ग को जला दिया ।।168।।

कविलउ कलूळ कन्दळ करेय, फारका पूठि फिरणी फिरेय।
नीछँटिया गोळा तन्त्र नाळि, पावक्क जाणि पइठउ पलाळि ।।169।।

मुगल बादशाह क्रूर वराह की तरह युद्ध कर रहा था। वह अपने सनिको के पीछे फिरकी की तरह घूम रहा था। उसकी तोपों से गोले छूटने लगे। वे ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानो कचरे के ढेर मे अग्नि प्रविष्ट हो गई हो ॥169॥

मूगले कहिय मुहि मारि मारि, धूणियउ कोट काळइ कंधारि।
पतिसाह तणे झालिय पखाण, जुधि चडिय लङ्क वनरा जाण ॥170॥

मुगल सनिकों ने अपने मुह से मारो मारो कहा। महाकाल रूपी सेना ने दुग को धुनकर रख दिया। तत्पश्चात् बादशाह के सनिकों ने हाथो म पत्थर पकडे। वे ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानो लका मे बन्दर युद्ध के लिए चढे हो ॥170॥

चढिया नीसरणी चडी चोट, काविलो धटक्के भेळि कोट।
सनान करे साऊ सकार, हींडोळिय तुळसी कण्ठि हार ॥171॥

यवन सनिक तुरत फुरत नीसरणी पर चढे और कोट को भेळ दिया अर्थात् कोट के अन्दर प्रविष्ट हो गये। उसी समय कोट के निवासी भल भले व्यक्तियो ने स्नान करके अपने अपने गले म तुलसी की मालाए धारण कर ली ॥171॥

चांधल्लहरउ वळहण करेय, वइरियां घडा आयउ वहेय।
सम्मूह मरण साऊ सयळ, करिमाळ माहि धाढिय कळळ ॥172॥

राव चांधल के पौत्र खेतसी ने शत्रुओं की सेना मे प्रवेश करके युद्ध किया, परन्तु जब कोट भेळ लिया गया, तब उसने समूह मरण का निणय लिया तथा स्त्रियो को तलवार के घाट उतार दिया ॥172॥

पतिसाह सल्ल उघाडि प्रोळि, ऊतेडि अक्खि आउध इतोळि।
थानइत जेस राणिङ्गदेव, बोलिया बाघ सिंहे बांह वेव ॥173॥

बादशाहों के लिए शल्य-स्वरूप खेतसी ने तदुपरान्त अपने कोट का मुख्य द्वार खोल दिया। कोप से उसकी आँखें चढ गइ तथा वह अपने शस्त्रास्त्रो की जाच करने लगा। युद्ध वेशधारी (थानेत) जसा और राणिगदेव दोनों सिंह के समान हुकार भरते हुए दोनों हाथ उठाकर बाघ अथवा दोनों थानेत बाघ के समान दहाडे और रक्षक के रूप म वे खतसी के साथ चलने लगे ॥173॥

भटनेर प्रोळि हूंता भटकिर, चांधलां राउ पइठउ कटकिर।
खेतल रिणि खसइ खुरासाण, जुध धसइ मत्त गइ जह जाण ॥174॥

चांधल राव खतसी भटनेर की पोल स चलकर सेना म प्रविष्ट हुआ। वह युद्ध म बादशाह की सेना (यवनों) को मौत के घाट उतारने लगा। वह ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो युद्ध क्षेत्र म गज-यूथ प्रविष्ट हो रहा है ॥174॥

सुरिताण तणों सल्लार सकग्र, लगमूलइ ऊपरि लूरि नवग्र।
छलियउ खेतसी मग्ग छोहि, लगवरो लाग ऊपरइ लोहि ॥175॥

बादशाह कामरां के बहुमूल्य अश्व बहुत बड़ी संख्या में खेतसी के ऊपर घूमने लगे, गिर रहे थे। राव खेतसी तलवार पकड़ कर रोषाविष्ट हो गया तथा लाखों की संख्या वाले लश्कर पर शस्त्र चलाया ॥175॥

पडियउ रिणि खेतल पिसण पाडि, मालहरि चाडि धज माहआडि।
पांधल खियाड वसी करेय, लोपियउ मीर भटनेर लेय ॥176॥

राव खेतसी युद्ध में अनेक शत्रुओं को मारता हुआ स्वयं भी गिर पड़ा। राव माला के वंश और मारवाड़ पर यश की ध्वजा फहराई। कांधल-खपाट खेतसी को वश में करके तथा भटनेर पर अधिकार करके बादशाह आगे बढ़ा ॥176॥

दीमाइ रोडि बाजा रउद्दि, मेल्हळा जाणि मेल्ही समुद्दि।
मोटा गढ जीपिय हेल मत्त, छहखण्ड खिडइ सिरि खेड छत्त ॥177॥

यवन मलिकों ने क्रोधित होकर बाजे बजाये। वे ऐसे प्रतीत होते थे मानो समुद्र ने अपनी सीमा छोड़ दी हो। यवन बादशाह ने बड़े-बड़े गढ़ आनन-फानन में जीत लिये। अब वे यवन खेड़ के शासक राव जैतसी पर चढ़ कर चले ॥177॥

गाजणइ तणा चडिया गरट्ट, पळवाट पईठा खिडिय थट्ट।
हालिया सेन हइ वाजि हम्म, हिंदुवइ राउ साम्हा हसम्म ॥178॥

मुगल बादशाह कामरां की सेना चढ़ी। वे चलकर पली प्रदेश में प्रविष्ट हुए। हिन्दूपति राव जैतसी के सम्मुख सेना चली। उसमें चलते हुए अश्वों की हुम्म होने लगी ॥178॥

खुरिसाण खर्डंग ऊडो खुरेह रवि छायउ अम्बर रजी रेह।
चमराळी पाखे ऊडि चीघ, गूदळइ त्रिकम्व मूभइ गईंध ॥179॥

मुगल बादशाह के अश्वों के खुरों (सुमो) से जो बारीक धूलि उड़ी, उससे आकाश स्थित सूर्य आच्छादित हो गया। इसी तरह अन्य अश्वों की परों से जो धूलि उड़ी, उससे वृक्ष अस्पष्ट दिखाई देने लगे तथा हाथी घुटने लगे ॥179॥

थसि पाइ खेह ऊडो उलुक्क, गो गइण विची मिळि गोधुळुक्क।
वरहास खिडइ ऊलळी वग्ग, वळहिवा क्रमइ कम्माण रग्ग ॥180॥

मुगल बादशाह के अश्वों के परों से जो स्पष्ट खेह उड़ी वह गगन के मध्य गोधूलि का में मिल गई अथवा गोधूलिका सा वातावरण बन गया। अश्व ढीली लगाम के साथ चल रहे थे तथा सैनिक युद्ध करने हेतु हाथों में कमाण धारण करके चल रहे थे ॥180॥

मूगळी घडा आवइ मजूस, जासूस फिरइ पसत जापूस।
मुहरग्ग आवि कहियउ मुहाह, असपति सेन आवइ अथाह ॥181॥

मुगलों की सेना तलवारों की वाह में आई। पता जानने वाले उसके जासूस घूम रहे थे। राव जैतसी को अपने जासूसों ने आकर कहा—बादशाह की अथाह सेना आ रही है ॥181॥

भारी कटक्क धर धुसर भारि, आविया वाउसू सरि उतारि।
हुनट्लिय देस हुइवइ हुवासि, तडवागे पडिया लोक त्रासि ॥182॥

सेना इतनी जबरदस्त है कि उसके भार से पृथ्वी धसी जा रही है। जासूस उसे तालाब के पास उतार कर आये हैं। बादशाह की सेना के भय से पूरा देस चलायमान हो गया और सेना के भय से लोग दुखी हो गये ॥182॥

देसपति उवारइ का दईव, जीवासणि भागी लेय जीव।
मेदनी वेडि मूसल्लमाण, जिनावर चिडिया पडिय जाण ॥183॥

जीवित रहने की आशा स्वयं अपना जीव लेकर भाग गई। ऐसी स्थिति में देश का राजा ही रक्षा कर सकता है अथवा दैव। रमत के पीछे यवन इस प्रकार पड गये हैं जैसे चिडियो में बाज पडता है ॥183॥

थरहरिय प्रजा जिम नीर थाळ, भाखरे भाजि चडिया भुवाळ।
आगळी प्रजा आई अबीह, सरणइ विजपन्जर जइतसीह ॥184॥

समग्र प्रजा थाली के पानी के समान अस्थिर हो गई। बहुत से छुटभया शासक दौडकर पहाडों पर जा चढे। मरु प्रदेश की प्रजा निडर वज्रपंजर राव जैतसी की शरण में आई ॥184॥

॥ दूहउ ॥

विय हूतळ चन्चळ मळळ, गइ आवनइ गडयक।
दरस्यउ सरि सुरिताण दळ चळचळ च्यारे चक्क ॥185॥

अश्वों ने हींस कर कोलाहल किया और नगाड़ों की ध्वनि दूर दूर तक पहुंची। ऐसी स्थिति में तालाब के पास बादशाह कामरा की सेना दृष्टिगोचर हुई जिससे चारों दिशाएं चलायमान हो गई अथवा कांपने लगीं ॥185॥

॥ गाहा ॥

दळ सुरिताण जाण डूंगरि दव दम्पो धरा हुई प्रज लवत्रव।
अह सुरिताण आवियउ अवधरि, करन तणा ऊठिय गज केसरि ॥186॥

बादशाह कामरा का सैन्य दल मानो पर्वतीय अग्नि हो। उसे देखकर समग्र पृथ्वी की प्रजा चलायमान हो गई। बादशाह कामरा ज्यों सर उतर कर आया तो उसके सम्मुख गज शार्दूल राव जैतसी उठा ॥186॥

॥ छन्द पाधडी ॥

मेल्हिय प्रधान कहियउ मुगुल्लि, धर साजि मुहर हू म करि ढिल्लि ।
छाँ छत्र सरिस मम जाहि छहि, दस कोडि द्रव बीवाह देहि ॥187॥

मुगल बादशाह कामरां ने अपने प्रधानो को भेजकर राव जतसी से कहलवाया कि तुम अब समग्र पृथ्वी बादशाह को समर्पित कर दो। इसमे ढील मत करो। कामरां जैसे बादशाह की छत्रछाया को छोड कर अलग मत जाओ। बस, दस करोड रुपये और एक कन्या विवाह के लिए दे दो ॥187॥

बीकहर राउ साभलि वचन्न, रीसाइ किया राता रतन्न ।
ऊससिय योमि लागउ अबीह, साँभळिअे रयिने जइतसीह ॥188॥

राव बीका के वशज राव जतसी ने मुगल प्रधानो के वचन सुनकर क्रोध से आँखें लाल कर लीं तथा उत्साहित (प्रफुल्लित) होकर आकाश तक जा लगा ॥188॥

केसरि कथिन्न साँभळि कन्नि, थाउळि कि अग्नि लागउ वहन्नि ।
बीकाहर राजा अे बखाण, जाळोवळि सीतउ घ्रित्त जाण ॥189॥

सिंह स्वरूप राव जतसी ने अपने श्रवणों से बादशाह का कथन सुना तो मानो बबूल के वन मे आग लग गई हो अथवा जल की आग से वात्याचक्र उत्पन्न हो गया हो। राव बीका के पौत्र की यही शोभा है। उसके मन रूपी अग्नि मे मानो कथन रूपी घृत की आहुति डाल दी गई ॥189॥

ठलिअे प्रधाने राइठौड मालइ जिम बोलिय वसि मौड ।
माल्हइ जिम मारिय खति मीर, जीव ले भाजि गउ नेमजीर ॥190॥

राव जतसी ने प्रधानो का लौटा दिया। जिस प्रकार रावळ मल्लीनाथ बोला था उसी प्रकार यह वशशिरोमणि बोला कि जिस प्रकार रावमल्लीनाथ ने युद्ध क्षेत्र मे यवनों को मार भगाया था तथा नेमजीर अपना जीव लेकर भाग गया था, उसी प्रकार मैं भी यवनों से भिड़ूगा ॥190॥

तिम करइ जइत तुडिमल्लि तोइ, कमरा कमन्ध भाजइ न कोइ ।
बीजुळीखान चउंडइ विभाडि, तारावटि काढिय छहि ताडि ॥191॥

अद्वितीय वीर जतसी भी उसी प्रकार करेगा, जसा आचरण रावळ मल्लीनाथ ने किया था। हे कामरां! राठौड क्षत्रिय तेरे आगे से दौडकर नही जायेंगे। राव चूडा ने विजुलीखान को युद्ध म भिडकर अपनी तलवार के बल पर प्रदेश के किनारे तक पहुचा दिया था ॥191॥

सतसल्लि राड धार वळि सोइ, परोजखान भागउ पलोइ ।
महम्मदखान रिणमल्लि मारि, अखियात वात आपा उवारि ॥192॥

शत्रुशल्य राव चूडा ने अपनी तलवार के बल पर फीरोजखान को पराजित

कर के भगा दिया था। राव रणमल्ल ने महम्मद खान को मारा था तथा अपने वंश की सुयश वार्ता की रक्षा की थी ॥192॥

सारङ्गखान जोधइ समथिय, हिंदुवइ राइ वहि आप हथिय ।
बङ्गाळ कहा मोखावि थान, सातल राइ भागउ सेरखान ॥193॥

राव जोधा ने सारङ्गखान को मथ डाला। हिंदूपति राव ने स्वयं अपने हाथ से उसका वध किया। राव सातल ने शेरखान को पराजित करके यवनों से अपने ऐश्वर्य की रक्षा की अथवा यवनों से अपनी आन-बान को छुड़ाया ॥193॥

जोगणीपीठि बीकइ जुडेय, काढिया नाळ करवइ करेय ।
पाधरइ खेति दूदइ पचारि, सूडाळ लिया सिरियउ सँघारि ॥194॥

राव बीका ने दिल्ली के यवनों के साथ भिड़कर अपनी तलवार के बल पर उन की टोलियाँ निकाल बाहर कीं। राव दूदा ने समतल मैदानी युद्ध में सिरियाखान को ललकार कर उसका संहार किया और उसके हाथी छीन लिये ॥194॥

लूणकर्ण राइ महमन्द लग्गि, खेसियउ खान ऊजळइ खग्गि ।
नागउर तणा भंजिया नरींद, गङ्गेवि राइ लीया गइँद ॥195॥

राव लूणकरण ने मुहम्मद खान के साथ भिड़कर उसे अपने उज्ज्वल खड्ग से पराजित किया। राव गांगा ने नागौर के शासकों को पराजित करके अनेक हाथी हस्तगत कर लिये ॥195॥

मारविस साथी मीर माउ, रहवर हुइ हालइ नही राउ ।
पाछा प्रधान गा पातिसाहि, मछरियउ जइत गढ दुग्ग माहि ॥196॥

प्रधान लौट कर मुगल बादशाह कामरां के पास गये। उन्होंने बताया कि राव जतसी अपने कोट में रोषा मस्त हुआ बैठा था। उसने कहा है कि बादशाह अपने घमंड के वशीभूत होकर अपने साथी मनिर्यों को मरायेगा। राव जतसी उसका भोमिया बनकर नहीं चलता अर्थात् नहीं रहेगा ॥196॥

जागळुअउ मरणइ घालि जग्ग, तिनि मिति न दी साहइ खडग्ग ।
रवद्री वाजा वाजि रोढि, गइणाग जाणि धड़हडिय गोडि ॥197॥

जांगळू राव जतसी ने अपनी रयत को अपनी शरण में लिया। उसने जरा-सी भूमि भी बादशाह को नहीं दी तथा उसके सम्मुख खड्ग धारण की। यवनों ने युद्ध वाद्यों को बजाया जिसकी गर्जना से आकाश भी गर्जने लगा ॥197॥

चक्वलि चडेय वाधिय चुगुल्ल, मुर छत्र मांडि माथइ मुगुल्ल ।
पुहतइ पतड्डि पव्वड़ पगार, सुरिताण चडइ सामइ सराह ॥198॥

मुगल बादशाह कामरां ने अपने अश्व की पीठ पर अपनी चुगुनी बांधी तथा

अपने पर तीन छत्र तनवाये। तत्पश्चात् वह पवन की तरह बस्ती में पहुंचा। अब मुगल बादशाह सेरों के सम्मुख चमका ।।198।।

पाखरणउ कीयउ पातिसाहि, मूगइ मिरिग्घ हुइ थट्ट माहि ।
थळ थूळ मूळ हुइउर थट्ट, पाधरा किया पाखे पट्ट ।।199।।

बादशाह कामरा की सेना के अश्वों को कवचित किया जाने लगा। इस अश्व समूह में मृग घुटने लगे। सेना के अश्वों ने अपने ओठों और परों से रेत के टीबों एवं झुपों की जड़ों में एकत्र हुई धूलि का सपाट (समतल) बना दिया ।।199।।

साहण समन्द ऊछळिय सारि, साइयर वऊँण सकइ सहारि ।
रहचडियउ आवइ रीस रोम, वाजां सवद्दि फाटइ वयोम ।।200।।

अश्व सेना रूपी समुद्र में तलवारें प्रकट हुई अथवा वह तलवारों से परिपूरित हो गया। इस कमारा रूपी समुद्र का सहार कौन कर सकता है? वह क्रोध में भरा हुआ भिड़ता हुआ आ रहा है। युद्ध वाद्यों की ध्वनि से आकाश फट रहा है ।।200।।

पाखे हसम्मि हालइ पयाळ, फडफडइ नाग फाटइ फुणाळ ।
राया राउ ऊपरि असुर गाइ, जळराट जाणि मेल्ही मजाइ ।।201।।

मुगल सेना के अश्वों के पदाघात से पाताल हिल रहा है। वासुकि फनफना रहा है (व्याकुल हो रहा है) क्योंकि उसके फन फट रहे हैं। राजाओं के राजा राव जैतसी पर यवन बादशाह चढ़कर आया है मानो समुद्र ने अपनी मर्यादा छोड़ दी हो ।।201।।

पुड सातइ धूजिय पवँग पाइ, नागीद नावि नावति निहाइ ।
झूंघाग आगी खिवइ ज्याळ, मुस्साहळ जाणे नखत माळ ।।202।।

बादशाह कामरा के अश्वों के पदाघात से सातों पाताल कम्पायमान हो गये। युद्ध-वाद्यों की ध्वनि से वासुकि नाचने लगा। योद्धाओं के सम्मुख अग्नि की लपटें चमकती हुई दिखाई देती हैं। सेना में इस भिड़ जलती हुई मशालें ऐसी प्रतीत हो रही हैं मानो नक्षत्र माला हो ।।202।।

पतिसाह सेन दीवी परिग्ग उडियड किरि आवइ अन्तरिक्ख ।
रैवन्त मेढि चउ पहर राति पतिसाह सेन ढूका प्रभाति ।।203।।

बादशाह कामरा की सेना ने घेरा बनाया। वह ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो आकाश में से तारे उतरकर आ गये हों। बादशाह की सेना ने अपने अश्व चार प्रहर रात्रि के समय चलाये थे व प्रभात के समय पहुंचे ।।203।।

मुजनमी पग वाजिया माळ, रवि ज्याल समी ऊडी रिवाळ ।
घमघमइ घण्ट पाखर घिसत्त मल्हपन्ता आवइ मदोमत्त ।।204।।

अश्वों के पदाघात से पृथ्वी ध्वनित हो उठी। सूर्य की किरणों के समान धूलि

उड़ने लगी। हाथियों के गले में बंधे घंटे घमघमा उठे और पाखरों के घंघरू की ध्वनि हुई। इस प्रकार मदमत्त यवन सैनिक झपट्टा मारते हुए आ रहे हैं ।।204।।

पटहसति सूंडि फेरइ प्रचण्ड, त्रिख दिसा वोम नाखइ वयण्ड ।
पटहसती छाया पक्खरेह, पाहाड जाणि हालइ पगेह ।।205।।

हाथी अपनी सूंड से बहुत बड़े-बड़े पटट पकड़ कर घुमा रहे थे तथा वृक्षों को उखाड़ उखाड़ कर आकाश की ओर फेंकते थे। पट्टहस्ती पक्खरित किये हुए ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानो पर्वत ही धरा पर चलने लग हों ।।205।।

गति इसी डाल पूठी गइद, विरहणो कि पासें जाणि वींद ।
सोहियउ मुगुल्लाँ सिविग्गरेह, माही कि मच्छ ताणियउ मेह ।।206।।

हाथियों की पीठ पर हौदा कसा हुआ ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो विरहणी स्त्री के पास उसका पति बैठा हो। मुगल बादशाह की सेना टीबों पर इस प्रकार शोभित हो रही थी, मानो बादलों के अन्दर मच्छ (विशेष प्रकार की सूर्य किरणें) तन गया हो ।।206।।

पारसीपोस आहीनपोस, रेवन्त खेडि आया सरोस ।
तळहटी आइ रोडिय तबल्ल, वईचाळ पूठि ढळक्ती ढल्ल ।।207।।

पारसी के ज्ञाता एवं कानून के ज्ञाता यवन रोषावेश में होते हुए अश्व चलाकर आये। उन्होंने तलहटी में पहुंच कर तबल्ल बजाने शुरू किये। हाथियों की पीठ पर ढालें लटक रही थीं ।।207।।

इम कहिय असुरि आउघइ ताळि, पसरिस्या देस गढ रूंधि प्रोळि ।
ऊळटउ मुगुल देखिय अभत्ति, प्रज आडउ हूअउ देसपत्ति ।।208।।

मुगल बादशाह के सैनिकों ने हथियार उठाते हुए इस प्रकार कहा—गढ की पोल को अवरुद्ध करके फिर देश में फैलेंगे। इस प्रकार निडर होकर उलटते हुए अर्थात् आक्रमण के लिए त्वरा के साथ आते हुए उन्हें देखकर देश का अधिपति राव जैतसी प्रजा का रक्षक बना ।।208।।

दुरवेस म्न्हा गरहावि देस, नमि कोट विची न रहिय नरेस ।
पतिसाहि सेन दीठइ प्रमाणि, नीसरिय जइत रुडतइ निसाणि ।।209।।

यवन का प्रदेश देखकर तथा उधर आये झुककर राव जैतसी कोट के अन्दर नहीं रहता। वह बादशाह की सेना का दमन ही अपने नगाड़ा को बजाते हुए निकल पड़ा ।।209।।

उरि धरिय प्रजा जइतसी राउ घर वरि चलिय दे ढोलि घाउ ।
भारथ जइतसी मळिय भार, लसकरी विताया आप लार ।।210।।

राव जैतसी ने अपनी प्रजा को हृदय में बैठाया तथा उन्हें घर कर ढाल पर

हका देते हुए चला। राव जतसी ने युद्ध का दायित्व अपने ऊपर लिया तथा अपने सैनिकों को अपने पीछे कर लिया ॥210॥

आविया मीर तेजी उलालि, वाराह विढवा वाग वालि ।
गहवत्त जइत साम्हउ मुगुल्ल, तढमल्ल राउ निहँराइ तुल्ल ॥211॥

मुगल बादशाह कामरा के सैनिक वराह के समान आक्रमण करने के लिए अपने घोड़ों की बाग घुमा कर उन्हें तेज चाल से चलाते हुए आये। मुगल बादशाह के सम्मुख गर्वीला राव जतसी था जो अद्वितीय योद्धा नरसिंहराव के समान था ॥211॥

आधारि वग्ग आयासि लग्ग, खुरिमाण खडि खिविया खड्ग ।
असपत्ति सेन सउँ व्हलि आलि दाटाळ जेम आण्यउँ दिखालि ॥212॥

राव जतसी अश्व की लगाम पकड़कर आकाश तक जा लगा। यवनों और राठौड़ों के मध्य तलवारें चमकने लगी। बादशाह कामरा की सेना में हलचल मचाकर राव जतसी ने वराह के समान अपनी आँखें दिखाई ॥212॥

दळ जइतसीह उरि कियइ डारि, पतिसाह तण न सकिय पचारि ।
बीकहर देख विसमउ वराह, ताणिया मुगुल्ले पाउ ताह ॥213॥

राव जतसी रूपी वराह ने अपनी सेना रूपी डार को छाती के आगे लिया। बादशाह कामरा की सेना उसे ललकार नहीं सकी। राव बीका के पौत्र को क्रोधाविष्ट वराह के समान देखकर मुगलों ने अपने पैर चलाये ॥213॥

असिपत्ति राइ बीकानेर आइ, छावाण तँगोटी रही छाइ ।
गुरमगह अनइ गूडर खडोइ, जोजन्न रहिय मेल्हाण जाइ ॥214॥

बादशाह कामरा बीकानेर आया। उसने तम्बू लगा दिये, गुरमगह, साइबान इत्यादि तनवा दिये। इस सेना का पड़ाव चार कोस की परिधि में फैला हुआ था ॥214॥

सावाण ताणि ताणिय सराइ थाइ नेजउ भूलइ अढवाइ ।
पुरि पाटणि आयउ पातिसाहि, मावइ न मेछ सनाह माहि ॥215॥

बादशाह कामरा नगर के मध्य आया। यवन अपने कवचों में नहीं समा रहे थे। उन्होंने सावाण तथा सराय नामक तम्बू तनवाये। उसका नेजा (ध्वज) हवा से अधर में झूल रहा था ॥215॥

दुरवस प्रोळि आयइ दुआरि, भोंवउ भोजि प्रउँघिजइ सारि ।
झूंझार भोज घट सारि भालि, पडियाळ हुअउ पडिय प्राळि ॥216॥

बादशाह कामरा गढ़ की पोल के पास आया। भोज ने उन्हें तलवार से पोखा (सत्कृत किया)। योद्धा भोज तलवारों द्वारा अपना शरीर कटवा कर स्वयं तलवार बन कर पोल के आगे गिर पड़ा ॥216॥

जइतूग रहिय जाणइ जगत्त, छप्पन कोडि ऊजालि छत्त ।
अहोनिसि कहइ आयउ अबीह, सीघरे मुगुल्ले जइतसीह ॥217॥

जतुग भोज जगत्प्रसिद्ध था। उसने छप्पन कोटि भाटियों को उज्ज्वल किया। मुगल सैनिक दिन रात यही कहते रहते थे—अरे! वह निडर जतसी आया। मुगल रूपी गजयूथ में जतसी सिंह के समान था ॥217॥

जइतसी भञे कटकाँ न जाइ, पउरिसि पडूर रापियइ पाइ ।
सावन्न देइ कीधी न सांति, सुरिमाण संड दुहु वधी खाँति ॥218॥

मुगल सैनिकों के मन से राव जतसी का भय दूर नहीं हो रहा है। प्रचुर पौरुष वाला राव अपने पैर जमाये हुए है। उसने सुवर्ण देकर शांति नहीं की। अब यवनों और राठौड़ों दोनों में युद्धेच्छा बनी हुई है ॥218॥

ऊमरमइ राजा जइत अंगि, दीवाणि देखि लीयइ दुरंगि ।
घण झूमउ जोवइ कलह घत्त, वांसोघस हुई वहइ वत्त ॥219॥

राव जतसी का शरीर क्रोध से भर रहा है। दीवान एवं दुर्ग दोनों शत्रुओं ने ले लिये हैं। अत्यन्त बली योद्धा राव जतसी युद्ध की चाल देख रहा है। ऐसी बातें आगे से आगे बढ़ रही हैं ॥219॥

ओवळइ मूछ चख आरतत्त, सुरिताण जइत विढिस्यइ सँप्रत्त ।
बीकाहर राजा वहइ वद्दि, सुरिताण सेन स्यउँ ढोल सद्दि ॥220॥

राव जैतसी अपनी मूछों पर ताव दिये तथा आँखों को लाल किये हुए बैठे हैं। अब राव जतसी और बादशाह कामरां स्पष्ट भिड़ेंगे। राव बीका का पौत्र राव जैतसी बादशाह कामरां की फौज से भिड़ने हेतु ढाल पर डंका देकर चल पड़ा ॥220॥

थाटाँ थडक्क छंडियइ ठांइ, जुध परसइ जिके के घडयउँ जाइ ।
रैवन्त पूठि पर करइ राउ, घण मीर तणइ सिरि दियण घाउ ॥221॥

राव जतसी की सेना के जवानों ने अपने-अपने स्थान छोड़े। यवन बादशाह की सेना पर आक्रमण (प्रहार) करने के लिए राव जैतसी ने अपने घोड़े की पीठ पर ही अपना घर बनाया तथा सैनिकों से कहा— जिन्हें युद्ध प्रिय नहीं है, वे इस घड़ी चले जाएँ ॥221॥

जागवइ जइत परछठपउ जाइ, वाजिन्न पूठि चडियइ विहाइ ।
वलि भरियउ वासा करइ वेडि, कन्न हुयउ जाणि कसास केडि ॥222॥

राव जतसी ने घोड़े की पीठ को छोड़ा और शीघ्रता के साथ सैनिकों को जगाया। वह शक्तिशाली राजा मुगल सैनिकों का पीछा बस ही करता है जैसे श्रीकृष्ण ने कंस का पीछा किया था ॥222॥

सुरिताण सेन धापइ न रासि, चापडइ जइत जोयउ चवासि ।
बगाळि जइति बिहूँ ऊभि वाह, वाढिजइ वाह पइसिय विचाह ।।223।।

राव जतसी का प्रत्यक्ष म चमत्कार देखकर मुगल सनिक अपने श्वासों स भी तृप्त नही हो रहे हैं। अपने अपने शस्त्रास्त्रा स स नद्ध यवन बादशाह और राव जतसी दोनो युद्धस्थल के मध्य प्रविष्ट होकर प्रहार (वाह) करेंगे ।।223।।

हिंदुवइ राइ देखाळि हत्थ, साकडउ वियउ सुरिताण सत्थ ।
आपणइ पाणि आपणइ अंगि, नवसहस घणी लागउ निहंगि ।।224।।

हिंदूपति राव जतसी ने अपने हाथ (प्रहारक शक्ति) दिखाकर बादशाह कामरा की सेना को विपत्ति म डाल दिया। अपनी शक्ति और अपने ही शरीर म राठौड़ राय जतसी आकाश तक जा लगा ।।224।।

ऊग्रहण मँडोवर अहिपुराह छडावण अहिप्पुर छहतराह ।
तुरुक ग्रह छडावण मेडतोट, ससाराइ जाणइ जइत सोइ ।।225।।

राव जतसी वही है जिसने मडोवर के शासक द्वारा जब नागौर पर ग्रहण लगाया गया था तब इसी राव जतसी ने उसे बचाया था। यवन रूपी ग्रह स मेड़ता को भी इसी राव जतसी ने मुक्त करवाया। ये सभी बातें जगत्प्रसिद्ध ह ।।225।।

सुरिताणि जइतसी समी सडड, ऊजळइ खागि आडउ अगड्ड ।
नवसहस वधारण जइत नाद, सारति हुअइ साहणी साद ।।226।।

मुगल बादशाह के सम्मुख राव जतसी को अपनी लज्जा रखनी है। वह अपने उज्ज्वल खड्ग से पवत की तरह अचल खड़ा है। राठौड़ो की कीर्ति बढ़ाने वाले राव जतसी के सम्मुख साहणियों ने आकर पुकार की ।।226।।

लूणग्रन समोभ्रम आइ लास, विलहणा हुअइ छूटइ वहास ।
अति तेजि अचप्पळ तुरी आपि, तरणि रथ जेम निळ ग्रहइ नापि ।।227।।

हे राव लूणकरण के पुत्र ! अश्व सेना आ पहुची है। अश्व छूट रहे हैं और चढ़ाई (विलहणा) की तयारी हो रही है। अत आप हमे अति तीव्रगति वाले चपल अश्व दीजिये जो सूय के घोडो के समान झपट कर लगाम ग्रहण करते हो ।।227।।

।। गाहा ।।

दोपम जेम अद्दह दुहूँ दळि छळ राउ जइत कोट घर कुळ छळि ।
झूझार गुर उठियउ चळहळि कळि मत्थण तेजसी करण कळि ।।228।।

समुद्र के समान विस्तार वाली दोनो सेनाओ का किनारा दिखाई नही देता है। राव जतसी कोट पृथ्वी और कुल के लिये तथा झूझार शिरोमणि तजसी युद्ध करने एव युद्ध मे सेना को मथन के लिए कोपाविष्ट होकर उठा ।।228।।

निडुर हियइ नाहुर नेठ्ढइ, बूक्यि हरि जिम रिणवट वढइ ।
खिति वाहर तेजल अणखीयउ, अम्बर धरि असमाणि उठीयउ ॥229॥

निडर हृदय वाला सिंहों के गले में बंधन डालने वाला, सिंह के समान गजने वाला, क्षत्रियत्व की वृद्धि करने वाला अणखीला (स्वाभिमानी) तेजसी पृथ्वी की रक्षा के लिए तलवार धारण करके आसमान तक जा लगा अथवा विषम रूप से उठा ॥229॥

राम रतनसी भञ्जण रिम घड, झूझार गुरु दियण खण्ड झड ।
धीरा खडग वहिस्यइ धीरा, हुयसी जुध हिंदुआ हमीरा ॥230॥

भगवान राम के समान शत्रुओं की सेना का भजन करने के लिए योद्धा शिरोमणि रतनसी अपनी तलवार से प्रहार करने के लिए तत्पर हुआ। धीरा! अपनी तलवार जरा धीमे चलाना। हिंदुओं और यवनों के मध्य अब युद्ध होगा ही ॥230॥

डूंगरसीह देद कुळि दीपक, राखण देस वस छळ रूपक ।
पडि ऊपडियइ पहिलउ पहिला, गइ गञ्जण ऊठिय रिणगहिला ॥231॥

डूंगरसिंह देद के वंश का दीपक है। वह देश की रक्षा करने वाला तथा वंश की शोभा है। वह युद्ध में सबसे पहले घायल होने वालों में है। रणोन्मत्त डूंगरसिंह हाथियों का पछाडने के लिए उठा ॥231॥

अमर अनइ पीथल्ल अचागळ, वरविय राइमल्ल अतुळीवळ ।
जोडाळा मुहि दिय जवोडा, राम सिहाइ हुअउ राठोडाँ ॥232॥

अमर और पीथल अद्वितीय वीर हैं। अणवर की तरह रायमल्ल भी अतुल बल वाला है। शत्रुओं के मुह को पकड कर झटका देने वाला राजा राम की तरह राठौडो का सहायक बना ॥232॥

॥ दूहउ ॥

वाळउ कोटा कारणइ, विढिवा वीरति वाइ ।
ससमथ जरदि न सम्मवइ, असुराइ थट्टि न माइ ॥233॥

बाला दुर्ग की रक्षा के लिए वीरता के साथ युद्ध करेगा। वह सामर्थ्यवान वीर अपने कवच में नहीं समा रहा है, उसी प्रकार यवनों की सेना में भी नहीं समायेगा ॥233॥

॥ छंद पाधडी ॥

पइनउ तुरङ्ग जेठी पवन्न, ग्रीवा विरेह ऊळू गयन्न ।
सौधरि मुगुरल भेळण समत्थ, हरिराज चढिय करिमाळ हत्थ ॥234॥

तीव्र स्वभाव वाला एवं पवन में भी तेज चलने वाला अश्व जिसकी गर्दन आकाश में उडते हुए उल्लू की तरह दिखाई देती है ऐसे अश्व पर मुगल बादशाह की

सुरिताण सेन धापइ न सारि, चापडइ जइत जोयउ चवासि ।
अगाळि जइति विहूँ ऊभि वाह, वाढिजइ वाह पइसिय विचाह ॥223॥

राव जतसी का प्रत्यक्ष म चमत्कार दखकर मुगल सनिक अपने श्वासा स भी तृप्त नही हो रहे हैं। अपने अपन शस्त्रास्त्रा स सन्नद्ध यवन बादशाह और राव जतसी दोनों युद्धस्थल के मध्य प्रविष्ट होकर प्रहार (वाह) करेंगे ॥223॥

हिन्दुवइ राइ देखाळि हत्थ, साकडउ कियउ सुरिताण सत्थ ।
आपणइ पाणि आपणइ अंगि, नवसहस धणी लागउ निहंगि ॥224॥

हिन्दूपति राव जतसी न अपन हाथ (प्रहारक शक्ति) दिखा कर बादशाह कामरा की सना का विपत्ति म डाल दिया। अपनी शक्ति और अपने ही शरीर स राठौड राव जतसी आकाश तक जा लगा ॥224॥

ऊग्रहण मंडोवर अहिपुराह, छडावण अहिप्पुर छहतराह ।
तुरक ग्रह छडावण मेडतोड, ससाराइ जाणइ जइत साइ ॥225॥

राव जतसी वही है जिसने मडोवर क शासक द्वारा जब नागौर पर ग्रहण लगाया गया था, तब इसी राव जतसी ने उस बचाया था। यवन रूपी ग्रह स मडते का भी इसी राव जतसी ने मुक्त करवाया। ये सभी बातें जगत्प्रसिद्ध ह ॥225॥

सुरिताणि जइतसी समी सडड, ऊजळइ खागि आडउ अगडड ।
नवसहस वधारण जइत नाद, सारति हूअइ साहणी साद ॥226॥

मुगल बादशाह क सम्मुख राव जतसी को अपनी लज्जा रखनी है। यह अपने उज्ज्वल खड्ग स पवत की तरह अचल खडा है। राठौडा की कीर्ति बढान वाले राव जतसी के सम्मुख साहणिया न आकर पुकार की ॥226॥

लूणक्रन समाभ्रम आइ लास, विलहणा हुअइ छूटइ ग्रहास ।
अति तेजि अचप्पळ तुरी आपि, तरणि रथ जेम निळ ग्रहइ नापि ॥227॥

ह राव लूणकरण के पुत्र ! अश्व सेना आ पहुची है। अश्व छूट रह हैं और चढाई (विलहणा) की तयारी हा रहा है। अत आप हम अति तीव्रगति वाल चपल अश्व दीजिय जा सूय के घाडा के समान झपट कर लगाम ग्रहण करते हा ॥227॥

॥ गाहा ॥

दापभ जेम अछह दुहूँ दळि छळ राउ जइत काट घर कुळ छळि ।
झूभार गुरु उठियउ पळहळि, कळि मत्थण तेजसी करण कळि ॥228॥

समुद्र के समान विस्तार वाली दाना सनाआ का किनारा दिखाई नहीं देता है। राव जतसी काट पृथ्वी और कुल क लिये तथा झूझार शिरोमणि तेजसी युद्ध करने एव युद्ध म सना का मथन के लिए कोपाविष्ट होकर उठा ॥228॥

निदुर हियइ नाहुर नठढइ, बूकिय हरि जिम रिणवट वढइ ।
खिति वाहर तेजल अणखीयउ, अम्बर घरि असमाणि उठीयउ ॥229॥

निडर हृदय वाला सिंहा के गले म वचन डालने वाला, सिंह के समान गजने वाला, क्षत्रियत्व की वृद्धि करने वाला, अणखीला (स्वाभिमानी) तेजसी पृथ्वी की रक्षा के लिए तलवार धारण करके आसमान तक जा लगा अथवा विषम रूप से उठा ॥229॥

राम रतनसी भञ्जण रिम घड, झूझार गुरु दियण खण्ड झड ।
धीरा खडग थहिस्यइ धीरा, हुयसो जुध हिंदुआ हमीरां ॥230॥

भगवान राम के समान शत्रुओं की सेना का भंजन करने के लिए योद्धा शिरोमणि रतनसी अपनी तलवार से प्रहार करने के लिए तत्पर हुआ। धीरा! अपनी तलवार जरा धीमे चलाना। हिंदुओं और यवनों के मध्य अब युद्ध होगा ही ॥230॥

डूंगरसीह भेद कुळि दीपक, राखण देस वस छळ रूपक ।
पडि ऊपडियइ पहिलउ पहिला, गइ गञ्जण ऊठिय रिणगहिला ॥231॥

डूंगरसिंह देश के वंश का दीपक है। वह देश की रक्षा करने वाला तथा वंश की शोभा है। वह युद्ध में सबसे पहले घायल होने वालों में है। रणोन्मत्त डूंगरसिंह हाथियों को पछाड़ने के लिए उठा ॥231॥

अमर अनइ पीथल्ल अचागळ, वरविय राइमल्ल अतुळीबळ ।
जाडाळा मुहि दिय जबोडों, राम सिहाइ हुअउ राठोडा ॥232॥

अमर और पीथल अद्वितीय वीर हैं। अणवर की तरह रायमल्ल भी अतुल बल वाला है। शत्रुओं के मुंह को पकड़ कर झटका देने वाला राजा राम की तरह राठौड़ों का सहायक बना ॥232॥

॥ दूहउ ॥

काळउ काटा कारणइ, विढिवा वीरति वाइ ।
ससमय जरदि न सम्मवइ, असुराइ थट्टि न माइ ॥233॥

काला दुर्ग की रक्षा के लिए वीरता के साथ युद्ध करेगा। वह सामर्थ्यवान वीर अपने कवच में नहीं समा रहा है उसी प्रकार यवनों की सेना में भी नहीं समायगा ॥233॥

॥ छन्द पाधड़ी ॥

पइनउ तुरङ्ग जठी पवन्न, ग्रीवा किरेह ऊळू गयन्न ।
सींधरि मुगुल्ल भेळण समत्य, हरिराज चढिय करिमाळ हत्थ ॥234॥

तीव्र स्वभाव वाला एवं पवन से भी तेज चलने वाला अश्व जिसकी गर्दन आकाश में उड़ते हुए उल्लू की तरह दिखाई देती है, ऐसे अश्व पर मुगल बादशाह की

सेना का सहार करने वाला, लन्ने में समष हरिराज अपने हाथ म तलवार लेकर चढा ।।234।।

गङ्गाजळ निरमळ जेम गङ्ग, आइत्त धीर ओपित्त अग ।
भारत्थ चडिय तेजसी भल्ल, परवाडमरल परचक्कपल्ल ।।235।।

गगाजल नामी अश्व गगा के समान पवित्र, युद्ध म धय रखने वाला तया अग देन की पदाइश है। इस पर युद्ध चरित वीर एव पराये शासन को स्वीकार नही करने वाला श्रेष्ठ तेजसी युद्ध करने के लिए चढा ।।235।।

जेवहउ अर्जणि आखइ अँघाळ, फुरणी रयत्थ जिम फउरि फाळ ।
सिंगार थाटि सोझउ सलीह, सीहरू चईनउ रतनसीह ।।236।।

जसा बन्दर होता है वसा ही (चपल) यह अश्व कहा जाता है। यह सूय के अश्वों के समान हल्की कुदान भरता है। शृगारथाट नामक यह अश्व विशुद्ध एव सीधे स्वभाव का है। सीहरू रतनसिंह ने इस अश्व को अपने लिए निर्वाचित किया अथवा अपने लिए चुना ।।236।।

पाबू पसाउ चम्पियउ पाइ, पद्दँगरू कुळाछा छोहि खाइ ।
घर सुछळि उडावण धार धूप, रामडउ चडिय नवसहस रूप ।।237।।

पाबूपसाव नामक अश्व परो से दबाने पर पृथ्वी पर कुलाँचें भरने लगता है। पृथ्वी की रक्षा क निमित्त राठोडा की शोभा स्वरूप रामडा अपनी तलवार की धार से शत्रुओ को उडाने के लिए इस अश्व पर चढा ।।237।।

रेवँतपसाउ रय पवन रग, पहुली पारि पइनउ पवग ।
भाडिजी देय पाइडइ भार, नतमी कुअर चडियउ निडार ।।238।।

रेवतपसाव नामक अश्व पवन के समान वेग वाला है। वह चचल पिंडलिया वाला बडा तीखा अश्व है। इस अश्व के रकाब पर भार देकर निर्भीक कुवर नेतसी चढा ।।238।।

ग्वालेर ठवइ पइ पात गत्ति, ऊहउ उछेह ऊछळइ अत्ति ।
सागलउ चडिय करि साहि सार, भारत्थ तणउ जइ भुज्जि भार ।।239।।

ग्वालर नामक अश्व अपने परो को नतकी के समान रखता है। यह अत्यन्त तीव्र स्वभाव का है तथा बहुत कूदता फादता है। साँगला अपने हाथ म तलवार लेकर चढा। इसकी भुजाओ पर इस युद्ध का दायित्व (भर भार) है ।।239।।

वालहउ ससोझउ रग वग्ग, पडनउ पवग दइ त्रिणे पग्ग ।
वाळासि चडिय डूगरउ कुन्त, भ्रिगवा हुअउ किरि भग्गदन्त ।।240।।

वालहा नामक अश्व रान और लगाम का शुद्ध है। यह तीव्र स्वभाव का है, अत

पृथ्वी पर तीन पैर ही रखता है। दूधर अपने भाल का टेक कर तीव्र गति से अश्व पर चढ़ा, मानो ऋषि भृगु अथवा अगस्त चढे हों ॥240॥

जगली फुरणि जगि रेखि जाणि, रण्डीर निस्सि हुइ तासि खाणि ।
चापडइ देद चडि भोमि चट्टु, उतराध तणों देमा अगट्टु ॥241॥

जङ्गली नामक अश्व के नासापुट माना अग्नि निसा हो। इस अश्व की उत्पत्ति सूर्य के अश्व से हुई है। ददं शीघ्रता के साथ चला। वह भूमि की रक्षा के निमित्त यथा के देश में पर्वत की तरह अचल रहने वाला है ॥241॥

मौंडइ कुलाच पहि जेम ध्रिग्ध, समीर वखित पसवान सिग्ध ।
तढमल्ल सवासइ तग ताणि, जइमलउ चडिय पण्डीर जाणि ॥242॥

समीरवखित नामक अश्व की रोमावली दीपक की लौ के समान दीप्त है। यह इस प्रकार कुदान भरता है मानो मृग (बन्दर) हो। अद्वितीय वीर अश्व का तग खींच कर सवास जमल उस अश्व पर चढा माना सिंह बैठा हो ॥242॥

पल्लाणि वेगि कल्याणपञ्च, नाचणो तालि नाचइ नियञ्च ।
साकरसी चडियउ लोह सज्जि, कावली उथेडण जइत कज्जि ॥243॥

पञ्चकल्याण नामक अश्व का शीघ्रता के साथ जीन कस कर तयार किया गया। यह इस प्रकार चलता है मानो नर्तकी ताल पर थुक-थुक कर नृत्य कर रही हो। राव जतसी के लिए यवनो का तितर बितर करने हेतु सांकरसी आयुधो से सुसज्जित होकर उक्त अश्व पर चढ़ा ॥243॥

पञ्चरतन पइनउ पञ्च पाद, मारग्ग सिद्ध साहइ सिहाद ।
नारायण चडिय ताजी नरीद, वरिमी विचित्र धार घड़ा वीद ॥244॥

पञ्चरत्न नामक अश्व अपने परो में मार्ग तय करने में दक्ष होता है। यह मृगा एव सिंहो को पकडने में मदद करता है। इस अश्व पर नरेन्द्र नारायण चढ़ा। यह दूल्हा बनकर यवनों की कुवारी सेना को अपने प्रहारो से वरण करेगा ॥244॥

कळियप्प ग्रीव निसिनाथ वन्न, मरकट्ट चित्ति ताजी समन्न ।
कूरम्म जगउ हरिणोटि कापि, रिमराह चडिय रिणवट्ट रोपि ॥245॥

हिरणोटि नामक अश्व मयूर के समान गर्दन वाला उल्लू के समान काला थाना एव बन्दर के समान मनोवृत्ति वाला है। कूर्म जग्गा कुपित होकर इस अश्व पर चढ़ा। यह शत्रुओ के लिए राहू स्वरूप एव क्षत्रिय धर्म को स्थापित करने वाला है ॥245॥

ताजि तुरग तोन्हउ सतार, मावडा जेम दइ फाळ मोर ।
जोमरद चडिय डूगरउ जग्गि, खुरिसाण खान खवमी ग्वडग्गि ॥246॥

मयूर नामक अश्व ताजिकस्तानी है और उसका वैसा ही स्वभाव है। यह म दरो

सेना का संहार करने वाला, लड़ने में समर्थ हरिराज अपने हाथ में तलवार लेकर चढ़ा ।।234।।

गङ्गाजळ निरमळ जेम गङ्ग, आइत्त धीर ओपित्त अग ।
भारत्थ चडिय तेजसी मल्ल, परवाडमरल परचक्रपल्ल ।।235।।

गंगाजल नामी अश्व गंगा के समान पवित्र, युद्ध में धैर्य रखने वाला तथा अंग देने की पदाइश है । इस पर युद्ध चरित्र वीर एवं पराये शासन को स्वीकार नहीं करने वाला श्रेष्ठ तेजसी युद्ध करने के लिए चढ़ा ।।235।।

जेवहुउ अजणि आसइ अँधाळ, फुरणी रयत्थ जिम फउरि फाळ ।
सिंगार थाटि मोझउ सलीह, सीहरू चईनउ रतनसीह ।।236।।

जैसा बन्दर होता है वैसा ही (चपल) यह अश्व कहा जाता है । यह सूर्य के अश्वों के समान हल्की कुदान भरता है । शृंगारथाट नामक यह अश्व विशुद्ध एवं सीधे स्वभाव का है । सीहरू रतनसिंह ने इस अश्व को अपने लिए निर्वाचित किया अथवा अपने लिए चुना ।।236।।

पाबू पसाउ चम्पियउ पाइ, खईंगरू कुळाछा छोहि ताइ ।
धर सुछळि उडावण धार धूप, रामडउ चडिय नवसहस रूप ।।237।।

पाबूपसाव नामक अश्व पैरों से दबाने पर पृथ्वी पर कुलाँचें भरने लगता है । पृथ्वी की रक्षा के निमित्त राठौड़ों की शोभा स्वरूप रामड़ा अपनी तलवार की धार से शत्रुओं को उड़ाने के लिए इस अश्व पर चढ़ा ।।237।।

रेवँतपसाउ रथ पवन रंग, पट्टूली पारि पइनउ पवग ।
भाडिजी देय पाइडइ भार नेतसी कुँअर चडियउ निडार ।।238।।

रेवतपसाव नामक अश्व पवन के समान वेग वाला है । वह चंचल पिंडलियों वाला बड़ा तीखा अश्व है । इस अश्व के रकाब पर भार देकर निर्भीक कुंवर नेतसी चढ़ा ।।238।।

ग्वालेर ठनइ पइ पात गत्ति, ऊहउ उछेह ऊछळइ अत्ति ।
सागलउ चडिय करि साहि सार, भारत्थ तणउ जइ भुज्जि भार ।।239।।

ग्वालेर नामक अश्व अपने पैरों को नर्तकी के समान रखता है । यह अत्यन्त तीव्र स्वभाव का है तथा बहुत कूदता-फांदता है । सांगला अपने हाथ में तलवार लेकर चढ़ा । इसकी भुजाओं पर इस युद्ध का दायित्व (भार भार) है ।।239।।

वालहउ मसोझउ रग वग्ग, पइनउ पवग दइ त्रिणे पग्ग ।
काळासि चडिय डुगरउ कुन्त, भ्रिगवाहुअउ किरि भगदत्त ।।240।।

वालहा नामक अश्व रान और लगाम का शुद्ध है । यह तीव्र स्वभाव का है, अतः

पृथ्वी पर तीन पैर ही रखता है। डूगर अपने भाले को लेकर तीव्र गति से अश्व पर चढा, मानो ऋषि भृगु अथवा भगदत्त चढे हो ॥240॥

जगली फुरणि जगि रेखि जाणि, खण्डीर निस्सि हइ तासि खाणि ।
चापडइ देद चडि भामि चट्ठ, उतराध तणा देसाँ अगट्ठ ॥241॥

जङ्गली नामक अश्व के नासासपुट मानो अग्नि शिखा हो। इस अश्व की उत्पत्ति सूय के अश्व ■ हुई है। देद शीघ्रता के साथ चला। वह भूमि की रक्षा के निमित्त यवनो के देश मे पवत की तरह अचल रहने वाला है ॥241॥

माडइ कुलाच पहि जेम भ्रिग्ध, समीर वकिर पसवान सिग्घ ।
सढमल्ल खवासइ तग ताणि, जइमलउ चडिय पण्डीर जाणि ॥242॥

समीरवकिर नामक अश्व की रोमावली दीपक की लौ के समान दीप्त है। यह इस प्रकार कुदान भरता है, मानो मृग (बन्दर) हो। अद्वितीय वीर अश्व का तग खीच कर खवास जमल उस अश्व पर चला मानो सिंह बैठा हो ॥242॥

पल्लाणि वेगि कल्याणपञ्च, नाचणी तालि नाचइ निवञ्च ।
साकरसी चडियउ लोह सज्जि, कानिली उथेडण जइत कज्जि ॥243॥

पञ्चकल्याण नामक अश्व को शीघ्रता के साथ जीन कस कर तयार किया गया। यह इस प्रकार चलता है मानो नतकी ताल पर झुक-झुक कर नत्य कर रही हो। राव जतसी के लिए यवनो का तितर बितर करने हेतु साँकरसी आयुधो से सुसज्जित होकर उक्त अश्व पर चढा ॥243॥

पञ्चरतन पइनउ पथ पाड, सारग सिङ्घ साहइ सिहाड ।
नारायण चडिय ताजी नरीद, वरिसी विचित्र घाइ घडा वीद ॥244॥

पञ्चरत्न नामक अश्व अपने परो से माग तय करने मे बडा तेज है। यह मृगो एव सिंहो को पकडने म मदद करता है। इस अश्व पर नरेन्द्र नारायण चढा। यह दुल्हा बनकर यवनो की कुमारी सेना को अपने प्रहारो से वरण करेगा ॥244॥

कलियप्प ग्रीव निसिनाथ कन्न, मरकट्ट चित्ति ताजी समन्न ।
कूरम्भ जगउ हरिणोटि कोपि, रिमराह चडिय रिणवट्ट रोपि ॥245॥

हिरणोटि नामक अश्व मयूर के समान गदन वाला उल्लू के समान कानो वाला एव बन्दर के समान मनोवृत्ति वाला है। कूम जग्गा कुपित होकर इस अश्व पर चढा। यह शत्रुओ के लिए राहू स्वरूप एव क्षत्रिय धम को स्थापित करने वाला है ॥245॥

ताजि तुरग तीन्हउ सतोर, मावडा जेम दड फाळ मोर ।
जोमरद चडिय डूगरउ जग्गि, खुरिसाण खान खवसी खडग्गि ॥246॥

मयूर नामक अश्व ताजिकस्तानी है और उसका वसा ही स्वभाव है। यह व दरा

के समान गुमान भरता है। वीरवर इगर युद्धाय उत्त अश्व पर चढ़ा। बादशाह एव खान उसकी तलवार का प्रहार सहन करेंगे ॥246॥

फुरणी वयवा वनो फुरत्ति, गडदानइ अरणो ग्रीभगत्ति ।
करनी पसाइ जुधि करण तत्थ, हइ रूढ अमर हू पदम हत्थ ॥247॥

करनी पसाव नामक अश्व की नासिका अग्नि रेखा के समान सीधी है तथा यह स्फूर्ति वाला भी है। इसकी गदन कबूतर के समान है। अमरा युद्ध म सुयश प्राप्त करने के लिए हाथ म तलवार लेकर इस अश्व पर आरूढ हुआ ॥247॥

चामठी सहइ नह मुकुटचाळ, खुरिसाण खेत जउ सुध खाळ ।
निहुटाळ काळ गोगउ तरस्सि, आवज्जि खग्ग आरहिय अस्सि ॥248॥

मुकुटचाल नामक अश्व चिमठी तक सहन नहा करता है। इसका उत्पत्ति स्थान खुरासान है तथा यह विशुद्ध वश का है। वीर गोगा तलवार बाध कर त्वरा क साथ इस अश्व पर आरूढ हुआ ॥248॥

जगिरेस जाणि समीर जोळ, कूदइ सुछन्द पइ धरिय कोळ ।
करिमाळ करेवा कळह काज रिणि रूपक चडियउ प्रिथीराज ॥249॥

जगरेस नामक अश्व मानो वायु के समान है। यह पृथ्वी पर वराह क समान पर रखते हुए स्वतन्त्र रूप स कूदता है। युद्ध की शोभा स्वरूप पृथ्वीराज अपने हाथ म तलवार लेकर युद्ध के निमित्त इस अश्व पर चढा ॥249॥

वाळियइ दूवि वीटळी वाळि, धर पाअ खूदइ चउँर ढाळि ।
सिघलग्ग चडिय सुरिताणसल्ल मळवट्टण मोगर राइमल्ल ॥250॥

चँवरढाल नामक अश्व की पूछ के बार बाध कर वीटुली बाधी। यह अपने परो से पृथ्वी को रौंद रहा था। बादशाह के लिए शल्य स्वरूप एव उसकी सेना का मदन करने क लिए सिंहलग्ग रायमल इस अश्व पर चढा ॥250॥

त्रिध जम फाळ मांडइ मिरिग्घ, सुकुमार सार साहणा सिग्घ ।
सजि सार हाथि चडियउ सनीम, मारत्थ करेवा भीम भीम ॥251॥

मिरिघ नामक अश्व मृग के समान ही छलांग लगाता है। यह सुकुमार अश्व सभी अश्वा म शिरमोर है। हाथो मे तलवार धारण करके युद्ध के निमित्त बलवान भीम की तरह भीम नियमपूर्वक इस अश्व पर चढा ॥251॥

केकाण मोर कियइ कळाइ, पेरणी कि नाचइ पात्र पाइ ।
सोढउ समत्थ चढियउ सँग्राम, हथियार हियइ पूरवण हाम ॥252॥

मोर नामक अश्व मयूर के छत्र की तरह कलाव करता है। इसके पाव ऐसे पड़ते

थ माना फिरकी अथवा नर्तकी नृत्य कर रही हो। समथ सोढा वीर सग्राम इस अश्व पर चढा। यह अपने शस्त्रो से अपने हृदय की अभिलाषा पूरी करेगा ॥252॥

रेवंतपसाउ राजवो रत्थ, सूरउ सतेज सोधउ समत्थ।
वासइ आरुहियउ देद वाज, कुळ लाज सुधारण सामि काज ॥253॥

रेवतप्रसाव नामक अश्व राजाओं के अश्वों के समान है। यह शूरवीर, तेजवान, विशुद्ध एव सामर्थ्य वाला है। इस अश्व की पीठ पर देद अपने स्वामी का काम सुधारने के लिए एव अपने वश की लज्जा रखने के लिए चढा ॥253॥

चिड कुलउ जेम ऊडइ चिहाह, वद्धणउ पथि थडि वाह वाह।
आरुहिय असिस आउधि अपाल, मुगुलना मळेवा जइतमाल ॥254॥

चिड कुला नामक अश्व चिडियो के समान उडता है। मार्ग मे आगे बढने पर लोग वाह-वाह कर उठते हैं। शस्त्रास्त्रो से नहीं डरने वाला वीर जइतमाल मुगल बादशाह कामरा की सेना को मर्दन करने हेतु इस अश्व पर आरूढ हुआ ॥254॥

धडहडइ धरा पइ मगर धज्ज, वेगवंत जेम गरणागि गज्ज।
जुधि दियइ साखि ससार जास, दोनाळी चडियउ किसनदास ॥255॥

मकरधज नामक अश्व के पैरों से पृथ्वी कम्पायमान होती है। यह ऐसा वेगवान है मानो आकाश मे विद्युत् हो। युद्ध मे जिसकी साक्षी समग्र जगत् देता है वही वीर किसनदास दुनाली लेकर इस अश्व पर चढा ॥255॥

फरहरइ फउरि फरि अफरि फूल, ऊंचास अस्मि आरिखि अमूल।
वणवीर चडिय तेवहि वहासि, अहिवारि थम्भ आडइ अयासि ॥256॥

ऊँचास नामक अश्व के लक्षण बहुमूल्य हैं। यह हल्की फुल्की पताका के समान चार चलता है। वह कमल के समान खिले हुए अश्व पर वणवीर चढा। यह अपने स्वाभिमान से आकाश को सम्मुख स्तम्भ देने वाला है ॥256॥

सल्लूण तुरी सोझउ सुचग सापडइ नेजि ती हुउ सुरग।
पडिघाळ धूणि रघुनाथ पासि, विढिसी सँप्रत चडियउ वहासि ॥257॥

सलूण नामक अश्व विशुद्ध और सुदर है। ताजिकस्तानी अश्व जिस प्रकार दौड लगाता है, उसी प्रकार यह अश्व भी दौडता है। रघुनाथ अपनी तलवार घुमाता हुआ इसी अश्व पर चढा। अब यह प्रत्यक्ष मे हो युद्ध करेगा ॥257॥

नामियइ कध नीझरइ नीर समयग पूछ सोहइ सरीर।
वाखरे पलाण हस वाज, रिणि रूपक चडियउ मेघराज ॥258॥

हस नामक अश्व के कधे झुकाने पर मुह से पानी झरने लगता है। इसकी सुन्दर पूछ शरीर पर शोभायमान होती है। इस अश्व पर युद्ध की सामग्री कस कर युद्ध का साक्षात् स्वरूप मेघराज चढा ॥258॥

नवलराउ तुरी गिहजोति नेत, सत्युली सईंग खुरिसाण खेत ।
चापडइ चडण चन्चळि चडव, दारण दुरग वीरम्मदेव ।।259।।

नवलराउ अश्व के नेत्र दीपक के समान थे। यह प्रशिक्षित अश्व है तथा इसका उत्पत्ति स्थान खुरासान प्रदेश है। सुदृढ़ दुर्गों का विध्वंश करने वाला वीरमदेव प्रत्यक्ष में युद्ध करने हेतु इसी अश्व पर चला ।।259।।

मिरिघुलउ तुरी साहण मुगट्ट वाउ ग्रहद मूठि वाजिन विछट्ट ।
डूदउउ चडिय गाजण दुघस, नवसट्म नाद राखण नरेस ।।260।।

मिरिघुला नामक अश्व अश्वों में शिरोमणि है। इसे दौड़ाने पर वायु को मुट्ठी में पकड़ा देता है। राठौड़ों का सुयश रखने एवं यवनों को विनष्ट करने हेतु नरेश डूदड़ा इसी अश्व पर चढ़ा ।।260।।

चाढिणउ मँजाणउ फळह चल्लि, सिरि बाळसोट् हारइ न हल्लि ।
खीवउउ सुभरि साहियट खग्गि, लाग्गोक चईनत्र वोमि लग्गि ।।261।।

चाढ़िण नामक अश्व युद्ध की सभी गति विधियों को जानता है। इस पर बालछा फिराने के बाद यह भागने में कभी भी पराजित नहीं होता है। खीवड़ा अपने हाथों में खड्ग धारण करते हुए इस यशस्वी अश्व को अपना निर्वाचित करके आकाश तक जा लगा ।।261।।

भीगार भाति भत्ती भडिज्ज, लळवळइ अंगि लेजम्मालज्ज ।
वीदडउ चडिय हुइ खत्रीवट्ट दाखियाँ सीसि दवा दवट्ट ।।262।।

भीगार भांति नामक घोड़ी बहुत अच्छी है। यह अपने अंगों का संचालन इस प्रकार करती है मानो वह मनोज्ञ वधू (नववधू) हो। बीदड़ा इस घोड़ी पर क्षत्रिय धर्म धारण करके शत्रुओं पर प्रहार करने हेतु चला ।।262।।

घागारि भत्ति कुम्मट्ट वन्ध, बड्रँगणा वेस तुहमणी वन्ध ।
वीरमद चडियउ भउरि वग्गि, लगावि अम्सि असमाण लग्गि ।।263।।

भउरि वग्गि नामक घोड़ी उल्लू के समान काला वाली और कबूतर के समान वर्णों वाली है। इसका वस्त्र रंग का परिधान है तथा अनेक लूवियाँ बधी हुई हैं। वीरमदे ने इस घोड़ी पर चढ़ कर इसे आग बढ़ाया तो वह आकाश तक जा लगा ।।263।।

रेसग्ग पुन वामी रयत्थ हाकियट ताळि मेळइजु हत्थ ।
मछराइतद चडियर मालदेउ, काळासि कूत वळहण करेउ ।।264।।

रवग्ग नामक अश्व पवन प्रवाह के समान चलता है। इसे हाकने पर यह हाथों से तालियाँ मिला देता है। स्वाभिमानी मालदेव अपने हाथ में भाला पकड़कर युद्ध करने हेतु शीघ्रता से इस अश्व पर चला ।।264।।

मोहलउ तुरी वांकउ सहज्जि, केकाण कोड पूरवइ कज्जि ।
सग्रहिय सुकरि नगराज सारि, वाजिनि चडिय रिणजग वार ॥265॥

सौहलउ नामक अश्व सहज एव सुदर है। यह अश्व युद्ध म योद्धा की उमग की पूर्ति करता है। नगराज अपने हाथों म तलवार पकड कर युद्ध क्षेत्र मे जाने के लिए इस अश्व पर चढा ॥265॥

गुणसागर कूदइ अउव गत्ति राही किरि अवसरि रमइ रत्ति ।
खण्डरण घडा मूगळी खागि, लखधीर चईनउ घ्यागि लागि ॥266॥

गुणसागर नामक अश्व अद्भुत गति के साथ कूदता है। यह ऐसा प्रतीत होता है माना नतकी रात्रि मे नृत्य करते समय घूम घूमकर मल्ती हो। अपनी तलवार से मुगल सेना को विनष्ट करने के लिए लखधीर इसी अश्व को चुन कर वे आकाश तक जा लगा ॥266॥

सजि साकति आणउ नइणसुक्ख, रोपतउ फाळ सतलक रुक्ख ।
नेतलउ चडिय माधो निडार, सत्रुहरा सोसि फेरण सँधार ॥267॥

मयणसुख नामक अश्व को तयार करके लाया गया। यह हनुमान (बन्दर) की तरह छलाग लगाता है। निभय एव मुखिया नेतल अपने शत्रुओ के ऊपर महार करने के लिए इसी अश्व पर चढा ॥267॥

जामिनीसत्र जन्नमा जत्ति, गोझे गयन सासत्त गत्ति ।
चारहडउ सुरिजन चडिय चीति, राठउड दिखाळण रुक रीति ॥268॥

जामिनी सत्र नामक घोडा अश्वों म यति के समान है। यह अपने कानो को दबोचे हुए शाश्वत गति म चलता है। यह अश्व चारहडा सुरिजन के चित्त म चढ गया। राठौड अपनी तलवार की रीति दिखाने के लिए इसी अश्व पर चढा ॥268॥

छुरीकार अस्सि सफरी छोहि लखियउ चडइ सामहइ लोहि ।
ऊदउत अभँग आहवि अहल्ल, सीहरू चडिय दूजणा सल्ल ॥269॥

छुरीकार नामक अश्व तेज म मछली के समान है। इस चलाने पर यह शस्त्रों के सम्मुख जा डटता है। अजेय वीर, युद्ध म स्थिर रहने वाला तथा शत्रुओ के लिए शल्य-स्वरूप उदावत सीहा इसी अश्व पर चढा ॥269॥

जगजोति जाति जगस्स जत्ति, मोयउ सरास सतेज सत्ति ।
वाहिसइ सत्रां तारावयट्ट, परवतउ चडिय दमा प्रगट्ट ॥270॥

जगजोति नामक अश्व की ज्योति सूर्य के समान है। यह विशुद्ध, रोबवान तेजवाला तथा सत्त्व वाला है। जो अपने शत्रुओ पर तलवार चलाएगा ऐसा जगत्प्रसिद्ध योद्धा परबत इसी अश्व पर चढा ॥270॥

नवतसउ तुरी ग्रिहजाति नेत, सत्युलो खईंग खुरिसाण खेत ।
चापडइ चडण चन्चलि चडव, दारण दुरग वीरम्मदेव ॥259॥

नवलसा अश्व के नेत्र दीपक के समान थे। यह प्रशिक्षित अश्व है तथा इसका उत्पत्ति स्थान खुरासान प्रदेश है। सुदृढ़ दुर्गों का विध्वंस करने वाला वीरमदेव प्रत्यक्ष में युद्ध करने हेतु इसी अश्व पर चढ़ा ॥259॥

मिरिघलउ तुरी साहण मुगट्ट, वाउ ग्रहइ मूठि वाजिन विछुट्ट ।
दूदडउ चडिय गाजण दुथेस, नवसहस नाद राठण नरेस ॥260॥

मिरिघुला नामक अश्व अश्वों में शिरोमणि है। इसे दौड़ाने पर वायु को मुट्ठी में पकड़वा देता है। राठौड़ों का सुयश रखने एवं यवनों को विनष्ट करने हेतु नरेश दूदड़ा इसी अश्व पर चढ़ा ॥260॥

चाढिणउ गॅंजाणउ कळह चल्लि, सिरि वाळसोह हारइ न हल्लि ।
खीवडउ सुकरि साहियइ खग्गि, लाखीक चईनउ वामि लग्गि ॥261॥

चौल्ण नामक अश्व युद्ध की सभी गति विधियों को जानता है। इस पर वालछा फिराने पर यह कभी भी पराजित नहीं होता है। खींवड़ा अपने हाथों में खड्ग धारण करते हुए इस यशस्वी अश्व को अपने लिए निर्वाचित करके आकाश तक चला गया ॥261॥

भीगार भाति भरनो भटिज्ज, लहवळइ अगि रंजम्मोलज्ज ।
वीदडउ चडिय हुइ गम्रीवट्ट, दागिया सीसि देवा दवट्ट ॥262॥

भीगार भाति नामक घोड़ी बहुत भरी है। यह अपने अंगों का संचालन इस प्रकार करती है मानो एक लज्जाशील वेश्या (नर्तकी) हो। वीन्दा इस घोड़ी पर क्षत्रिय धर्म धारण करके शत्रुओं पर प्रहार करने हेतु चढ़ा ॥262॥

भागारि कनन घुग्गट्ट बन्ध, वईंगणा वेस लुहमणी बन्ध ।
वीरमद चडियउ भउरि वग्गि, लगावि अस्सि असमाण लग्गि ॥263॥

उरि वग्गि नामक घोड़ी उल्लू के समान आँखों वाली और कबूतर के समान बंधों वाली है। इसका बैंगनी रंग का परिधान है तथा अनेक लूमियाँ बंधी हुई हैं। वीरमदे ने इस घोड़ी पर चढ कर इस आगे बढ़ाया तो वह आकाश तक जा लगा ॥263॥

रेवग्ग पुन वामी रयत्थ हाकियइ ताळि मेळइजु हत्थ ।
मछराइतइ चडियउ मालदेउ, वाळासि कूत कळहण करेउ ॥264॥

रेवग्ग नामक अश्व पवन प्रवाह के समान चलता है। इसे हाँकने पर यह हाथों से तालियाँ मिला देता है। स्वाभिमानी मालदेव अपने हाथ में भाला पकड़कर युद्ध करने हेतु शीघ्रता से इस अश्व पर चढ़ा ॥264॥

सीहलउ तुरी वाकउ सहज्जि, केकाण कोड पूरवइ वज्जि ।
सग्रहिय सुकरि नगराज सारि, वाजिनि चडिय रिणजग वार ।।265।।

सीहलउ नामक अश्व सहज एव सुन्दर है। यह अश्व युद्ध मे योद्धा की उमग की पूर्ति करता है। नगराज अपने हाथों में तलवार पकड कर युद्ध क्षेत्र म जाने के लिए इस अश्व पर चढा ।।265।।

गुणसागर कूदइ अउव गत्ति राही किरि अवसरि रमइ रत्ति ।
खण्डरण घडा मूगळो खागि, लखधीर चईनउ ध्यागि लागि ।।266।।

गुणसागर नामक अश्व अद्भुत गति के साथ कूदता है। यह ऐसा प्रतीत होता है मानो नर्तकी रात्रि म नृत्य करते समय घूम घूमकर चलती हो। अपनी तलवार से मुगल-सेना को विनष्ट करने के लिए लखधीर इसी अश्व को चुन कर के आकाश तक जा लगा ।।266।।

सजि साकति आणउ नडणसुक्ख, रोपतउ फाळ सतलक रक्ख ।
नेतलउ चडिय माधो निडार, सत्रुहरा सोसि केरण सँघार ।।267।।

नयणसुख नामक अश्व को तयार करके लाया गया। यह हनुमान (बन्दर) की तरह छलाग लगाता है। निर्भय एव मुखिया नेतल अपने शत्रुओ के ऊपर सहार करने के लिए इसी अश्व पर चढा ।।267।।

जामिनीसत्र जङ्गमां जत्ति, गोजे गयन्न सासत्त गत्ति ।
चारहडउ सुरिजन चडिय चीति, राठउड दिखाळण रूक रीति ।।268।।

जामिनी सत्र नामक घोडा अश्वो मे यति के समान है। यह अपने कानो को दबाये हुए शाश्वत गति म चलता है। यह अश्व चारहडा सुरिजन के चित्त म चढ गया। राठौड अपनी तलवार की रीति दिखाने के लिए इसी अश्व पर चढा ।।268।।

छूरीकार असिस सफरी छोहि, लाखियउ चडड सामहइ लोहि ।
उदउत अभग आहवि अहल्ल, सीहड चडिय दूजणा सल्ल ।।269।।

छुरीकार नामक अश्व तेज म मछली के समान है। इसे चलाने पर यह शस्त्रो के सम्मुख जा डटता है। अजेय वीर युद्ध मे स्थिर रहने वाला तथा शत्रुओ के लिए शल्य-स्वरूप उदावत सीहड इसी अश्व पर चढा ।।269।।

जगजोति जोति जगरूव जत्ति, सोझउ सरोस सत्तेज सत्ति ।
वाहिसइ सत्रा तारावयट्ट, परवतउ चडिय देसा प्रगट्ट ।।270।।

जगजोति नामक अश्व की ज्योति सूर्य के समान है। यह विशुद्ध, रोषवान, तेजवाला तथा सत्त्व वाला है। जो अपने शत्रुओ पर तलवार चलाएगा, ऐसा जगत्प्रसिद्ध योद्धा परबत इसी अश्व पर चढा ।।270।।

मल्हपति इसी परि रूपमल्ल, सरी रम्भ गति समसरि सुचल्ल ।
पातलउ चढ़िय हरि सज्जि पाणि, असुरांह थाट भेळण अराणि ॥271॥

रूपमल्ल नामक अश्व इस प्रकार झपट्टा मारता है, जैसे नर्तकी अप्सराओं की चाल से चलती हो। युद्ध में यवनों की सेना के साथ भिड़ने हेतु पातल अपने हाथों में शस्त्र धारण करके इसी अश्व पर आरूढ़ हुआ ॥271॥

हाटकी नीर हरि हीर हल्लि, चञ्चळे राउ चावुकी चल्लि ।
आमउ चारिहियउ अधिक आहि, सुरिताण सेन सउं खग्ग साहि ॥272॥

हाटकी नामक अश्व सेना में नदी के समान चलता है। इस अश्वराज पर चाबुक चलाकर आमा अत्यन्त अहंभाव के साथ बादशाह की सेना के सम्मुख तलवार धारण करके चला ॥272॥

परिजास पाइ वानर प्रळम्ब, अंवणी प्रहासइ पाणि अम्ब ।
कलाळि धूत साम्हउ अयास, दोमजिम भुवानी चढिय दास ॥273॥

परिजास नामक अश्व के पैर बन्दर के समान लम्बे हैं। यह एक हाथ की हथेली से पानी पीता है। आकाश के सम्मुख अपना भाला उठाते हुए भवानीदास युद्ध के लिए इसी अश्व पर चढ़ा ॥273॥

ढेलियउ तुरी आपइ घमस्स, हुसा सुहस वासइ हुवस्स ।
खेडेचउ नगराज चढि खेधि, वत्तवा हुअउ सउ सत्र वेधि ॥274॥

ढेलियउ नामक अश्व इस प्रकार की दौड़ दौड़ता है मानो अनेक अश्वों के पीछे चलने वाले अश्वों की ध्वनि हो। खेड़ेचा नगराज युद्धार्थ इसी अश्व पर चढ़ा तो बातें होने लगी कि यह अवश्य ही शत्रुवेध करेगा अर्थात् शत्रुओं को मार भगायेगा ॥274॥

वछनाग वाउ झालइ विवाण, सीराजी वासइ खुरासाण ।
भोजलउ चडिय भारत्थ भल्ल, मंडळीक पितामह जास मल्ल ॥275॥

वछनाग नामक अश्व चलने पर वायु के प्रवाह को पकड़ लेता था। इसके पीछे खुरासान प्रदेश है। भोज युद्ध का दायित्व स्वीकार करके इसी अश्व पर चढ़ा। इस योद्धा के पितामह मल्लिनाथ थे ॥275॥

पीवन्ति अम्व अंवणी पाणि, खइंगम्म तास ऊचास खाणि ।
वाजिन्नि चढिय चरचरइ वीर, नवसहसी रासण नाद नीर ॥276॥

चरचरइ नामक अश्व एक हाथ की अंजुलि से पानी पीता है। इसका उत्पत्ति स्थान बहुत ऊँचा है। राठौड़ों का सुयश और आब (इज्जत) रखने हेतु वीर इसी अश्व पर चढ़ा ॥276॥

कपिफाळ रिणहू आवद्ध कन्ध, गळि गोण जास गण्ठइ गयन्ध ।
ऊजाळइ भीमउ चढिय अप्प झूलाळ सोसि देवा झडप्प ॥277॥

कपिपाल नामक अश्व कुक्कुट के समान कधो वाला है। यह हाथियों के गले में धनुष की प्रत्यञ्चा डल्वा देता है। अपने पानी (इज्जत) को उज्ज्वल करने हेतु तथा यवनों पर झपट्टा मारने हेतु भीम इस अश्व पर चढा ॥277॥

गडदनी विकिरि सत्थोर गत्त, साफरी छोह के लङ्क सत्त।
जावुअउ ओधि सापत्तजीह, आरहिय तेणि आसउ अबीह ॥278॥

जावुआ नामक अश्व की गदन कुक्कुट के समान है और गति अत्यन्त तीव्र है। यह रोष में मत्स्य अथवा हनुमान के सदृश है। इसकी उत्पत्ति सूर्य के अश्वों से हुई है। निर्भय वीर आसा इसी अश्व पर आरूढ हुआ ॥278॥

लाडउ ग्रहास लाम्बीक लोण, जर साकति पूठि जडिय जीण।
प्रोहित्त चडिय गञ्जण पळास दैइदास समोभ्रम विसनदास ॥279॥

लाडो नामक अश्व का एक लाख रुपये मूल्य में लिया है। इस अश्व की पीठ पर जरी की पछी बिछाकर ऊपर जीन कसी गई है। यवनों का नष्ट करने के लिए पुरोहित देवीदास का पुत्र किसनदास इसी अश्व पर चढा ॥279॥

वाजित्र मेघनादह वखाणि, जळहरि सिहण्ड तण्डवइ जाणि।
रतनमी चडिनउ रिम्मराह, साकडइ सत्रा सामी सनाह ॥280॥

मेघनाद नामक अश्व की शोभा सुनो। यह अश्व करतब करने पर ऐसा प्रतीत होता है मानो मेघगर्जन के समय मयूर ने छत्र ताना हो। शत्रुओं के लिए राहु स्वरूप रतनसी ने शत्रुओं को विपत्ति में डालने के लिए अपना कवच कसा तथा उक्त अश्व को चुन करके इस पर आरूढ हुआ ॥280॥

लाखीक तुरङ्गम मूलि लक्ख, पूरउ प्रचण्ड जड़ सूध पक्ख।
नगराज चडिय मुहतउ निवीह, सामि छळि फळहिया जेम सीह ॥281॥

लाखीक नामक अश्व का मूल्य एक लाख रुपये है। यह चलने में जबरदस्त और दोनों पक्षों (माता पिता) से शुद्ध है। निर्भय वीर मुहता नगराज अपने स्वामी के लिए युद्ध करने हेतु जैसे सिंह झपटता है वैसे ही झपटकर उस अश्व पर चढा ॥281॥

गिरिया पगनपइ वनक गत्ति, पागारि वन्ध पोथी कि पत्ति।
पीथउ नगीनइ चडिय पट्ठि सामी सिहाइ सोर मि सट्ठि ॥282॥

नगीना नामक अश्व पर्वतों को अपने परों से नाप लेता है। इसके परों की गति बन्दर के समान है। इसके कंधे मयूर के समान तथा नासापुट पत्ते के समान हैं। स्वामी की सहायता एव उनसे सबध मधुर बने रहे एतदर्थ पीथल इसी अश्व की पीठ पर आरूढ हुआ ॥282॥

मरहपत्ति इसौ परि रूपमल्ल, सरी रम्भ गति समसरि सुचल्ल ।
पातलउ चढ़िय हरि सज्जि पाणि, असुराह थाट भेळण अराणि ।।271।।

रूपमल्ल नामक अश्व इस प्रकार झपट्टा मारता है, जैसे नर्तकी अप्सराओं की चाल से चलती हो। युद्ध में यवनों की सेना के साथ भिड़ने हेतु पातल अपने हाथों में शस्त्र धारण करके इसी अश्व पर आरूढ़ हुआ ।।271।।

हाटकी नीर हरि हीग हल्लि, चञ्चळे राउ चावुधी चल्लि ।
आसउ आरूहियउ अधिक आहि, सुरिताण सेन सउँ खग्ग साहि ।।272।।

हाटकी नामक अश्व सेना में नदी के समान चलता है। इस अश्वराज पर चावुंड चलाकर आसा अत्यंत अहंभाव के साथ बादशाह की सेना के सम्मुख तलवार धारण करके चला ।।272।।

परिजास पाइ वानर प्रळम्ब अेकणी प्रहासइ पाणि अम्ब ।
ऊलाळि कूत साम्हउ अयास, दामज्जिम भुवानी चढ़िय दास ।।273।।

परिजास नामक अश्व के पैर बन्दर के समान लंबे हैं। यह एक हाथ की हथेली से पानी पीता है। आकाश के सम्मुख अपना भाला उठाते हुए भवानीदास युद्ध के लिए इसी अश्व पर चला ।।273।।

ढेलियउ तुरी आपइ धमस्स, हसा सुहस वासइ हवस्स ।
खेडेचउ नगराज चडि खेंधि, वत्तवा हुअउ सउ सत्र वधि ।।274।।

ढेलियउ नामक अश्व इस प्रकार की दौड़ दौड़ता है मानो अनेक अश्वों के पीछे चलने वाले अश्वों की ध्वनि हो। खेड़ेचा नगराज युद्धार्थ इसी अश्व पर चढ़ा तो बातें होने लगी कि यह अवश्य ही शत्रुवेध करेगा अर्थात् शत्रुओं को मार भगायेगा ।।274।।

वछनाग वाउ झालइ विवाण सीराजी वासद खुरासाण ।
भोजलउ चडिय भारत्थ भल्न, मेंडळीक पितामह जास मल्ल ।।275।।

वछनाग नामक अश्व चलने पर वायु के प्रवाह को पकड़ लेता था। इसके पीछे खुरासान प्रदेश है। भोज युद्ध का दायित्व स्वीकार करके इसी अश्व पर चढ़ा। इस योद्धा के पितामह मल्लिनाथ थे ।।275।।

पीवन्ति अम्ब अेकणी पाणि, खइँगरू तास ऊचास ठाणि ।
वाजिन्नि चढ़िय चरचरइ वीर, नवसहसी राखण नाद नीर ।।276।।

चरचरइ नामक अश्व एक हाथ की अंजुलि से पानी पीता है। इसका उत्पत्ति स्थान बहुत ऊँचा है। राठौड़ों का सुयश और आब (इज्जत) रखने हेतु वीर इसी अश्व पर चढ़ा ।।276।।

कपिफाळ रिणह आवद्ध कन्ध, गळि गोण जास गण्ठइ गयन्ध ।
ऊजाळइ भीमउ चढ़िय अप्प थूलाळ सीसि देवा झडप्प ।।277।।

कपिफाल नामक अश्व कुक्कुट के समान कधा वाला है। यह हाथियों के गले ■ धनुष की प्रत्यन्चा डलवा देता है। अपने पानी (इज्जत) को उज्ज्वल करने हेतु तथा यवनों पर झपट्टा मारने हेतु भीम इस अश्व पर चढ़ा ॥277॥

गडदनो विक्किरि सत्योर गत्त, साफरी छोह के लङ्क सत्त।
जावुअउ ओधि सापत्तजोह, आरहिय तेणि आसउ अवीह ॥278॥

जांवुआ नामक अश्व की गदन कुक्कुट के समान है और गति अत्यन्त तीव्र है। यह रोष में मत्स्य अथवा हनुमान के सदृश है। इसकी उत्पत्ति सूर्य के अश्वों से हुई है। निर्भय वीर आसा इसी अश्व पर आरूढ हुआ ॥278॥

लाखउ ग्रहास लासीव लीण, जर साकति पूठि जडिय जीण।
प्रोहित्त चडिय गज्जण पळास, देइदास समोभ्रम किसनदास ॥279॥

लाखो नामक अश्व का एक लाख रुपये मूल्य में लिया है। इस अश्व की पीठ पर जरी की पाखरी बिछाकर ऊपर जीन कसी गई है। यवनों को नष्ट करने के लिए पुरोहित देवीदास का पुत्र किसनदास इसी अश्व पर चढ़ा ॥279॥

वाजिन्न मेघनादह वखाणि, जळहरि सिहण्ड तण्डवइ जाणि।
रतनसी चडिनउ रिम्मराह, साकडइ सना सामी सनाह ॥280॥

मेघनाद नामक अश्व की शोभा सुनो। यह अश्व कलाव करने पर ऐसा प्रतीत होता है मानो मेघगर्जन के समय मयूर ने छन ताना हो। शत्रुओं के लिए राहु स्वरूप रतनसी न शत्रुओं को विपत्ति में डालने के लिए अपना कवच कसा तथा उक्त अश्व का पुन करके इस पर आरूढ हुआ ॥280॥

लासीर तुरङ्गम मूलि लक्ख, पूरउ प्रचण्ड जड सुध पक्ख।
नगराज चडिय मुहतउ निवीह, मामि छळि वळहिरा जेम सीह ॥281॥

लासीर नामक अश्व का मूल्य एक लाख रुपय है। यह चलन म जबरदस्त और दोना पक्षों (माता पिता) म शुद्ध है। निर्भय वीर मुहता नगराज अपने स्वामी क लिए युद्ध करने हेतु जस सिंह झपटता है वस ही झपटकर इस अश्व पर चढ़ा ॥281॥

गिरिधा पगनपइ वनव गत्ति, पाँगारि कन्ध पोथी कि पत्ति।
पीथराउ नगीनइ चडिय पट्टि सामी सिहाइ सोर मि सट्टि ॥282॥

नगीना नामक अश्व पवता को अपने परों से नाप लता है। इसके परों की गति वन्दर क समान है। इसक कंध मयूर के समान तथा नागापुर पत्ते क समान हैं। स्वामी की सहायताथ एव उनस सबध मधुर बन रहे इसलिए पीथराज इसी अश्व की पीठ पर आरूढ हुआ ॥282॥

पारेवड धावतड अति पाइ, नीधसइ धरा पुड तिणि निहाइ ।
पञ्चाइण चव्यिउ ऊभि पाण, मूगली घडा अह्विा माण ॥283॥

पारधा नामक अश्व अपने पैरों से अत्यन्त तीव्र गति से चलता है तो इसके पदचाप से पृथ्वी-तल घसने लगता है। पञ्चायण युद्ध के लिए तत्पर होकर, मुगल सेना का मान मर्दन करने हेतु इसी अश्व पर चढ़ा ॥283॥

वीखरइ वट्टि आवइ न वक्रि, घरियइ पलाणि करि वेस ढक्रि ।
भीमनउ चडिय देवीपसाइ, घड मीर सँमेळण मुहर धाइ ॥284॥

देवीपसाव नामक अश्व युद्ध के समय इतना बिफर जाता है कि वहन में नहीं आता। इस पर अपने हाथों से वस्त्र बिछाकर उस पर काठी रखी। यवन बादशाह की सेना के अग्रभाग में प्रविष्ट होकर प्रहार करते हुए भिड़ने हेतु भीमला इसी अश्व पर आरूढ़ हुआ ॥284॥

पसाइतउ घातइ मिरी प्रास, लाखीक मोलि सिरि सोह लास ।
सद्धारण साहिय सम्मसेर, मूहतउ चडिय करणी कुमेर ॥285॥

करणीकुमेर नामक अश्व यवनों के गले में फाँसी डलवा देता है। अश्व-समूह में सुशोभित यह अश्व एक लाख रुपये मूल्य का है। मुहता सद्धारण अपने हाथ में तलवार लेकर इसी अश्व पर चढ़ा ॥285॥

सारीस रिप्प मणिमरथ सिग्घ, वगडी बनख मनि सारा ग्रिग्घ ।
सुत अमर मता उरि भाटसल्ल, मछरादतइ चडियउ सहसमल्ल ॥286॥

बगडी यवन नामक घोड़ी मानो बन्दर है। यह मयूर निगा के समान है। शत्रुओं के हृदय में शल्य के समान चुभने वाला अमर का पुत्र सहसमल रोष में परिपूर्ण होकर इसी घोड़ी पर चढ़ा ॥286॥

रेवत पलाणउ मदारङ्ग, कम्माण गोण घातइ कुरङ्ग ।
घण घाइ उतारण मेछ घाण, रिणजङ्ग करेवा चडिय राण ॥287॥

शमारग नामक अश्व को काठी कस कर सुसज्जित किया। यह मृगों के गले में धनुष की प्रत्यञ्चा डलवा देता है। अपने जबरदस्त प्रहारों द्वारा यवन सेना को एक साथ मारने के लिए तथा युद्ध करने हेतु राण इसी अश्व पर आरूढ़ हुआ ॥287॥

रेवत पसाउ साहणे राउ कावोड वधि मेरहइ कळाउ ।
लासणमी चडियउ झालि लोह, सळखाहरि चाडण सारि सोह ॥288॥

रेवत पसाउ नामक अश्व अश्वों में राजा के समान है। यह कुक्कुट के समान पंखों वाला कलाव किये खड़ा रहता है। राव सलखा का वंशज लाखणसी धारण करके अपनी तलवार से शोभा प्राप्त करने हेतु इसी अश्व पर चढ़ा ॥288॥

नवनखी पञ्च ओपत्ति नहि, सम्मइ न थट्टि रणतूर सहि।
सोभ्रमियउ चडियउ सार सज्जि, गाजणइ सीसि जिम मेघ गज्जि ॥289॥

नवनखी नामक घोड़ों का उत्पत्ति स्थान पंजाब प्रदेश है। यह युद्ध-वाद्यों के बजने पर सेना म नहीं समाती है। सोभ्रमियउ तलवार स सुसज्जित होकर यवनों पर मेघ क समान गजता हुआ इसी घोड़ी पर चढ़ा ॥289॥

खड्गइ वह गति नन्दघोस, मछराळ अचप्पळ पमण मोख।
अगराण पूठि आरूहिउ अबीह, सुजडाहथ चडियउ करमसीह ॥290॥

नन्दघोष नामक अश्व विशेष लय के साथ चलता है। यह मात्सर्ययुक्त चपल तथा जैसे हवाछुटी हो ऐसा है। युद्ध स न डरने वाला करमसिंह हाथ मे तलवार लेकर इसी अश्व की पीठ पर सवार हुआ ॥290॥

मञ्जरी कन्ध पइ साखस्निग्ध, स्रवणे सुचङ्ग सद्धन सिग्घ।
साळेवइ चडियउ सत्तनाथ, हइवइ रोउ ऊपरि ऊभि हाथ ॥291॥

सालेवा नामक अश्व म कध कुक्कुट के समान एव पर बन्दर के समान हैं। इसके कान सुन्दर हैं और यह सीधी नासापुट वाला है। बादशाह के विरुद्ध राव जैतसी की सहायताथ खड़ हाथों सत्तनाथ इसी अश्व पर चढ़ा ॥291॥

स्रवण वडाल मुलियवन्न सिग्घ, मन पवन जेम नापइ कि स्निग्घ।
ऊगइ कोडीधज दे अभङ्ग, अरि लाख हूँत टाळइ न अङ्ग ॥292॥

कोडीध्वज नामक अश्व ने कान बिल्ली के समान और मुहफाड़ दीपक की लौ के समान है। यह मन, पवन एव मृग के समान दौड़ता है। अपराजेय वीर ऊगा का यह अश्व दिया गया। वह लाखों-लाख शत्रुओं के मध्य भी अपना शरीर बचाकर नहीं निकला अर्थात् शत्रुओं के मध्य अचल रहा ॥292॥

रपि जेम सुदिढ पइ तीख कन्न, नाजित जेम ऊन्हउ वहन।
साहणाह दीरउ वाग साहि, मेंडळेसर चडियउ यट्ट माहि ॥293॥

साहणाहि नामक अश्व व न्दर के समान दृढ़ पैरों वाला एव तीखे कानों वाला है। यह स्वभाव से अग्नि के समान उष्ण है। मण्डलेश्वर इस अश्व की लगाम पकड़ कर अपने अश्व-समूह म सम्मिलित हुआ ॥293॥

निसमपराउ मोनउ सुवत्ति, गुणनळा जेम पइ ठट्टइ गत्ति।
नगाळ सीमि वावाडि वोलि, धनराज चटिय वाजतइ ढोलि ॥294॥

विमनपमाव नामक अश्व विशुद्ध एव अच्छी चाल वाला है। इसके पर चलते समय प्रशिक्षित नतकी के समान पड़ते हैं। यवनों पर बोल (प्रतिज्ञाबद्ध) चलाकर धनराज ढोल के नाद के साथ इसी अश्व पर चढ़ा ॥294॥

नइणहिसुक्ख नाचइ निटाळ, नविक सम्व ओडइ जु ताळ ।
वाघुलउ चडिय वीरत्ति वग्ग, सुरिसाण सीसि साहियउ खग्ग ।।295।।

नइणहिसुक्ख नामक अश्व निश्चित गति के साथ नाचता है। यह नगाडा की ताल पर सम मिला देता है। बादशाह पर खड्ग धारण करके वाघुल वीरता के साथ इसी अश्व पर चढा ।।295।।

फरगटइ नट्ट जिम फूलमाळ, फुरणि घण जेम नांसत्ति फाळ ।
सारइत जइत करिव सिहाय, राइमल चडिय नवकोट राउ ।।296।।

फूलमाल नामक अश्व नटो के समान स्फूर्ति प्रदर्शित करते हुए चलता है। यह अपने नासा सपुट म बादलों के समान फेन डालता है। राव जतसी की सहायताथ नवकोट का राव राइमल इसी अश्व पर चढा ।।296।।

सोनइयउ सावुर वालि सार, असि तीह्उ उह्उ अस्सवार ।
प्रहसतइ वदनि पउरिस्सि पूर, वाहउ चडिय कळहणि करूर ।।297।।

सोनइया नामक अश्व को लोहे की मडो स तोला। यह अश्व जसा तेज स्वभाव का है वसा ही इसका सवार है। पूण पुरुषाथवाला एव युद्ध म शौय प्रदर्शित करने वाला वाहा हसते हुए इसी अश्व पर आरूढ हुआ ।।297।।

हालतइ वि जायण हुयइ हस, अइराक तेत असिराइ अस ।
माडेचउ झालिय करिम्माळ, चापलइ राम चन्यिउ सचाळ ।।298।।

चांपला नामक अश्व चलत ही दो योजन की गति (एक घडी म) पकड लेता है। इसका उत्पत्ति क्षेत्र इराक है तथा यह अश्वराज से उत्पन्न हुआ है। माडचा राम अपने हाथो मे तलवार पकड कर सावधानी के साथ इसी अश्व पर चढा ।।298।।

चाउँडपसाउ ताजी सचेउ, हड जास सेत वासइ हरेउ ।
आउधे वधारण विसन आघ, वाजिन चडिय वेवन्न वाघ ।।299।।

चाउडपसाव नामक अश्व हमशा सावधान रहन वाला है। इस अश्व की उत्पत्ति को पीछ स दखना चाहिए। विसन अपने शस्त्रास्त्रो का मान बढाने के लिए क्रोधित सिंह के समान झपट कर इसी अश्व पर चढा ।।299।।

घाटे सुघट्ट लिय मोलि लक्खि परतक्खि जास रेवन्त पक्खि ।
परवाळइ दे दूढइ पवग ऊठतउ अणो टाळइ न अग ।।300।।

परवाल नामक अश्व अच्छी बनावट का है। इस एक लाख रुपये मूल्य म लिया है। प्रत्यक्ष ही इसका पिता (पक्खि) सूय के रथ का अश्व रवत है। दूदा को यह अश्व दिया गया। यह उठते हुए कभी भी सेना के मध्य अपने शरीर को नहीं बचायेगा ।।300।।

माळरउ आपद त्रिणे नक्ख, सूरउ सतेज सुरिज्ज सवरख ।
पाखरि पताणि काळउ पहाड़, वरिजाग चडिय वइरा विभाड ।।301।।

काला पहाड नामक अश्व नारियल पर अपने तीनों सुमों को रख देता है। यह शूरवीर सतेज एवं सूर्य से उत्पन्न है। वरजांग ने इस अश्व पर कवच एवं काठी कसी और शत्रुओं को नष्ट करने हेतु इसी अश्व पर चढ़ा ।।301।।

चञ्चळ नाळेरउ गिरि चलत्थ, रूपक्क जास जगवस रत्थ ।
घातिसइ कुंआरी घडा घाउ, रिणि,घोघर चडियउ पिथमराउ ।।302।।

रण घोघर नामक अश्व नारियल पर चल सकता है। इसका स्वरूप (या नामा) सूर्य के अश्वों के समान है। कुंवारी (यवन) सेना पर प्रहार करने हेतु पिथमराव इसी अश्व पर चढ़ा ।।302।।

चापलउ तुरी साहणा चम, उपडी वाग कूदइ अलग ।
भुंजि गहिय कुंत मारत्थि माळ, पिडि चडण चईनउ राइपाळ ।।303।।

चोपल नामक अश्व सभी अश्वों में सुन्दर है। इसकी लगाम उठाते ही यह जोर जोर से कूदने लगता है। युद्ध की स्थिति देखकर, युद्ध में जाने के लिए हाथ में भाला लेकर राइपाल ने इसी अश्व को अपने लिए चुना ।।303।।

जन्या वहन्न सुत मात जास, तेवह न करि वेसास तास ।
चढ नतसीह लइ भूलचोट, कुळलाज अजइपुर जास कोट ।।304।।

भूलचोट अश्व की माँ वायु है। यह उसी का पुत्र है, अतः यह उसका (वायु का) भी विश्वास नहीं करता है अर्थात् वायु के मौके मात्र से बिफर जाता है। अपने कुल की लाज बचाने के लिए नतसीह इसी अश्व पर चढ़ा। उसके पीछे अजयपुर (अजमेर) का दुर्ग है ।।304।।

पाळाणि पवग्ग ताजी सुरन्न, निळ रत्थ प्रत्ति अति छोहि मन्न ।
सुरिजन्न पदमि चडियउ सिहाइ, घण मुक्खउ भेळण मुहर धाइ ।।305।।

पदमा घोड़ी के कान उल्लू पक्षी के समान हैं। वायु प्रवाह के प्रति इसके मन में क्षोभ रहता है। यवन सेना के अग्र भाग में भिड़ने हेतु घण मुक्खा सुरजन इसी घोड़ी को पकड़ कर आरूढ हुआ ।।305।।

चापळउ तुरी दीपक्क चक्ख, नाटारँभि नाचइ नृत नक्ख ।
खापरां खडग वाहण सखुद्द, रिणि किसन चडिय भंजण रउद्द ।।306।।

चापला नामक अश्व के नेत्र दीपक के समान हैं। नृत्य में जिस प्रकार नर्तक नाचता है उसी प्रकार यह अश्व भी नर्तन करता है। विधर्मियों पर खड्ग चलाने एवं यवनों को नष्ट करने हेतु किशन क्रोधित होकर युद्ध के लिए इस पर चढ़ा ।।306।।

वाजि-ा रात्त तामसो वग्ग, मन पवा सरीखउ जास मग्ग ।
अलखियउ लगउ हुअउ असवार, साम तहरउ ऊछजिय सार ।।307।।

अलखिया नामक अश्व सतोगुणी है, पर तु लगाम को छूते ही यह तमोगुणी बन जाता है। यह मन तथा पवन के समान मार्ग तय करता है। सावत का वशज लगा हाथो म तलवार को शोभित करते हुए इसी अश्व पर सवार हुआ ।।307।।

अगराण न हालइ उवरि अम्भ, बाहू असोस जिम तेवि अम्भ ।
जडलग्ग साहि गेतसी जगि, वइरो वराह चडियउ विडगि ।।308।।

अगराण नामक अश्व पर बठने क बाद पट का पानी तक नही हिलता है। इसके बाहु परिपुष्ट हैं मानो उन्ह ब्रह्मा ने निर्मित किया हो अथवा जस उसक बाहु परिपुष्ट है वसी ही उसकी होस भी जबरदस्त होती है। खेतसी अपन हाथो मे तलवार लेकर युद्ध म वर का प्रतिशोध लेने हेतु इसी अश्व पर चढा ।।308।।

साकळइ सोह अगलउ ऊर, पीड प्रचण्ड पट्टाइ पूर ।
करनी पसाइ वनियउ कडच्छि, आरुहिय अस्सि हुअउ अगच्छि ।।309।।

करणीपसाय नामक अश्व सांकल की शोभा था तथा चलान पर आग रहता था। उसक पीड मजबूत थ तथा पटाइ म पूरा समा जाता था। इसी अश्व पर वनिया त्वरा क साथ आरूढ हुआ तथा स्थिर हो गया ।।309।।

चाळियइ दूवि पल्लाण घधि, पक्खूतर लक्खी जिसइ खधि ।
साहण सिंगार चडियउ सुसाळ, पागडइ पाउ द राइपाळ ।।310।।

अश्वो क शृगार स्वरूप सुसाल नामक अश्व के दुमची लगा कर काठी कसी। इसके कधे लक्खी कबूतर के समान हैं। इसी अश्व के रकाबो म पर रखकर रायपाल चढा ।।310।।

थिरहरी खमइ बावउ न ठाणि, असिराइ अमोलिय आणि आणि ।
देवानउ जाघइ रेसि दक्खि, सूरत्ति दियइ ससार सक्खि ।।311।।

थिरहरी नामक अश्व ठाण (स्थान विशेष) पर बधे रहना सहन नहीं करता है। इस प्रकार के अमूल्य अश्व राजा को ला कर दिए जाते हैं। दीवाना योद्धा क समान दिखाई दे रहा है। इसकी वीरता की साक्षी पूरा ससार देता है ।।311।।

गुरडियउ दियइ गुण ओण ग्रीव, दळ नवम्व चिमेल्हि जु वेसि दीव ।
मांडणियउ चडियउ मोटमान, कुळि जास पितामह लूणकरन ।।312।।

गरुडिया नामक अश्व मूगो के गले मे रस्सी (डोरी) डलवा देता है। यह अपने पर इस प्रकार रमता है मानो नतकी रम रहा हो। जिसक वश म पितामह लूणकरण है, उदार हृदय वाला मांडण इसी अश्व पर चढा ।।312।।

लाडणियउ पाघ लँगूलि लाइ, नाचतइ भोमि वाजइ निहाइ ।
ग्रहि वाग नरइ गढियउ गरट्ठ, हउकारे हूवउ पूठि हट्ठ ॥313॥

लाडणिया नामक अश्व अपने पर लगूर की तरह रखता है। यह जब नृत्यरत होता है तब पौडों की ध्वनि से पृथ्वी ध्वनित होन लगती है। दृढ शरीर वाला गढिया हुकारे के साथ लगाम पकड कर इसी अश्व की पीठ पर सवार हुआ ॥313॥

वाजिन समचउ वगवत्त, आडो पटाढ कूदइ अनत्त ।
वणवीर चडिय न करइ विमाळ, तरवारी मेळण मेछ ताळ ॥314॥

समचा नामक अश्व अत्यन्त वेगवान है। यह आडी पटाढ (तिरछा) बहुत कूदता है। अपनी तलवार से यवनों म युद्ध म भिडने के लिए बिना देर किये इस अश्व पर वणवीर चढा ॥314॥

नवलखी असिस आगी निसाण, जिम ठवइ पाइ गतिपात जाण ।
माइचउ जाधउ जुद्ध मूळ, केवाणि चडिय व्रविलउ सूल ॥315॥

नवलखी नामक घोडी सभी अश्वों म श्रेष्ठ है। यह अपने पर इस प्रकार रखती है, मानो पातर हो। क्रूर वराह के समान लडाई की जड (अर्थात मूलत जिस पर इस युद्ध का दारोमदार है) माडेचा जोधा इसी अश्व पर चढा ॥315॥

वरहास नास चाचर विखेरि, फारवक जेम असि फिरइ फेरि ।
आसिरा तणउ उजळइ आसि, वेताळि केरह चडियउ वहासि ॥316॥

वताल नामक अश्व अपने नथुना (मुख प्रहार) से कपाल तोड देता है। यह अपना सवार जिस प्रकार चलाता है, उसी प्रकार चल लेता है। यह उज्ज्वल अश्वराज से उत्पन्न है। इसी अश्व पर वल्ह चढा ॥316॥

अचपळउ अउव उरळउ उरद्धि, जाणइ जु पइसि नीसरिम जुद्धि ।
रोटलइ अराउ चडियउ सधिद्ध, साहिय खडग आखाडसिद्ध ॥317॥

रोटला नामक अश्व बडा ही चपल है। इसका वक्षस्थल (छाती) काफी चौडा है। यह युद्ध म प्रविष्ट होने तथा निकलन की विधि जानता है। अखाड सिद्ध अगा रावपुण होकर अपने हाथ म तलवार धारण करके इसी अश्व पर चढा ॥317॥

बगुलिमउ समापइ मिरी वत्थ, केवाण सँजाणइ वल्ह रत्थ ।
समसेर साहि गाऊ सबोध जाळपउ चईनउ जगि जोध ॥318॥

बगुलिमा नामक अश्व यवनों (शत्रुओं) को झाला देने वाला है अथवा युद्ध करने वाला है। यह अश्व युद्ध की सभी बातें (चालें) जानता है। मानशाली योद्धा तथा स्वभाव ॥ भले जालपा ने युद्धार्थ इसी अश्व को निर्वाचित किया ॥318॥

चौग्राग दमूडी छाहि चक्कि, फरहरइ ऊपरि फिरियउ फरक्कि ।
वाघुलउ वाघ वाणी वखाणि, वाजि न चडिय चडिसइ विमाणि ।।319।।

चिग्रांग (अश्वी) दमूडी ओघ स परिपूर्ण (छकी) है । यह एसे चलती है मानो ध्वजा लहरा रही हो अथवा चकरी घूम रही हो । वाघुला की स्वय भगवती ने सराहना की है । यह अश्वारूढ होकर आज विमानारूढ होगा ।।319।।

कान्हवउ जेम कूदइ कुरग, झांपतउ न टाळइ भीति भग ।
नेतसी खग्ग आग्रज्जि नहि, वाजिनि चईनउ चडिय वहि ।।320।।

कान्हवा नामक अश्व मृग के समान कूदता है । यह युद्ध म प्रवेश करते समय भय स अपने शरीर को नही बचाता है अर्थात् अचल रहता है । नेतसी न अपनी खड्ग बरावर बाधी तथा इसी अश्व को निर्वाचित करके युद्धार्थ चढा ।।320।।

वाजि न समचउ रत्थ वाइ, पायाळ द्रिमइ जइ थम्प पाइ ।
झूझार चडिय झूझारझल्ल, मूगलां मळेवा भारमल्ल ।।321।।

समचा नामक अश्व वायु प्रवाह क समान चलता है । इसके पद प्रहार से पाताल ध्वनित हो जाता है । योद्धा शिरोमणि झूझार भारमल मुगलो का मदन करने हेतु इसी अश्व पर चढा ।।321।।

वाखाणि सलामी वग वारि, दीवाण राज सोहइ दुवारि ।
जगमाल चडिय जसहड जुवाण, पतिसाह परिक्खण पउरि प्राण ।।322।।

सलामी नामक अश्व की शोभा उसके जल प्रवाह के समान चलने म होती है । यह राजा महाराजाओं के दीवान (दीवान खाना) के द्वार पर सुशोभित होता है । बादशाह का पौरुष एव शक्ति को परखने के लिए युवा अजोड जगमाल इसी अश्व पर चढा ।।322।।

धूजइ गुलाल पाजे धरत्ति, ग्रहि कोल पाउ जिम पात्र गत्ति ।
सुरिताणी सुणि वाजा सवद्द, नेतसी वधारण चडिय नद्द ।।323।।

गुलाल नामक अश्व के परो से पृथ्वी कम्पायमान हा जाती है । इसके पर वराह के समान तथा गति (चाल) पातर के समान है । बादशाही वाद्यों की ध्वनि सुनकर नेतसी अपने सुयश म वृद्धि करने हेतु इसी अश्व पर चढा ।।323।।

वाजि न जम पइ ठवइ वस, दापमां अस्सि आपमा देस ।
माणिक्क लियउ भीदडइ मागि, वयरियां सिरे वाहण वजागि ।।324।।

माणिक नामक अश्व अपने पर वरधा (नर्तकी) के समान रखता है । इस अश्व को समुद्र की उपमा से उपमित किया जा सकता है । अपने शत्रुओ पर खड्ग चलाने हेतु भीदडा ने इस अश्व को माग कर लिया ।।324।।

मावडा फाळ जाणइ जु मण्डि, पइंगइ करइ उर भीति खण्डि ।
रणवीर वयूतर लिय रहस्सि, तरवारि ताल मेळण तरस्सि ॥325॥

वयूतर नामक अश्व बन्दरों के समान चौकड़ी भरता है। यह अश्व अपने वक्ष (छाती) से भीत को ढहा देता है। रणवीर ने मन्त्रणा करने के बाद इस अश्व को लिया। यह शीघ्रता के साथ युद्ध क्षेत्र में तलवार से भिड़ेगा ॥325॥

ढेलियउ करावइ घाउ ढल्ल, चउरङ्गि चालि जाणइ सुचल्ल ।
यार्जिनि ,चडिय वाहण वियास, दाणवा दळेवा साइदास ॥326॥

ढलिया नामक अश्व तलवार से किये जाने वाले प्रहारों को ढाल पर ले लेता है। यह युद्ध की सभी चालों का चलना जानता है। यवनों को विचूर्णित करने हेतु ख्यात साँईदास इस अश्व पर आरूढ़ हुआ ॥326॥

हृटइ समाह असिराइ अस, हसमइ हस मह जिसउ हस ।
अधपत्ति चाह पाखर अगाहि, सवतियउ चडिय भुजि राग साहि ॥327॥

हृटह नामक अश्व अश्वराज के अंग के समान है। सेना में यह अश्व हंस के समान दिखाई देता है। राव अखसी की सहायतार्थ पाखर डालकर तथा अपने हाथों में खड्ग धारण करके सबता इसी अश्व पर चढ़ा ॥327॥

पम्प नीरि परये (?) पवङ्ग, अगिगइ साख असहाम अङ्ग ।
हीरइ सतेज कहह हठाळ, रणगहिलउ चडिय राइपाळ ॥328॥

हीरा नामक अश्व तेजवान तथा शूरवीर है। यह अश्वराज से उत्पन्न था, अतः शरीर से चपल है। युद्धोन्मत्त (रणगहिला) रायपाल इसी अश्व पर चढ़ा ॥328॥

पइ छाह जम ऊडइ कि पङ्खि, आवइइ मिरी विचि फोर अङ्खि ।
जगजेठि चटिय सूणउ जवार, पाखर अडाल चाहा पगार ॥329॥

जवार नामक अश्व के पैरों की शोभा ऐसी है मानो पक्षी उड़ रहा है। यह यवनों के मध्य जाकर अपनी आँखें बदलता हुआ, उन्हें पकड़ लेता है। कवचधारी, शत्रुओं का काट एवं सर्वश्रेष्ठ राजा सूणा इसी अश्व पर चढ़ा ॥329॥

चॅवरढाळि सोहइ सिरि चलत्थ, हाथिअे जु घामइ जुद्धि हत्थ ।
मुगनाँ मळेवा जुद्धि माण, चडिय तिणि नरवद चाहुआण ॥330॥

चॅवरढाल नामक अश्व चलने पर शोभा प्राप्त करता है अथवा चलते हुए सुशोभित होता है। यह युद्ध में हाथियों से भिड़ जाता है। युद्ध में यवनों का मानमर्दन करने हेतु नरवद चौहान इसी अश्व पर चढ़ा ॥330॥

पउतर छटान जिम भमइ वप्पि, विसवट्ट जम रुहड जु वप्पि ।
ऊधरण सपूरण सामि वत्थ, हथियार चडिय ले सेन हत्थ ॥331॥

कउतर नामक अश्व इतना फुर्तीला है मानो बन्दर चल रहा हो। यह शरीर से अग्नि के समान ऊष्ण मिजाज का है। अपने स्वामी के समय धन का (प्राण का) उद्धार करने हेतु अपने हाथ में भाला लेकर हथियार इसी अश्व पर चढ़ा ॥331॥

हरिणागळ आगळ हरिण हल्लि, वेणी रयज्ज वख्यात वल्लि।
सेलहथ मेघ चडियउ सिहाइ, मोगर मुगुल्ल भेळिसी माहि ॥332॥

हरिणागल नामक अश्व चलने में हरिणो से आगे रहता है। इस की वेणी सुन्दर है और यह बल में प्रसिद्ध है। भाला हाथ में लेकर मेघ राव जतसी की सहायता के लिए इसी अश्व पर जाकर चढ़ा। यह यवनों की सेना में जाकर भिड़ेगा ॥332॥

चर सुरति निसाचर सपतचार, परिरूढ चयनर मसिपहार।
आरहिय असिस वनियउ अनूप, रणतालि रयक्खण देस रूप ॥333॥

मसिपहार नामक अश्व की मनोवांछा सूर्य के समान राक्षसो (यवनो) का चरन ही की है अर्थात् नष्ट करने की है। यह बन्दर के समान है। युद्ध क्षेत्र में अपने प्रदेश के स्वरूप की रक्षा करने के लिए निष्कलंक वनिया इसी अश्व पर आरूढ हुआ ॥333॥

साहणहिंदीयउ तेज सार, चळियाइ जु चीत्रह गह्वण बार।
गोगादे चडियउ करि गरज्ज, लाखाहरि राखण सोहि लज्ज ॥334॥

साहणहिंदीय नामक अश्व तीव्रता में अग्नि के समान (ताता) है। यह दौड़ने में चीते के समान गिना जाता है। लाखा का वंशज गोगादे गरजता हुआ अपने राठौड़ो की लाज रखने हेतु इसी अश्व पर चढ़ा ॥334॥

साभाउ असि साहण सार, किलिछार भरइ जिम कालियार।
तरवारि झालि ऊगउ तरस्सि, ईदउ अभङ्ग आरहिय अस्सि ॥335॥

साभाउ नामक अश्व सभी अश्वो में श्रेष्ठ है। यह कालियार के समान चौकड़ी भरता है। ईंदा ऊगा अपने हाथ में तलवार पकड़कर इसी अश्व पर त्वरा (शीघ्रता) के साथ आरूढ हुआ ॥335॥

झूठियउ दियइ जिम वाज झट्ट, थरहरइ माहि पइसइन थट्ट।
इदउ अभङ्ग नरसिङ्घ अगि, तरसाइ चडिय तीहइ तुरंगि ॥336॥

झूठिया नामक अश्व बाजपक्षी के समान झपटता है। यह थरहराता हुआ सेना का स्पर्श तक नहीं करता है। अपराजेय वीर इदा नरसिंह युद्धार्थ इसी अश्व पर शीघ्रता के साथ चढ़ा ॥336॥

मुगुटियउ न हालइ थटट माहि, सेलियउ सि[illegible] साहि।
मांडणियउ चडियउ मीरमार, कानिलो [illegible] धार ॥337

मुगुटिया नामक अश्व सेना के मध्य नहीं चलता है। यह भूरे रग वाला घोडा लगाम पकडने पर पागल की तरह बन जाता है। यवनों को मारने वाला माडण इसी अश्व पर च ा। यह यवनो की सेना से भिडेगा ॥337॥

पाट सूत्र पदनउ पंहि पगहि, छाया नट्ट घोजइ छिलइ ठेहि ।
तरवारि यालि हरिराज तन, केवाण पूठि चडियउ करन ॥338॥

पाटसूत्र नामक अश्व परो से बडा ही तीव्रगामी है। यह अपनी छाया पर भी विश्वास नहीं करता है तथा उससे किनारे हो जाता है। हरिराज का पुत्र कर्ण तलवार पकड कर इसी अश्व की पीठ पर सवार हुआ ॥338॥

भ्रिग्घान वखण ग्मिधुलउ समीर, गळि जन्त्र ज त घातण गहीर ।
डूगरउ चडिय राहड दुभल्ल ग्राह्मउ अयार परयट्ट पल्ल ॥339॥

घियला नामक अश्व मगो का एव वायु को पकड लेता है। यह मगो के गले म धनुप की प्रत्यञ्चा डलवान में भी समर्थ है। अपराजेय वीर राहड डूगरा इसी अश्व पर चला। यह शत्रुओ के लिए चतुर तथा पराई सेना को रोकने वाला है ॥339॥

साळेवउ असि सोझउ सयल, वाधडा जु कूदइ जेम वक्क ।
सासदूत सुहड राहड सकार, रूपियउ चडिय रिणजङ्ग वार ॥340॥

साळेवा नामक अश्व को सभी लोग विशुद्ध कहते हैं। यह बन्दरो के समान कूदता है। सुभट राहड रूपा युद्ध क समय लडने हेतु इसी अश्व को स्वीकार करके चला ॥340॥

सूरिजपमाउ साचउ सुमन, जाणे कि रत्थ दाहू राजन ।
जइत छळि वरेवा राम जग, पडिहार चडिय पूठो पवग ॥341॥

सूरजपराव नामक अश्व विशुद्ध एव अच्छे मन वाला है। चलने मे ऐसा है माना वायु का प्रवाह हो। राव जइतभी के लिए युद्ध का वरण करने हेतु पडिहार राम इसी अश्व की पीठ पर चला ॥341॥

कविलियउ तुरी ताजी किलम्म, सारीरा सम्व जाणइ सरम्म ।
थिर निलहिय माडण सबइ थट्ट, पडिहार चडिय कोट प्रगट्ट ॥342॥

कविलिया नामक अश्व ताजिकस्तान की उत्पत्ति है। यह वाद्यों की सम पर नृत्य करना जानता है। कोटे का सुप्रसिद्ध पडिहार माँडण सभी अश्व सेना को साथ लेकर इसी अश्व पर चला ॥342॥

विलहिया तुरी सह राजवस, हूरमर्दां भर्दा हुई हमस ।
जइ जिसउ तुरी तइ दीठ जाणि, पाट रउ पवँग पण्डव पलाणि ॥343॥

सभी राज-वंशियों ने अश्व प्राप्त कर लिये। अश्वों और सुभटों की सम्मिलित

ध्वनि हुई। जो जगा था, उसे आकर घूमकर वैसा ही अश्व दिया गया। अब पाटक अश्व को सर्दन कराकर लायेंगे ॥343॥

॥ गाहा ॥

इल आरत्ति जर राकति आणउ, पठहोडउ पण्डवा पलाणउ ।
मोरवळा ग्रिगसाखा मन्ने, कूक्कड कंध काकअरि कन्न ॥344॥

पृथ्वी पर दुःख आ पड़ा है अतएव धन और अश्व लाओ। अश्व को अश्वरक्षक कसें। वह मयूर के समान कलाव (छत्र) करने वाला, बन्दर के समान मन वाला कुक्कुट के समान कंधो वाला तथा उल्लू के समान कानो वाला हो ॥344॥

॥ छन्द पाधडी ॥

कूकडा कंध तालम्म कन्न, रेवन्त जाति दीवा रतन ।
पाणेण पियइ जळ पोव पत्थ, सोहइ सरूप धुरि वाळि सत्थ ॥345॥

जो अश्व कुक्कुट के समान कंधो वाला बिल्ली के समान कानो वाला हो तथा जिसकी आंखो की ज्योति दीपक के समान और जो एक हाथ की चुल्लु से पानी पीए एवं वायु के समान चले इस प्रकार का रूपवान अश्व लोहे की कड़ी से बंधा हुआ सुशोभित होता है ॥345॥

पडछी सतुच्छ पीडे प्रचण्ड, खण्डरइ जु आंठू भीति खण्ड ।
पूछी तउच्छ सत्थोर पग्ग, वाजि न विछोडइ मिरी वग्ग ॥346॥

जिस अश्व की पडछी छोटी हो, पीडे (जांघें) जबरदस्त मजबूत हो जो अपने आंठू से भीत को गिरा दे जिसकी पूछी छोटी हो तथा पैर फुर्तीले हो इस प्रकार का अश्व यवन सेना को पीछे छोड देगा ॥346॥

पाण्डव आइ केकाण पासि, वाई धरत्ति पाअ उहासि ।
जागळराइ सम्पत्ति जोर, कूदइ कळार कीयइ किसोर ॥347॥

अश्व रक्षक पाटक अश्व के समीप गए तो उसने अपने पैरों से पृथ्वी को बजाया। राव जैतसी ने इस अश्व की शक्ति को देखा। यह मयूर के समान कलाप किए हुए कूद फांद करता था ॥347॥

सीडारि नास मुहि काढि घास, असि कीध कंध ओरी अयास ।
ऊपरि लँगूळ फरियउ अङ्ग, पण्डवा हाथि नावइ पतङ्ग ॥348॥

इस अश्व के नथुने साफ करके मुंह से घास निकाला। तब इस अश्व ने अपने कंधे आकाश की ओर ऊंचे किये। तत्पश्चात् अपने शरीर पर पूंछ घुमाई। यह अश्व सईसो के वश में नही आ रहा था ॥348॥

रेवन्त भणइ राठउड राउ, असवार हुइस तउ आप आइ ।
राइ जइति आइ गारुडियरत्थ, सुरिज्जवस साँमळि समत्थ ॥349॥

अश्व कहने लगा—राठौड राव, आप मेरे पर सवार होंगे तो आप स्वयं आइए। राव जतसी गारुडिय रतथ (पाट का अश्व) के पास आकर बोले—हे समर्थ सूर्यवंशीय मेरी बात सुनो ।।349।।

वसि तू सूर वसि मू वीक, नेजे सँबूह घातउं निझीक ।
वग्नविय राइ हाकलि ग्रहास, नेठहिय तुरी निरेडी नास ।।350।।

राव जतसी ने कहा—हे अश्व ! तू सूर्य वंशी है और मैं राव बीका का वंशज। मैं अपने समीप ही भाले से प्रहार करूंगा। राव ने अश्वो के गुणों का वर्णन करते हुए उसे हकाला। तब अश्व ने अपने नासा सपुट को फुलाकर राव की बात को निश्चयपूर्वक स्वीकार किया ।।350।।

वेससिय तुरी माभळी वत्त, सारगर पञ्च झूविय सपत्त ।
मुहरउ उतारि ताजी मुहाह, पडव'य परा मीया पगाह ।।351।।

राव की बातें सुनकर अश्व आश्वस्त हो गया। पाँच अश्व रक्षक उसके इर्द गिर्द झूमे। उस अश्व के मुह से मुहरा उतारा तथा पैरो के पडव घ खोल दिये गये ।।351।।

लागीर मुखिय दी'हउ लगाण, पडछि विछाइ माडिय पलाण ।
तणियउ तग उरि ताण ताणि, सीरम्म गाठि दी'ही सपाणि ।।352।।

उक्त यशस्वी अश्व के मुह म लगाम दी पीठ पर पन्छी बिछा कर काठी कसी, तत्पश्चात् पेट पर तङ्ग खूब तान कर बाधा और मजबूत सीरम्म गाठ दी ।।352।।

उरि फेरि सजापित आगिव ध, सारगरि गाठि दी'ही सव ध ।
चञ्चळ सतेज मुहि चउँर धाडि, मूगला छडावण मारुआडि ।।353।।

अश्व की सजावट के लिए उसके वक्ष पर आगियध बाधा तथा अश्व रक्षकों ने उसको मजबूत गाँठ देकर बाध दिया। मुगलो से मारवाड़ को मुक्त करवाने के लिए उक्त अश्व के सिर पर चँवर लगाया ।।353।।

पाखेडा सोहइ त्रिहुँ पासि, वाखरे चडी वानी ग्रहासि ।
खड़ैंगरु ढळी चहुँ पाखि खोळ, रणवासर घुघुर रूगिय रोळ ।।354।।

उक्त अश्व के तीनो ओर रकाबें सुशोभित हो रही थी। सजावट से उसकी शोभा बढ गई। तत्पश्चात् अश्व के ऊपर चारो ओर खोल डाल दी। युद्धोपयोगी सामग्री एव घुघरुओ की ध्वनि होने लगी ।।354।।

सण्ठविय गळइ गजगाह सिक्ख, वागुलि कि टालि विलम्बी व्रिक्ख ।
ढाल कजि कियउ धडधडउ ढोइ, जगतोइ रहइ कउतिग जोइ ।।355।।

उक्त अश्व के गले में गजगाह बाधो। वह ऐसी प्रतीत हो रही थी मानो वृक्ष की टहनी पर बागुल (चमगादड) लटक रही हो। चलने को उद्यत अश्व ने धूनी खाई। समीप ही खड़े हुए लोग इस अश्व का चमत्कार देख रहे थे ।।355।।

ध्वनि हुई। जो जरा था, उसे जान बूझकर वरा ही अश्व दिया गया। अब पाट के अश्व को सईस कसकर लायेंगे ॥343॥

॥ गाहा ॥

इल आरत्ति जर साकति आणउ, पठहोडउ पण्डवा पलाणउ ।
मोरक्ळा म्रिगसासा मजे, बूकड कध काकअरि कन्न ॥344॥

पृथ्वी पर दुःख आ पड़ा है अतएव धन और अश्व लाओ। अश्व को अश्वरक्षक कसें। वह मयूर के समान कलाप (छत्र) करने वाला बन्दर के समान मन वाला कुक्कुट के समान कंधों वाला तथा उल्लू के समान कानों वाला हो ॥344॥

॥ छन्द पाधड़ी ॥

बूकडा कन्ध मालम्म कन्न, रेवन्त जोति दीवा रतन्न ।
पाणेण पियइ जळ पोव पन्थ, सोहइ सरूप धुरि वाळि सन्थ ॥345॥

जो अश्व कुक्कुट के समान कंधों वाला, बिल्ली के समान कानों वाला हो तथा जिसकी आंखों की ज्योति दीपक के समान और जो एक हाथ की चुल्लु से पानी पी ले एवं वायु के समान चले इस प्रकार का रूपवान अश्व लोहे की कड़ी से बंधा हुआ सुशोभित होता है ॥345॥

पडछी सतुच्छ पीडे प्रचण्ड, खण्डरइ जु आठू भीति खण्ड ।
पूछी तउच्छ सत्थार पग्ग, वाजि न विछोडइ मिरी वग्ग ॥346॥

जिस अश्व की पड़छी छोटी हो, पीड़ (जांघें) जबरदस्त मजबूत हो जो अपने आठू से भीत को गिरा दे जिसकी पूंछी छोटी हो तथा पैर फुर्तीले हों, इस प्रकार का अश्व यवन सेना को पीछे छोड़ देगा ॥346॥

पाण्डवे आइ मेल्हाण पासि, वाई धरत्ति पाअे प्रहासि ।
जांगळूराइ सम्पेखि जोर, बूदइ कळाइ कीयइ किसोर ॥347॥

अश्व रक्षक पाटवे अश्व के समीप गए तो उसने अपने पैरों से पृथ्वी को बजाया। राव जैतसी ने इस अश्व की शक्ति को देखा। यह मयूर के समान कलाप किये हुए कूद फांद करता था ॥347॥

सीडारि नास मुहि काढि घास, असि कीध कन्ध ओरी अयास ।
ऊपरि लँगूळ फरियउ अङ्ग, पण्डवाँ हाथि नावइ पवङ्ग ॥348॥

इस अश्व ने नथुने साफ करके मुंह से घास निकाला। तब इस अश्व ने अपने कंधे आकाश की ओर ऊंचे किये। तत्पश्चात् अपने शरीर पर पूछ घुमाई। यह अश्व सईसों के वश में नहीं आ रहा था ॥348॥

रेवन्त भणइ राठउड राउ, असवार हुइस तउ आप आउ ।
राइ जइति आइ गारुडियरत्थ, सूरिज्जवस सामळि समत्थ ॥349॥

अश्व कहने लगा—राठौड राव, आप मेरे पर सवार होंगे तो आप स्वयं आइए। राव जतसी गारुडिय रत्थ (पाट का अश्व) के पास आकर बोले—हे समर्थ सूर्यवंशीय मेरी बात सुनो ॥349॥

वसि तू सूर वंसि मू वीक, नेजे सँबूह घातउँ निझीक ।
वरननिय राइ हार्यलि व्रहास, नेठहिय तुरी निनेडी नास ॥350॥

राव जतसी ने कहा—हे अश्व ! तू सूर्य वंशी है और मैं राव बीका का वंशज। मैं अपने समीप ही भाले से प्रहार करूंगा। राव ने अश्वों के गुणों का वर्णन करते हुए उसे हराया। तब अश्व ने अपने नासा सपुट को फुलाकर राव की बात को निश्चयपूर्वक स्वीकार किया ॥350॥

वसंसिय तुरी माभळी वत्त, सारगर पञ्च झूंत्रिय सपत्त ।
मुहरउ उतारि ताजी मुहाह, पइवंध परा कीया पगाह ॥351॥

राव की बातें सुनकर अश्व आश्वस्त हो गया। पांच अश्व रक्षक उसके इर्द गिर्द घूमे। उस अश्व के मुंह से मुहरा उतारा तथा पैरों के पञ्च ब खोल दिए गये ॥351॥

नामीक मुखिस दीहउ लगाण, पट्टछि विछाउ माडिय पलाण ।
तणियउ तग उरि ताण तणि, सीरम्म गाठि दीन्ही सपाणि ॥352॥

उस यशस्वी अश्व के मुंह में लगाम दी पीठ पर पछी बिछा कर काठी कसी, तत्पश्चात् उस पर तङ्ग मन मन कर बाधा और मजबूत सीरम्म गाठ दी ॥352॥

उरि फेरि सजोपित आगिग्रध, सारगरि गोंठि दीन्ही मग्रध ।
चञ्चळ सतेज मुहि चउँर चाडि, मूगला छुडावण मारुआडि ॥353॥

अश्व की सजावट के लिए उसके वक्ष पर आगिबन्ध बाधा तथा अश्व रक्षकों ने उसको मजबूत गाँठ देकर बाध दिया। मुगलों से मारवाड को मुक्त करवाने के लिए उस अश्व के सिर पर चवर लगाया ॥353॥

पाखेडा सोहइ निहूँ पासि, वासरे चडी वानी व्रहासि ।
घटँगर टळी चहुँ पासि खोळ, रणवागर घुघुर रूगिय राळ ॥354॥

उस अश्व के दाना और रकाबें सुशोभित हो रही थी। सजावट से उसकी शोभा बढ गई। तत्पश्चात् अश्व के ऊपर चारों ओर गाल डाल दी। युद्धोपयोगी सामग्री एव घुघुरओं की ध्वनि होने लगी ॥354॥

सण्ठविय गळा गजगाह सिंगर, वागुळि नि डालि विलम्बी त्रिगर ।
टाल यजि वियउ धडधडउ नाद, जगताइ रहइ वउतिग जोद ॥355॥

उस अश्व के गले में गजगाह बाधी। वह ऐसी प्रतीत हो रही थी मानो वृक्ष की टहनी पर वागुल (चमगादड) लटक रही हो। चलने को उद्यत अश्व ने धूनी मारी। समीप ही खड़े हुए लोग इस अश्व का चमत्कार देख रहे थे ॥355॥

परठियउ प्राण पागउइ पाउ रेवंति चडिय जइतसी राउ ।
घउँडाहर चडियउ चक्रवत्ति, परमेसर जाणे पङ्खपत्ति ॥356॥

राव जतसी अपनी शक्ति के साथ रेवंत पर चढ़ा। उस अश्व पर चढ़ा। चक्रवर्ती राव चूंडा का वंशज इस अश्व पर चढ़ा हुआ ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो भगवान विष्णु गरुड़ पर चढ़ हों ॥356॥

छत्तीस डाबि अरि चडिय छोहि, लूणकरा समोभ्रम विटण तोहि ।
रेवंति चडिय चम्पवि रग्ग, वीकहर राइ वधि वोमि लग्ग ॥357॥

राव लूणकरण का पुत्र शत्रुओं से लड़ने के लिए शराप इस अश्व को दबाकर चढ़ा। राव बीका के वंशज राव जतसी ने अश्व पर चढ़कर रान दबाई। उस समय वह बढ़कर आकाश तक जा लगा ॥357॥

ऊपाडि वग्ग लङ्खावि असि पाटपति जेम सूरिज प्रहम्सि ।
केकाण कुदाविय जेम कप्पि, थोर हथ राइ हइ कंधि थप्पि ॥358॥

सिंहासनाधीश राव जतसी ने अश्व की लगाम उठाई और उसे आगे बढ़ाया। वे ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानो सूर्य का स्पर्श करेंगे। उन्होंने उस अश्व को बन्दर के समान कुदाया तथा अपने पुष्ट हाथों से उसके कंधे थपथपाये ॥358॥

उदइगिरि जेम आदीत ओपि, भूभनी साभि आरुहिय रोपि ।
गईंवरा मीर उतरइ गाउ, राठउड रूठ जइतसी राउ ॥359॥

उदयगिरि पर जैसे आदित्य की शोभा होती है उसी प्रकार यह पृथ्वीपति राव जतसी सुशोभित होते हुए सरोष इसी अश्व पर आरूढ़ हुए। राठौड़ राव जतसी यवनों और उनके हाथियों पर रूठ गया है अतः उनका गर्व खंडित होगा ॥359॥

तुरका तणिहार सिरि पाण तप्प, पह जइत गरुड देसी झड़प्प ।
मइगळ मुगुरल जइतसी मेह, सारे सँग्रामि भाजइ साह ॥360॥

तक्षक रूपी यवनों पर अपने हाथों से उत्ताप से राव जतसी रूपी गरुड़ झपट्टा मारेगा। यवन बादशाह कामरां हाथी स्वरूप है उस को राव जतसी रूपी सिंह युद्ध में तलवार से शनै शनै मार गिरायगा ॥360॥

रामण मुगुल्ल राउ जइत राम, सङ्कर दल्ल हुरमी संग्राम ।
असपत्ति उअह जइतउ अगस्थि सोखसी सत्र करिमाळ सात्थि ॥361॥

मुगल बादशाह कामरां रावण है और राव जतसी राम। युद्ध होने पर यवनों का नाश होगा। बादशाह कामरां समुद्र है तो राव जतसी अगस्त। वह अपनी तलवार से शत्रु समूह को सोख लेगा अर्थात् नष्ट कर देगा ॥361॥

चडिया कटवक चावक्क चाळ, वडिसी जइत न करइ विमाळ ।
असराळा ताजी उमगेहि, पनगां नेस धूजइ पगहि ॥362॥

नगारो की चोट पर सेना चढी । राव जतसी अब लडने मे देर नही करेगा । अनेक अश्वों के माग म चलने पर (अथवा उमगित होने पर) उनके पैरो से शेषनाग का स्थान कम्पायमान होने लगा ।।362।।

नीसाण वाजि नरगा नफेरि, रउद्रगति डउँडि भरहरी भेरि ।
मरुआदि सेन हालिया मसत्त, साइयर जाणि फाटा सपत्त ।।363।।

नगाड निसान एव नफीरी बजने लगे । डूडी बडी तीव्र गति से बज रही थी तथा भेरी भी भरभराने लगी । सभी मरुप्रदेशीय सेना चली मानो सातो समुद्र एक साथ फट गये हों ।।363।।

नळ वाजिय तुरिया वाजि नास, वाजिय पयाळ पाभे प्रहास ।
जइतसी राउ जगमा जोळ, कापियउ सेस कूरम्म कोळ ।।364।।

नड बजने लगे तथा अश्वों के नथुने भी । अश्वो के पदतल प्रहार से पाताल बजने लगा । राव जतसी के अश्व समूह (अश्व सेना) से शेषनाग, कच्छप एव वराह कापने लगे ।।364।।

जडलग फरी खडखडइ जोड, पटहोडा वाजिय पूरि पोड ।
ऊकंधि असुर रइ सेन आइ, सिलाहादार जइतइ सदाइ ।।365।।

कटारियाँ फरियाँ और कवचों की सधियाँ परस्पर रगड खाकर बजने लगी । अश्वो म पीठ का आघात ध्वनित होने लगा । यवनो की सेना चढकर आ गई है । इसी अवसर पर राव जतसी के शस्त्रागाराध्यक्ष आये ।।365।।

रामाळ पूठि छोडिय मँठाळ, सिलाहादार दइ जीणसाळ ।
मारीगा दरपण सवखरांह, पटहोडे घातिय पक्खराह ।।366।।

सिंह स्वरूपी सवारों ने अश्वो की पीठ छोडी । शस्त्रागाराध्यक्षो ने उन अश्वो को कवच पहनाये । वे अश्व दर्पण के समान चमक रहे थे । तत्पश्चात् उन्हे पाखर पहनाये ।।366।।

वगतरां टईयल जावद्ध, सूरा सनाह पहिरद्द सनद्ध ।
विढिया मर हूआ अउर अनि कथा किरि पहिरी मुद्राकंनि ।।367।।

कवच दस्ताने एव जानुत्राण बांध कर सभी वीर कवचित होकर तैयार हुए । युद्ध म लडने के लिए वे वीर और ही (दूसरे ही) बन कर हो गए थे मानो नाथो ने अपने शरीर पर कथा (गगए रग का चोगा) पहन रखी हो ।।367।।

एकही जग्ग सउ अंगि छाइ, रापियउ टोप सिरि जइत राइ ।
गाद जडति पर्नरि रमाउळीय, सज सद कंरि हायल सझकीय ।।368।।

■ वदिकामा कवच म अपने शरीर को आच्छादित करके राव जतसी ने

अपने सिर पर टोप धारण किया, रक्षावली (जापो का कवच) पहनी तथा दस्ताने पहन कर अपने आपको सुसज्जित कर लिया ।।368।।

ताजी तुरग ताणेय तग, जीपिवा जग आर्हि अभग ।
धधहर राउ उरि करिय धूस, मचंकियउ लेय वाळउ मजस ।।369।।

राव जतसी ने अपने ताजिकस्तानी अश्व का तग खींचा और युद्ध को विजय करने हेतु यह अपराजेय वीर उस पर आरूढ हुआ। राव धूधा के वशज राव जतसी ने अपनी सेना को आगे किया और यह कालिय नाग तलवार लेकर युद्धार्थ तत्पर हुआ ।।369।।

धूधहर धार सज करिय सार, मूगलाँ मार हिलिया हजार ।
हुरमार हीस हइँवर हुलाउ, रउद्रा सिरि आयउ जइत राउ ।।370।।

राव धूधा का वशज तलवार लेकर सुसज्जित हुआ। मुगलों को मारने के लिए हजारों सैनिक सम्मिलित हुए। अश्वों की हीस एव कोलाहल होने लगा। यवनों पर राव जतसी टूट कर आया ।।370।।

।। गाहा ।।

पनर समत अेकाणव पक्खरि, पुणि मागसिरि प्रथम पखि पूवरि ।
हठमल हइवइ सउँ हथियारे, विढियउ जइत चउथि सिनियारे ।।371।।

सवत पन्द्रह सौ इक्कानवे के मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष में नर श्रेष्ठ अद्वितीय वीर राव जतसी सुसज्जित होकर बादशाह के साथ शस्त्रास्त्रों से भिड़ा। उस दिन चतुर्थी तिथि एव शनिवार था ।।371।।

।। छन्द पाधडी ।।

वळिवन्ति जइति वावाडि वालि, ढोइया थाट वाजतइ ढालि ।
आरम्भ राम जइतसी अत्ति, आवियउ मीर सिरि आधरत्ति ।।372।।

शक्तिशाली राव जतसी प्रतिज्ञाबद्ध होकर ढोल को बजाते हुए अपनी सेना लेकर पहुँचा। राव जतसी ने राजाराम की तरह बहुत अच्छी तैयारी कर रखी थी। वह आधी रात के समय यवनों पर आ पहुँचा ।।372।।

धूधाहर सामी सेन ढोर, हइवइ रुळि हुई होद होइ ।
मुहम्मद नाम जम्पिय मुहाह, तेग गहि ऊठिया मीर ताह ।।373।।

धूधा के वशज राव जतसी ने अपनी सेना को यवनों के सम्मुख चलाया। यह देखकर बादशाह कामरा की सेना में हाय हाय होने लगी। यवन तब अपने मुह से मुहम्मद का नाम ले रहे थे। वे तलवारें लेकर उठे ।।373।।

ताणिय कमाण कनाढ तूग, बाणाउळि ऊडिय लोहि बूग ।
जइ राम जँपिय हिन्दू जणेहि, धातिया ताम घोडा घणेहि ॥374॥

हिन्दू सैनिकों ने अपने मुख से राम की जय कहा तथा कमान को कानों तक खींचा। बाणों से रक्त की धारा छूटी। उसी समय अन्य भी बहुत से अश्व यवनसेना पर छाए ॥374॥

राठउहि रोळि रेवन्त रग्ध, विच्छूट जाणि सङ्कळी वग्ध ।
पतिसाह सेन हुअतइ पगेहि, मायइ असि चाडिय मारुअेहि ॥375॥

राठौड़ों के अश्वों की ध्वनि सुनाई देने लगी। वे ऐसे प्रवेश कर रहे थे मानो साँकल से बँधे बाघ छूट कर आ रहे हों। बादशाह की सेना के खड़े होते ही उन पर राठौड़ों के घोड़े आ चढ़े ॥375॥

वरकोइय तेजी नाळि विज्ज, भाइअे किया भेळा भडिज्ज ।
सागुलइ राग वागा सँमोहि, लाखियउ तुरी सामहइ लोहि ॥376॥

राठौड़ भाइयों ने अपने अश्व यवनों पर डाल दिये। उन अश्वों की नालों से बिजली के समान स्फुलिङ्ग प्रकट हो रहे थे। सांगा ने रास और वाग को सम्हाल कर अपने अश्व को शस्त्रों के सम्मुख चला दिया ॥376॥

सग्रामि धीरि सामहइ सारि, मेरिहयउ तुरी मोगर मझारि ।
जइतसी राइ मच्चावि जंग, अम्मलीमाणि टाळिय न अंग ॥377॥

संग्रामधीर राव जैतसी ने अपना अश्व यवन सेना के मध्य शस्त्रों के सम्मुख ला खड़ा किया। वे युद्ध करने लगे। उस अमलीमाण ने युद्ध में अपने शरीर को नहीं बचाया ॥377॥

रेवन्त घालियउ जइत राइ, नवसहस धणी क्रन्नह नियाइ ।
मेड रइ राइ खोहणि गँधार, ढोयउ सरूप वाजती धार ॥378॥

राठौड़ राव सूणकरण (पाण्डव कर्ण) की तरह राव जैतसी ने अपना अश्व यवन सेना के मध्य डाला। खेड के राव ने यवन सेना में तलवार बजाते हुए अपने आपको पहुँचाया ॥378॥

दळि दाणवि जइत सरूप दीठ, नेठाहि धीरि नासिय निंत्रीठ ।
हिन्दुआ तुरका हुविय हक्क, कारिमाळ वाजि वळळिय वटक्क ॥379॥

यवनों की सेना ने राव जैतसी के स्वरूप को देखा अथवा सेना ने राव जैतसी को दानव-स्वरूप देखा। वह अपने भाले को विश्वास के साथ चला रहा था। यवनों और हिन्दुओं की हाक पर हाक होने लगी तथा तलवारों के टकराने से (बजने से) सेना में कोलाहल होने लगा ॥379॥

छन्द राउ जइतसी रउ

पडियाळ थूणि पउरिस्सि पूरि, गाजणइ तणइ पइठउ गर्रि ।
खुरिसाण विवाणे मेड खागि, वाजिया धाउ ऊडी व्रजागि ।।380।।

पौरुष से परिपूर्ण गर्वीला राव जतसी अपनी तलवार चलाता हुआ यवन सेना मे प्रविष्ट हुआ। मेडवे स्वामी राव जतसी की तलवार से यवन विमानो पर चढने लगे। परस्पर प्रहार होने से वज्राग्नि उडने लगी अर्थात् चिनगारियाँ फूटने लगी ।।380।।

खाफरा जइत वाहइ खडग्ग, वासदे जणि वने विलग्ग ।
उतरा सेनि जइतउ अबीह, सीधरे पईठउ जाणि सीह ।।381।।

राव जतसी ने यवनो पर अपनी तलवार चलाई तब ऐसा प्रतीत होने लगा मानो वन म अग्नि लगी हो। निर्भय जतसी यवनो की सेना म इस प्रकार प्रविष्ट हुआ माना हाथियो के झुड मे सिंह प्रविष्ट हुआ हो ।।381।।

कूभाथळ भांजइ मीर कन्ध, ऊकुरड चडइ दळ अनिबन्ध ।
आवद्धि टोपि ऊभरी अग्गि, खोटिया थाट वेवे खडग्गि ।।382।।

राठौड सनिक क्रोध के वशीभूत होकर इधर उधर फल गये। वे यवन बादशाह के सनिको के कधो को हाथी का गडस्थल मानकर तोड रहे हैं। आयुधों से सिरस्त्राणो पर अग्नि प्रकट होने लगी तथा दोनो सेनाओ ने अपनी अपनी तलवारो से परस्पर विनाश किया ।।382।।

गहगहिय थाट वेऊँ गरीठ राठउडि रउद्रि वाजियउ रीठ ।
सूरा सधीर वाजइ सरोस पडिकाळे ऊडइ जिरहपोस ।।383।।

दोनो सेनाए अत्यन्त गौरवान्वित हुई। राठौडो और यवनो के मध्य झडी (शस्त्र प्रहारो की) लग रही थी। जो धैर्यवान शूरवीर थे वे रोषपूर्ण होकर लड रहे थे तथा तलवारो के प्रहार से कवच कट रहे थे ।।383।।

राठउडा हाथे रिम्मराह, सद्दुरड मीर सहिता सनाह ।
जरदाउळि फूटइ मेल जीह अरि उर अणी ठलइ अबीह ।।384।।

शत्रुओ के लिए राहू स्वरूप राठौडो ने हाथो यवन सनिक कवच सहित कट रहे हैं। सेलो (भाला) की नोक से कवच विशेष फूट रहे हैं। इस प्रकार वे निडर योद्धा अपने भालो से शत्रुओ का हृदय बींध रहे हैं ।।384।।

घण घाइ मुगुल्ला घडिय घट्ट रहचिवा थट्ट हुइ आहरट्ट ।
सेलार सहइ सारीर सार भाले भँभार घटट पहार ।।385।।

जिस प्रकार लुहार घन से लोहे को कूटता है उसी प्रकार राठौडो ने अपने प्रहारो से मुगलो के शरीर का कूटा। परस्पर भिडने से ध्वनि होने लगी। अश्व अपने शरीर पर तलवारो को सहन करते हैं। भाले का प्रहार तो इस प्रकार का हो रहा है कि जिससे पहाड घट जाये अर्थात् सीधे हो जाय ।।385।।

ताइयाँ तणे वाजइ तियग, उत्तरइ गात हूँता अलग ।
राठउड विढइ रिणि रस लुद्ध, सारे मुगुल्ल हुअइ वि विसुद्ध ।।386।।

शत्रुओं के शरीर पर तलवार बज रही है जिससे उनके शरीराङ्ग कट-कट कर अलग हो रहे हैं। राठौड रण रस मे पग कर (रण रस विलुब्ध होकर) लड रहे हैं उनकी तलवारो की मार से मुगल सनिक सनाहीन हो रहे हैं ।।386।।

अइराळि अणी पाया अठाहि, मतवाळा घूमइ मीर माहि ।
वाहइ खडग वेसे विरत्त, रिणठाह रत्त आवद्ध रत्त ।।387।।

सेना के ऐरावी अश्वो के पर यथा स्थान नही पड रहे हैं। उनके मध्य यवन मतवाले बने घूम रह हैं। वे युद्ध स्थल एव शस्त्रास्त्रो म तो अनुरत्त हैं, पर अपनी आयु स विरत होकर तलवार चला रहे हैं ।।387।।

रउद्र दळ रहच्चइ जइतराउ, होहू कि मेह वाजइ हुलाउ ।
ताइया उरे द्यइ कूत तेह, मारुअड राउ मातउ कि मेह ।।388।।

यवन सेना मे साथ राव जतसी भिड रहा है। यह ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो वर्षा हो रही है और शीतलहर चल रही है। शत्रुओं के हृदय म भाला झोक कर मानो उन्हे जल सित्तता (तेह) दी जा रही है। इस प्रकार मारूराव जतसी मचा (युद्ध करने लगा) मानो मह मचा (मूसलाधार बरसा) हो ।।388।।

धडहडइ ढोल धूजइ धरत्ति, पडियालुगि वरसइ खेडपत्ति ।
बीकाहर राजा इद वग्गि, खाफरा सिरे खिविया खडग्गि ।।389।।

ढोल बजन पर पृथ्वी कम्पायमान हो रही है। खेडपति राव जैतसी तलवार बरसा रहा है। राव बीका का वशज राव जतसी इन्द्र है। यवना पर तलवारें चमकने लगी ।।389।।

पतिसाह फउज फूटन्ति पाळि, ब्रहमण्ड जइत गाजइ विचाळि ।
अम्बहर जइत वरसइ अवार, घुट किया मीर मुहि खग्ग धार ।।390।।

बादशाह की फौज तालाब की पाळ क समान फूट गई। इसके मध्य राव जतसी ब्रह्माण्ड (आकाश के बादलो) की तरह गजने लगा। राव जतसी निरन्तर अथवा बिना ऋतु के बादलो की तरह बरसने लगा। वह यवनो पर तलवार स धारा क समान गडगडाने (गजने) लगा ।।390।।

सार जळ मेछ न सहइ सकि, करिमाळ काह पडियउ कटक्कि ।
धूधहर वरसता धन्न धन्न, गुरिजाँ निहाइ वाजइ गिगन्न ।।391।।

तलवार रूपी जल की वर्षा यवन सह नही सके। उन पर तल्वार रूपी कहर गिरा। धूधा के वशज के बरसने पर लाग धय धय कह उठे। गुर्जो की ध्वनि स आकाश गजन लगा ।।391।।

खुरिसाण सोसिवाजइ खड्ग, ऊभरइ ब्र आकासि लग्ग ।
वेढतां विलम्बइ वात वार, धउसिया मीर मुहि खग्ग धार ।।392।।

मुगल बादशाह कामरा की सेना पर खड्ग बज रहो है। उनकी धाराओ से निकलने वाला बुरादा आकाश तक पहुँच रहा है अथवा आकाश तक भर रहा है। लड़ते हुए बात करने के समय तक भी नही ठहरते हैं अर्थात् शीघ्रता से लड़ रहे है। यवनो पर खड्ग धारा गजने लगी ।।392।।

मरदिया जेम जगमल्ल मल्ल, ढण्ढोळि टल्ल मारिय मुगल्ल ।
रळतळइ रत्त सोखइ सपत्त, सम्भळइ सत्त विसथरइ वत्त ।।393।।

युद्ध में जिस प्रकार जगमाल मालावत ने यवनो का मर्दन किया था, उसी प्रकार राव जतसी ने ढोल बजाकर यवनो को मार डाला। शोणित इधर उधर चल रहा था, जिसे योगिनियाँ (अथवा सूप) सोख रही थी। इस प्रकार के वीरतापूर्ण कार्य के बारे में जो भी शत्रु सुनता है वह आगे बात बढाता है ।।393।।

अणिजे असत्त पूरिया पत्त, तिम छडइ गत्त सालि जिम सत्त ।
राठउड राह सेलार साह, गळवाह धाति भञ्जइ गडाह ।।394।।

मना पे मध्य योगिनियाँ अपने-अपने पात्र शत्रुरक्त से भर रही है। यवनो (शत्रुओं) का शरीर इस प्रकार छड़ा (कूटा) जा रहा है। जैसे चावल निकालने के लिए धान को छड़ा जाता है। राठौड़ राव जतसी और मुगल बादशाह कामरा गले में गलबाहियाँ डालकर उसे गडो (पत्थर के गोला) से तोड़ रहे हैं अथवा नष्ट कर रहे हैं ।।394।।

रडवडइ रुण्ड खाडे विखण्ड, ताजिया तुण्ड पडिया प्रचण्ड ।
सइधणी भोमि बाहरु सीत, देवता राउ पाडइ दईत ।।395।।

तलवारो से कटे हुए कबन्ध इधर उधर लुढ़क रहे हैं। बहुत से अश्वो के सिर भी काटे गये हैं। असली स्वामी सीता रूपी भूमि को लौटा लाने में सहायक है। राजा रामचन्द्र की तरह राव जतसी भी दैत्य रूपी यवनो का नष्ट कर रहा है ।।395।।

स्रीराम जइत सारे निसङ्क, लोहडे भसवस्र लियइ लङ्क ।
राठउड राउ गळवळइ रोम, बावणउ विलागउ जाणि वाम ।।396।।

श्रीराम रूपी राव जतसी तलवारो के बारे में निःशंक है। उसने शस्त्राघात से शत्रु रूपी लङ्का को ले लिया है। यवन गलबल (अस्पष्ट शब्द) करते हुए कहते हैं कि राव जतसी तो वामनावतार है, जो आकाश तक जा लगा है ।।396।।

आहणिय जेकि असिमरि उलाळि, पहटिया बिया गमिया पयाळि ।
पाल्ठे पाजे किय पहारि, मारिया मेछ वाजित मारि ।।397।।

जिस प्रकार देवताओ द्वारा तलवार भाजकर एक दैत्य को मारा गया तो दूसरे सब दौड़कर पाताल में चले गये उसी प्रकार राव जतसी द्वारा एक यवन के मारे जाने

पर दूसरे यवन पलायन कर गये। उसने अपने पर जमाकर प्रहार किये और अनेक म्लेच्छों (यवनों) और अश्वों को मार गिराया ॥397॥

गोरिया तणा गाळा ग्रहाह, वट्टावि आइ वाळी विवाह।
गाळउ गळाह मोखावि गाइ, राजसी जेम राठउड़ राइ ॥398॥

सुप्रसिद्ध राजर्षियों की तरह राठौड़ राव जतसी ने यवनों द्वारा गले में बंधन डालकर पृथ्वी रूपी गाय को ले जाते समय बीच में ही उसके गले का बंधन काट दिया तथा उस गाय को गले बंधन से मुक्त करवा दिया ॥398॥

चउँडाहर सामी कूंत चाडि, ऊतरा सेन नाखिय उपाडि।
चूलाळा किया झाडि झाडि, मोटा ग्रह मोखी मारवाडि ॥399॥

राव चूडा के वंशज राव जतसी ने यवन सेना को अपने भाले की नाक पर चढ़ा कर उस उखाड़ फेंका। उसने यवनों को तितर बितर (झाड-झाड के पास) कर दिया तथा बादशाह कामरा रूपी बहुत बड़े ग्रह से मारवाड़ को मुक्त करवाया ॥399॥

सङ्घारि मीर मूगळां साख, लाहउरि गयउ खेराखि लाख।
मुरधरा वधिय उछब मण्डाण, सिवहरिय गयउ घरि खुरासाण ॥400॥

इस युद्ध में मुगल बादशाह कामरा अनेक अमीरों का संहार कर, मुगलों की प्रतिष्ठा नष्ट करवा कर तथा अपना सुयश नष्ट करवा कर लाहौर चला गया। मरुधरा पर अनेक उत्सवों का प्रारम्भ हुआ और वह बादशाह कामरा अपने घर का स्मरण करके खुरासाण चला गया ॥400॥

॥ कळस ॥

पातिसाह परभंविय अस्व उतारि अभंगा,
कहँ गिडाळि गोमट्ट ताडि आँठुओ तुरंगा।
कहँ समीर मदमत भोमि लोटइ घाइ भरिया,
कहँ हडहडइ तुरंग अंग असमरि ऊतरिया।
काबिली थट्ट दहवट्ट किय, बीकाहर राइ वघरू,
जइतसी प्रवाहडउ किय जमा, जाम सूर ससिहर जरू ॥401॥

अपराजेय वीर राव जतसी ने मुगल बादशाह कामरा को पराजित करके उसका पानी उतार दिया। कहीं पर शूकर, और कहीं पर सियार अश्वों के आठों (वंशों) को घसीटते हैं। कहीं पर मदों मत्त अमीर घावों से भरे हुए भूमि पर पड़े हुए हैं। कहीं पर तलवार की धार से कटे हुए अंगों वाले अश्व हिन हिना रहे हैं। मुगल बादशाह कामरा की सेना को तितर बितर करने वाला राव बीका का वंशज राव जतसी सिंह के सदृश अपने युद्ध चरित्र (यश) को जमा रखा (बढ़ाया), जो सूर्य और चन्द्रमा के रहने तक (इनके साथ) स्थिर रहेगा ॥401॥ □

शब्दार्थ

1 अनाहत=जो नष्ट नही हो सके। अक्खर=अक्षर अविनाशी। सारद=शारदा। गुणेसर=गणेश। मण्डळीकां=शासनाध्यक्षो। मोटां=बडे। कुळि मउडां=वश के सिरमौर। रसणि=जिह्वा से।

2 उदियउ=प्रकट हुआ। वेगडइ सांड=अतुल बलशाली वृषभ के समान। बियाउ=दूसरा। सधीर=धैर्यवान ने। हठमल्ल=दृढ़प्रतिज्ञ वीर।

3 ऊधूळ=अत्यन्त विस्तृत। भाउ=स्वभाव। आपहे=स्वय ही। सोहिया=सुशोभित हुए। प्रवाडा=युद्ध चरित श्रेष्ठ भाग। सिङ्घ=सिंह के। जग्गी=जाग्रत हुई। जगीस=इच्छा युद्ध की कामना।

4 सिरि=ऊपर। वधी=अभिवृद्धि हुई। सस=कीर्ति। दसां देस=दसो देशो में। मल्लेछ=यवन, शत्रु। बिहारि=भयभीत करके। सत्र=शत्रुओ को। मिरिया=यवनो को। पहारि=मारकर।

5 कांधमल्ल=बलशाली। सुरिताण सल्ल=सुल्तानो के लिए शल्य-स्वरूप। राइ=राव ने। आण=शासनाज्ञा दुहाई। साहि=धारण करके। साण=शान।

6 जीपिय=जीते। हेल=सम्मिलित होकर, बात ही बात में। वाधियउ=बढा। सामन्द्र वेळ=समुद्र की तरगें। साथा=साथ में। वहास=अश्व। असहास=चपल। पूगी=परिपूर्ण की।

7 चतुरङ्ग=युद्ध के लिए। चाल=चलते समय। मारग=मार्ग में। लई=ली। धणी-स्वामी। धाइ=आक्रमण करके। जेम=जैसा।

8 पह=राजा। भलइ=अच्छी तरह से। नागउर=नागौर। प्राणि=शक्ति से। नव सहस धणी=राठौड राव ने। रुडतइ=बजाते हुए। निसाणि=नगारे युद्ध वाद्य। पालटि=बदल दिया, पराजित किया। धाइ=अस्त्र प्रहारो से। दाइ=अवसर। रहवास=निवास स्थान।

9 छापरउ=छापर। छांगां छयांहि=छह यूथो में तितर बितर। वळिरण्डि=वीर। करि=शस्त्र विशेष। करि=चलाकर। बांहि=हाथो से। चडिय=चढा। चीति=चित्र में। राहाचरक्क=युद्ध को। देखाळि=दिखाई।

10 घामलिय=मारे कूटे। घाइ घाइ=प्रहारो से। चक्र फरियइ=चक्र चलाया, आण दुहाई फिराई। चङ्ग=भली प्रकार से। लीधइ=लिये। दुरङ्ग=दुर्ग, कोट।

11 उग्राहइ=उगाहता है। च्यारि चक्क (मु)=चारो ओर। कोपिया=कुपित हुए। मेल्हइ=एकत्र करते हैं भेजते हैं। कटक्क=सेना। खीजियउ=क्रोधित।

हत्थ खाइ (मु)=शत्रुता रखता है। राहाळइ=आक्रमण करता है।

12 दीवाण=राज्य सभा। माहि=में। परठवियउ=रखा। बीडउ=पान का बीडा। अनइ=और। मनाहि=कवचित होकर। बिहुँ=दोनो ने। झालिय=पकडा। ऊभि बाँह (मु)=हाथ खडा करके, शस्त्र धारण करके।

13 भाड रइ=भाटियो के। राइ=राव ने। मुहि=मुह पर। मोडि=मरोडी। कटक=सेना। ताणिया=चलाई। कोडि (मु)=कोटि, असंख्य। काळइ=वीर। कळूळि=अश्व, शत्रु। काजि=लिए। रउद्रौ=यवनो का। ताणिय=चलाई।

14 पञ्चनइ=पचनद। लङ्घि=लाघकर। पाह=परा से। ऊतरियउ=उतरा। सहाउ=सहायता। तेथाडि कूप=कुआ जुतवा कर। भरिया=भरे। तळाउ=तालाब।

15 सहू=सभी। कळहि=लडने के लिए। कल्ह=युद्ध। सनेह=कवच। सारि=बाधकर। मागिसी=मागेगा। वइर=प्रतिशोध, बदला। ताणिया=चलाई। तक्क=लक्ष्य बनाकर। मेसवाळइ=इसी नाम का तालाब। पाया=पानी पिलाया।

16 गारिया राउ=यवन शासक। थळ माळ=टीलो के समूह। गाहि=रौंदते हुए। ब्रह्मण्डि लागि (मु)=आकाश तक जा लगे, अत्युत्साहपूर्ण। बेऊ=दोनो। वरीक=श्रेष्ठ योद्धा। ढूका=पहुचे। निझीक=पास।

17 माजणउ=स्नान। करिय=करके। करि=की। कण्ठि=कठो मे। करिमाल=तलवार। सालि=पकडी। वैरी कुदाळ (मु)=शत्रुओ के लिए कुठार स्वरूप। जमहरे=जौहर मे। देय=देकर। अगि=अग्नि। धूधहर राउ=राठौड राव। लागउ धियगिग (मु)=आकाश तक जा लगा, अति उत्साहित हुआ।

18 सांघणइ=जौहर की अग्नि मे। सत्ति=सतियाँ। सत्तूछ=थोडी। साथि=समूह मे। हाथउ=हाथो से। दुरग्नि=अग्नि। आप हत्थि=स्वय के हाथो से। ऊघाडि साक=दुग के कपाटों को। नाखिय=डाले।

19 पाखरिजे=कवचित होकर। पइठउ=प्रवेश किया। प्रइज पाळि=प्रजा का पालन करने वाला। थाटौ=सेना के। विचाळ=मध्य। हाक=हुकार। वज्जि=शब्दायमान हुई। गोण=प्रत्यञ्चाएँ। गइणाग=आकाश। गज्जि=गजने लगा।

20 पडिया=घायल होकर गिर पडे। प्रोळि द्वारि=प्रतोली के आगे। नीजळी=जली। अग्निस्नान किया। साह मउ=स्वामियो के साथ। सम्प्रतउ=पहुँचा। सरगि=स्वग में। ऊठियउ=उठा। रण्ण=रिणमल। अगि=अग्नि की तरह, आगे।

21 धरा=पृथ्वी। छळ=के लिए। रखपाळ=रक्षक। गडवियउ=गजने लगा। सांड=बनगाली वृषभ। गोत्र गावाळ (मु)=वश की रक्षा करने वाला। वइर=प्रतिशोध। चतुरङ्ग=युद्ध मे। ढाहिय=गिराकर। दुरङ्ग=दुग को।

22 कन्हा=पास से। छडाविं=छुडा लिया। खगि=तलवार। छराहि=हाथ मे।

शब्दार्थ

1 अनाहत=जो नष्ट नहीं हो सके। अक्खर=अक्षर अविनाशी। सारद=शारदा। गुणेसर=गणेश। मंडळीश=गणाध्यक्ष। मोटौ=बड़े। कुळि मउडौ=वंश के सिरमौर। रसणि=जिह्वा से।

2 उदियउ=प्रकट हुआ। धेंगड्ड साँड=अतुल बलशाली वृषभ के समान। बियाउ=दूसरा। सधीर=धैर्यवान ने। हठमल्ल=अप्रतिम वीर।

3 ऊपूळ=अत्यन्त विस्तृत। चाउ=स्वभाव। आपहे=स्वयं ही। सोहिया=सुशोभित हुए। प्रवाडा=युद्ध चरित, श्रेष्ठ भाग। सिङ्घ=सिंह के। जगी=जाग्रत हुई। जगीस=इच्छा, युद्ध की कामना।

4 गिरि=कगर। वधी=अभिवृद्धि हुई। सस=कीर्ति। दसौ देस=दसों देशों में। मल्लेछ=यवन, शत्रु। विहारि=भयभीत करके। सत्र=शत्रुओं को। मिरिया=यवनों को। वहारि=मारकर।

5 काँधमल्ल=बलशाली। सुरिताण सल्ल=सुल्तानों के लिए शल्य स्वरूप। राइ=राव ने। आण=शासनाज्ञा दुहाई। साहि=धारण करके। साण=शान।

6 जीपिय=जीते। हेल=सम्मिलित होकर बात ही बात में। वाधियउ=बढ़ा। सामन्द्र वेळ=समुद्र की तरंगें। सावा=श्रेय में। अहास=अश्व। असहास=चपल। पूगी=परिपूर्ण की।

7 चतुरङ्ग=युद्ध के लिए। चाल=चलते समय। मारग=मार्ग में। लई=ली। धणी स्वामी। धाह=आक्रमण करके। जेम=जैसा।

8 पहु=राजा। भलइ=अच्छी तरह से। नागउर=नागौर। प्राणि=शक्ति से। नव सहस धणी=राठौड़ राव ने। वडतइ=बजाते हुए। निसाणि=नगारे, युद्ध वाद्य। पालटि=बदल दिया, पराजित किया। धाह=अस्त्र प्रहारों से। दाइ=अवसर। रहवास=निवास स्थान।

9 छापरउ=छापर। छौगो छयाँह=छह यूथों में, तितर बितर। वळिवण्ड=वीर। फरि=शस्त्र विशेष। फेरि=चलाकर। बाँह=हाथों से। चडिय=चढ़ा। चीति=चित्र में। राहाचक्क=युद्ध की। देखाळि=दिखाई।

10 धामलिय=मारे कूटे। धाइ धाइ=प्रहारों से। चक्र फेरियइ=चक्र चलाया, आण दुहाई फिराई। चङ्ग=भली प्रकार से। लीधन्=लिये। दुरङ्गि=दुर्ग, कोट।

11 उग्राहइ=उगाहता है। च्यारि चक्क (मु)=चारों ओर। कोपिया=कुपित हुए। मेल्हइ=एकत्र करते हैं भेजते हैं। कटक्क=सेना। खीजियउ=क्रोधित।

हत्थ खाइ (मु)=शत्रुता रखता है। राहाळइ=आक्रमण करता है।

12 दीवाण=राज्य सभा। माहि=मे। परठवियउ=रखा। बीडउ=पान का बीडा। अनइ=और। सनाहि=कवचित होकर। बिहुं=दोनो ने। झालिय=पकडा। ऊभि बांह (मु)=हाथ खडा करके, शस्त्र धारण करके।

13 भाइ रइ=भाटियों के। राइ=राव ने। मुहि=मुह पर। मोडि=मरोडी। कटक्क=सेना। ताणिया=चलाई। कोडि (मु)=कोटि, असख्य। बाळइ=बोर। कळळि=अदव, शत्रु। काजि=लिए। रउद्री=यवनो का। ताणिय=चलाई।

14 पन्चाइ=पचनद। लङ्घि=लाघकर। पाइ=परो से। ऊतरियउ=उतरा। सहाउ=सहायता। तेवाडि कूप=कुआ जुतवा कर। भरिया=भरे। तळाउ=तालाब।

15 सह=सभी। कळहि=लडने के लिए। कल्ह=युद्ध। सन्नोह=कवच। सारि=बाधकर। मागिमी=मागेगा। वइर=प्रतिशोध, बदला। ताणिया=चलाई। तक्क=लक्ष्य बनाकर। केसवाळइ=इसी नाम का तालाब। पाया=पानी पिलाया।

16 गोरियां राउ=यवन शासक। थळ माळ=टीलो के समूह। गाहि=रौंदते हुए। ब्रम्हण्डि लागि (मु)=आकाश तक जा लगे, अत्युत्साहपूर्ण। बेऊ=दोना। वरीक=श्रेष्ठ योद्धा। ढूका=पहुचे। निझीक=पास।

17 माजणउ=स्नान। करिय=करके। करि=की। कण्ठि=कठो मे। करिमाल=तलवार। झालि=पकडी। केवी कुदाळ (मु)=शत्रुओ के लिए कुठार स्वरूप। जमहरे=जौहर मे। देय=देकर। अग्गि=अग्नि। धूधहर राउ=राठौड राव। लागउ धियग्गि (मु)=आकाश तक जा लगा, अति उत्साहित हुआ।

18 झंपणइ=जौहर की अग्नि मे। सत्ति=सतियाँ। सत्तूछ=थोडी। साथि=समूह मे। हाथउ=हाथो से। दुरङ्गि=अग्नि। आप हत्थि=स्वय के हाथो से। ऊघाडि ताक=दुग के कपाटों को। नाखिय=डाले।

19 पाखरिअ=कवचित होकर। पइठउ=प्रवेश किया। प्रइज पाळि=प्रजा का पालन करने वाला। थाटा=सेना मे। विचाळ=मध्य। हाक=हुकार। वज्जि=शब्दायमान हुई। गोण=प्रत्यन्चाएं। गइणाग=आकाश। गज्जि=गजने लगा।

20 पडिया=घायल होकर गिर पडे। प्रोळि द्वारि=प्रतोली के आगे। नीजळी=जली। अग्निस्नान किया। नाह सउं=स्वामियो के साथ। सम्प्रतउ=पहुँचा। सरग्गि=स्वग मे। ऊठियउ=उठा। रहण=रिणमल। अग्गि=अग्नि की तरह आगे।

21 धरा=पृथ्वी। छळ=के लिए। रक्खपाळ=रक्षक। गहकियउ=गजने लगा। सांड=बलशाली वृषभ। गोत्र गोवाळ (मु)=वश की रक्षा करने वाला। वइर=प्रतिशोध। चतुरङ्ग=युद्ध मे। ढाहिय=गिराकर। दुरङ्ग=दुग को।

22 कद्दा=पास से। छडडावि=छुडा लिया। खग्गि=तलवार। छराहि=हाथ मे।

प्रवाहा=युद्ध चरित, श्रेष्ठ गाथी। उवारि=बचाया।

23 धाहाइ देस=मवाड़ प्रदेश। सगळउ=समग्र। उपाडि=उजाड़ कर। मलि=मर्दन करके, चौर के। वइरियां=शत्रुओं। तणइ=का। मिरी=यवनों को। माटि पाडि=काट कर। पह भलइ=श्रेष्ठ शासक ने। बइसारि=बठाया। पाटि=सिंहासन पर।

24 वेगाम=विश्राम। चूक=घात, मारने का षड्यन्त्र। वूहुत=चला। चिनाणि=ज्ञान चूक कर। मूढ=अगत्य, अधम। मम्म=मर्म हत। रम्ण=रणमल ने। सारयात=साक्षात्। ध्रम्म=धर्म को।

25 प्रतापिउ=तपा। पाटि=सिंहासन पर। निलाटि=ललाट पर। अणियार=सुप्रसिद्ध। आणइ=आता है। जगत=संसार। हिन्दुवइ राइ=हिन्दुपति राव। जीतउ=जीता।

26 अधायउ=अतृप्त। जुद्धि=युद्ध मे। वळि=पराक्रम म। भीम=भीमसेन। जेम=जसा। सहेव=इसी नाम का पांडव। कोपइ=कुपित होता है। दिराउ घाई=जित दिया ग। दळइ=विनष्ट कर देता है। गिरि=मारवाड़। मिरी=यवनों के। तोरि=उस दिशा ने।

27 आपणी=स्वयं की। फेराइ आण=आण-दुहाई फिराई। जागुआ=शत्रुओं क। मूरे=मुरा पर। दाहा=दिया। सगाण=समान। मण्डोवर=सामन्तगण। मोहि=वापस करके परास्त करके।

28 घण=बहुत। असिग=तलवार क्यों। दुरिजण=शत्रुओं का। पडिय=पड़े। घाइ=प्रहारों से। रइणाइर-बाधउ (मु)=रत्नाकर को बांधा मर्यादा बांधी। काविय=निशानी। जब्हि=जहाँ। भैंतयट=पराजय। दीघ=दी। मोटां=बड़े-बड़। भडांह=सुभटों को।

29 अनू=नारीरात्रु युद्ध। पाडिया=गिराये। नीवह=दीपक मे। वळिमूळ=युद्धवीर। ढोहिय=निकट पहुंचाकर। कंधार=सेना को। मनावि हार=पराजय स्वीकार करवा दी।

30 मळिय माण=मान मदन किया। रेहळिय=भगा दिया, गिरा दिया। मत—युद्ध म। पळिय=लौटा। गाहि=नष्ट करके। उगाहि=उगाहता है। मल्ल=वीरवर।

30 पाजे मराइ (मु)=अपनी सामर्थ्य को स्वीकार करवा दिया। प्रहारा के द्वारा वश म कर लिया। ऊधरिय=उद्धार किया।

31 पुत्र=पुत्र ने। जाजे=जन्म से। कउण=कौन सा। गुण=लाभ। तुर=घोड़ा। तटि=तट पर। पिण्डउर=पिंड। दियइ=देता है। भूव त भुवात=घूमते घामते।

32 जोध=वीर। अस रातिं=मुसम रात्रि। जागि=जागृत रह कर। पुन करण=धर्म करने के लिए। पुहुतउ=पहुंचा। करि=हाथों से। पिंड सारि=पिंड दान किया। तरपणइ=तर्पण से। पितर=पितरों को। स तोस=संतुष्ट कर।

33 वाळियउ=लौटाया। वहिव=पहुत है। अंजळि=अंजुलिदार स। पोलिय=

पापिन किप । उदक्कि=जल स । पूजिय=पूरा करक । अनत=भगवान विष्णु को । हाथिया लेय=हाथो लकर । पूरबहत=पूव दिशा म ।

34 परिग्गह=रैयन । पाण=शक्ति स, हाथो से । चापरि=शीघ्रता से । काढिय=निकाले । अज्जाण जरक=अकस्मात । कमराळ=यवना । सीसि=ऊपर । वट्टूरर=सुय प्रयाण ।

35 भाहिजी=अदव । लिरा भेड=बहुत से एकत्र किये । गिति=पृथ्वी । वाहर=सहायताय । घणी खेड=भेड का स्वामी । समत्र=समव, शक्तिमान । माकहइ=विपत्ति म, निकट । पइसि=प्रवेश करके । साह्यि=धारण किये । सुसत्र=शस्त्र ।

36 वहिया=मारे, चले । सहित्ति=सहित । खटदूण (सख्या)=बारह । मोखायि=मुक्त कराई । खित्ति=पृथ्वी को । खेति=युद्ध मे । पाडि=गिराकर । कत्रपइ=छत्रपति । जस धीघ चाडि (मु)=यश पताका चढाई ।

37 प्राण=शक्ति को । मजियउ=तोड दिया । पूर=सना बहाव । सानियउ=साक्षी । सोम=चद्र । सूर=सूय को । पाधरि=सीधे, मैदान म । पचारि=ललकारा । मनावि=स्वीकार कराई । मछ=यवनो को । रिणखेति=युद्ध म । मारि=पराजय ।

38 घण थाट=अत्यन्त सेना य समूह । घरेहि=घर पर । छीगिया=काटे । मेछ=यवनो को । धर=पृथ्वी । घाति=डाला । छेह=किनारा । जणियार=सुप्रसिद्ध । विवनउ=स्वगस्थ हुआ । जियार=जब । ताडिया=गरजे । वरउ=बरस । च थाणि=उसी स्थान पर । तिणार=तभी ।

39 अरे वथिक (मु)=एक दूसरे से बढकर । सांड=वृषभ । उठिया=उठे । गडकि=गजन करत हुए । अनइ=और । ससारि=ससार म । असमानि=आकाश की ओर । खग=तलवार । उभारि=तानकर ।

40 जाणइ=जानता है । छातपति=पृथ्वीपति । हूअउ=हुआ । ताणावि छत=छत्र तनवाकर । अमूळ=अत्यन्त । अन=भोजन । पळहळइ=पराभा जाता है । जेम=जैसा । चित=मन स्वभाव ।

41 भूजाइ=भोजन । जीमइ=खाते हैं । भाल भाव=कह-कहकर । सांड=वृषभ, वीर । ऊमसइ=उन्नमित हो रहा है । वग्गि=समूह म । साळुओं=शत्रुओ के । खटकइ=खटकता है । हियइ=हृदय म । खग्गि=खड्ग ।

42 उपाडि रेस=घरा को नष्ट करके । थरहरिय=कपायमान हुआ । देस=समग्र प्रदेश । तणी=के । खाई=परिखा । बुरज=कोट । रोळि=नष्ट करक । किय=किया । रज रज=धूलि म मिला दिया ।

43 दीह=दी । वाह=शस्त्र प्रहार । नालीक लोक=यशस्वी लोग । चोहिय=स्ववश किये । लन्नाह=यवनो क । मारि=मारकर । असमाण=असाभा य । थाट=सैन्य समूह । आगी=आगे । उतारि=उतार, चलाय ।

44 पसर दय=सम य आक्रमण करके । संघारि=सहार किया । मारे=तलवारो स ।

साभेय=सभी का। नद=नीर। वट्टि=युद्ध म। साधिय=नष्ट कर दिये। ढोल सद्दि=ढोल बजाकर।

45 पाधरी=सीधी। वग्ग=वल्गा, लगाम। असित=अरवा को। गहिय=चलाकर। उमग्ग=उत्साहित होकर। नागड=वीर। उपाडी=विनष्ट कर दिए, उठा दिये। नैस=पर। मह्ल देस=प्रदेश म स।

46 सउँ=से। योनि-योन=प्रतिज्ञा-बद्ध होकर। ढाली ढढालि=युद्ध वाद्य बजाकर। वावाग्नि दोल=ढोल बजाकर। लाइ=लाये। पाय=परो म। रासिया=रस। बाँह दे=अभय देकर। राषि राइ=राव ने स्थानापन्न किया।

47 नडेय=स्ववश किया नष्ट किया। वलियण्डि=वीरवर। बिहुँ वार=दो बार। वेय=दोनों को। यदि हूता=कद म। छडावि=छुडाया। निसाण वावि=नगाडे बजा कर।

48 ग्रहियउ=पकड़ लिया। सादयाँ=मनुष्य से उतरे। मोगावि=मुक्त करवाया। साट=उस। कुण=कौन। रीस=रोष। छेहडा=जातियाँ। छत्र माँडइ=छत्र माडते हैं।

49 छात्रपति=शासक। उतारिय=उतारे। छत्र छाँह=छत्र की छाया म। आडी दीध=सम्मुख दी। बाह=आश्वासन सहायता का वचन। दुरग्ग पजि=दुर्ग के लिए। धरा=धारता। सोभागदीप=किले का नाम। सप्तत=ससार।

50 देगडउ राह=अतुल बली वृषभ। विधन=मृत्यु को प्राप्त हुआ। कुळभाण=वश का सूर्य। तेपि=वहा। उग्गिउ=उदित हुआ। उपरिय छत्र=छत्र धारण करके। फेराबि आण=आण दुहाई फिराई। ताँई=तक।

51 दीवाणि=राज्यसभा म। परगह=अश्व। बाळि=सोने की कडियो मे। उच्छहइ=उगाही होती है। राग=प्रेम से। रणघ=रणो मत्त। सूरा सधामि=युद्ध वीर। व पक्ख=दोना पक्षा म। सूप=विशुद्ध उत्तम।

52 चाल्हिय=चढाई। करनि=दशनाम की माता म। धज्ज=ध्वजा। पान=रक्षक। वे=गोना। वाणा=वसाते हैं। परउज=प्रजा को। गज्जियइ=गजते हैं। सायर=समुद्र के समान। गइण=हस्ती। माथे=ऊपर। पणीद=सप।

53 देवळ=देवालय। पव्ह=नगाड। दुवारि=द्वार पर। सुमधद=वाद्य यन्त्र। झणारि=ध्वनि। आदीत=सूय। निरमळा=निर्मल। अङ्ग=शरीर। गहवत=गौरवान्वित। धू=ध्रुव। गङ्ग=गङ्गा।

54 नीगाण नाद=नगारो की ध्वनि। प्रसाद=दुग के। समीसर=सवत्। चालि=ओट म। देवरउ=देवालय मे। रुपी=प्रजा। दुकाळि=दुष्काल के समय।

55 बुरामय=नगरा के समय। कडाहि=पूजाय सिद्धान्त। मदनी=जन साधारण प्रजा। मन्त=पृथ्वी। कूजर=हस्ती। दुवारि=द्वार पर। दीपइ=सुशोभित होते हैं। वाचइ=पढते हैं। सुजस=सुयश। अट्ठार ग्रन्थ (मु)=सभी जातियाँ।

56 सेडिय=बुलवाय। नट=नतक जाति। हूँता गुजरात=गुजरात से। सुजस=सुयश। वात=वारता। ताजी=अश्व। हस्ति=हस्ती। दीहा=दिय। तियाइ=उन्हें। रणहूंत=ऋण से। मोसावि=छुडवाया।

57 नागाणद=नागौर। अनियइ=और। वीक्नर=बीकानर। वांसोपस (मु)=परस्पर। वहइ=चलता है। वर=वर, शत्रुता। आमलिय=पवित्र। अङ्ग=शरीर। अन्नाविय=अडाया। बुत्तिमङ्ग=मस्तक।

58 सम्मेलि थाट=साथ एकत्र करके। सतोल=बलवान। वापि=युद्ध होकर। वाजाडि=बजाया। मेल्हाण=सम्मिलित करव। माड=भाटिया को। असि=अश्व पर। कलह=युद्ध को। चाइ=इच्छा से।

59 साहस्स धीर=धयवान व साहसी। टालयउ=बचाया। अङ्ग=शरीर। ताजी=अश्व। तीर=तीरो से। केकाण झाठ=अश्व सेना। साम्हउ=सम्मुख। मलियइ=भिडकर। घाउ=प्रहार। मोटमन्न=उदार हृदय वाले न।

60 रानि वाहि=रात्रिकालीन युद्ध म। विढिया=लडे। घण=बहुत। घाइ=प्रहारो से। मन्नावि घाउ=हार स्वीकार करवाई। अेवडउ=ऐसा। असमान=बलशाली। सेराविय=कटवा कर।

61 घाजे मनाइ=पराजय स्वीकार करवा कर। आथाणि=स्थान पर। आइ=आया। हाथी वरीसि=हाथियो को दान म देने वाला। गळहत्थि=गल-बध करना। हत्थि=हाथी के, हाथ स।

62 वळ=पृथ्वी पर। वारउ=समय। कि=मानो। इद=इन्द्र का। गुणियणां=कविजना के। ग्रहे=घरो मे। वाधा=बधा दिय। गइद=हस्ती। ताकुआं=कवियो। रमि=मिटाई। सोमाग तति=सौभाग्य की चिंता, सुयश क लिए। हसत्ति=हाथी।

63 कळि-काळि=कलियुग क समय मे। परीक्रम=पराक्रम। अे=यह एस। देखियइ=दिखाई देता है। दुवापुर=द्वापर। दिस्या दान=दिन देख। वणइट्ठ=मधु घाता। कन्हा=पास से।

64 हीमलिया=अश्व समूह। मेळिय=एकत्र करके। हसम=सेना। कादमी=कदीमा। लई=लेकर। पाखइ=पक्ष म, बिना। कदम्म=पैर। कोवण=मेघ घटा। कीयइ=की। छेलियउ=भर लिया। मन=हृदय। घातिय=प्रहार करके। छप्पन=भाटियो का।

65 ऊरधि=सेना। रहडिया=नष्ट किया। देस=पाकरण के आस-पास का प्रदेश। वाजा=युद्ध वाद्य। ऱडाइ=बजवा कर। जाइ=गया। वाजिन्न=अश्व। नीसाण=नगारे। वाइ=बजा कर।

66 जीपिवार=विजय करके। लोकि=जन-सामान्य। लार=पीछे। घण नेह=अत्यन्त स्नेह से। घाइ=प्रहार करके। अलजेया=निरञ्जन बनाकर।

67 चक्रवइ=चक्रपति। उपाडण=उठाने उठाकर फेंकने। माह=भाटियो का।

88 घमरोळ=प्रहार करते हैं। थाटां=सेनाओं में। धरिय=धारण करके। धूप= तलवार। पञ्चरूप=सिंह के समान। चक्रवइ=चक्रवति, शासन पति। पी= पिता के। बोल=वचनों की। थइ=सहायतार्थ। ओइलां=पक्ष वालों के लिए। हुअउ=हुआ। पइलां=शत्रुओं के लिए। अगह=अचल।

89 वाराह=शूरवीर। पइठउ=प्रवेश किया। विचाळि=मध्य में। नीसरइ= प्रहार करते हैं। चडिय=चढ़ा। ताळि=बदूवा में। विछूटा=छूटने लगा। रुहिर=रुधिर। वाद=युद्ध में। पडिाळ=प्रनाली। जाणि=मानो। पास= पार्श्व में। प्रसादि=घर में।

90 रुठइ=रुष्ट हुआ। रउद्=यवनों पर। सांवडइ=सन्निकट, विपत्ति में। पइठ= प्रविष्ट हुआ। साई समुद्=प्रसन्नता से आलिंगन किया। सइ गत्त=अच्छी तरह से। सत्ते सलीह=शत्रु शल्य। डम्बरे=मेघमाल से। कि=अथवा। छायउ= आच्छादित हुआ हो। जाणि=मानो। दीह=सूर्य।

91 मुणिसत्त=शत्रु का। मल्लि=मदन करके। भाथइ=तूणीर। उपडे=जमे। भरियउ=भर गया। सल मल्लि=सेल और भाला से। पारथां=शत्रुओं के। तउ=तब। पडिय=पड़ा। पील=हस्ती। जेम=जैसे। कंदोल=युद्ध से।

92 कूते=भालों से। असुर=यवन। कइ=कई। कोठार=अन्न भंडार। कणइ= अन्तरणों से। विवनउ=मृत्यु को प्राप्त हुआ। करिय करय=सुयश अर्जित करके। हत्थिअे=हाथियों को। तउ=तब। पडिय=गिराये। हत्थ=हाथों से।

93 किलवां=यवनों के। थरहरिय=कम्पायमान हो गये। सवे=सभी। थान= स्थान थाने। हइकम्पि=हाहाकार, कम्पायमान। देस=प्रदेश में। हुअउ=हुआ। हुलाउ=विचलित मृत्यु रूपी शीत वायु से।

94 असमानि=अद्वितीय वीर। उठियउ=उठा। असम्भ=वीर। थिडतइ=गिरते पड़ते। ससारि=संसार को। आभ=आकाश। थम्भ=स्तम्भ, सहारा। प्रजा= रयत। धर धणी=पृथ्वीपति। थाइ=हुआ। राखियउ=रखा। राज= शासन।

95 सहदेव मत्ति=बुद्धि में सहदेव के समान। ताणावि=तनवाकर। बइठउ=बैठा। सत्तति=सिंहासन पर। ऊजळा=उज्ज्वल। चवर=चामर। ढळवइ=घुमाये जाते हैं। अबीह=निर्भय। अविच्चल=सुस्थिर।

96 हइ=अश्व। थाळि=लोहे की कडियों में। सम्भि=खंभा पर। सोहइ= सुशोभित होते हैं। हसत्ति=हस्ती। अउव=आश्चर्यजनक। गत्ति=चाल-ढाल। दस देसपत्ति=दसियों शासक। सेवइ=सेवा टहल करते हैं। दुवार=द्वार पर। ओळगू=सेवक। व्रन अढार (मु)=सभी जातियाँ। आगी=आगे।

97 थरहरिय=कम्पायमान हुए। मीर=यवनों के। थरक्कि=कम्पित। गढ देस= विभिन्न प्रदेशों के गढ़। वकिर=वहकर। आउधां=शस्त्रों की। वेळ=लहरें।

उछलिय=प्रकट हुइ। अति=बहुत। गडडियउ=गर्जा। सामंद्र मत्ति=समुद्र की तरह।

98 हठमल्लि=वीरशिरोमणि। मनावि=स्वीकार करवाकर। हरि=गोय। हल्लावि=चलाता है। हकि=हांक से। हमीर=यवन। सत=पराक्रम। आपा=दिया। सक्ति=भगवती करणी ने। पइ=परा की। मनाविय=स्वीकार करवाई। देसपत्ति=देश के शासकों को।

99 नरवइ=नरपति। नरस=शासन। जिणि=जिस। भोमि=भूमि पर। पटू=वस्त्र, ऊन के पटू। पहरिजइ=पहन जाते हैं। चीर=चीर की तरह। मुणियइ=कहलाता है। धर=पृथ्वी। कासमीर=कश्मीर।

100 तरुणी=तरुणियां। ऊजळ=पवित्र। सत दत=श्वेत दांत वाली। वाणी=वचन। सुवाणि=सुमधुर। नद=और। लाजवंत=लज्जाशील। सोहिली=सुहावनी। भोमि=पृथ्वी। वांका=बांके। झूझार=योद्धा, सिर कटने पर। दियइ=देते हैं। करिमाळ=तलवार का। झट्ट=प्रहार।

101 वाळियां=लोहे की कड़ियों से। बधइ=बांधे जाते हैं। ग्रहास=अश्व। ग्रासिया=ग्राम शासन। सपूरित=परिपूर्ण। ग्रास=खाने-पीने। वास=निवास योग्य भूमि। सोवन=सुवर्ण। घन=धन धान्य। धजबंध=ध्वजा बांधने वाले। साह=श्रेष्ठी। रह=धर्म। वहइ=चलता है। राह=अपने मार्ग पर।

102 त्यागीव=यशस्वी। मिळइ=सम्मिलित होते हैं। मांडही=बाजार। लोक=जन सामान्य। चउहट्ट=चौहट्टे पर। हाट=हाटें, दुकानें। माणिक चोक=माणक चौक। आरी=समीप। गउख=गवाक्ष। ऊजळा=उज्ज्वल। ओप=शोभा। अम्मली=अमय। खाई=परिखा। अलोप=अलक्ष्य।

103 नीर=जल। भरिया=परिपूर्ण। नयड्र=नाडे छोटे तालाब। वांगउ=बावा। दुरग=दुर्ग। पाळी=परिखा। विहड्ड=विस्तृत चौड़ी।

104 भंजि=भंजन करके। सधार=संहार करके। मनावि हार=पराजय स्वीकार करवाई। मुहिम्म=सेना द्वारा। मोडियउ नाश=विनाश रचाया। वास=निवास।

105 लिया गढ्ढि=गाढ लिए स्ववश कर लिए। उग्रहइ=उगाहते हैं। असुर=यवन। आधा अघड्डि=आधा आधा।

106 गुरिगाण मग्गि=गुरासान के मार्ग से। कळळियउ=कोलाहल करता हुआ। गुरासाणी कधार=गुरासानी सेना। सज कीयइ=तयारी की। रेवंत=अश्वों को। जिनह सार=बख्तर बांधकर अश्व रक्षक न।

107 सर=ऊपर। समभारी=साम्राज्यवर। असपति=बादशाह। दूस=रोगी। असवारी=चढ़ाई। भली=शुभ। मढ्डिज=अश्वों पर। विल्होळइ=आरूढ़ होते। सेन भारी=भारी सेना।

108 काविती तणा=यवनों के। अइयार=सनिक। काडि (मु)=करोडो। नीसाण=नगारे। रोडि=वजाकर। छोडि छोडि=चढने की तयारी। जरसाहि=कवच पाखर इत्यादि। जडिय=रस। जगम=अश्वों पर। जीण=काठी, पलाण। मुखि=मुह स। दीण दीण=दीन दीन कहते हुए।

109 सुरिताण तणा=सुल्तान के। समूह सत्थ=सैन्य समूह। अवथरइ=प्रकट हुए। अगत्थ=अत्यत। सह=सभी। दरियाउ=समुद्र, नदी। मद्धि=लाधकर। पईठउ=प्रविष्ट हुआ। देस मद्धि=प्रदेश म।

110 कटरर घटइ=स य समूह। धर धणी=पृथ्वीपति। उठी=उधर स, उठे। पम्मार धार=धार के पँवार क्षत्रिय। पाखर अडोल=स्थिर कवच। हूअउ=पहुचा। मुगुल्ल दळि=मुगल स य। वाइ ढोल=ढोल बजाते हुए।

111 वळहियउ=व्याकुल हुआ। रहण=रता। सामइ काजि=स्वामी के लिए। मागली=कायर जन। भाजि भाजि=दौड दौडकर। वहिनउ=शत्रु को। पछाडि=पछाडा। सामद पाणि=स्वामी की शक्ति स सम्मुख हाथो से। समाहर=युद्ध म। सालिय=मार गिराया। सूलिताणि=सु ताव को।

112 सरलाट=सीधा। सामई=सम्मुख, स्वामी की। साहि=पास्वर सहायता स। मारियउ=मार गिराया। जिरा=जरो। आसुर>आसुर=राक्षस यवन। सघारि=मारकर। महि पत्ति=पृथ्वीपति न। वडा=बडे। पालिया=लुटेरे। मारि=मारे।

113 बीडरिय=भयभीत होकर। विमुहि=विमुख। गउ=गया। लिवयी=देकर। कच्छ=काछ। कूति=भाला। पाळियउ कच्छ=कसकर बाधा। भाखर=पवत क समान। अरोह=नहा रुकन वाला। क=दो। भल्लि=भाले। गलिया=रोके। देस=प्रदेशो को। मुगळां=मुगलो का। मलिल=मदन किया।

114 वसि करिय=वश म किये। वलिय=युद्ध द्वारा। पाधरा किया (मु)=सीधे कर दिय। तरहद पत्य (मु)=तितर बितर। हइवरां=अश्वा। भडां=सुभटो। दुर्ग=गोनो की। हुई हुल्लि=आक्रमण हुआ। मनि घातिय (मु)=मन म बसाया। मुगलिन=उस मुगल ने।

115 कोटां विचाड (मु)=दुर्गो का रक्षक। कियउ=किया। पइमाळ=नष्ट। माड=माटी प्रदेश को। खइँगह=अश्व। पेहि=मेड की तरफ। चलाविय=चलाया। भर=सेना को। धूणि=धुन दिया।

116 काइ न=कोई भी नहा। हाथ लग्ग (मु)=कुछ नहीं मिला। पग्ग=पर, कदम। सम्भारि म न=मन म स्मरण करत। एकदिनि=एक ही दिन म।

117 नर=और। पहर महि=एक प्रहर म। फराविय आण=आण दुहाई फिराई। अद्दिया=मदन किया नष्ट किया। गिरी=पवतो ने। सिरि=ऊपर।

118 भन्जि भूक्र (मु)=तोड मरोड कर चूरा बना दिया। रिणजगि=युद्ध क्षेत्र म। दाखि रुक=तलवार दिखाकर। भज्जि=भजन करके। मारि=विजय की। प्राजाळ=जलाये। वेवे=दोनो। पहारि=प्रहारा से, पहाडो का।

119 अनइ=ओर। सधि=सीमा तक। बाबरो साहि=बाबर शाह। ल्या=लाअे। गळइ बधि (मु)=स्ववश करके। दे दवट्ट=आक्रमण कर। हेला रसि=सम्मिलित रूप से, आक्रमण करके। लूटिय=लूटे। हट्ट=दूकानो को।

120 सन=शत्रु। घास=लूट। अनद=ओर। विरुद्ध=खिलाफ। बाणासि=तलवार। बोटि=काट कर। बिसुद्ध=अचेत।

121 पण्यार=पवनो को। पाडि=मारकर। नारू=ह्रिओ को। निवाहि=मुक्त कर। चूरिया=नष्ट किये। तामिनी=रात्रि मे। गिरदि=पहाडो पर। चाहिया चक्कि (मु)=चक्र पर चढा दिया, विचलित कर दिया।

122 क्षसपत्ति=बादशाह। उवह=समुद्र के समान। दळ=सना। आवरत्ति=घेर कर। खेलियउ=परिपूर्ण किया। छत्त=शासक। छत्तीस (मु)=छत्तीस, अनक। छत्ति=पृथ्वी पर। चानावि=चिनाव नदी। वाह=प्रवाह। चक्क चूर=नष्ट कर दिया। पडइ=पडते है। पइ=परा स। लघ=लाघा। पूर=बहाव।

123 बेव=दोना। हालिया=चले। हुयइ=होकर। आगी=आगे। हरेव=सेना के अग्रभाग मे। नामिया=नवाये। रणतूर सद्दि=युद्धवाद्यो की ध्वनि। पाखर रवद्दि=कवचा की ध्वनि।

124 जळ पथि=जल माग से। जुडेह=भिडे। भारत्थ=युद्ध। भिडइ=भिडकर, सुभटो ने। यहिय=मार। रिण खेत=युद्ध क्षत्र। भवाडइ=युद्ध चरित, श्रेष्ठ माग।

125 अपार=यवन, गुप्तचर। घुणहार=ध्वनि। पडिय=हुई। हजार (मु)=अनेका। धार=तलवारो की। खाडे=तलवारों स। खळोळि=विलोडित करके। टीली=युद्धवाद्य। ढंढोळि=बजाकर। नाबिय=डाला। भड़ोळि=बहुत।

126 साहब्बिच=शीघ्रता के साथ। रहडिया=विचलित किया। वाजा रडाइ=युद्ध वाद्य बजाकर। पहिलउ=शत्रु। खडगि=तलवार क भाग। चाढिय=चढाया। फेरि आण=आण दुहाई फिराई।

127 प्राण=शक्ति से। नीखिय पछाडि=पछाड दी। तोंई=तक। चक्कि चाडि (मु)=चक्र चढा दिया विचलित कर दिया। जउणपुरि=जौनपुर। खडिय=चलाकर। जाइ=गय। रइयत्ति=रयत। लोक=जन सामान्य को। किय=बनाया।

128 छाडि नस=घर छोडकर। दाणवां धनी=दानवों बादशाह न। सा देग=सभी प्रदेशो को वश म कर लिया। निर=नरकार।

प्रिसण=शत्रुओं को। हूँता विहार=विहार प्रदेश से। सबइ=सभी को। समार=मार से।

129 वइरियाँ=शत्रुओं को। मोरि=यवनों ने। देखालि वहद (मु)=शस्त्र की धार दिखाकर। मोरियाँ राइ=यवनपति ने। गाहिया=रौंदे। दाखि हाथ (मु)=हाथ दिखाकर, शक्ति प्रदर्शित कर। लगउँ=लगा, तब।

130 विच्चौ=मध्य में। बम्भणवाह=ब्राह्मण पट्टी। सममसा=अच्छे अच्छे। ग्रहिया=ग्रहण किये। सिराह=आतंकित करके। ओइसा=इधर के, पासवाले। नइर=नगर। अङ्ग=युद्ध में। लगउ=तब। फेरिय पवङ्ग=अश्व घुमाया।

131 पूरब धरा=पूर्वी प्रदेश। हइ खुँदि पाइ=अश्वों के पैरों से रौंदा। वलियउ=लौटा। निसाण वाइ=युद्ध वाद्य बजा कर। पिढि=युद्ध। भुइ=पृथ्वी। पहु=राजा। पहारि=पराजित किया। खण्डियउ मीण=सम्मान खण्डित किया। खाँडे खंडारि=तलवार के द्वारा मार कर।

132 विढण=लड़ने। वाद=युद्ध। थाहउ=सम्मुख। म्रजाद=मर्यादा स्वरूप, सुरिताण सल्ल=सुरतानों के लिए शल्य स्वरूप। सुरिताण सहु=सुल्तानों की लाज। आगरइ=आगरे में। दियण=देने के लिए। अडइ=आड़, रोक।

133 चढ्चलि चढेय=अश्व पर सवार होकर। खरहण्ड=सेना अश्व। लेय=लेकर। आयउ=आया। खडेह=चलकर। परभोमि माहि=पराई भूमि में। खनाहि=कवचित करके।

134 बाणासि=तलवार। वधि=दोनों। बलि=बलवान, पुन। बध वाल (मु)=प्रतिज्ञा के अनुसार। घुडहडिय=बजे। दमामा=एक युद्ध वाद्य। घुबिय=जोर से बजा। सग्राम=युद्ध। सूरा सधीर=धैर्यधारी वीर। मुहि चढ़इ (मु)=सम्मुख चढ़ा।

135 बेल्पख=पैलक बाण के। नोह=पत्ता में। ऊडियउ खूर=खुरासान उड़ा। सर पांख=तीर के पंखों की। छाह=छाया से। सूझन्त=दिखाई नहीं देता है। सूर=सूर्य। मलिय=रौंदा मर्दन किया। मेवाड़ माण=मेवाड़ का गौरव। रेहलिय=धूल में मिला दिया विचलित कर दिया। सूमाण राण=सीसोदियों को।

136 सारि=तलवार में। हाथिया गमिय=हाथी खोये। गउ=गया। हेल=सम्मिलित प्रहारों में। हारि=पराजित हो गया। मुहि चडिय (मु)=सम्मुख चढ़ा। समसेर=तलवार। झात=पकड़कर। मोखिय=सुलाया।

137 सोवन्न=स्वर्ण। लूटि=लूटा। वधिया साह=शत्रुओं का साथ। लागुअे=शत्रुओं ने। गमिय=गावों को खाया। लोप=उल्लंघन कर।

138 आहवि अचल्ल=युद्ध में स्थिर रहने वाला। सारि सण्ड=तलवार सम्हाल कर। दलिया=नष्ट किया दल लिया। खग्गि=तलवार से। हेकलिया=एकाकी। लिया डण्ड=दण्ड लिया दण्डित करके।

139 गया भाजिय नरींद=भाग कर दौड़ गये। भऔं=भय से। सेवइ=परिपालन करते हैं। पुलीं=चग्ताई जातिया का। गा=गये। ग्रहो=धारण की। सार=तलवार। सव्व=सभी को।

140 विस्सहर=बुरी शोभजनक। पुरपत्ते=पत्तपुर। वहइ=चलती। वाणि=वचन। पहू=शासक। पूजइ=पहुंच पाते हैं। प्राणि=शक्ति से। सासइ=मारते हैं। खड़गि=तलवार में। नाणउ=धन द्रव्य। सारोई=सारा। करिमाळ=तलवार। झाल=पकड़ कर। ऊभइ न कोई=कोई भी खड़ा नहीं रह सकता।

141 पाखइ=बिना, रहित। अजर राइ=अजय शासक। लाज लिय=रक्षा मना लिया। पाइ लाइ=पैरों में लगाकर, रक्षण करके। छात्रपति=शासक। हेक=एक। अम्मळो छत्त=पवित्र छत्र वाला। सिर मेर=सुमेरु पर्वत के। प्रमाणइ=प्रमाणित करते हैं, तरह। तास गत्त=उसकी गति। जोयण=देखने के लिए। उहाडि=चाल-ढाल, इच्छा। मन किय (मु)=मन किया। मुगले=मुगल बादशाह ने। भारवाडि=जाङ्गल प्रदेश की ओर।

142 आईया=आना, आना हुआई। बीजो=अन्य। आणी=ला कर लिए, लाये। पटहाथ=अश्व। पाखरिय=कवचित किया। पराणी=जीन कसकर। पहू=शासक। कतउ=कितने। विचि=मध्य। पानी=शक्ति इज्जत, आबरू। खेड सिरइ=खेड पर। निडिया=प्रस्थान किया।

143 काफर=यवन। रत्ति=मन में राग कर। पारम्भ=तैयारी। उत्तराधपति=यवनपति मुगल बादशाह ने।

144 सम्मिळइ लक्ख=लाखों की संख्या में एकत्र हुई। पाखरिजइ=कवचित किये जाते हैं। तुरा=अश्व। सूप पक्ख=शुद्ध पक्ष वाले। सम्मिळइ=मिलते हैं। साहि आलम=आलमशाह। सिहि=चले। सत्तरि=सत्तर (संख्या)। बहत्तरि=बहत्तर (संख्या)। खान=यवन सरदार।

145 दाखाण=शासन। दणां=के। फिरिया=घूमे। करहक=ऊँट। कळळिया=कोलाहल करने लगीं। ठाहि ठाहे=स्थान-स्थान पर। कटक=सेनाएँ। ग्रमराळां=यवनों की। चाळ=चलने को उद्यत। छोगाळ=छोगेदार। छिलइ=सुशोभित होते हैं। करिमाळ=तलवार। काळ=यम स्वरूप।

146 गाहाळ=यवन। माइरा=नीली-पीली आँखों वाले। कपिमुक्खो=बंदर की आकृति वाले। कुवरत्त=विधर्मी। वेरि=शत्रु। काळा किरट्ठ=अत्यन्त श्याम वर्ण के। गडदनी=गर्दन। गाजा=गजे। गिरिट्ठ=मुटल्ले।

147 सिन्दूर वरन=सिंदूर के समान लाल वर्ण। छाज-कन्न=सूप के समान कान वाले। मुसकीण=खुदा के बन्दे।

148 वांका=बाँके। विचित्त=विचित्र। वाधार वङ्क=टेढ़े चलने वालों का सीधा करने वाले। ताणइ=खींचते हैं। कमाण=धनुष। पइंतीस टङ्क=पैंतीस टंक

तोल का। आयासि=आकाश से। पङ्खि=पक्षियों की। पाडइ=मार गिराते हैं। अमुलन=बिना मूल किये। मौकडा मुक्ख=बन्दर की आकृति वाले। मुण्डा=रुण्डमुण्ड।

149 मुहरळी=अग्रिम। द्रेठि=दृष्टि। पाछिली=पीछे की। मूठि=मुट्ठी से। साझइ=मारते हैं। मिरिग्ग=मृग। गुण बाण=धनुष की प्रत्यचा द्वारा। मूठि=अच्छी तरह से। ससार=अश्व। कै=कई। सत्थि=साथ में। वावरी वाळ=लबी जगओं वाले। आजानबाह=आजानुबाहु।

150 वइरी=शत्रु। वधक=मारने वाले, बढाने वाले। वेधवत्ति=युद्ध में युद्धार्थ। पक्खियाँ=पक्षियों को। जु=जो। प्रासइ=पाराते हैं। दूरिवत्ति=दूर से। तणद=के। असराळ=असंख्य। दवि=शत्रु। धारा कराळ=शस्त्रों से भयानक डरावने।

151 मोटा=बड़े। अमिल्लित्त=शत्रुओं के। दियइ=देते हैं। आवरत्त=घेरा। कोपि=क्रुद्ध होकर। करक्क=सैन्य प्रयाण। हइमरां=अश्वों की। मह=वीरों की। हक्क=हाक।

152 करहा कियाह=मजबूत किये। केवि=कई। अन्य अश्वों के विशेषण हैं।

153 तणा=के। छूटइ=छूटे। पवङ्ग=घोड़े।

154 जङ्गमां=अश्वों की। जीण=काठी। पूठी जडेय=पीठ पर कसी। लाहउरी=लाहौर के यवन। ऊठिय=उठे। खग्ग लेय=तलवार लेकर। ताणावि तङ्ग=तंग खींचकर। चढिया=चढ़े। तुरह=अश्वों पर। खडखडइ=शब्दायमान हुई। खोणि=पृथ्वी। तइगां=अश्वों के। खुरेह=खुरों से।

155 सुरिताण सींव=सुल्तान ही सीमा है सीमा से। हालिया=चले। हइदळ=अश्व सैन्य। जाणि=मानो। हींव=हिमालय। देस सिर=प्रदेश के ऊपर। रडवड दीण=प्रयाण किया। हुता=से। हालिया=चले। लीण=यवन।

156 असतरे=खच्चरों को, अस्त्रों को। सलीता=नदी। असराळ=बहुत। कामाळां=अश्वों की। पूठी=पीठ पर। के=कई। कठाळ=सिंह। ऊभारी=बहुत बड़ी। तङ्गी=नदी। पूरि अम्भ=जल से परिपूर्ण। वांसइ=पीछे। वूहा=चले। विखम्म=विषम।

157 वनिगह=दूकानें। कोठी=प्रकोष्ठ। जागिणी पुरा=दिल्लीपति यवन। जे=जो। जङ्ग जीत=युद्ध विजयी। दिसी वडी तणा=बड़ी दिशा के। वड्डा दईत=बड़े दैत्य।

158 आसमुद्र=समुद्र पर्यन्त। साधि=वश में कर लिया। आप=स्वयं। असाध=वशीभूत नहीं हुए। ऊलटियउ=उमड़ा हुआ। उत्तराध=यवन सैन्य। डउंडी=डुंडी। दमाम=दमामा। निसाण=नगारे। नद्द=ध्वनि। सम्प्रत=साक्षात्। जाणि=मानो। मेघ सद्द=मेघ गर्जन हो।

159 निरवहि=रखते हैं। व्रत्ति=व्रत। निवाज=नमाज। के=कई। जवंबा पलीत=अशुद्ध बोली वाले। मुगुल्ल जूह=मुगलो का समूह। सारव्व= मैना। जाणि=मानो। बोलइ=बोलती हो। समूह=समूह मे, एकत्र होकर।

160 चळचळिय=चलायमान हुए। चक्कवइ=शासक। च्यारि चक्क=चारो दिशाओ के। दळ=सेना के। रजी=धूळि से। पाइ=परो को। छायउ=छा गया। दुणि द=सूय। जिनावर=पशु। मारि=मार कर। आयास हूंत=आकाश से। आणइ=लाते हैं।

161 जांगळूराउ=राव जतसी। ऊपरइ=ऊपर। जम्फ=आक्रमण। लङ्घि=लाघ कर। सम्फ=सैन्य पक्ति। विचाळि=मध्य। नीसरिय=निकले। सइजप्प नालि=तोपें जोडे हुए।

162 वहतइ=चलते हुए। प्रमाणि=प्रमाण है। जळ दुग्गम=समुद्रीय पवत। मायइ=ऊपर। रीछी=झीनो बदलिया। घटा=सैन्य। माळि=ऊपर। ऊडाइ=उडती है। असणि=बिजली। कि=अथवा। ससीवाळि=बन्दूकें।

163 घुमरिया देय=घरा बना कर। पाखी=पक्षी। भमेय=घूमते हैं। आडाविय= एक दूसरे स सटाकर। तम्बू=छोलदारियाँ। ऊतरेय=उतरे। परठिया=भेजे। साहि ओलमि=बादशाह ने।

164 वातउ वत्त=बात पर बात आने पर। कहियउ=कहा। विचार=मन्तव्य। डड देहि=दण्ड देओ। नमिय=नमस्कार करो। लइ=लेकर। ध्रमद्वार= घम। मन्भम=पौत्र। अबीह=निभय योद्धा। सांभळिअे=सुनने पर। कथिने=वचन।

165 झूझार=योद्धा ने। झडीलउ=यवनों के। सीस=ऊपर, सिर। झाडि= फटकार कर उतार कर। बोलियउ बोल=ऐसा वचन कहा। फाडी बराडि= मानो बादल फटा हो। ठेलि=वापिस भेज कर। आउ=आओ। सामहइ सलि= सेलों के सम्मुख भिडने के लिए तयार होकर।

166 दीवाण=शासनाध्यक्ष ने। दियउ नह=दिया नही। नमिय दाउ=अवसर पर भुका नहीं। आयउ=आया। दिवण घाउ=प्रहार करने के लिए। ऊससिय= उत्साहित हुआ। आप अङ्गि=अपने शरीर मे। अहयार=शत्रु को। धार वाहिय=तलवार की धार पर चलाया। अलङ्घि=वीरवर ने।

167 माहि=मध्य। सेर=सिंह के समान है। भारी दुरङ्ग=भारी दुग। गढ भट्टनेर= भटनेर का किला। रउदमइ=यवनों ने। फेरियउ=चलाया चालू किया। धक्राइ=युद्ध। गोण=प्रत्यञ्चाएँ। चउहूं गमाह=चारो ओर।

168 वाहिय=चलाकर। सतङ्ग=तीर। आभरे=अत म। अङ्ग=युद्ध। नांखिय करेह=हाथों से काट डाले। सरजाळ=प्रज्वलित। कोट कियउ=कोट मे किया। सरेह=अग्नि स सरो से।

169 कविनउ=वीर। वल्ळ=क्रूर। कदल=युद्ध। करेय=करके। पारवां=सनिको क। पूठि=पीछे। फिरणी फिरेय=चकरी की तरह घूमता है। नीछटिया गोळा=गोल छूटे। तन नाळि=तोपो से। पावक=अग्नि। जाणि=मानो। पइठउ=प्रविष्ट हुआ हो। पलाळि=घास-फूस मे।

170 कहिय मुहि=मुह से कहा। मारि मारि=मारो मारो। घूणियउ कोट=किल को घुन डाला। काळइ=वीर। कधारि=यवन सना ने। तण=के। झालिय=पकड। पखाण=पत्थर। जुधि चडिय=युद्ध मे चढ। सद्ध=लका के। वन्नरा=बन्दर। जाणि=मानो।

171 चढिया नीसरणी=निसनी स चढे। घडी चोट (मु)=तुरत फुरत। ववरे=सेना न। भेठि कोट=कोट को भेल दिया, प्रविष्ट हुए। सनान=स्नान। साऊ सवार=सभी भल लागो ने। हिंडोळिय=लटकाई। तुलछी=तुलसी। कण्ठि हार=कण्ठ मे हार की तरह।

172 कळहण करेय=युद्ध करने। वइरियां थडा=शत्रु सेय म। वहेय=चलकर। सम्मूह मरण=एक साथ का मरना। साउ सयन्न=सब अच्छा है। करिमाळ माहि=तलवारो [illegible]। काढिय=निकाला। कळन्व=स्त्री जन।

173 पतिसाह सल्ल=बादशाह के लिए शल्य-स्वरूप। ऊघाडि प्रोळि=प्रोल को खोलकर। उतेढि अखि=आँखें चढा कर, रोप म भरकर। आउघह तोलि=शस्त्रो को तोलना हुआ। वानत्त=युद्ध का बाना धारण किये हुए। बोलिया=बोले। बाघ=सिंह। बिदटु=दोनो। वांह बेव=दोनो परस्पर रक्षक।

174 प्रोळि हूँता=प्रोल से। भटकिक=आगे चलकर। पइठउ=प्रविष्ट हुआ। कटकिक=सना म। रिणि=युद्ध मे। सेसइ=नष्ट करता है। खुरासाण=यवनो को। जुध धसइ=युद्ध मे धसता है। मत्त=मदो मत्त। गह जूह=गज यूथ।

175 सुरिताण तणा=सुल्तान के। सैलार=अश्व। सक्ख=सख्या। लख मूलह=लाखो के मूल्य वाले। ऊारि=ऊार। लूबि=घूमते हैं। लक्ख=लाखों। छेलियउ=भर गया। खग्ग=तलवार। छोहि=रोष से। लसकरी=सेना। लोहि=शस्त्र चलाया।

176 पडियउ=गिरा। रिणि=युद्ध म। पिसण पाडि=शत्रुओ को गिरा कर। मालहरि=राव मल्लीनाथ के वशज। चाडि धज मारुआडि (मु)=मारवाड का सुयश बढाया। किवाड=कपाट। वसी करेय=वश मे करके। मीर=यवनपति। भटनेर लेय=भटनेर लेकर।

177 रोसाइ=कुपित होकर। रोढि वाजा=युद्ध वाद्य बजा कर। रउद्रि=मदलपति। मेखळा=मर्यादा। मेही=छोड दी हो। समुद्रि=समुद्र ने। मोटागढ=बड़े बड दुग। जीपिय=जीते। हेल मत्त=सम्मिलित प्रहारो से मस्त होकर। सिडउ=चलते हैं। सिरि=ऊपर। खेड छत्त=खेडपति राव जतसी।

178 गाजणइ=यवन पति। गरट्ट=सैन्य समूह। थळवाट=थळी प्रदेश में। पईठा=प्रविष्ट हुये। खिडिय=चलाकर। थट्ट=सेना। हालिया=चले। सेन=सेना में। हइ=अश्वों की। वाजि हम्म=ध्वनि गूंजी। साम्हा=सम्मुख। हसम्म=सेना।

179 सुरिमाण=यवन-पति के। खईंग=अश्वों के। ऊडी=उडी। खुरेह=खुरों से। रवि=सूर्य। छायउ=छा गया। अम्बर=आकाश। रजी रेह=धूलि रेखा से। चमराळा=यवनों के। पाजे=परों से। चीध=धूलि। गूदळइ=मलिन, अस्पष्ट। व्रिक्स=वृक्ष। मूझइ=घुटते हैं। गइंध=हस्ती।

180 असिपाइ=अश्वों के परों से। खेह=धूलि। अलुक्क=प्रकट अत्यंत। गो=हुआ। गहण विची=गगन के मध्य। मिळि=मिल गया। गोधुळक=सायकाल जमा। वरहास=अश्व। खिडइ=चलाते हैं। ऊनळी वग=वाग छोड़ कर। कळहिआ=लड़ने के लिए। क्रमइ=चलते हैं। कम्माण=कमान। नग=हाथों में लिए।

181 मूगळी घडा=मुगल सैन्य। आवइ=आई। मजूस=तलवारों पर। जासूस=गुप्तचर। मुहरखे=अग्रिम दूता ने। आवि=आकर। कहियउ=कहा। मुहाह=मुख से सम्मुख। आवइ=आ रही है। अथाह=अपार।

182 भारी कटक्क=बहुत बड़ी सेना। धर=पृथ्वी। धुसइ=धस रही है। भारि=वजन से। आविया=आये। कावसू=गुप्तचर। सरि=तालाब पर। उतारि=उतारकर। हनहल्यि=विचलित हुआ। देस=प्रदेश। हइवं=बादशाह के। हुवासि=हुविस के कारण। तडवागे=सेना के भय में। पडिया=पड़े। लोक=रैयत। त्रासि=दुखी।

183 देसपति=शासक। उवारै=बचाता है। का=अथवा। दईव=भाग्य। जीवासणि=जीवित रहने की आशा। भागी ज्य जीव (मु) =जान बचा कर चली गई। केड़ि=पीछे। जिनावर=बाज। चिडिया=चिड़ियों में। पडिय=पड़ा।

184 थरहरिय=कम्पायमान हुई। नीर थाळ=थाली के पानी के समान। भाखरे=पर्वता पर। भागि=दौड़कर। चडिया=चढ़ गये। भुवाळ=शासक। आगली=आगे वाली। अबीह=निर्भय। सरणइ=शरण में। विजयपञ्जर=वज्रपञ्जर। अन्तमीह=अंतर्मों के।

185 हूकळ-कळळ=ध्वनि। चञ्चल=अश्वों ने। गई=पहुँची। त्रीवक गहक=नगारों की आवाज। दरस्यउ=दिखाई दिया। सरि=तालाब के पास। षळषळ=चलायमान। च्यारे चक्र=चारों दिशाएँ।

186 दळ सुरिताण=बादशाह की सेना। जाण=मानो। डूगरि दव=पर्वत की अग्नि हो। कम्पी धरा=पृथ्वी कांपने लगी। लथडव=विचलित भयभीत।

अहू=सप रूपी। सुरिताण=बादशाह। आवियउ=आया। अवयरि=उतरकर। करन तणौ=लूनकरण का तनय। ऊठिय=उठा। गज=हस्तियो में। केसरि=सिंह के समान।

187 मेल्हिय=भेजे। मुगुल्लि=मुगल कामरान ने। धर साजि=पृथ्वी दो। मुहर हू=पहले ही। म=मत। करि=करो। ढिल्लि=शिथिलता, ढील। छाँ छत्र=छत्र की छाया। सरिस=समान। म म=नहीं। जाहि=जाओ। छेहि=किनारा करके। छोड कर। स कोडि द्रव=दश करोड द्रव्य। विवाह देहि=लड़की प्रदान करो।

188 बीकहर=राव बीका के वंशज। राउ=राव जैतसी। सांभळि=सुनकर। वयण=वचन। रीसाइ=क्रोधित होकर। राता=रक्त, लाल। रतन=आँखो को। ऊमसिय=उत्साहित होकर। बोमि लागउ (मु)=आकाश तक जा लगा। अबीह=निर्भय योद्धा। सांभळिअे=सुनने पर। कथिन=वचन।

189 केसरि=सिंह। कथिन=वचन। सांभळि कन=कानों से सुनकर। वाउळि=वात्याचक्र, व्याकुल हुआ। कि=अथवा। वन्नि=वन में। लागउ=लगी। वहनि=अग्नि। अ=ऐसी। वखाण=शोभा। जाळीवळि=अग्नि। सीतउ=सीधा। घृत=घी। जाण=मानो।

190 ठेलिअे=लौटाये। मालह=राव मल्लीनाथ के। जिम=जैसे। बोलिय=बोला। दति मौड=वंश सिरमोर। जीव ले (मु)=जीव लेकर। भाजि गउ=दौड गया।

191 तिम करइ=वैसा ही करेगा। तुडि मल्लि=वीर वर। तोय=तरे से भी। कामरा=हू कामरान। कबध=राठोड क्षत्रिय। भाजइ=दौडेंगे। विभाडि=भिडकर हरा कर। काढिय=निकाला। छेहि=रोष पूर्वक। ताडि=चलाकर दौडा।

192 सत सल्लि=शत्रुओ के लिए शल्य स्वरूप। धार बळि=शस्त्र बल से। सोई=सुशोभित होता है, वही। भागउ=पराजित होकर। पलोइ=दौडो। मारि=नष्ट किया। अतियात वात=सुयश वार्ता। आपा उबारि=स्वयं ने बचाया।

193 समारिय=रौंद डाला। वहि=वध किया। आप हत्थि=अपने हाथ से। बङ्गाळ=यवन। कन्हा=पास से। मोखावि=मुक्त कराया। वान=शोभा। भागउ=पराजित किया।

194 जोगणी पीठि=दिल्ली में। जुडेय=भिडकर। काढिया=निकाले। पाघरइ खेति=सीधे क्षेत्र में। पचारि=ललकार कर। सुडाळ=हस्ती। सघारि=संहार करके।

195 नगि=भिडकर, संलग्न होकर। भेसियउ=पराजित किया। ऊजळह खगि=उज्ज्वल तलवार से। नागउर तणौ=नागौर के। भंजिया=पराजित किये। नरींद=शासको को। गइद=हस्ती।

196 मारावित=मरायेगा । सायों=साँयिया को । मीर=बादशाह । रहबर=सोमिया । हुइ=होकर । हालइ नहीं=चलेगा नहीं । गा=गये । मछरियउ=राय पूण । गढ दुग्ग माहि=दुगम गढ में ।

197 जांगलुअरउ=जांगलू का अधिपति । सरणइ=शरण में । घाति=डालकर । जगि=ममार को । खिति=पृथ्वी । मिति=जरा सी भी सख्या । साहइ=धारण करके । खडग=तलवार । रउद्री=यवनों ने । वाजा=युद्ध वाद्य । वाजि रोढि=बजाये । गइणाग=आकाश । धडहडिय=गडगडाया । गोढि—गर्जन से ।

198 पञ्चलि चडेय=अश्व पर चढकर । वाधिय=बाधी । चुगुल्ल=मुसलमानी चोटी यवन । मुर छन=तीन छत्र । माढि=धारण किये । मायइ=ऊपर । मुगुल्ल=मुगल बादशाह कामरान ने । पुहतेइ=पहुचकर । वस्तिं=बस्ती में । पव्वइ=पवतो मे । पराह=समान । चडइ=चढा । सामह सराह=तीरो के सम्मुख ।

199 पाखरणउ=कवचित करने के लिए । कीयउ=किया । मूसइ=घुटते हैं । मिरिग=मृग । हइयट्ट माहि=अश्व सेना म । थळ=टीबे । थूळ=बडभारी । मूळ=शुर्यों का स्थान । हइ उरे=अश्वा के वक्षों से । थट्ट=समूह । पाधरा किया=सीधे कर दिये । पाळे=पैरा से । पहट्ट=रौंदकर ।

200 साहण=अश्व सेना । समन्द=समुद्र मे । ऊछळिय=प्रकट हुई । मार=तलवारे । साइयर=समुद्र । सहारि=नष्ट । रहचन्यिउ=भिडता हुआ सहार करता हुआ । रोम=यवन । वाजों=वाद्या के । सबदि=ध्वनि स । वयोम=आकाश ।

201 पाअ=परा से । हमम्मि=सेना के । हालइ=हिलता है । पयाळ=पाताल । फडफडइ=तडफडाता है । नाग=वासुकि । फुणाळ=फन । असुर राइ=यवनपति । जळराइ=समुद्र । जाणि=माना । मेल्ही=छोड दी हो । मजाद=मर्यादा ।

202 पुड सातइ=सातों तल । घूजिय=कम्पायमान हुए । पवंग पाय=अश्वों के परा मे । नागिंद=वासुकि । नाचि=नाचन लगा । नीसाण=युद्ध वाद्यों की । निहाइ=ध्वनि से । आगी=आग, अग्नि । मिलइ=चमक रही है । झाल=ज्वाला । मुस्साहळ=मशालें । नमत माळ=नगयमाला हों ।

203 दीवी=दी । परिवम=घरा । उडियन=नक्षत्र । किरि=मानो । अनरिख=आकाश मे । रेवन्त सहि=अश्व चलाकर । चउ=च्यार । पहुर=प्रहर । रानि=रात्रि मे । टुका=पहुचो । प्रभाति=प्रात काल क समय ।

204 मुबरगां=अश्वा । पगे=परों को । माळ=पृथ्वी आभूषण विशष । रविझाळ=सूय की किरणा के । समा=सम्मुख । रिमाळ=रजो । धमधमइ=बजत है । घट=घण्टियां । पाखर झिमत=परस्पर रगड मात हुए पाखर । मल्हपता=तेजी के साथ ।

205 पट=हाथियों के सूंड में पकड़ा या अस्त्र पट्टा। हमति=हस्ती। फेरए= घुमाते हैं। व्रिख=वृक्षों को। दिसा वोम=आकाश की ओर। नांखइ=फेंकते हैं। वयण्ड=हस्ती। पट हस्ती=प्रधान हाथी, पाटो वाले हाथी। छाया= आच्छादित। पक्खरेह=कवचों से। हालइ=चलते हैं। पगेह=पैरों से।

206 इसी=ऐसी। मूठी=पीठ पर। गइंद=हाथियों के। कि=अथवा। पासे=पास में। वीद=दूल्हा हो। साहियउ=शोभित हुआ। मुगुलाँ=मुगल सैन्य से। सिक्खरेह=शिखर। माही=अन्दर। मच्छ ताणियउ मेह=मेघों के मध्य सूर्य की किरणों ने मच्छ बनाया हो।

207 रेवन्त मेढि=अश्व चला कर। सरोस=सरोष। आए=आकर। रोडिय= बजाया। तबन=युद्ध वाद्य। दइवाळ=हाथियों की। पूठि=पीठ पर। ढळकती ढलल=ढालें लटक रही थीं।

208 इम कहिय=ऐसा कहा। असुरि=यवन-पति ने। आउधइ तोलि=शस्त्रों को तोलते हुए। पलारियाँ=फलांगे। गढ=किले की। कपि प्रोळ=प्रोल को अवरुद्ध करके। ऊलटउ=उलटा उमड़ा। अभत्ति=विपत्ति। प्रज=रयत। आन्ज हुअउ=रक्षक हुआ। देसपति=प्रदेश का शासक।

209 दुरवेस=यवन पति। कन्हा=से। गरहावि=गृहीत करवाकर। नमि=नमन करके। कोट विचौ=किले के मध्य। रहिय=रहेगा। नरस=नासर राव जैतसी। दीठइ प्रमाणि=तदथा नेगत ही। नीसरिय=निकला। रुडतइ= बजाते हुए। निसाणि=नगारे।

210 उरि करिय=हृदय में करके, साथ में करके। देअंति घाव=डोल पर डंका देकर। भारथ=युद्ध का। भळिय भार=भार सम्हाला। असवरी=फौज। विलाया= ले ली। आप लार=अपने पीछे।

211 मीर=यवन। तेजी=अश्व। उनाळि=तेजी के साथ चला कर। वराह=यवन। विढवा=लड़ने के लिए। वाग वाळि=लगाम घुमाई। गहव्वत=गौरवान्वित, अभिमानी। साम्हउ=सम्मुख। तडमल्ल=अपराजेय वीर। निहराइ= नसिंहराव को। सुलं=मशाल।

212 भाथारि वाग=लगाम पकड़ कर। आयास लगि=आकाश तक जा लगा। सुरिसाण=यवनपति। भडि=राठौड़ शासक। सिविया=चमकी। खड्ग= तलवारें। असपत्ति=बादशाह की। सन सतें=मनमाने। पलि आळ=छुटवानी करके। दाढाळ=वराह। नम=जैसी। आंग्यउ दिखाळि=आँख दिखाई।

213 उरि कियइ=छाती के आगे किया इधर किये। ढार=समूह। पतिसाह तणा= बादशाह के लोग। सकिय पचारि=ललकार सके। विसमउ वराह=विषम यवन पति का, आश्चर्य चकित हो गया यवन। ताणिया=चलाये। मुगु ते= मुगलों ने। पाउ=पर। ताह=तब।

ऊमि वाह=खडे हाथा। वाढिजइ=काटते हैं। वाह=प्रहारों से। पइसिय=प्रविष्ट होकर। विचाह=मध्य में।

224 देगाळि हत्थ (मु)=हाथ दिखाये। सांकडउ कियउ=विपत्ति में डाल दिया। मरथ=सेना को। आपण पाणि=स्वयं के हाथों से। आपणइ अङ्गि=स्वयं के शरीर से। नव सहस धणी=राठौड़ राय। निहङ्गि=आकाश में।

225 ऊग्रहण=छुड़ाने वाला, उगाहने वाला। छडावण=मुक्त कराने। अहिपुर=नागौर वालों से। छहतराह=शासक। तुरुक ग्रह=यवनों द्वारा गृहीत। ससारोइ=जगत्। जाणइ=जानता है। सोइ=वही, शोभा।

226 समी सडु=सामने लज्जा है साँइ। ऊजळइ=निष्कलंक। खागि=तलवार। आदड=सम्मुख। अगडु=स्थिर, पवत। नवसहस=राठौड़ों को। वधारण=बढ़ाने वाला। नाद=यश। सारति=आतुरता के साथ। साहणी=अश्वरक्षकों का। साद=शब्द, ध्वनि।

227 आइ लास=सेना आ गई। विलहणा हुअइ=चढने की तयारी के लिए। छूटइ वहास=अश्व छोड़े गये। अति तेजि=अत्यधिक उग्र। चपप्पल=चपल। तुरि=अश्व। आपि=दिये। तरणि रथ=सूर्य के अश्वों। जेम=जैसे। निळ ग्रहइ=लगाम ग्रहण करते हैं। आपि=तड़प कर।

228 दोयम=समुद्र। अछेह=विस्तृत। दुहुँ दळि=दोनों सेनाएं। छळ=युद्ध। कुळ छळि=वंश के लिए। झूझार गुरु=योद्धाओं में श्रेष्ठ। उठियउ=उठा। झळहळि=प्रकाशमान। कळि=युद्ध में। मरपण=मरण के लिए। करण कळि=युद्ध करने।

229 निडुर=निर्भय। हियइ=हृदय से। नाहुर=सिंहों को। नेठवइ=बाँधने वाला। धूकिय=गर्जन किया। हरि जिम=सिंह के समान। रिणवट=क्षत्रिय धर्म। वढइ=नापकर। खिति=पृथ्वी की। वाहर=सहायतार्थ। अम्बर धरि=भाला धारण करके। असमाणि=आकाश तक।

230 भञ्जन=भागने वाला। रिम थड=शत्रु सैन्य। झूझार गुरु=योद्धाओं में श्रेष्ठ। दियण=देने। खग्ग झड=तलवार का प्रहार। खड्ग=तलवार। वहिस्यइ=चलायेगा। धीरां=धैर्य के साथ। हुयसी=होगा। हमीरां=यवनों में।

231 कुळि दीपक=वंश का दीपक। राखण देस=देश की रक्षा करने। छळ=के लिए। रूपक=शोभायमान। पडि=युद्ध में। उपडियइ=गिरेगा। पहिलउ=शत्रु। गइ=हस्ती। गञ्जन=मर्दन करने वाला। रिणगहिला=रणोन्मत्त।

232 अनइ=और। अचागळ=वीर। बरविय=वर का साथी। जोडालां=यवनों के। मुहि=मुँह पर। जबोडां=जबाव जबाड़े को पकड़कर हिलाना। सिहाइ=सहायक।

233 काळउ=वीर। कोटां कारणइ=गढ़ों के लिए। ससमथ=समय। जरदि न सम्मवइ=कवच में नहीं समाते हैं। असुराइ=यवनों की। थट्टि=सेना में। माइ=समाते हैं।

234 पइनउ=तीव्र। तुरङ्ग=अश्व। जठी पवन=वायु से बडा। ग्रीवा=गदन। किरेह=माना। ऊळू गयन=आकाश स्थित उलूक के समान। सांधरि=युद्ध म। भेळण=भिडने म। करिमाळ हत्थ=हाथ मे तलवार लेकर।

235 जेम गङ्ग=जस गगा। आइत्त=युद्ध मे। ओपत्ति=उत्पत्ति। अङ्ग=अग देशीय। भरत्थ चढिय=युद्ध मे चढा। भल्ल=अच्छा। परवाड मल्ल=युद्ध चरित, वीर। पर चक्र पल्ल=पराये शासन को नही स्वीकारने वाला। चक्र=चक्र=सना।

236 जेवहउ=जसा। अजणि=सहस्रबाहु बन्दरो। आखइ=कहा जाता है। अधाळ=जश्व। फुरणी रयत्थ=सूय क अश्वा। जिम=जसी। फउरि फाळ=वायु ह की कुन्जान बाला। सोधउ=शुद्ध, निष्कलक। सलोह=सीधा। थईनउ=अपनाया स्वीकारा, निर्वाचित किया।

237 चम्पयउ पाइ=पर से दबाने पर। खइगरु=अश्व। कुळाछा=कुलाचें। छाहि=पृथ्वी पर, सराप। खाइ=भरता है। धर सुछळि=पृथ्वी के लिए। उडावण=उड़ाने। धार धूप=तलवार की धार। नवसहस रूप=राठोडो की शोभा स्वरूप।

238 रथ पवन=पवन वग। रङ्ग=वाह-वाह। पहुली=पिछुली। पार=चपल। पन्नउ=तीखा तीव्र। पवङ्ग=अश्व। भाडिजी=अश्व। देय=देकर। पाण्डइ मार=रथाश्व पर मार। निडार=निभय वीर।

239 ठवइ=रखता है। पइ=पर। पात्र गत्ति=पात्र की तरह। ऊन्हउ=तेज, ताता। अछेह=अपार। अत्ति=वहुत। करि=हाथ में। साहि सार=तलवार लेकर। मारत्थ तणउ=युद्ध का। जइ भुज्जि=जिसकी भुजाओ पर। भार=उत्तरदायित्व है।

240 ससाखउ=प्रसिद्ध विशुद्ध। राग=रानो। वग=वाग, मुहरा का। पइनउ=तीखा तज। पवङ्ग=अश्व। दई=देता है। त्रिणे पग्ग=तीनों पर। काळासि=धारण कर। चढिय=चन्न। कुत=माले को। भिग्गवा=भगु। हुवउ=हुआ। किरि=माना। भगदत=भगदत्त।

241 अङ्गळी=अश्व। फुरणि=नथुने। जगि रेखि=अग्निरेखा। खण्डीर निस्सिहइ=सूय का अश्व। तासि=उसको। खाणि=पदाईश, उत्पत्ति स्थान। चापडइ=शीघ्रता स। चडि=चढा। भोमि चहढ=पथ्वी की चाह, सहायताथ। उतराध=यवना। तणों=के। देमा=देगा म। अगहु=अचल।

242 माहइ=मरता है। कुलाच=कुलाचें। पहि=माग म। भ्रिग्ग=हरिण। समीर=वायु का। वलिम=पकड लेता है। पसवान=रोमावली। सिग्घ=दीपक की लो क समान। तदमरन=वीर वर। तङ्ग ताणि=तग खेंच कर। पण्डीर=सिंह।

243 पल्लाण वेगि=काठी के लिए शीघ्रता से काठी कसकर। नाचणी=वेश्या, पात्र। तालि=ताल पर। नाचइ=नाचती है। निवज्ज्व=मुकरर। लोह सज्जि=शस्त्र सजा कर। काबिलो=यवनो को। उथेडण=चीरन के लिए, तितर बितर करने के लिए। जइत कज्जि=राव जतसी के लिए।

244 पइनउ=तीखा। पय पाइ=परो से माग तय करने मे। सारङ्ग=मृग। साहण=पकडने मे। सिहाइ=सहायक। ताजी=अश्व पर। वरिसी=वरेगा। विचित्र=यवनो की। घाइ=प्रहारो से। घडा=सना था। बींद=दुल्हा बनकर।

245 कळियप्प=कबूतर के समान। ग्रीव=गदन। निसिनाथ=उल्लू, चन्द्र। कन= कान। मरक्कट=ब दर का। चित्ति=स्वभाव। ताजी=अश्व। सम न=तुल्य। कोपि=रोषान्वित होकर। रिम राह=शत्रुओ के लिए राहु के समान। चढिय= चढा। रिणवट्ट रोपि=क्षत्रित्व का माग अपना कर।

246 ताजी तुरङ्ग=ताजी जाति का अश्व। तो हुउ=उसकी। सतोर=दशा स्वभाव। माकडाँ जेम=ब दरो के समान। दइ=देता है। फाळ=कुदान। मोर=युद्ध के लिए अग्रिम पंक्ति म। जोमरण=वीर। जगि=सचेत हाकर। खुरिसाण खान=यवनपति के खान। खवसी=सहेंगे चमकेगी। खडगि= तलवार।

247 फुरणी=नथुने। बयवक=रेखा के समान सीधा। वन्ही=अग्नि। फुरति= जाज्वल्यमान। गडदानइ=गदन। अरणी ग्रीभ=कबूतर के। गति=समान। जुधि करण वरय=युद्ध म सुयश करने। हुइ=अश्व। रूढ=चढा। पन्न= तलवार। हत्य=हाथ मे लेकर।

248 चामठी=चिमटी। सहइ नह=सहन नही करता है। तुरिसाण खेत=खुराशान की पदाईश। जइ=जिस की। सूध खाळ=विशुद्ध वन। त्रिहुणाल=अश्व। काळ=वीर। तरसि=शीघ्रता से। आवजिय=बांधकर। खग्ग=तलवार। आरुहिय=चढा। असि=अश्व पर।

249 जगि रेख जाणि=अग्नि रेखा मानो। समीर जाळ=वायु के तुल्य। कूदइ= उछलता है। सुछ द=स्वतन्त्र। पइ=पर। धरिय=रखता है। कोळ=वराह के समान। करिमाळ=तलवार से। करेवा=करने। कळह काज=युद्ध के लिए। रिण रूपक=युद्ध की शोभा।

250 वाळियइ=फेकर, कसकर। दूवि=पूछ की डोरी। चीटळी वाळि=पगडी लगा कर। धर=पृथ्वी। पाओ=परो से। खूदइ=रौंदता है। चढिय=चढा। सुरिताण सल्ल=सुल्तानों के लिए शल्य स्वरूप। मळवट्टण=मदन करने। मागर=सेना को।

251 म्रिग जेम=मृग के समान। फाळ माँडइ=छलाग भरता है। साहणी सिरघ= अश्वा म सिरे। सजि सार=तलवार लेकर। भारत्थ करेवा=युद्ध करने। भीम=पाडव भीम के समान।

252 केकाण=अश्व। मोर=मयूर की तरह। कटाह=छत्र। परणी=फिरकी। कि=अथवा। पात्र=वेश्या। पाइ=परों से। हियइ=हृदय की। पूरवण=पूर्ति करने। हाम=इच्छा।

253 राजवी रत्थ=राजाओं के अश्वों की तरह। सूरउ=सूर्य से सूर। सोझउ=शुद्ध। वांसइ=पीछे। आरुहियउ=चढ़ा। वाज=अश्व पर। कुळ लाज=वंश की लज्जा। सुवारण=सवारने।

254 ऊडइ विहाह=पक्षी उड़ता है। वहणउ=वढने वाला। पंथ=मार्ग में। खडि=चलाने पर। आरुहिय=चढ़ा। असिस=अश्व पर। आउधि=शस्त्रों का। अपाल=नहीं रुकने वाला। मळेवा=मर्दन करने।

255 घडहडइ=धड़कती है। पइ=परों से। गयणागि=आकाशीय। वज्र=बिजली। जुधि=युद्ध में। साख=साक्षी। जास=जिसकी। दोनाळी=दुनाली लेकर।

256 फरहरि=फहरा रहा है। फउरि=हल्की। फरि=ध्वजा के समान। अफरि=घूमता है। ऊँचाम असिस=अश्वों में उच्चतर। आरिखि=चिह्न। अमूल=अमूल्य। तेवहि=उसी। असास=अश्व पर। अहिंकारी=गर्व से। थम्म=थभा आधार देता है। आडइ=सामने।

257 सल्लूण=सुंदर, लावण्यमय। तुरी=अश्व। सोझउ=शुद्ध। सुचङ्ग=अच्छा। धापडइ=कुलांच भरता है। तेजि=अश्व तीव्रता से। ती हुउ=वह। पड़ियाळ घूणि=तलवार से घुनेगा। विढिमी=लड़ेगा। सम्प्रत=प्रत्यक्षतः। असासि=अश्व पर।

258 नामियइ=झुकाता है। कंध=कंधे। नीझरइ नीर=झरने के जल की। समयग=अच्छी फबने वाली। वाखरे=युद्ध सामग्री अश्व कवच इत्यादि। पलाणे=कसे। वाज=अश्व पर। रिणि रूपक=युद्ध की शोभा।

259 तुरी=अश्व। ग्रिह जोति=दीपक। नेत=नेत्र। खइग=अश्व। खुरिसाण खत=जिसकी पगाइश खुरासान की है। धापडइ=युद्ध में शीघ्रता के साथ। चढण=चढ़ने के लिए। पल्वळि=अश्व पर। दारुण=विदारक भयकर। दुरङ्ग=दुर्गों को।

260 माहण मुगट्ट=अश्वों में सिरमौर मान्य मुकुट। वाउ ग्रहइ=हवा को पकड़ा देता है। मूठि=मुट्ठि में। वाजिन=अश्व। विछुट्ट=छूटने पर। गंजण=मारने। दुयण=यवनों को। नवसहस=राठौडों का। नाद=सुयश

261 संजाणइ=जानता है। कळह चल्लि=युद्ध का तरीका। सिरि=ऊपर। वाळसोहै=बागडोर। हारइ न हल्लि=चलन में हारता नहीं है। सुकरि=हाथ में। साहियइ=धारण कर। खगि=तलवार। लासोक=यशस्वी। चईरउ=निर्वाचित स्वीकार करके। वोमि लगि=आकाश तक आ लगा।

छन्द संख्

262 भीगार=वर को। भाति=तरह। भल्लि=अच्छी। भंडिज्ज=घोडी। लळवळइ=लचकाती है। अङ्गि=शरीर को। ऐजम्म तिज्ज=लज्जावान वेश्या की तरह। हद=अश्व पर। खत्रीवट्ट=क्षत्रित्व के माग पर। दोतियाँ= शत्रुआ के। सीसि=ऊपर। देवा दवट्ट=प्रहार करने के लिए।

263 कागारि=उल्लू के म। कन=कान। कुरुगुट्ट=कबूतर के से। कध=कधे। वेस=वेश्या के समान। लुहमणी=लूबिया। व ध=बाधे। ल्हाथि=दौडाकर। असि=अश्व। असमाण लग्गि=आकाश तक जा लगा।

264 पुन वासी रयत्य=पवन रत्य। हाक्यिइ=हाँकने पर। ताळि मळइ हत्थ (मु)= हाथो की ताली मिला देता है। मछराइत=स्वाभिमान गौरवान्वित। काळासि कूत=भाला पकड कर। कळहण करेउ=युद्ध करने।

265 सोहलउ=सुदर। तुरी=अश्व। वांकड=बाका। केकाण=अश्व। कोड पूरवद=उत्साह पूण करता है। कज्जि=युद्ध म। सङ्गहिय=लेकर। सुकरि= हाथ मे। सारि=तलवार। वाजिनि=अश्व पर। रिण अङ्ग वार=युद्ध के समय।

266 कूदइ=उछलता है। अडव गत्ति=आश्चयजनक चाल से। राही=नतकी। किरि=मानो। अवसरि=घूम घूम कर। रमइ=खलती है। रत्ति=रात म। खण्डरण=टूटने नष्ट करने। घडा=सना। खाग=तलवार स। घईनउ= स्वीकार करके। ध्रागि लागि=आकाश तक जा लगा।

267 गजि साकति=अश्व मजा कर। आणउ=लाया गया। रोपतउ=देता है। फाळ=ऊँची कुदान। सतलङ्ग=बन्दर की। रकम=तरह। माझी=प्रमुख, मुखिया। निडार=निभय वीर। सत्रुहरा=शत्रुओ क। सीसि=ऊपर। फरइ सधार=तलवार घुमायेगा।

268 जङ्गमां जत्ति=अश्वा म यति के समान। वोथ गयन=आकाश को रौंद देता है कामा को दबाये हुए। सासत गत्ति=शाश्वत चाल। चढिय चीति (मु)=चित्त चढ गया। रुक रीति=तलवार की रीति।

269 असमी=अश्व। सफरी छोह=रोष म मत्स्य के समान। लौतियउ=तेज चलाने पर, फकने पर। सामहइ लोहि=शस्त्रा के सम्मुख। अमग=धीर। आहवि अहल=युद्ध म स्थिर रहने वाला। दूजणाँ मम=शत्रुआ क लिए शल्य स्वरूप।

270 जाति=ज्योति। जगरव=सूय। जत्ति=जमी। सोगउ=शुद्ध। मता गत्ति= तेजवान है। वाहिसइ=चलायेगा। सत्रां=शत्रुआ पर। ताराग्रट्ट=तलवार। दर्मा प्रगट्ट=देश प्रदेश में विख्यात।

271 मल्हपति=मपटती है। इसी परि=इस प्रकार। सरी=चली। रम्भ गति= अप्सराआ की चाल म। गमसरि=नत्य म। सुचल्ल=अच्छी तरह चलान वाला। हरि=अश्व पर। सज्जि पाणि=हाथो म सुसज्जित करके। असुरांह थाट=यवन सना को। भेळण=भिटने। अराणि=युद्ध म।

72 हाटकी=अश्व। नीर हरि=नदी के समान। हीर हल्लि=सेना मे चलती है। चऱ्चले राउ=अश्वों म राजा। चावुकी चल्लि=चाबुक चलाकर। आरुहिअउ= चढ़ा। सुरिताण सन सउ=बादशाह की सेना से। खग्ग साहि=तलवार धारण करके।

73 परि जास=जिस प्रकार के। पाइ=पर। वानर=बन्दर के समान। प्रलम्ब= लम्बे। अेक्णी=एक ही। प्राहमइ=पीता है। पाणि=हाथ से। अम्ब=जल। कूलाळि कूत=भाला चलाता है। साम्हउ=सामने। अयास=आकाश मे। दोमजिम=युद्ध म।

274 तुरी=अश्व। आपइ घमरस=जोर की चाल देता है। हसा=अश्वा मे। सुहस=हस के समान। वांमइ=पीछे। हवस=ध्वनि, चलता है। खेघि=युद्ध म। वतखा हुयउ (मु)=परस्पर बातें करन। मउँ=क्या। सत्रवेधि=शत्रु वेध।

275 वाउ=वायु का। झालइ=पकड़ता है। विवाण=विमान, प्रवाह। सीरजी= सृजन हुआ है। वांसइ=पीछे लगन। खुरासाण=यवनो के। भारत्थ मल्ल= युद्ध म अच्छी तरह स। जास=जिसके। मल्ल=मल्लिनाथ।

276 पीवति=पीता है। अम्ब=जळ। एकण पाणि=एक ही हाथ से। खड्गरू= अश्व। तास=उसकी। ऊधाम खाणि=उच्च कुल। वाजिजि=अश्व पर। नवसहसी=राठौडो का। नाद=सुयश। नीर=आबरू (पानी)।

277 कपि=बदर के समान। फाळ=कूदान देता है। रिणहआवद=कुक्कुट के समान। गळि=गले म। गाण=प्रत्यञ्चा। जास=जो। गण्ठइ गम ध= हाथियो म डालता है। उजाळइ=उज्ज्वल करने। अप्प=स्वय को पानी। मूलाळ सीसि=यवनो पर। देवा झड़प=प्रहार करने।

278 गडदमी=गदन। चिरिरि=मुर्गे के समान। सत्थोर गत=सत्वर गति। साफरी छोह=मत्स्य के समान रोप। के=अथवा। सकू मत्त=बदर के समान। वोप=सतति। गापत्तजीह=नृप की। तेणि=उस पर। अबीह=निर्भय वीर।

279 वहास=अश्व। लाखीक लीण=एक लाख म क्रय किया हुआ। जर=जरी की। मावति पूठि=अश्व की पीठ पर। जडिय जीण=जीन कसी। गंजण पळास=यवनो को नष्ट करने मारने।

280 वाजित्त=अश्व। वखाणि=शोभा। जळहरि=मघ के समय। सिहण्ट= मयूर। तण्डळइ=नृत्य करता है। जाणि=मानो। चईनव=निर्वाचित किया गयोकारा। रिम्म राह=शत्रुओ के लिए राहु स्वरूप। सोवटइ=विपत्ति म, निरट। मग्गां=मनुष्यो म। मामी=सम्मुख। सनाह=कवचित होकर।

281 मारीव=मगरवी। तुरङ्गम=अश्व। मूलि लक्ख=एक लाख मूल्य का। पूरउ=वग में। प्रचण्ड=उग्र तेज। जइ=जिसके। मूघ पक्ख=दोनों पक्ष शुद्ध है। निवीह=निडर योद्धा। गामि छळि=स्वामी के लिए। वळहिवा= लड़े।

छन्द राउ जइतसी रउ

282 पग=परों से। अपइ=नापता है। वनिर=वनर>वनऊर=वानर। गत्ति=चाल तरह। गिरि=पर्वत। धा=जाने वाले। पागारि=मयूर के समान, पन्नगारी। कंध=कंध। पोयो=नथुने। कि=अथवा। पत्ति=पत्त हो। पट्ठि=पीठ पर। सामी=स्वामी की। सिहाद=सहायतार्थ। सीर=सम्बन्ध। मिसट्ठि=मधुर।

283 धावतइ=चलता है। पाइ=परो से। नीघसद=धँसती है। पुर=तल। तिणि=उसकी। निहाइ=ध्वनि से। ऊभि पाणि (मु)=खडे हाथो में। घडा=सेना का। अद्दिवा=मर्दन करने।

284 धीगरइ=बिखर पडता है। अद्दि=युद्ध में। आवइ न वखिर=कहने में नही आता है। परियइ पलाणि=काठी धरी। करि=हाथो से। वेस ढकिर=वस्त्र ढका। धड मोर=यवन सेना को। सँमेळण=मिलने भिडने। मुहर धाद=पहले प्रहार करने।

285 घातइ=डालता है। मिरी=यवनो के। प्राम=फासी। लाखीक=यशस्वी एवं लाग। पगाइतउ=प्रोत्साहित करने पर। मोल्लि=मूल्य का। गिरि=ऊपर। जाम=अश्व पत्ति। साहिय=धारण करके। खम्मसर=तलवार।

286 सारीख=सदृश। रिणमणिमत्थ=मयूर। सिग्ध=चोटी के। कहर=कहते हैं। मनि=माना। साम्म ग्रिग्घ=उन्नर हो। सत्रां=शत्रुओ के। उरि=हृदय में। जाटसरन=शल्य स्वरूप। मछराइत=रोष पूर्ण।

287 रेवन्त=अश्व। पल्लाणउ=सुसज्जित किया। कम्माण=धनुष की। गोण=प्रत्यञ्चा। घातइ=उतार देता है। कुरङ्ग=मृग के। गण घाई=अपार प्रहारो द्वारा। घाण=समूह। रिण जङ्ग=युद्ध।

288 साहण राउ=अश्वो के राजा। कोकाडि=कुक्कुट के समान। कंधि=कधो वाला। मल्हइ पळाउ=छत्र की तरह तनता है। कन्धि=कन्धे पर। लोह=शस्त्र। चाहण=चढाना। मारि=तलवार से। सोह=शोभा।

289 पञ्च नद्दि=पजाब की। आपत्ति=पदार्पण। सम्भर=ममाता। घट्टि=मना में। रणतूर सद्दि=युद्ध बाजा की ध्वनि। सार सज्जि=तलवार ऊपर। गाजणइ=यवना के। सीसि=ऊपर। मध गज्जि=मेघ गरजा हो।

290 सहँगम=अश्व। वहइ=चलता है। न घोस=पवन की तरह। मछराळ=मात्सर्य युक्त। अचप्पल=चचल। पमण मोख=हवा छूटी हो। अगराण पूठि=अश्व की पीठ पर। आहवि=युद्ध मे। सुजग्ग हथ=हाथ मे तलवार लिये।

291 मज्जरी=कुक्कुट के समान मजार बिलाटा। कंध=कध। पद=पर हैं। साख ग्रिग्ग=बन्दर से। स्रवण=कान। मुघन्न=बहुत अच्छा। सद्दनसिग्घ=अग्नि शिखा। हइवर=बादशाह। राउ=राव के। ऊपरि=ऊपर सहायतार्थ। ऊभि हाथि (मु)=खडे हाथो।

292 वडाळ=बिल्ली के स। मुलियर=मुलक, स्मितहास्य। सिग्घ=अग्नि शिखा के समान। मन पवन=मन और पवन के। जापइ=दौडता है। कि=अथवा। म्रिग्घ=मृग की तरह। द=देकर। अभङ्ग=दुजयी वीर को। लाख हूंत=लाखा स। टाळइ न अग=शरीर नही बचाता है।

293 तोल कन=तोसे खाना वाला। वाजिन=अश्व। जेम=जसा। कहउ=उष्ण, गम मिजाज वाला। वहन=अग्नि के समान। माहणहि=अश्वो म। दीवउ=दीपक। वाग साहि=वरगा धारण करके। थट्ट माहि=सना म।

294 सालउ=शुद्ध। सुवत्ति=भली बात करने वाला। गुणकळा=वेश्या। ठवइ=रखता है। गत्ति=चाल, तरह। बङ्गाळ=यवनो के। सीसि=ऊपर। वावाडि वालि=बाल बांधकर। वाजतइ नोनि (मु)=ढोल क बजते हुए।

295 नाचइ=नाचता है। निटाळ=निश्चित रूप स। नावक=नगारो की। सम्व=ध्वनि के साथ। त्रोडइ जु ताळ=जो ताल जोड कर चलता है। विरत्ति=वीरवर। वगि=सना म। खुरिसाण=यवना के। साहियउ=धारण किया।

296 फरगटइ=तजी स घूमता है। नट्ट जिम=नट की तरह। फुरणी=नथुनो स। घण जेम=बादला की तरह। नोनांत=डालता है। फाळ=फेन। करिय=करेगा। नवशाद राव=राठोड राव।

297 सानुर=अश्व को। कालि=लोह की कडी से। सार=खालकर। असि=अश्व। तीहुव=जैसा उसी तरह। कहव=गम। असवार=सवार है। प्रहसतइ वदनि=विहसत मुख स। पउरिस्मि पूर=पोरुष स परिपूण। कळहणि=लडन म। करूर=क्रूर।

298 हालतइ=चलन हो। त्रि=दा। जोयण=योजन। हग=अश्व। अइराक गेत=इराक की पैदाइश। असिराइ=अश्वराज। अस=पुत्र। झालिय=पकड कर। करिम्माळ=तलवार। सचाळ=सावधान वार।

299 ताजी=अश्व। सचेत=सचेत। हइ=अश्व। जाम=जिसवा। खेत=उत्पत्ति, स्थान। धीताइ=पीछे। हूरेट=देखा। आउधे=शस्त्रो स। वधारण=बढाने। माण=मान सम्मान। वाजिन=अश्व पर। वेवन=शोभित।

300 पाग=वाबाट म। मुघट्ट=सुन्दर। मोनि=मूल्य म। लखिग=एक लाख (मत्पा)। परतखिग=प्रत्यक्ष। जास=जिसव। रवत पखिस=सूय क घोडा के पद का। दे=देकर। पवङ्ग=अश्व का। ऊठतउ=उठते हुए। अणी=सना म। टाळइ न अग=शरीर को नही बचाता है।

301 मारइ=दना है रखता है। त्रिणे नमन=तीन पीढ सुम्म। सूरउ=वीर। नाग=पदार्थ। पाखरि=कवच। पलाणि=काठी कसकर। काळउ पहाड=विकट वीर। वइरां=शत्रुओ का। विधारइ=नष्ट करने।

302 चञ्चल=अश्व। नाळेरउ=नारियल के। सिरि=ऊपर। लस्य=चलता है। रूपक=बनावट, शोभा। जगवेस=सूर्य। रत्थ=घोड़ा की। घातिसइ=डालेगा। कुआरी घड़ा=अविवाहित, सेना पर। घाउ=प्रहार। रिणि=युद्ध में।

303 तुरी=अश्व। साहणां चड्ढ़=अश्वों में श्रेष्ठ। ऊपडी वाग=मुहरी उठत ही। कूदइ=कूदता है। असग=अत्यन्त। मुजि गहिय कूत=हाथों में भाला धारण करके। मारतिय=युद्ध को। भाळ=देखकर। पिह=युद्ध। वईनउ=निर्वाचित किया।

304 जन्या=माता। वह्न=अग्नि। सेवइ=यह। भति=भरता है। वसास=विश्वास। तास=उसका। फूल बोट=तलवार। कुळ लाज=वंश की लज्जा। अजइपुर=अजमेर। काट=दुग है।

305 काळारि=बिल्ली, उल्लू। पवन=तरह। ताजी=अश्व थे। सुकन=कान। निळ=लगाम। रत्थ=सवारी। प्रति=बारे में। छोह=क्षोभ। मन=मन में, मानता है। पदमि=अश्व का नाम। सिहाइ=धारण करके, सहायतार्थ। घण झूसउ=झुझार वृत्ति वाला। भेळण=भिड़ने। मुहर=अग्रिम पंक्ति में। धाव=प्रहार करने।

306 खाफरा=यवनों में। गडग=तलवार। वाहण=चलाने। सखुद्द=सक्रोध। रिणि=युद्ध में। रउद्द=यवनों को। तुरी=अश्व। दीपक=दीपक के समान। चखन=आँखें। नाटारंभि=नृत्य में। नाचइ=नृत्य करता है। सूत मवस=अश्व।

307 वाजिन्न=अश्व। सत्त=सत्वगुणी। तामसी=तमो गुणी। वग्ग=मुहरी में। मन-पवन सरीखउ=मन और पवन के सदृश। जास=जिसका। मग्ग=मार्ग। ऊछजिय=सुशोभित। सार=तलवार से।

308 हालइ=हिलता है। उवरि अम्भ=पेट का पानी। बाहू=भुजाएँ। असोस=पुष्ट। जड्डलग्ग=कटारी। साहि=धारण करके। जङ्गि=युद्ध में। वइरां=प्रतिशोध। वराह=यवनों से। विडङ्गि=अश्व पर।

309 साँवळइ=साक्लों से। सोह=शोभित। अगलउ=अग्रगामी। ऊर=चलने में। पीठे=पिछली आँखें। पट्टाड पूर=तंग खचकर। कड्चिठ=त्वरा के साथ। आरुहिय=चढ़ा। असिस=अश्व पर। अगचिठ=अगस्त्य।

310 वाळिवइ=लगाकर। दूबि=दुमची। पल्लाण=काठी। वंधि=बाधकर। कबूतर लड्डो जिसइ=लकी कबूतर के समान। साहण सिंगार=अश्वों का गहना। पागडइ=रकाब पर। पाउ दे=पैर देकर।

311 खमइ=सहता है। बांधउ=बंधना। ठाणि=ठान पर। असिराइ=अश्वराज। अमोलिक=बहुमूल्य। आणि आणि=ला-ला कर। देवांनउ=दीवान।

जाघइ रेगि=राज जोधा की तरह। दखिम=दिखाकर। दियइ=देता है। सखिस=साक्षी।

312 गुण=प्रत्यञ्चा। एण=मृग न। ग्रीव=गले मे। दळ=सेना म। नक्ख=मुम्म पर। विमल्ही=धरता है। जु=जस। वेस=वेश्या। दीव=धरती है। माटमन=उदार हृदय। कुळि=वश।

313 पाय=पर। लगूळि=बदर के समान। लाइ=रखता है। नाचतइ=नाचने से। भोमि=पृथ्वी। वाजइ=ध्वनित होती है। निहाइ=ध्वनि स। ग्रहि वाग=लगाम ग्रहण करके। गरटु=दृढ। हुउधारे=हो कहने के साथ। पूठि=पीठ पर। हट्ट=हठीला।

314 वाजिन=अश्व। समेचउ=तुल्य। आडी पटाढ=तिरछे। अनत=अत्यन्त। विमाळ=देरी। तरवारी=तलवार से। मळण=भिडने। मेछ=यवनो से। ताळ=युद्ध मे।

315 अस्मि=अश्व। आगी=आगे। निसाण=अश्वो मे। जिम=जैसे। ठवइ=रखती है। पाइ=पर। गति=चाल। पात्र=वेश्या। जुद्धमूळ=लडाई की जड। कवाण=अश्व पर। कविलउ=यवनो का। कलूळ=शत्रु।

316 वरहास=अश्व। नास=नथुनो से। भाचरि=ललाट। विसारि=तोड देता है। पारवर=ध्वजा, सनिष। असि=अश्व। फेरि=चलाने पर। ऊजळइ आसि=उज्वल आशा वाला।

317 अचपळउ=चपल। अउब=आश्चर्य जनक। उरळउ=चौडा। उरद्धि=वृगस्थल। जाणइ=मानो। पइमि=प्रविष्ट होकर। नीसरिय=निकला हो। जुद्धि=युद्ध स। सखिद्ध=सरोष। साहिय खडग=तलवार धारण करके। आसाड सिद्ध=युद्ध म विजय प्राप्त करने वाला।

318 समापइ=देता। मिरि=यवनो को। बत्थ=युद्ध योद्धा। मेकाण=अश्व। सँजाणइ=अच्छी तरह स जानता है। कळह करय=युद्ध किया। समसर साहि=तलवार धारण करके। साऊ=भली। सखोप=अच्छे खानदान वाला। चईनउ=निर्वाचित किया। जड्डि=युद्ध।

319 छोहि=क्रोध म। चविर=परिपूर्ण। फरहरइ=फहरा रही है। फिरियउ=फिरा। फरविर=ध्वज। वाघवाणी=सरस्वती। वखाणि=बखान करती है। वाजिन=अश्व पर। विमाणि=विमान पर।

320 वेग=वग। कूदइ=उछलता है। कुरङ्ग=मृग। झाँपतउ=कुलाँच भरते हुए। टाळइ=दबाता है। भीति=भित्ति स। आवज्जि नहि=वश कर बाँधी। वाजिनि=अश्व को। चईनउ=स्वीकार कर। वहि=युद्ध म।

321 गमथउ रत्तवाइ=वायु के प्रवाह की तरह। पायाळ=पाताल। ध्रिमइ=ध्वनित होता है। जइ=जिसकी। ताम्प पाइ=परों के चलने स। तुखार=घोडा। मळेवा=मर्दन करन।

302 मच्छल=अश्व। नाळरउ=नारियल में। सिरि=ऊपर। चलय=चलता है। रूपक=बनावट, शोभा। जगवस=सूय। रत्थ=घोड़ा सी। घातिसइ=डालता। कुआरी घड़ा=अविवाहित, सेना पर। घाउ=प्रहार। रिणि=युद्ध म।

303 तुरी=अश्व। साहणी चम्म=अश्वा म श्रेष्ठ। उगटो वाग=मुहरी उठते ही। कूदइ=कूदता है। अलग=अत्यन्त। गुजि गहिय कुंत=हाथो म भाला धारण करके। भारथि=युद्ध को। भाळ=देखकर। पिढ=युद्ध। चईनउ=निर्वाचित किया।

304 जम्पा=माता। वह्नि=अग्नि। सेवइ=वह। अति=करता है। वसास=विश्वास। तास=उसका। कूप कोट=तलवार। कुळ लाज=वश की लज्जा। अजइपुर=अजमेर। कोट=दुर्ग है।

305 काळारि=बिल्ली, उल्लू। पकम=तरह। तापी=अश्व म। सुकान=चाल। निळ=लगाम। रत्थ=सवारी। प्रति=बारे म। छोह=क्षोभ। मान=मन मे, मानता है। पदमि=अश्व का नाम। सिहाइ=धारण करके, सहायताय। घण घूमड=घूमार वृत्ति वाला। भेळण=भिडने। मुहर=अग्रिम पंक्ति म। घाय=प्रहार करो।

306 साफरा=यवना म। खडग=तलवार। वाहण=चलाने। सत्रुद्द=सक्रोध। रिणि=युद्ध म। रवद्=यवना को। तुरी=अश्व। दीपक=दीपक के समान। चक्ख=आँखें। नाटारभि=नृत्य म। नाचइ=नृत्य करता है। सूत नकन=अश्व।

307 वाजि न=अश्व। सत्त=सत्वगुणी। तामसी=तमो गुणी। वग=मुहरी म। मन-पवन सरीसउ=मन और पवन के सदृश। जास=जिसका। मग्ग=माग। ऊछाँगिय=सुशोभित। सार=तलवार से।

308 हालइ=हिलता है। उवरि अम्भ=पेट का पानी। वाह=भुजाए। असोग=पुष्ट। जडलग=कटारी। साहि=धारण करके। जङ्गि=युद्ध म। वहरां=प्रतिशोध। वराह=यवना स। विहङ्गि=अश्व पर।

309 सांवळइ=सांवलो स। सोह=शोभित। अग्गलउ=अग्रगामी। ऊर=चलने म। पीडे=पिछली जाँघें। पट्टाड पूर=हाथ खींचकर। चडच्छि=त्वरा के साथ। आरुहिय=चढा। असि=अश्व पर। अगच्छि=अगस्त्य।

310 चाळियइ=लगाकर। टूबि=दुमची। पल्लाण=काठी। वंध=बाधकर। कबूतर लड्डी जिसइ=लकी कबूतर के समान। साहण सिंगार=अश्वा का गहना। पागडइ=रकाब पर। पाउ दे=पर देकर।

311 खमइ=सहता है। वाघउ=बधना। ठाणि=ठान पर। असिराइ=अश्वराज। अमोलिक=बहुमूल्य। आणि आणि=ला ला कर। देवानउ=दीवान।

आपइ रेसि=राव जोधा की तरह। दखिम=दिखाकर। दियइ=देता है। सखिग=साक्षी।

2 गुण=प्रत्यञ्चा। ध्रण=मृग के। ग्रीव=गले में। दळ=सेना में। नवग=सुम्भ, पर। विमल्ही=धरता है। जु=जसे। वेस=वेश्या। दीव=धरती है। माटमन=उदार हृदय। कूठि=वश।

13 पाघ=पर। लगूळि=बन्दर के समान। लाइ=रखता है। नाचनइ=नाचने से। भोमि=पृथ्वी। वाजइ=ध्वनित होती है। निहाइ=ध्वनि से। ग्रहि वाग=लगाम ग्रहण करके। गरट्ठ=दर्प। हुउकारे=हो कहने के साथ। पुठि=पीठ पर। हट्ठ=हठीला।

14 वाजित=अश्व। समेबउ=तुल्य। आडो पटाइ=तिरछे। अनन्त=अत्यन्त। विमाल=देरी। तरवारी=तलवार से। मेळण=मिलने। मेछ=यवनों से। तीळ=युद्ध में।

15 हसिम=अश्व। आगी=आगे। निसाण=अश्वों में। जिम=जैसे। ठवइ=रखती है। पाइ=पर। गति=चाल। पात=वेश्या। जुद्धमूळ=लड़ाई की जड़। केकाण=अश्व पर। कविलउ=यवनों का। कलूळ=शत्रु।

316 वरहाम=अश्व। नास=नथुनों से। वाचरि=ललाट। विखारि=तोड़ देता है। पारवड=ध्वजा सनिक। असि=अश्व। फेरि=चलाने पर। ऊजळइ थासि=उज्ज्वल आशा वाला।

317 अपपळउ=चपल। अउव=आश्चर्य जनक। उरळउ=घोडा। उर्रद्धि=वृक्षस्थल। जाणइ=मानो। पइसि=प्रविष्ट होकर। नीसरिय=निकला हो। जुद्धि=युद्ध से। सखिद्ध=सरोष। साहिय खडग=तलवार धारण करके। आगाढ सिद्ध=युद्ध में विजय प्राप्त करने वाला।

318 समापइ=देता। मिरि=यवनों को। कत्थ=युद्ध घोसा। केकाण=अश्व। सँजाणइ=अच्छी तरह से जानता है। कळह करय=युद्ध करता। समसेर साहि=तलवार धारण करके। साऊ=भली। सखोप=अच्छे खानदान वाला। पईतउ=निर्वासित किया। जङ्गि=युद्ध।

319 छोहि=क्रोध में। घात्रि=परिपूर्ण। फरहरइ=फहरा रही है। फिरियउ=फिरा। फरकि=ध्वज। वाग्वाणी=सरस्वती। वखाणि=बखान करती है। वाजित=अश्व पर। विमाणि=विमान पर।

320 जेम=जग। कूदइ=उछलता है। कुरङ्ग=मृग। प्रीयतउ=कुदान करते हुए। टाळइ=बचाता है। भीति=भित्ति से। आवन्जि नद्दि=कस कर बांधी। वाजिन=अश्व को। पईतउ=स्वीकार कर। वद्दि=युद्ध में।

321 समेवउ रत्यवाइ=वायु के प्रवाह की तरह। पायाळ=पाताल। द्रिमइ=ध्वनित होता है। जद=जिसकी। हाम्प पाइ=पैरों के थमने से। तुखार=घोडा। मडेवा=मण्डन करना।

302 पञ्चल=अश्व। नाळरउ=नारियल का। सिरि=ऊपर। नलत्थ=पलता है। रूपक=बनावट, शोभा। जगवस=सूय। रत्थ=घाणे सा। पातिराइ=हालेगा। कुमारी घडा=अविवाहित, सारा पर। पाउ=प्रहार। रिणि=युद्ध म।

303 तुरी=अश्व। साहणां चड्ड=अश्वो म श्रेष्ठ। ऊपडी वाग=मुहरी उठत ही। कूदइ=कूदता है। अलग=अत्यन्त। मुजि गहिय कुत=हाथो म भाला धारण करक। मारत्थि=युद्ध को। भाळ=देखकर। पिठ=युद्ध। थईनउ=निर्वाचित किया।

304 जन्या=माता। वहन=अग्नि। तवइ=वह। करति=करता है। वसास=विश्वास। तास=उसका। कूप खोट=तलवार। कुळ साज=वश की सज्जा। अजइपुर=अजमेर। कोट=दुग है।

305 काळारि=बिल्ली, उल्लू। पकन=तरह। ताजी=अश्व प। सुजान=ज्ञान। निळ=लगाम। रत्थ=सवारी। प्रति=बारे मे। छोह=क्षोभ। मन=मन मे, मानता है। पदमि=अश्व का नाम। सिहाइ=धारण करके, सहायताथ। पण सूसउ=सूसार वृत्ति वाला। भेळण=भिडने। मुहर=अग्रिम पंक्ति म। घाव=प्रहार करने।

306 हाफरा=यवनो मे। खडग=तलवार। वाहण=चलाने। सधुद्द=सन्नोध। रिणि=युद्ध म। रउद्द=यवनो को। तुरी=अश्व। दीपक=दीपक के समान। चक्ख=आँखें। नाटारभि=नत्य म। नाचइ=नत्य करता है। पूत नवग=अश्व।

307 वाजिन=अश्व। सत्त=सत्वगुणी। तामसी=तमो गुणी। वग्ग=मुहरी म। मन-पवन सरीखउ=मन और पवन के सदृश। जास=जिसका। मग्ग=माग। ऊछजिय=सुशोभित। सार=तलवार से।

308 हालइ=हिलता है। उदरि अम्भ=पेट का पानी। वाह=भुजाए। मसोरा=पुष्ट। जडलग्ग=कटारी। साहि=धारण करके। जङ्गि=युद्ध म। वइरा=प्रतिशोध। वराह=यवनो से। विहङ्गि=अश्व पर।

309 साँवळइ=साकलो स। सोह=शोभित। अग्गलउ=अग्रगामी। ऊर=चलने म। पीठे=पिछली जाघें। पड्डाढ पूर=तग खचकर। कडच्छि=त्वरा के साथ। आरुहिय=चढा। असि=अश्व पर। अगच्छि=अगस्त्य।

310 वाळियइ=लगाकर। टूबि=दुमची। पल्लाण=काठी। कधि=बाधकर। कब्बूतर लड्डी जिसइ=लकी कबूतर के समान। साहण सिंगार=अश्वो का गहना। पागडइ=रकाब पर। पाउ दे=पर देकर।

311 खमइ=सहता है। वांधउ=बधना। ठाणि=ठान पर। असिराइ=अश्वराज। अमोलिक=बहुमूल्य। आणि-आणि=ला-ला कर। देवांनउ=दीवान।

352 लाखीक=यशस्वी के। मुक्खि=मुह मे। दी हुत=दी। लगाण=लगाम। पडछी=झूल। मांडिय=कसी। तांणियउ=खचा। तङ्ग=काठी के कसने की पट्टी। उरि=वक्ष पर। ताण ताणि=खच खेंचकर कसी। सीरम्म गांठि=इसी नाम की गांठ। सपाणि=मजबूती के साथ।

353 उरि=वक्ष पर। फेरि=फिरा कर। सब ध=अच्छी तरह बांधकर। चञ्चळ=अश्व। मुहि=मुख पर। चउँर चाहि=चवर चढाया। छडावण=छुडाने के लिए। मारुवाडि=मरुप्रदेश को।

354 पाखरा=रकावें। विहूँ पासि=दोनो ओर। वाखरे=अश्व के कवचादि से। वानी=शोभा। ग्रहासि=अश्व के। खइगरु=अश्व पे। ढळी=बिछाई गई। चहुपासि=चारो ओर। खोळ=एक प्रकार का झल। रणवाखर=अश्व की सजावट के सामान। घूघर=घुघरुओ की। रगिय=बजी। रोळ=ध्वनि।

355 सण्ठविय=बांधकर। गळइ=गले मे। गजगाह=अश्वो का वस्त्र विशेष। मिरख=चोटी। वागुलि=चमगादड। कि=मानो। डालि=शाखा पर। विलम्बी=लटकती है। ग्रिक्ख=वृक्ष की। ढाल कजि=चाल चलाने के लिए। धडघडउ=बजाया। ढोइ=निकट। तोइ=उसका। रहइ=रहा है। कउतिग=कौतुक। जोइ=देख रहा है।

356 परठियउ=रखा। प्राण=शक्ति के साथ। पागडइ=रकाव पर। रेवन्त=अश्व पर। चउँडाहर=राव चूडा के वशज। चक्रवत्ति=चक्रवर्ती के समान। जाण=मानो। पङ्खपत्ति=गरुड पर।

357 छत्तीस=शासक। डाबि=दबाकर। असि=अश्व को। छोहि=सरोष। विढण लोहि=शस्त्रो द्वारा लडने के लिए। रेवन्त=अश्व पर। चम्पेवि=दबाकर। रग=रान को। वधि=बढकर। वोमि लग्ग=आकाश तक जा लगा।

358 उपाडि दम्म=लगाम उठाकर। सह्वावि=फेरा। असिस=अश्व को। पाटपति=शासक। प्रहस्सि=स्पर्श करेगा। कमाण=अश्व को। कप्पि=बन्दर। घोर हथ=फुर्तीले हाथों वाले। हइ=अश्व का। कम्पि=कप। थप्पि=थपथपाये।

359 उन्द गिरि=उदयाचल पर। जेम=जैसे। आदीत=सूर्य। ओपि=सुशोभित होता है। कूमनो सामी=पृथ्वी पति। आरुहिय=चढा। गइवरां=हाथियो। ऊतरइ=उतरेगा। थाट=थप। रुट=जबरदस्त।

360 तरवां=यवनों। तखिकर=सप। सिरि=ऊपर। पाण=हाथ। तप्प=उत्ताप से। पह=राव। गरुड=गरुड बनकर। देसी=देगा। झडप्प=झपट। मइगळ=हस्ती। खारे=तलवार से। सग्रामि=युद्ध म। भांजइ=नष्ट करेगा। सनेह=धीरे धीरे।

342 तुरी=अश्व । ताजी किलम्म=ताजिक स्थान का । कलम=उत्पत्ति । सम्ब=सम(ताल पर)सुम्म । जाणइ=जानता है । सरम्म=नृत्य करना । विलहिय=चक्कर । मंडण=मण्डन, शोभा । सबइ थट्ट=सभी सेना में । प्रगट्ट=सुप्रसिद्ध ।

343 विलहिया=लिए, चढ़े । राजवश=राजकुल के । हइमरां=अश्वों । भड़ां=सुभटों की । हमस=ध्वनि । जइ जिसउ=जो जैसा है । तइ=उसे । दीहू=दिया । जाणि=समझ बूझकर । पाटरइ=पाट का । पवंग=अश्व । पण्डव=अश्व रक्षक । पलाणि=कसेंगे कसने लगे ।

344 दळ=पृथ्वी । आरति=दुःख । जर=धन । मावति=अश्व । आणउ=लाया गया । पटहोड्उ=अश्व को । पण्डवा=सईशों ने । पलाणउ=कस कर तयार किया । मोर थळा=मयूर के छत्र । भ्रिगसाखा=बन्दर । मन=मानो । कूकड=कुक्कुट । काकअरि=उल्लू से । कन्ने=कान ।

345 कालम्म=बिल्ली के से । कन्न=कान । रेवन्त=अश्व । दीव=दीपक के समान । रतन=आँखों को । पाणेण=हाथ से । पियइ=पीता है । मोय=नथुनों से । धुरि=प्रथम । वालि=लोटाकर, डाल कर । संघ=साथ में भाग में ।

346 पछी=अश्वमूल पुठी के पीछे का भाग । गतुच्छ=छोटा । पीडे=जाघें । खण्डरइ=तोड़ देता है । आँठू=वश में । भीति खण्ड=भीत के खण्डों को । पूछी=दुमची । तउच्छ=छोटी सी । सत्थोर=फुर्तीले । परम=पर । वाजिन=अश्व । विछोहइ=तितर बितर करेगा । मिरी=यवनों की । वग्ग=सेना ।

347 पाण्डये=सईश । केकाणि=अश्व के । पासि=निकट । वाई=बजाई । धरति=पृथ्वी । पाअ=पैरा से । ग्रहासि=अश्व ने । वखेलि=देखकर । पळाइ=छत्र । किधइ=किये हुए । मिगोर=मयूर के समान ।

348 सोहारि=सुधार कर छिनक कर । नाम=नथुने । काढि घास=घास निकाल कर । अति=अश्व । ओरी अयास=आकाश की ओर आवेगा । लगूळ=पूछ । फेरियउ=फिराई । अङ्ग=शरीर पर । पण्डवां=सईशो ने । हाथि=हाथ में । नाय=नहीं आता है । पवङ्ग=अश्व ।

349 रेवन्त=अश्व । भणइ=कहता है । हुन्म=हमि । तउ=तो । आप आउ=आप स्वयं आइए । सूरिज वंश=सूर्यवंशी की । सांभळि=सुनकर । समत्थ=सभी ।

350 वसि=कुन्त । भूर=भूप का । मू=मरा मैं । वीरं=राव बीका का । तेजे=भाले से । संघ=प्रहार । धातउं=डालूंगा । निसोव=नजीर । वरताविय=धणन किया । राइ=राव ने । हाकलि=ललकार कर । ग्रहाम=अश्व का । नठहिय=निश्चय के साथ । तुरी=अश्व ने । नित्र्यो भाग=नथुन फुलाय ।

351 केतकिय=विश्वास में लेकर । सोमळा पत्त=बारता सुनकर । सारसर=सईस । पन्व=पीव । मूंदिय=मन्द गिद फिरे । सपत्त=अश्व को । मुहरउ=मुहरा । उतारि=उतार कर । ताजी=अश्व के । मुहाइ=मुंह पर से । पइर ग=पैरों से बधन । परा किया=दूर किए । पगाइ=पैरो से ।

राव। उरि=इधर की ओर। करिय=करके। घूस=सेना को। मचकियउ=तत्पर हुआ। लेय=लेकर। काळउ=बरवीर। मजूस=तलवार।

370 धार=तलवार। सज=लेकर। करिय=की। सार=ध्यान पूर्वक सम्हाल। हिलिया=सम्मिलित हुए। हुरमार=अश्वों की। हींस=ध्वनि। हहँवर=अश्वों की। हुलाद=ध्वनि। रवद्दाँ=यवनों के। सिरि=ऊपर।

371 पनर=पन्द्रह। समत=सवत्। अेकाणव=एकानवे। पवगरि=कवचित हुए। पुणि=पुन। मागसिरि=मार्गशीर्ष। प्रथम पखि=कृष्ण पक्ष। पुवरि=नरश्रेष्ठ। हठमल=वीर राव। हद्दवद्द=बादशाह। सउँ=से। विढियउ=लड़ा। चउथि=चतुर्थी। सिनिवारै=शनिवार को।

372 बळिदनि=बलवानों। वावाहि=कहकर। ढोइया=निकट पहुचे। थाट=सेना। धाजतइ=बजते हुए। आरम्भ राम=युद्ध मे राम के समान। अति=यहाँ, बहुत। आवियउ=आया। मोर सिरि=यवन के ऊपर। आधरत्ति=अर्द्ध रात्रि के समय।

373 घूघाहर= राठोड राव न। सामी=सम्मुख। ढोई=पहुचाया। हद्दवद्द दळि=बादशाह की सेना म। हाइ होइ=ओ हाय=ओ हाय। जम्पिय=कहा। मुहाह=मुख से। ताह=तब।

374 ताणिय=तान। कमाण=धनुप। कन्नाउ=कानों तक। सूग=वीरो ने। बाणाउळि=वाणो के प्रहार से। कढिय=उडी। सोहि बूग=रक्त धारा। जइराम=ज राम। हिन्दु जणेहि=हिन्दुओ ने। घातिया=डाले। ताम=तभी। घणहि=सेना म।

375 रौळि=बजाइ। रेवत=अश्वों की। राघ=ध्वनि। विच्छूट=छूटा हो। सद्दूली=शार्दूल से। वग्घ=बाघ। हुलतइ धरोहि=उठते ही। मापइ=ऊपर। असि=अश्वों को। मारुअेहि=मरुवासियो ने।

376 चरकोइय=प्रकट हुई। तेजी=अश्वों की। विज्ज=विजली। माइअे=माइयो ने। भेळा=एकत्र। मडिज्ज=अश्वों को। राघ वागाँ सँमोहि=रान और लगाम सम्हाल कर। लोसियउ=फेंका। सामहद=सम्मुख। सोहि=शस्त्रो से।

377 साङ्गामि धरि=युद्ध में धय धारण करने वाले। सामहद=सम्मुख। सार=तलवार के। मल्हियउ=सम्मिलित किया, छोडा। मागर=सेना में। मझारि=मध्य। मच्चावि जङ्ग=युद्ध मचा कर। अम्मली माणि=स्वाभिमानी। टाळिय=बचाया। अङ्ग=शरीर को।

378 रेवत=अश्व। घातियउ=डाला। नव सहम धणी=राठोड राव। क्रम्नह=राव लूणकरण को। नियाइ=तरह। खेड रइ राइ=खेड का राव। सोहणि=

361 रामण=रावण। मुगुल्ल=मुगल बादशाह। सह्वरइ=सहार करेंगे। दइत=यवनो का। हुइसी=होगा। सँग्राम=युद्ध। असपत्ति=बादशाह। उअहै=समुद्र। अगतिय=अगस्त्य। सोखसी=सोखेगा। सत्र=शत्रुओं को। करिमाळ=तलवार। सतिय=सेना।

362 कटक=सेनाएँ। त्रौंबक=नगारे। धाळ=बजे। वेढिसी=लडेगा। विमाळ=देर। असराळां=अत्यंत। ताजी=अश्व। ऊमगेरि=उमगित हो रहे हैं। पनगो नेस=शेष का गृह। पगेहि=परो से।

363 नीसाण=नगारे। वाजि=बजे। नरगा नफेरी=युद्ध वाद्य। रउद्द गति=अत्यन्त तेजी के साथ। हउडो=हुडी। मरहरी=बजी। हालिया=चली। ममत=ममत्व मस्त होकर। साइयर=सागर। जाणि=मानो। फाटा=फटे हों। सपत=सातों (संख्या)

364 मळ=मद। वाजिय=बजा। तुरिया=अश्वों की। बाजि=बजी। मास=महीने। पयाळ=पाताल। पाऐ=परों से। त्रहास=अश्वो के। जङ्गमां जोळ=अश्व समूह। कंपियउ=थर्राया। सेस=शेषनाग। कूरम=कच्छप। कोळ=वराह।

365 अडलग्ग=कटार। फरी=युद्धास्त्र। खडखडइ=बज रही है। जोड=संधियाँ। पटहोडां=अश्वो के। पूरि पोड=घोडों का प्रवाह। ऊर्क घ=घडकर। असुर रइ=यवनो की। सिलहगार=शस्त्राधिपति। सदाइ=अवसर से।

366 कामाळ=अश्व की। पूठि=पीठ। छोडिय=छोड। कँठाळ=सिंह ने। दइ=दी। जीणसाउ=अश्व कवच। दरपण=दर्पण के। सवतरीह=बढ़िया। पटहोड=अश्वो के। घातिय=डाले। पक्खरीह=कवच।

367 घगतरां=कवचो से। हईथल=दस्ताने। जानवद=रान का कवच। पूरा=पूर। सनाह=कवच। पहिरइ=धारण करते हैं। सनद्ध=तैयार होकर लगकर। विढिवा=लडने के लिए। नर=वीर। हुअ=हुए। अउर त्रनि=और ही वर्ण के। किरि=मानो। पहिरी=धारण की हो। मुद्राकन्नि=नाभो से।

368 छत्रडी जरह=छ कड़ियों वाला कवच। सउ=से। अङ्ग=शरीर। छाइ=आच्छादित करके। रोपियउ=धारण किया। टोप सिरि=सिर पर टोप। पहरि=पहिना। रङ्गा वळोय=रानो का कवच। सज सइ=सजाये। करि=हाथो मे। हायळ=दस्ताने। सङ्कळीय=पहने।

369 ताजी तुरङ्ग=ताजी जातीय अश्व का। ताणय तङ्ग=तंग खींच कर। जिपिवा=जीतने। आरुहि=चढा। अभङ्ग=अपराजेय वीर। घूघहर राउ=राठोड

राव । उरि=इधर की ओर । करिय=करके । घूस=सेना को । मचक्कियउ=तत्पर हुआ । लेय=लेकर । काळउ=बरबीर । मजूस=तलवार ।

370 धार=तलवार । सज=लेकर । करिय=की । सार=ध्यान पूवक सम्हाल । हिलिया=सम्मिलित हुए । हुरमार=अश्वों को । हीस=ध्वनि । हइँवर=अश्वों की । हुलाउ=ध्वनि । रउद्रा=यवनों के । सिरि=ऊपर ।

371 पनर=पन्द्रह । समत=सवत् । अेकाणव=एकानवे । पक्खरि=कवचित हुए । पुणि=पुनः । मागसिरि=मार्गशीर्ष । प्रथम पखि=कृष्ण पक्ष । पुवरि=नरखण्ड । हठमल=वीर राव । हइवइ=बादशाह । सउँ=से । विढियउ=लड़ा । चउथि=चतुर्थी । सिनिवारे=शनिवार को ।

372 बळिवंति=बलशाली । वावाडि=कहकर । ढोइया=निकट पहुंचे । थाट=सेना । बाजतइ=बजते हुए । आरम्भ राम=युद्ध में राम के समान । अति=यहाँ, बहुत । आवियउ=आया । मीर सिरि=यवन के ऊपर । आधरत्ति=अर्द्ध रात्रि के समय ।

373 घूधाहर=राठौड़ राव ने । सामी=सम्मुख । ढोई=पहुंचाया । हइवइ दळि=बादशाह की सेना में । होइ होइ=ओ हाय=ओ हाय । जम्पिय=कहा । मुहाह=मुख से । ताह=तब ।

374 ताणिय=तान । कमाण=धनुष । कन्नाळ=कानों तक । सूर=वीरों ने । बाणाउळि=बाणों के प्रहार से । ऊडिय=उड़ी । लोहि पूर=रक्त धारा । जइराम=जैराम । हिंदु जणेहि=हिंदुओं ने । घातिया=डाले । ताम=तभी । घणहि=सेना में ।

375 रोळि=बजाई । रेवंत=अश्वों की । रव=ध्वनि । विच्छूट=छूटा हो । सद्धली=साकल से । वग्घ=बाघ । हुलतइ प्रगेहि=उठते ही । मायइ=ऊपर । असि=अश्वों को । मारुअेहि=मरुवासियों ने ।

376 परकोइय=प्रकट हुई । तेजी=अश्वों की । विज्ज=बिजली । माइअे=माइयों ने । भेळा=एकत्र । मडिज्ज=अश्वों की । राग वागां सँमोहि=रान और लगाम सम्हाल कर । सांसियउ=फेंका । सामहइ=सम्मुख । लोहि=शस्त्रों के ।

377 सङ्ग्रामि धरि=युद्ध में धैर्य धारण करने वाले । सामहइ=सम्मुख । सार=तलवार के । मल्हियउ=सम्मिलित किया, छोड़ा । मागर=सेना में । मझारि=मध्य । मच्चावि जङ्ग=युद्ध मचा कर । अम्मली माणि=स्वाभिमानी । टाळिय=बचाया । अङ्ग=शरीर को ।

378 रेवंत=अश्व । घातियउ=डाला । नव सहस घणी=राठौड़ राव । कमहु=राव लूणकरण को । नियाइ=तरह । खेड़ रइ राइ=खेड़ का राव । लोहणि=

सेना। सधार=यवनो की। छोयउ=प्रवेश कराया। वाजती धार=शस्त्रों की धार के बजते हुए।

379 दळि दाणवि=यवनो की सेना का। दीठ=देखा। नैठाहि=निश्चित होकर। धीरि=धैर्य के साथ। नाखिय=डाला, चलाया। निश्रीठ=भाले का। हुविय हुवर=कोलाहल होने लगा। करिमाळ=तलवार। वाजि=चली। काळवि=कोलाहल हुआ। कटक्क=सेना में।

380 पढियाळ=तलवार। घूणि=चलाकर। पउरिसि पूरि=पौरुष से परिपूर्ण। गाजणइ तणइ=यवनो के। पइठउ=प्रविष्ट हुआ। गहरि=गर्वीला। खुरिसाण=यवनो को। विवाणे=चलाये। सेहर=राठौड़ो ने। खाग=तलवार से। वाजिया=बजे। घाउ=प्रहार। वजागि=वज्राग्नि।

381 खाफरां=यवनो पर। वाहइ=चलाता है। खड्ग=तलवार। वासदे=अग्नि। जाण=मानो। वन=जंगल में। विलग्ग=लगी हो। ऊतरा तनि=यवनो की सेना मे। अबीह=निर्भय। सींधरे=हाथियो में। पईठउ=प्रविष्ट हुआ हो।

382 कूमाथळ=कपोल स्वरूप। भाजइ=तोड़ते है। मीर=यवनो के। ठकुरक=ढेर। चढइ=शोधा वत हुआ। अनिख घ=अपार, अनगिनती। आयुधि=शस्त्रो से। टोपि=टोपो पर। ऊभरी=प्रकट हुई। अगिन=अग्नि। खीटिया=नष्ट किया। थाट=सेना को। बेबे=दोनो। खड़गि=तलवारों से।

383 गहगहिय=गौरवान्वित हुए। थाट=सेनाएँ। गरीठ=भारी, अत्यन्त। राठउडि=राठोडो। रउद्रि=यवनो के मध्य। वाजियउ=बजी। रीठ=शस्त्रों की झडी। सधीर=धैर्यवान्। थाज=लडते हैं। पढिकाळे=तलवारों से। ऊडइ=उडते हैं। जिरहपोस=अश्व कवच।

384 रिम्मराहु=शत्रु के लिए राहु स्वरूप। सहुरई=सहारे जाते हैं। मीर=यवन। सहिता=सहित। सनाह=कवच। जरदाउळि=कवच। सेल=भालों की। जीह=अणी से। अरिउरे=शत्रुओ में हृदय में। अणी=नोक। ठेलइ=घुसा देते हैं। अबीह=निर्भय वीर।

385 घण=अयस घन के समान। घाइ=प्रहारों से। मुगल्लां=यवनों के। धडिय=घडे टूटे। घट्ट=शरीर। रहचिवा=भिडने के लिए। थट्ट=सेना में। आहरट्ट=ध्वनि। सेलार=अश्व। सहइ=सहते हैं। सार=तलवारें। भभार=प्रहार से। पट्ट=नष्ट होते हैं। पहार=पहाड, प्रहार से।

386 ताइयां तणे=शत्रुओं के शरीर पर। वाजइ=बजती है। तियग्ग=तलवार। गात=शरीर। हूता=से। अनग्ग=किनारे। विढइ=लडते हैं। रिणि रस लुद्ध=युद्धरस लुब्ध। सारे=तलवारो से। बिबिसुद्ध=बेसुध, अचेत।

387. अइराकि=ऐराकी। अणी=सना में। पाया=पर। अठाहि=रहते हैं। वाहइ=चलाते हैं। खडग=तलवार। वेसे=आयु से। विरत्त=विरक्त होकर। रिणठाह=युद्ध स्थान पर। रत्त=रक्त। आवद्ध रत्त=शस्त्रों में अनुरक्त।

388 रउद्र दळ=यवन सेना म। रहच्चइ=सहार करता है, भिड रहा है। होहू=हुआ हो। कि=मानो। मेह=बरसा। बाजइ=बजती हो। हुलाउ=वर्षा कालीन शीत पवन। ताइयाँ=शत्रुओं के। उरे=वक्ष मे। धइ=देता है। कुंत=भाले से। तेहू=झलझिलना। मारअउ राउ=माद राव है। मातउ=मचा।

389 घड़हड़=जोर से बजने पर। धजइ=कम्पायमान होती है। धरत्ति=पृथ्वी। पडियालगि=तलवार स। वरसइ=बरस रहा है। खेडपत्ति=माद राव। वीकाहर=राव वीका क वशज। इंद=इन्द्र। वग्गि=सेना मे। खाफरां सिरे=यवनों पर। खिवियां=चमकीं। खडग्गि=तलवारें।

390 फउज=सेना की। फूर्ग त=टूट रही है। पाळ=पद्य, मर्यादा। ब्रह्मण्ड=ब्रह्मण्ड स्वरूपी। गाजइ=गज रहा है। विचाळि=मध्य। अम्बहर=मेघ स्वरूप। अवार=निरतर। घुड़ किया=गरजी। मीर मुहि=यवनों पर। खग=तलवार रूपी। धार=धाराएँ।

391 सार=तलवार रूपी। मेछ=यवन। सहइ सकि=सह सकते हैं। करिमाळ=तलवारों स। काह=कहर। पडियउ=पड़ा। कटकि=सेनामें। धूघहर=राठौड राव के। वरसतौ=बरसत हुए। धन धन=धन्य धन्य। गुरिजा=गुर्जो की। निहाइ=ध्वनि से। वाजइ=बजता है। गिगन=आकाश।

392 खुरिसाण सीसि=यवनों पर। वाजइ=बजती है। खडग्ग=तलवार। ऊभरन=प्रकट होता है। बूर=बुरादा। आकासि=आकाश। लग्ग=तक। बढती=उड़ते हुए। विलम्बर=भिडते हैं। वास वार (मु)=शीघ्रता से। घडसिया=त्वरा के साथ गिरने लगी गरजी। मीर मुहि=यवनों पर। खग धार=तलवार की धारें।

393 मरन्यिा=मदन किया। जगमलन मल्ल=जगमाल मानावत। ढण्ढोळि=बजाकर। ढम्र=ढोल। मारिय=मारा। मुगुल=मुगलो को। रळनळ=फल रहा है। रत्त=रक्त। सोसइ=सोख रही हैं। सपत्त=सातों जोगनियाँ। सम्भळइ=सुनत हैं। सत्त=वीरता-पूवक लड़ना। विसयरइ=फल रहा है। वत्त=सुयश वार्ते।

394 अणिजे=सेना में। असत्त=योगिनियाँ। पूरिया=पूण किये। पत्त=पात्र। तिम=वसे। छडइ=छूटते हैं। गत्त=शरीर को। साळि=चावल को।

सेना। खग्गार=यवनो की। ढोयउ=प्रवेश कराया। बाजतौ धार=ध
धार के बजते हुए।

379 दळि दाणवि=यवनो की सना म। दीठ=देखा। नेठाहि=निश्चित रू
धीरि=धय के साथ। नांखिय=डाला, चलाया। निशीठ=भाले को।
हुबर=कोलाहल होने लगा। करिमाळ=तलवार। वाजि=चली। फाठ
कोलाहल हुआ। कटक्क=सना मे।

380 पडियाळ=तलवार। घूणि=चलाकर। पउरिसि पूरि=पौरुष से परिपू
गाजणइ तणइ=यवनो के। पइठउ=प्रविष्ट हुआ। गहरि=गर्वीहि
तुरिसाण=यवनो को। विवाणे=चलाये। सेड=राठौडो ने। खाग=तल
से। वाजिया=बजे। घाउ=प्रहार। व्रजागि=वज्राग्नि।

381 साकरौ=यवनो पर। वाहइ=चलाता है। सहग्ग=तलवार। वासदे
अग्नि। जाण=मानो। वन=जगल म। विलग्ग=लगी हो। ऊतरा राणि=
यवनो की सेना म। अबीह=निभय। मीघरे=हाथियों म। पईठउ=प्रविष्ट
हुआ हो।

382 कूभाथळ=कपोल स्वरूप। भाजइ=तोडते है। मीर=यवनों के। ऊकुरड=
ढेर। चडइ=क्रोधान्वित हुआ। अनिब थ=अपार, अनगिनती। आविद्ध=
शस्त्रों से। टोपि=टोपो पर। ऊभरी=प्रकट हुई। अग्गि=अग्नि। लीटिया=
नष्ट किया। थाट=सेना को। बेवे=दोनो। खडग्गि=तलवारो से।

383 गहगहिय=गौरवान्वित हुए। थाट=सेनाएँ। गरीठ=भारी अत्यन्त।
राठउडि=राठौडो। रउद्रि=यवनो के मध्य। वाजियउ=बजी। रीठ=शस्त्रों
की झडी। सधीर=धयवान्। भाजइ=लडते हैं। पडिकाळ=तलवारो से।
ऊडइ=उडत हैं। जिरहपास=अश्व कवच।

384 रिम्मराह=शत्रु के लिए राहु स्वरूप। सझ्झरई=प्रहार करते हैं। मीर=यवन।
सहिता=सहित। सनाह=कवच। जरद्दाउलि=कवच। सेल=भालो की।
जीह=अणी से। अरिउरे=शत्रुओ म हृदय म। अणी=नोक। ठेलइ=घुसा
देते हैं। अबीह=निभय वीर।

385 घण=अयस घन के समान। घाइ=प्रहारों से। मुगल्लां=यवनों के। पडिय=
पडे टूटे। घट्ट=शरीर। रहचिवा=भिडने के लिए। थट्ट=सेना म।
आहरट्ट=ध्वनि। सेलार=अश्व। सहइ=सहते हैं। सार=तलवारें। भमार=
प्रहार म। पट्टे=नष्ट होते हैं। पहार=पहाड, प्रहार से।

386 ताइयां तणे=शत्रुओ के शरीर पर। वाजइ=वजती है। तियग्ग=तलवार।
गात=शरीर। हुता=स। अलग्ग=किनार। विढइ=लडते हैं। रिणि रस
लुद्द=युद्धरस लुब्ध। सारे=तलवारों स। विविसुद्ध=बेसुध, अचेत।

जिम्=जसे । सस=शत्रुओं को । राठउड राह=राठौड़ो का राव । साह=बादशाह । गळबाह घाति=गले में बाँहें डालकर । भांजइ=नष्ट हैं । गडाह=पत्थर के गोलो से ।

395 रवखडइ=इधर उधर उछल रहे हैं । रुण्ड=मस्तक । गाडि=तलवार। विखण्ड=कटे हुए । ताजियाँ=अश्वो के । तुण्ड=सिर । सइधणी= भोमि=पृथ्वी प । वाहरु सीत (मु)=राजा रामचन्द्र की तरह । देवता रा देव स्वरूप राव । पाडइ=मारते हैं । दईत=दैत्य रूपी कामरा को ।

396 स्री राम=श्री रामचन्द्र के समान । सारे=तलवारों से । निसद्ध=नि लोहडे=शस्त्रो से । लसक्कर=सेना रूपी । लियइ=ली । गळबळइ=ग करते हैं । रोम=यवन । वावणउ=वामन । विलागउ=लगा हो ।

397 आहणिय=मारा । थेगि=एक को । असिमरि=तलवार । उलाहि छोड़कर । पहटिया=मार के आगे दोड़ । विया=अन्य । गमिया=चले । पयाळि=पाताल म । पाल्ठ पाजें=पर रखकर । किय=किया ।

398 गोरियाँ तणी=यवनों के । गाळा=गलबन्धन । ग्रहाह=लेकर । बड्डाह काटने के लिए । आइ=लाई गई । वाळी=लौटाई । विचाह=बीच मे मोखावि=छुड़ाई । गाइ=गायो को । राजवी जेम=राजाओं की तरह ।

399 सामी=सम्मुख । कुत=भाले के । चाडि=चढ़ाकर । ऊतरा सेन=यवनो सेना को । नीतिय उपाडि=नष्ट कर डाला । मूलाळा=यवनो को । सा छाडि=प्रत्येक झुण्ड के पीछे तितर बितर । मोटा ग्रह=बड़े ग्रह से । मोखी मुक्त करवाई । मारु आहि=मरुप्रदेश ।

400 सह्यारि=सहार करके । मूगळां=यवनो की । साख=पैदाईश मान प्रति का । लाहउरि=लाहोर वाला । गयउ=गया । सेरावि=नष्ट करवा क साख=यश, मान प्रतिष्ठा । मुरधरा=मरु प्रदेश म । वधिय=बढ़ा । उ मण्डाण=उत्सव होने लगे । सिवहरिय=स्मरण करके । घरि=अपने घ

401 परभविय=पराजित करके । अम्ब=पानी । उतारि=उतारा । अभङ्ग वीरों ने । कहँ=कही । गिडावि=लुढ़काते हैं वराह । गोमट्ट=सिया ताडि=खींचते चलाते हैं । आँठुजें=वत्सायनो को । तरङ्गा=अश्वो क कह=कही । समीर=अमीर । मइमत=मदोमत्त । भोमि लोटइ=पृथ्वी लौटते हैं । घाइ भरिया=घावो से परिपूर्ण । कह=कही । हइहइ=हिनहि रहे हैं । अङ्ग=शरीरांग । असमरि=तलवारो से । ऊतरिया=कटे हु काबिली थट्ट=यवन सेना को । दहवट्ट किय (मु)=तितर बितर कर दिय वीकाहर=राव वीका के वशज । वघरू= याघ्र ने । प्रवाडउ=युद्ध चरि अनुकरणीय माग । किय जमा=जमा किया । जाम=जब तक । सूर=सूर ससिहर=चन्द्र । जरू=मजबूती के साथ ।